रिसाले-ए-नूर संग्रह:

भाग 10

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

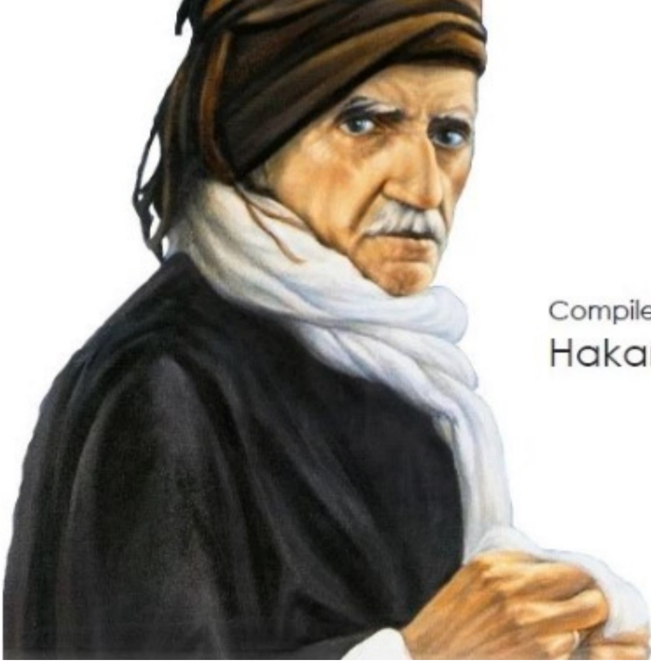
के रिसाले-ए-नूर से चयनित पाठ्य सामग्री

संशोधित तीसरा संस्करण

डॉ. हाकान गोक द्वार संकलित

Selected Readings from Bediuzzaman Said Nursi's

Risale-i Nur



Compiled by
Hakan Gök

रिसाले-ए-नूर संग्रह:
भाग 10

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

के रिसाले-ए-नूर से चयनित पाठ्य सामग्री

संशोधित तीसरा संस्करण

डॉ. हाकान गोक द्वार संकलित

न्यू जर्सी-लंदन-फ्रैंकफर्ट-काहिरा-जकार्ता

TUGHRA BOOKS

न्यु जर्सी

18 17 16 15 1 2 3 4

टुगरा बुक्स द्वारा प्रकाशित 345 क्लिफ्टन एवेन्यू,

क्लिफ्टन, एनजे, 07011, यूएसए

www.tughrabooks.com

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा उपलब्ध है

आईएसबीएन: 978-1-59784-928-9

द्वारा मुद्रित

Çağlayan A.Ş., इज़मिर - तुर्की

फ्रंट कवर: इस्तांबुल में फातिह मस्जिद के प्रांगण में नूरसी, सेलाल पिनार्सी द्वारा

विषयसूची

आभार...9

प्रस्तावना...11

स्रोतों पर नोट्स...13

अध्याय स्थान 15

वर्तनी और लिप्यंतरण पर नोट्स..17

अक्सर प्रयुक्त नाम और शब्द..19

मानचित्र..23

लेखक के बारे में...25

परिचय...27

बेदिउज़्ज़मान साद नर्सी: उनका जीवन और प्रवचन... 36

ओल्ड सैद काल (1877-1916)...39

नया सैद काल (1923-1950)..44

रिसाले -ए-नूर (प्रकाश के पत्र)..48

तीसरा सैद काल (1950-1960)..53 अध्याय 1... 57

मनुष्य और ब्रह्मांड के अस्तित्व का उद्देश्य 59

अहंकार, स्वयं और मानव “मैं”..71 अध्याय 2... 74

बुराई और दुख की समस्या 76

शैतान से बचने के लिए परमेश्वर की शरण लेना...................................79

अध्याय 3... 83

दैवीय निर्धारण (को).. 85

ईश्वरीय निर्णय से संबंधित प्रश्न: ....89 अध्याय
4.. 92

भौतिकवाद या ईश्वर? 94
अध्याय 5... 111

उपासना और प्रार्थना के पीछे तर्क...........113

उपासना के गुण (उबुदिय्यह)...119

पाँच रोज़ाना नमाज़ (सलाह) अदा करने के फ़ायदे 123
अध्याय 6... 125

पुनरुत्थान और परलोक...........................127

क्या परमेश्वर सचमुच मरे हुओं को ज़िंदा करने में सक्षम है? 139
अध्याय 7... 151

कुरान के चश्मे से ब्रह्मांड को पढ़ना 153

बिस्मिल्लाह का गुण..161
अध्याय 8... 165

भाईचारा, लालच, दुश्मनी और चुगली....167

बिरादरी..167

लालच...177

चुगली 182
अध्याय 9... 186

ईमानदारी 188

ईमानदारी पर–2 200
अध्याय 10... 212

बीमारों के लिए उपचार 214

एक बच्चे की मृत्यु पर शोक पत्र ....235 अध्याय
11..239

रमज़ान के रोज़े 241

ईश्वर को धन्यवाद देने पर...250 अध्याय
12...256
शैतान के धोखे 258
परिशिष्ट 1: कालक्रम और आरेख.....................................277
परिशिष्ट 2: ईश्वर के नाम और गुण 279
परिशिष्ट 3: चित्र...285
परिशिष्ट 4: विचारधाराएँ..287
आगे पढ़ें..289
ग्रंथसूची...291
सूचकांक..293

स्वीकृतियाँ

मेरी पहली और सबसे बड़ी कृतज्ञता सुकरान वाहिदे और हुसैन अकारसू के प्रति है जिन्होंने रिसाले-ए-नूर को अंग्रेजी भाषा के पाठकों के लिए उपलब्ध कराया है।
उनका काम अमूल्य है.

मैं सैत अक्सोय का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस विषय के चयन में मदद की। मैं कुछ अन्य सहकर्मियों का भी आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होंने विनम्रतापूर्वक मुझसे अपना नाम न बताने का अनुरोध किया, उनकी बहुमूल्य टिप्पणियों और योगदान के लिए।

मैं मेवलाना की पूरी टीम के प्रति अपनी सराहना व्यक्त करना चाहता हूँ
विश्वविद्यालय में अध्ययन किया, जहाँ मैंने इस पुस्तक का अधिकांश भाग संपादित किया।

अंत में, मेरा विशेष धन्यवाद डॉ. दुसमामत करीमोव, एलिक्स गोक और
एडम टोप्लू को उनके अतिरिक्त इनपुट के लिए धन्यवाद।

प्रस्तावना

बेदिउज़्ज़मान सईद नूरसी (1877-1960), जो संभवतः पिछली सदी के सबसे प्रभावशाली विद्वानों में से एक थे, ने द लेटर्स में लिखा:

> भले ही कुरान की शिक्षा के इस क्षेत्र में कानून के प्रमुख विद्वान और अधिकारी (उलेमा और मुजतहिदुन) हों, विश्वास के विज्ञान के संबंध में उनका कर्तव्य केवल व्याख्या, स्पष्टीकरण या रिसाले-ए-नूर का आदेश देना है।
>
> [1]

चूंकि नूरसी ने पहले ही सब कुछ खूबसूरती से प्रस्तुत कर दिया है, इसलिए मेरा मानना है कि उनके कुछ लेखों को सरल और पुनर्गठित किया जाए ताकि उन्हें अधिक अंग्रेजी भाषी दर्शकों के लिए सुलभ बनाया जा सके।

पिछले कुछ सालों में मुझे कई लोगों से मिलने का मौका मिला है, जिनके साथ मैंने बेदीउज्जमां सईद नूरसी के जीवन और कार्यों पर चर्चा की है। उनके रिसाले पढ़ने में हमेशा से ही दिलचस्पी रही है। हालांकि, जब उन्होंने रिसाले -ए-नूर का आकार देखा तो वे तुरंत ही इससे दूर हो गए।

इस स्थिति ने मुझे एक ऐसी पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया, जिसमें नूरसी द्वारा रिसाले-ए-नूर संग्रह के विभिन्न भागों में लिखे गए सर्वोत्कृष्ट विषयों का सावधानीपूर्वक चयन शामिल है।

इस पुस्तक के विषय साथियों के साथ विचार-मंथन के परिणामस्वरूप उभरे हैं।
2013 की गर्मियों में शिक्षाविदों। हमने इस समस्या को हल करने के तरीकों के बारे में चर्चा की
लोगों की ज़रूरतों, खास तौर पर युवाओं की, जो आधुनिक समाज में रोज़ाना संदेहों का सामना करते हैं। ईश्वर के अस्तित्व, पुनरुत्थान की वास्तविकता और पूजा की ज़रूरत जैसे मुद्दों के साथ-साथ लालच, चुगली और नस्लवाद जैसी आम सामाजिक व्यवहार संबंधी समस्याओं को सईद नूरसी के नज़रिए से समझाया गया है।

मेरा उद्देश्य नूरसी के 14-खंड, 6000-पृष्ठ रिसाले-ए नूर संग्रह से सावधानीपूर्वक चुने गए, सुपाच्य चयनों को शुरुआती लोगों के लिए प्रस्तुत करना है। मुझे उम्मीद है कि यह
यह पुस्तक कई प्रथम बार पाठकों के लिए बेदिउज्जमां सईद नूरसी के आकर्षक लेखन की ओर पहला कदम होगी।

हाकन गोक

लीड्स, जुलाई 2018

---

[1] सईद नूरसी, द लेटर्स (इस्तांबुल: नेसिल, 2004f) 553 पर।

स्रोतों पर नोट्स

बेदीउज्जमां की मुद्रित सामग्री की केवल सीमित विविधता उपलब्ध है
सईद नूरसी की अंग्रेजी में लिखी गई रिसाले-ए नूर । सुकरान वाहिदे का अनुवाद नूरसी की ओटोमन तुर्की में लिखी गई मूल रचनाओं के ज़्यादा करीब लगता है। उनकी रचनाएँ हैं
वर्तमान में सोज़लर प्रकाशन से उपलब्ध है। हुसेन अकार्सू का हालिया अनुवाद, जो पढ़ने में अपेक्षाकृत आसान है और मूल पाठ से थोड़ा पुनर्गठित है, तुगरा बुक्स, न्यू जर्सी, यू.एस. द्वारा मुद्रित किया गया है।

इस पुस्तक में मैंने दोनों लेखकों के अनुवादों को अपने निजी अनुभव के साथ प्रयोग किया है।
स्पर्श, जो केवल फुटनोट और मुख्य पाठ के मामूली पुनर्गठन के रूप में दिखाई देते हैं।

फुटनोट में दिए गए पृष्ठ क्रमांक नेसिल प्रकाशन से लिए गए हैं।
रिसाले-ए-नूर का जुड़वां खंड संस्करण । जो लोग मूल पाठ तक पहुँचने में रुचि रखते हैं, उनके लिए अध्याय स्थान नीचे दिए गए हैं।

अध्याय स्थान

अध्याय 1

मनुष्य और ब्रह्मांड के अस्तित्व का उद्देश्य .... शब्द,
पृ. 133-144

अहंकार, स्वयं और मानव “मैं” .... शब्द, पृ. 241–242

अध्याय दो

बुराई और दुख की समस्या .... पत्र, पृ. 59–62

शैतान से परमेश्वर की शरण ढूँढना .... द फ्लैशेस, पृष्ठ 618

अध्याय 3

ईश्वरीय निर्धारण (जब तक) .... शब्द, पृ. 204–209

अध्याय 4

भौतिकवाद या ईश्वर ....द फ्लैशेस, पृ. 677–682

अध्याय 5

पूजा और प्रार्थना के पीछे तर्क.................. शब्द, पृ. ८-१० उपासना के गुण
.... शब्द, पृ. 5-6 पांच दैनिक

प्रार्थना करने के गुण .... शब्द, पृ. 6–7

अध्याय 6

पुनरुत्थान और परलोक .... वचन, पृ. 19–41 क्या परमेश्वर

सचमुच मरे हुओं को जिलाने में सक्षम है? ...... शब्द, पृ. 237-240

अध्याय 7

कुरान के नजरिए से ब्रह्मांड को पढ़ना... शब्द, पृ.
49–52

बिस्मिल्लाह की फजीलत पर .... शब्द, पृ. 3–4

अध्याय 8

भाईचारा, लालच, दुश्मनी और चुगली .... पत्र, पृ. 469-476

अध्याय 9

ईमानदारी ....द फ्लैशेस, पृ. 662–676

अध्याय 10

बीमारों के लिए उपचार ....द फ्लैशेस, पृ. 330–35
एक बच्चे की मृत्यु पर शोक पत्र......... पत्र, पृ. 382-383

अध्याय 11

रमजान के रोज़े ईश्वर का .... पत्र, पृ. 457–464
शुक्रिया अदा करने पर .... पत्र, पृ. 520–522

अध्याय 12

शैतान के धोखे .... पत्र, पृ. 474-490

वर्तनी और लिप्यंतरण पर नोट्स

चूंकि बेदीउज्जमां सईद नूरसी तुर्की में रहते थे, इसलिए उनका ज़्यादातर काम तुर्की भाषा में है। लोगों और जगहों के नाम उसी तरह इस्तेमाल किए गए हैं जैसे वे तुर्की में हैं।
तुर्की वर्णमाला में कुछ अलग अक्षर हैं, और कुछ अक्षरों का उच्चारण अलग-अलग होता है। नीचे दी गई सूची पाठक को यह बता सकती है कि अंग्रेजी और फ्रेंच में इन अक्षरों का उच्चारण कैसा होता है।

सी—जे, जैसा कि जोट में है।

ç—ch, जैसे कि चॉप में। ş—

* sh, जैसे कि शॉप में।

ğ—अउच्चारित, पूर्ववर्ती स्वर को लंबा करता है। ı—कोई समतुल्य नहीं,

लगभग nation के io जैसा। ö—जैसा कि फ्रेंच peu में है।

ü—जैसे फ़्रांसीसी में rue.

सईद (नूरसी)—का उच्चारण सईद है।

अक्सर प्रयुक्त नाम और शब्द

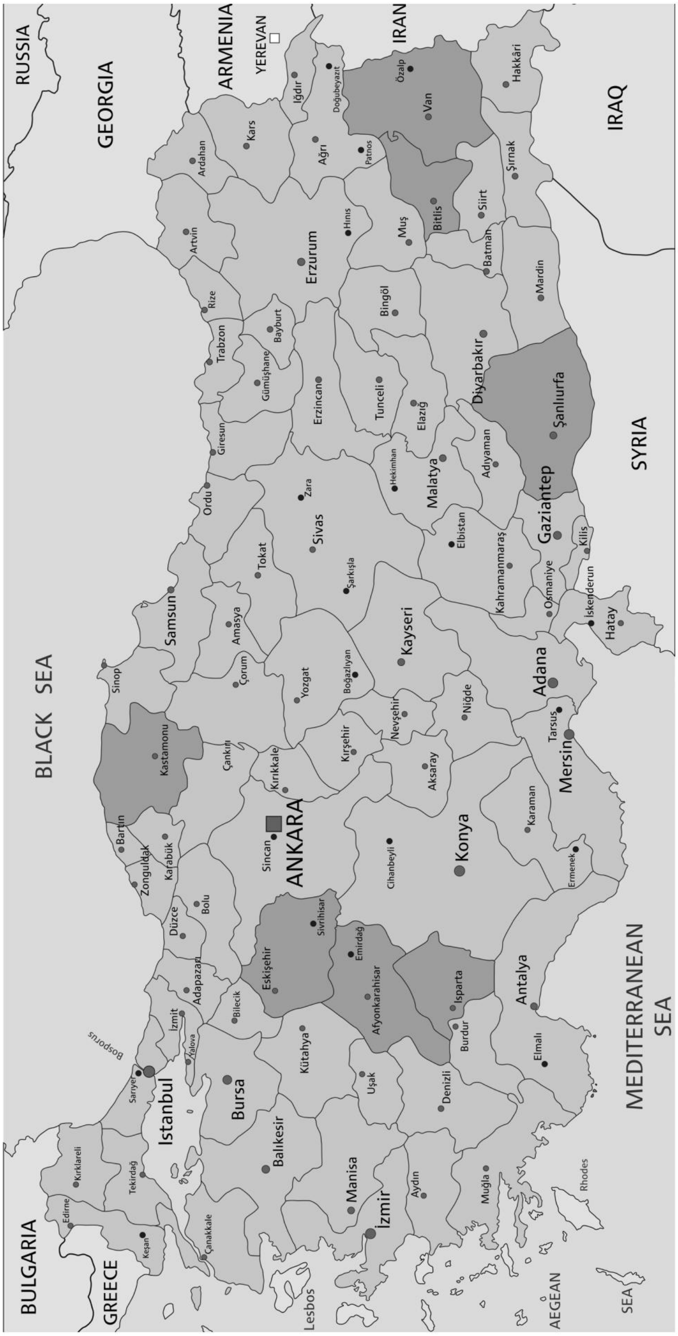
लैटिनकृत शब्द या नाम	भरा हुआ लिप्यंतरण	अर्थ
अबू बक्र	अबू बक्र	प्रथम खलीफा और पैगम्बर के सबसे करीबी सहयोगी
अबू जहल	अबू जहल	अम्र इब्न हिशाम का उपनाम, अज्ञान का पिता मतलब
है	है	न्याय
अज़ान	अज़ान	प्रार्थना के लिए आह्वान (सलाह)
अहल अस-सुन्नत	सुन्नत में आपका स्वागत है	सुन्नी आस्था का तरीका
अल-अस्मा अल-हुस्ना	अल-अस्मा अल-हुस्ना	भगवान के सुंदर नाम
अल-फराबी	अल-फ़राबी	मुस्लिम दार्शनिक और विधिवेत्ता। उनका जन्म 872 ई. में कजाकिस्तान में हुआ, मृत्यु 950 ई. में सीरिया में हुई।
अल-गज़ाली	अल-ग़ज़ाली	मुस्लिम धर्मशास्त्री, न्यायविद, दार्शनिक और रहस्यवादी (1058–1111, ईरान)
अल-मथनावी अल-अरबी अल-नूरी	अल-मथनावी अल-अरबी अल-नुरियाह	नूरसी की एक पुस्तक का शाब्दिक अर्थ है 'प्रकाश का बीजारोपण'
अल-इशरत अल-एजाज़	अल-इशरत अल-एजाज़	नूरसी की एक पुस्तक का शाब्दिक अर्थ है 'चमत्कार के संकेत'
वह	उपाय	अहंकार, स्वयं या मानव 'मैं'
‘अक़ैद	अकाएद	सिद्धांत का तत्व
अश'अरी	अशरी	इमाम अबू अल-हसन अल-अशरी (874–936, इराक) द्वारा स्थापित इस्लाम का धार्मिक स्कूल
कविता	कविता	लक्षण
सुवक्ता	बलाघा	बयानबाजी का तत्व
Dajjal	Dajjal	ईसा मसीह का शत्रु
दीवान-इ हर्ब-ए इरफ़ाई	दीवान-ए हर्ब-ए उर्फी	नूरसी की एक पुस्तक का शाब्दिक अर्थ है 'कोर्ट मार्शल'
दर्शन	दर्शन	दर्शन
हदीथ	हदीस	कथन और कार्य नबी

क़ुदसी हदीस	हदीथ क़ुदसी	अल्लाह की कही हुई बातें पैगंबर लेकिन में शामिल नहीं कुरान
सच	हकीक़ः	वास्तविकता का तत्व
हैश	ḥashr	जी उठने
दस्तावेज़-उल इस्लाम	खुज्जत उल इस्लाम	इस्लाम का सबूत
खुतबा-ए शामिया	हुत्बा-ए शामिया	दमिश्क धर्मोपदेश
हुतुवत-आई सिट्टे	हुतुवत-ए सिट्टा	नूरसी की एक पुस्तक का शाब्दिक अर्थ है 'छह कदम' या 'शैतान की छह चालें'
ʿibadah	सिबादाह	पूजा
शुरू	आईबीडीए	शून्य से सृजन
इब्न-ए सीना	इब्न सीना में	मुस्लिम बहुश्रुत और विधिवेत्ता। 980 में उज्बेकिस्तान में जन्मे और 1037 में ईरान में मृत्यु हो गई।
ईमानदारी से	ईमानदारी से	ईमानदारी
आस्था	ईमान	आस्था
विश्वास का सत्यापन	ईमान-ए तक्कीकी	जांच के माध्यम से विश्वास
विश्वास की नकल	ईमान-ए टैगलीदी	अनुकरण के माध्यम से विश्वास
इंशा	निबंध	मौजूदा सामग्री से धीरे-धीरे निर्माण
नुकीला	इशरत	नूरसी की एक पुस्तक का शाब्दिक अर्थ है 'संकेत'
इसलाम	इसलाम	इसलाम
इस्राएली	इसराइलियात	यहूदी या यहूदी-ईसाई प्रारंभिक इस्लामी साहित्य में किंवदंतियाँ
इत्तिहाद-ए मुहम्मदी इत्तिहाद-ए मुहम्मदी		मुअम्मडन यूनियन के लिए मुस्लिम एकता
जबरिया	जबरिया	एक विचारधारा जो मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा को नकारती है, उसका अर्थ है ' 'आवश्यकतावादी'
जिहाद	जिहाद	ईश्वर के कार्य और मानवता की भलाई के लिए प्रयास करना; कुछ हासिल करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना; संघर्ष
जुरजानी	जुरजानी में	साहित्य की भाषा के सबसे अग्रणी विद्वानों में से एक अरबी (1010–1079, ईरान)

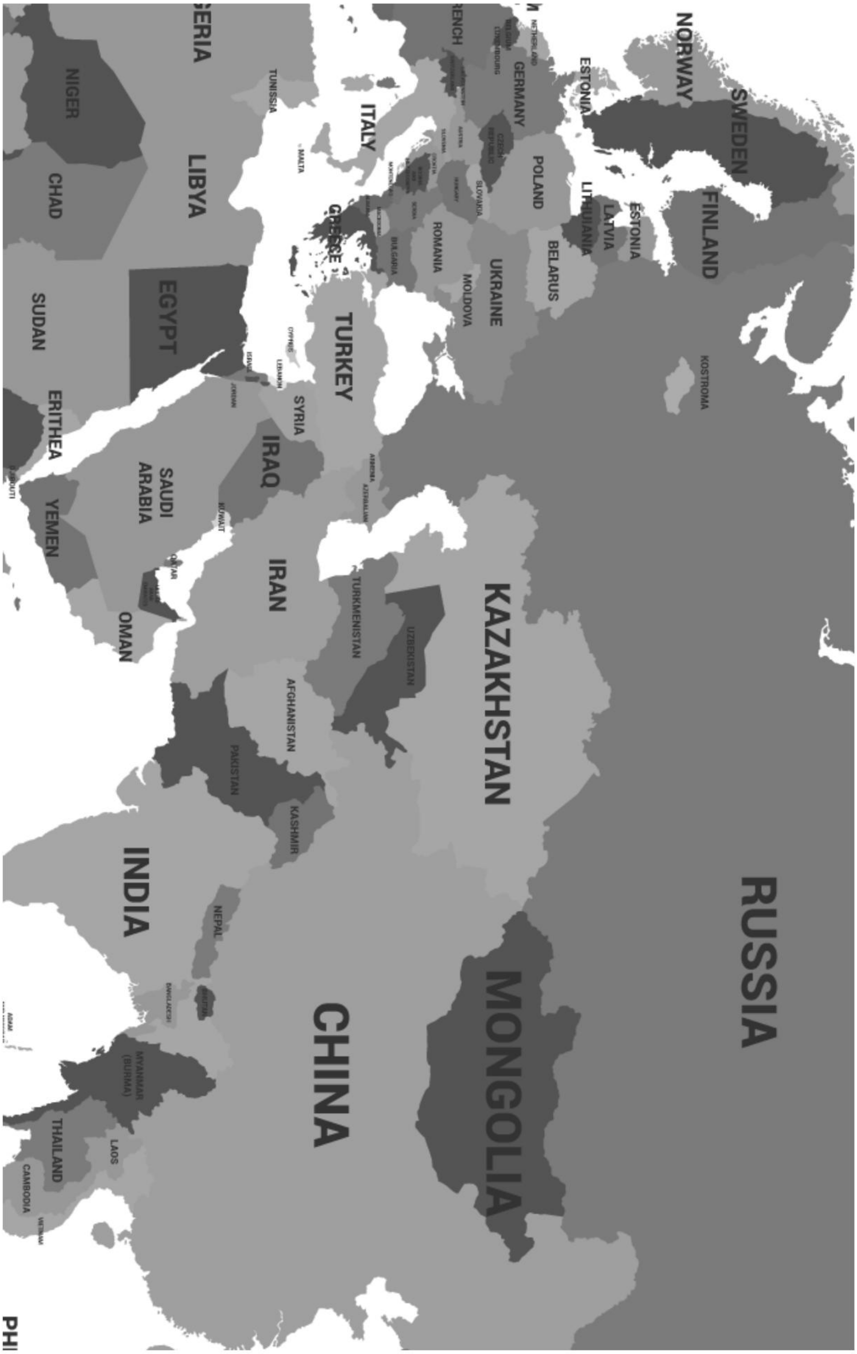
जुज़'-ए इख्तियारी	वैकल्पिक घटक जो	मुक्त इच्छा
जुज़'आई इरादा	आप चाहते हैं	मुक्त इच्छा
कलाम	फोर्जिंग	इस्लामी धर्मशास्त्र, का शाब्दिक अर्थ है 'भाषण'
पेशा	पेशा	अधिग्रहण
जगत	किताब-ए कीमत	ब्रह्मांड की पुस्तक
कुरुश (तुर्की में)	कुरुश (तुर्की में)	अधिग्रहण
लेमेट	ठान ले	नूरसी की एक पुस्तक, वस्तुतः इसका मतलब है 'चमक'
मन-ए-हरफ़ी	मना-ए-शरफ़ी	अन्य-सूचक अर्थ
मन-ए-इस्मी	मना-ए-इस्मी	आत्म-संदर्भित अर्थ
madrasa, (pl.) madaris	मदरसा (बहुवचन) मदारिस धर्मशास्त्र विद्यालय	
मदरसात उज़-ज़हरा'	मदरसात उज़-ज़हरा	नूरसी परियोजना विश्वविद्यालय का नाम, शाब्दिक अर्थ है 'विद्यालय' प्रतिभा'
विद्यालय	विद्यालय	विद्यालय
Mu'tazilites	मुताज़िला	तर्क और विवेक पर आधारित इस्लामी धर्मशास्त्र का स्कूल सोचा।
अभियोग पक्ष	मुहाकामत	नूरसी की एक किताब का अर्थ है 'द तर्क'
बहस	मुनारात	नूरसी की एक किताब का अर्थ है 'बहस'
मुसब्बिब अल-असबाब	मुसब्बिब अल-असबाब	सभी कारणों का निर्माता
मिट्टी की चट्टान	मुताकल्लीमुन	कलाम धर्मशास्त्री
नफ्स	नफ्स	स्वयं, मानस अहंकार या आत्मा
कविता	नाम	शब्द क्रम
नुबुव्वा	भविष्यवाणी	प्रवर्तन
नर्कू (तुर्की में)	नर्कू (तुर्की में)	रिसाले-ए-नूर के छात्र
भाषण	Nuṭq	नूरसी की एक पुस्तक का शाब्दिक अर्थ है 'भाषण'
जब तक	जब तक	दैवी भाग्य
किबला	क़िबला	काबा की दिशा मक्का जहाँ एक मुसलमान जाता है प्रार्थना करते समय.
कुरान	कुरान	इस्लाम की पवित्र पुस्तक
रिसाले-ए नूर	रिसाल-ए नूर	प्रकाश की पत्रियाँ

रुबुबियाह	रुबुबियाह	परमेश्वर का प्रभुत्व
रूमी	कमरे में	कवि, विधिवेत्ता, इस्लामी विद्वान, धर्मशास्त्री और सूफ़ी रहस्यवादी। 1207 में ताजिकिस्तान में जन्मे और 1273 में तुर्की में मृत्यु हो गई।
नर्सी ने कहा	नर्सी ने कहा	नर्सी ने कहा
गलत	धन्यवाद	प्रार्थना
शरीयत	शरीयत	इस्लामी कानून
Sirhindi	सरहिन्दी में	अरब के भारतीय इस्लामी विद्वान मूल, एक हनफ़ी न्यायविद, और के एक प्रमुख सदस्य नक्शबंदी सूफ़ी सिलसिला (1564- 1624, भारत)
सुफ़यान	सुफ़ियान	ईसा मसीह का विरोधी, दज्जाल, जो मुस्लिम दुनिया में प्रकट होगा।
सुन्नाह	सुन्नाह	पैगम्बर के कार्य और कथन
सूरा	सुरा	कुरान की आयत
व्याख्या	तफ़सीर	टीका
शील	Taqwa	शील
अद्वैतवाद	तौहीद	ईश्वर की एकता और एकत्व
पीढ़ी	पीढ़ी	सूफ़ी लॉज; दरवेश लॉज
उबुदिय्याह	उबुदिय्याह	पूजा या सेवा
uhuwwah	उहुउवाह	भाईचारे
उलमा	उलूम में	विद्वानों
उल हया देखें	वाहिब अल-हयात	जीवनदाता
जकात	धकात	दान
Zamakshari	Zamakhsharī	धर्मशास्त्र के मुस्लिम विद्वान और भाषाई इतिहासकार। 1075 में उज़्बेकिस्तान में जन्मे और 1144 में ईरान में मृत्यु हो गई।

एमएपीएस



RUSSIA
GEORGIA
ARMENIA
YEREVAN
IRAN
IRAQ
SYRIA
BLACK SEA
MEDITERRANEAN SEA
AEGEAN SEA
BULGARIA
GREECE
Lesbos
Rhodes
Bosporus
ANKARA
Sincan
Istanbul
Sarıyer
İzmir
Bursa
Konya
Adana
Mersin
Tarsus
Antalya
Kayseri
Gaziantep
Şanlıurfa
Diyarbakır
Erzurum
Samsun
Sivas
Malatya
Kahramanmaraş
Hatay
İskenderun
Osmaniye
Kilis
Adıyaman
Elbistan
Hekimhan
Elazığ
Tunceli
Bingöl
Erzincan
Bayburt
Gümüşhane
Trabzon
Rize
Artvin
Ardahan
Kars
Iğdır
Doğubeyazıt
Ağrı
Patnos
Hınıs
Muş
Bitlis
Van
Özalp
Hakkâri
Şırnak
Siirt
Batman
Mardin
Giresun
Ordu
Tokat
Zara
Şarkışla
Amasya
Çorum
Sinop
Kastamonu
Bartın
Zonguldak
Karabük
Bolu
Düzce
Adapazarı
İzmit
Yalova
Bilecik
Eskişehir
Sivrihisar
Emirdağ
Afyonkarahisar
Kütahya
Uşak
Denizli
Isparta
Burdur
Elmalı
Muğla
Aydın
Manisa
Balıkesir
Çanakkale
Tekirdağ
Kırklareli
Edirne
Keşan
Çankırı
Kırıkkale
Yozgat
Boğazlıyan
Kırşehir
Nevşehir
Niğde
Aksaray
Cihanbeyli
Karaman
Ermenek


NORWAY
SWEDEN
FINLAND
ESTONIA
LATVIA
LITHUANIA
POLAND
GERMANY
BELARUS
UKRAINE
MOLDOVA
ROMANIA
BULGARIA
ITALY
MALTA
GREECE
TURKEY
CYPRUS
LEBANON
ISRAEL
JORDAN
SYRIA
IRAQ
KUWAIT
QATAR
SAUDI ARABIA
YEMEN
OMAN
IRAN
TURKMENISTAN
UZBEKISTAN
AFGHANISTAN
PAKISTAN
KASHMIR
KAZAKHSTAN
INDIA
NEPAL
BANGLADESH
MYANMAR (BURMA)
THAILAND
LAOS
CAMBODIA
CHINA
MONGOLIA
RUSSIA
KOSTROMA
TUNISIA
LIBYA
EGYPT
NIGER
CHAD
SUDAN
ERITHEA
ARMENIA
AZERBAIJAN

लेखक के बारे में

डॉ. हकन गोक लीड्स बेकेट यूनिवर्सिटी में गवर्नेंस, लीडरशिप और ग्लोबल रिस्पॉन्सिबिलिटी सेंटर में रिसर्च फेलो हैं। उन्होंने डरहम यूनिवर्सिटी से पीएचडी की है।

उनकी शोध रुचियाँ बुराई और पीड़ा की समस्या, ईश्वर के अस्तित्व के पक्ष और विपक्ष में तर्क, नास्तिक दर्शन, नूरसी, ग़ज़ाली, रूमी और सरहिंदी का जीवन और प्रवचन हैं।

वह 'नास्तिकता या आस्तिकता: सईद नूरसी का परिप्रेक्ष्य' के लेखक हैं, और 'भारत-तुर्की: इतिहास, संस्कृति और राजनीति' पुस्तकों के सह-संपादक हैं।

परिचय

मनुष्य हमेशा से ही दार्शनिक विषयों में रुचि रखता रहा है, जैसे जीवन की उत्पत्ति, अस्तित्व का उद्देश्य, मृत्यु की प्रकृति और उसके बाद की स्थिति आदि। उनकी दार्शनिक या धार्मिक प्रवृत्तियों के बावजूद ये प्रमुख प्रश्न हमेशा उनके मन में स्थान रखते हैं।

पूरे इतिहास में, दार्शनिकों और धर्मशास्त्रियों दोनों ने इन सवालों के जवाब देने की पूरी कोशिश की है। ऐसा ही एक प्रयास बेदीउज्जमान सईद नूरसी (1877-1960) ने किया था। सकारात्मक विज्ञान, दर्शन और धार्मिक विज्ञान को शामिल करते हुए, नूरसी ने पुस्तकों का एक सेट तैयार किया जिसमें उन्होंने इन मुद्दों पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

हालाँकि नूरसी चाहते थे कि उनके तर्कों को लेखन के समय आम जनता द्वारा सुना और समझा जाए, लेकिन हर किसी को नूरसी का लेखन न तो उसकी मूल भाषा, ओटोमन तुर्की में, न ही अन्य भाषाओं में (इस संस्करण के प्रिंट के समय तीस से अधिक) सुलभ लगता है, जिसमें इसका अनुवाद किया गया है। रिसाले-ए नूर संग्रह को पूरा करने में नूरसी को लगभग चौबीस साल लगे, जिसमें चौदह अलग-अलग किताबें और कुल मिलाकर लगभग छह हज़ार पृष्ठ शामिल हैं।

वैचारिक और राजनीतिक दोनों साम्राज्यों का पतन देखा है
उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के आरंभ के अशांत दौर के दौरान,
नूरसी एकेश्वरवादी आस्तिकता के पक्ष में थे और उन्होंने अपना जीवन इसके लिए समर्पित कर दिया।
इसलिए, कुछ विषय नूरसी के लेखन में बार-बार दिखाई देते हैं।
इनमें से कुछ विषय हैं विश्वास, ईश्वरीय नियति, मानव की स्वतंत्र इच्छा, पुनरुत्थान
और परलोक, नबियों और नबूवत के अलावा। नूरसी ने अपने वर्णन में कहा है
रिसाले-ए-नूर कुरान की आध्यात्मिक व्याख्या है। किसी भी पाठक के लिए, रिसाले-ए- नूर
नूर नियमित व्याख्याओं से बहुत अलग है। कुरान की आयतों की नियमित और व्यवस्थित व्याख्याओं के विपरीत, नूरसी एक अलग रास्ता अपनाते हैं। वह एक विषय चुनता है और उसके इर्द-गिर्द अर्ध-दार्शनिक तर्क विकसित करता है, जिसमें प्रासंगिक कुरान की आयतों और पैगंबर की हदीसों का हवाला दिया जाता है। इसलिए, पाठक को यह समझ में नहीं आता कि कुरान की आयतों और हदीसों का क्या मतलब है।
कुछ विषयों से संबंधित कुरान की आयतों की अच्छी समझ हो,
इससे उन्हें नियमित व्याख्या (तफ़सीर) पढ़ने की तुलना में एक बिल्कुल अलग अनुभव प्राप्त हुआ।

इस पुस्तक में मेरा उद्देश्य पाठक को सईद नूरसी, जिस संदर्भ में वे रहते थे, तथा उनके द्वारा विकसित दर्शन के बारे में सामान्य जानकारी प्रदान करना है।
पुस्तक में दो भाग हैं। पहले भाग में पाठक सईद नूरसी के जीवन और प्रवचन का संक्षिप्त विवरण पा सकते हैं। रिसाले-ए-नूर में दिखाई देने वाली कुछ प्रमुख अवधारणाओं को संक्षेप में समझाया गया है। परिशिष्ट में कुछ अतिरिक्त सामग्री जैसे तस्वीरें और आरेख शामिल हैं जो पाठक को इस भाग को बेहतर ढंग से समझने में मदद करते हैं।

पुस्तक के मुख्य भाग में बारह अध्याय हैं और रिसाले-ए-नूर से कुल बीस अंश हैं। अध्याय एक में पहला वाचन 'मनुष्य और ब्रह्मांड के अस्तित्व के उद्देश्य' के बारे में है। यहाँ, नूरसी सादृश्य, तुलना और रूपकों के माध्यम से समझाते हैं कि ब्रह्मांड और ग्रह पर जीवन संयोग से अस्तित्व में नहीं आया। यह जानबूझकर किया गया था और यह

एक उद्देश्य की पूर्ति करता है। नूरसी सकारात्मक नैतिकता की वकालत करते हैं, उनका तर्क है कि धार्मिक रूप से जो अनुमति दी जाती है वह पुरुषों की खुशी के लिए पर्याप्त है। इसलिए, वे कहते हैं,

उच्च नैतिकता से जीवन जीना बोझ नहीं है, बल्कि इस जीवन में तथा परलोक में खुशी का स्रोत है।

अध्याय एक में दूसरा वाचन 'अहंकार, आत्म और मानव मैं' के बारे में है। यह एक ऐसा विषय है जो नर्सियन दर्शन को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।
पाठकों को ईश्वर और उनके गुणों की पूरी समझ प्राप्त करने के लिए आत्म और अहंकार के साधन का उपयोग करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। दूसरे शब्दों में, अहंकार ईश्वर की सच्ची महिमा की तुलना करने और उसे समझने का एक उपाय है।

अध्याय दो में हमेशा लोकप्रिय एपिक्यूरियन दुविधा और बुराई की समस्या को संबोधित किया गया है। यह मुद्दा हमेशा आम जनता के लिए दिलचस्पी का विषय रहा है। अगर कोई है
सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्व-प्रेमी ईश्वर, तो फिर बुराई क्यों होगी? क्या ईश्वर बुराई को रोकने में सक्षम नहीं है? क्या वह बुराई को रोकने के लिए तैयार नहीं है? या फिर वह किसी कारण से दुनिया में बुराई चाहता है? नूरसी का तर्क है कि ईश्वर के दिव्य नामों को प्रकट करने के लिए बुराई का अस्तित्व आवश्यक है और

गुण। वह आगे बताते हैं कि जीवन का मतलब है इंसानों की परीक्षा लेना। इसलिए, बुराई अच्छे, आज्ञाकारी और धैर्यवान व्यक्तियों और बुरे, विद्रोही और अधीर व्यक्तियों के बीच अंतर करने का एक साधन है।

अध्याय तीन में ईश्वरीय नियति (क़दर) से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की गई है ।
वहाँ पाठक नूरसी के इन सवालों के जवाब पा सकते हैं: 'अगर ईश्वर को पहले से ही पता है कि किसी के भाग्य में क्या है, तो क्या कोई वास्तव में स्वतंत्र इच्छा के बारे में बात कर सकता है?' और 'अगर ईश्वर व्यक्ति के कार्यों सहित सब कुछ बनाता है, तो क्या लोगों को उनके कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है?' यह अध्याय विभिन्न विचारधाराओं जैसे मुताज़िलाइट , जबरिया और अहल अल-सुन्नाह के बारे में अधिक तकनीकी जानकारी भी देता है।

चौथे अध्याय में पाठक बीसवीं और वर्तमान शताब्दियों के सबसे विवादास्पद विषयों में से एक पा सकते हैं: वह है; जीवन की उत्पत्ति। नूरसी इस प्रश्न पर अपना दृष्टिकोण देते हैं। वह अस्तित्व और जीवन की उत्पत्ति के बारे में तीन परिकल्पनाएँ प्रस्तुत करते हैं। पहला सिद्धांत है 'कारण इस चीज़ को बनाते हैं', दूसरा है 'यह खुद को बनाता है; यह अस्तित्व में आता है और बाद में अस्तित्व में नहीं रहता।' तीसरा सिद्धांत है कि 'यह स्वाभाविक है; प्रकृति इसकी आवश्यकता बनाती है और इसे बनाती है

यह।' तीनों प्रस्तावों को तीन-तीन तर्कों के साथ खारिज करने के बाद, नूरसी ने निष्कर्ष निकाला कि जीवन केवल एक सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ सत्ता के हस्तक्षेप से ही अस्तित्व में आ सकता है। यह पूरी तरह से असंभव है कि अन्य तीन एजेंटों में से किसी के पास वास्तव में शून्य से जीवन बनाने की शक्ति और बुद्धि हो सकती है।

अध्याय पाँच में तीन अलग-अलग रीडिंग हैं। उन सभी में, नूरसी ने
एक तरह से यह एक छोटी सी कहानी है, एक तुलना है, और यह तर्क दिया गया है कि ईश्वर और परलोक में विश्वास रखना कितना उचित है, तथा प्रार्थना, उपासना और प्रार्थना के साथ उसी के अनुसार जीवन जीना कितना उचित है।

नूरसी ने अध्याय छह में एक और महत्वपूर्ण मुद्दे को संबोधित करने का प्रयास किया है। वह है मृत्यु के बाद पुनरुत्थान। यह वास्तव में उनका पहला लेख है जो उन्होंने 1926 में इस्पार्टा के पास एक छोटे से शहर बारला में लिखा था। कोई यह तर्क दे सकता है कि पुनरुत्थान का प्रश्न नूरसी के लिए सबसे महत्वपूर्ण था क्योंकि उन्होंने द डेथ ऑफ़ डेथ नामक पुस्तक लिखना शुरू किया था ।
'पुनरुत्थान पर' नामक लेख के साथ शब्द । इतिहास में अधिकांश लोगों ने इसे अविश्वसनीय पाया है, एक बार जब मनुष्य मर जाता है और उसका शरीर दफ़न होने के बाद सड़ जाता है, या कुछ मामलों में जला दिया जाता है, तो वह संभवतः जीवन में वापस आ सकता है, यानी, पुनर्जीवित हो सकता है। अध्याय छह में, नूरसी यह प्रदर्शित करने का प्रयास करता है कि इस ग्रह पर लघु पुनरुत्थान का अस्तित्व है।

वसंत ऋतु, इस जीवन में पूर्ण न्याय का अभाव, बुरे लोगों की उनके बुरे कर्मों के लिए जवाबदेह ठहराए जाने से पहले ही मृत्यु तथा इस ग्रह पर जीवन की कार्यप्रणाली की प्रकृति पुनरुत्थान के प्रमाण हैं।

सातवें अध्याय के दो पाठों में से पहले पाठ में पाठक दो बातें पा सकता है
जीवन की संभावित व्याख्याएँ। पहला भौतिकवादी दर्शन का दृष्टिकोण है और दूसरा कुरान की दिव्य शिक्षाओं पर आधारित है। नूरसी
सावधानीपूर्वक तर्क देते हैं कि ज्ञान और सद्गुण ईश्वर में पाए जा सकते हैं
कुरान की शिक्षाओं के अनुसार। वह आगे यह प्रदर्शित करने का प्रयास करता है कि भौतिकवादी दर्शन द्वारा प्रचारित सांसारिक लाभ प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वंद्विता और शत्रुता केवल संघर्ष, टकराव और शत्रुता का स्रोत हो सकती है।

अप्रसन्नता.

सातवें अध्याय के दूसरे वाचन में नूरसी एक यात्री की कहानी बताती है
रेगिस्तान में। यह कहानी उस समय के लोगों के लिए बहुत प्रासंगिक थी

लेखन और आज भी आधुनिक लोगों की कल्पना के लिए स्पष्ट है। फिर वह कहते हैं
यह बताने के लिए कि इस यात्री के लिए स्थानीय लोगों की सुरक्षा लेना कितना आवश्यक है
शासक। इस तुलना से, नूरसी अपने पाठकों को सुरक्षा लेने के लिए आमंत्रित करते हैं
भगवान के बारे में यह तर्क कि वह ब्रह्मांड का स्वामी और शासक है, निश्चित रूप से पाठकों को हर बात की शुरुआत भगवान से करने के लिए प्रोत्साहित करता है।
ईश्वर के नाम पर 'बिस्मिल्लाह' शब्द का प्रयोग करें, तथा जिन लोगों से व्यवहार करें, उनके बारे में चयनात्मक रहें।
साथ ही, यह सुनिश्चित करना कि उनका ईश्वर के प्रति एक जैसा रवैया हो। नूरसी आठवें अध्याय में दिव्य सेवा के लोगों के बीच भाईचारे और प्रेम को बढ़ावा देने के लिए कड़ी मेहनत करता है। यह टीम है जो खेल जीतती है, व्यक्ति नहीं। इसलिए, वह
विवाद, कलह, पक्षपात, हठ, ईर्ष्या जैसे बुरे गुणों की निंदा करता है।
जिससे द्वेष और दुश्मनी पैदा होती है और यह समझाने की कोशिश की जाती है कि वे टीम को कैसे नष्ट करते हैं आत्मा को नष्ट कर देते हैं और विनाश का कारण बनते हैं। कुरान की आयतों के साथ अपने सिद्धांत का समर्थन करते हुए, उनका उद्देश्य इन बुरी विशेषताओं को मिटाना है और इनके ठीक विपरीत को बढ़ावा देना है,
अर्थात, मित्रता, प्रेम, सहानुभूति, सहयोग और सद्भाव।

अध्याय आठ के दूसरे वाचन में, नूरसी बताते हैं कि लालच क्यों है
कुरान की ईश्वरीय सेवा करने वालों के लिए यह बहुत हानिकारक है। इस आयत की व्याख्या करते हुए कि कितने ही जीवधारी हैं जो अपना भोजन स्वयं नहीं रखते, परन्तु ईश्वर उन्हें भोजन उपलब्ध कराता है, और वास्तव में तुम्हारे लिए भी। वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है। (अल-अंकबूत 29:60), नूरसी प्रदर्शित करते हैं कि जो कुछ तुम्हें दिया गया है, उससे संतुष्ट रहना और ईश्वर पर भरोसा रखना भौतिक लाभों के लिए लालच दिखाने से निश्चित रूप से बेहतर है। वह आगे यह निर्देश देते हैं

दान (ज़कात) देने से न केवल एक प्रेमपूर्ण, साझा करने वाला और देखभाल करने वाला स्वस्थ समुदाय बनाने में मदद मिलती है, बल्कि बुराई, लालच और घृणा की भावना को मिटाने में भी मदद मिलती है।
स्वार्थ.

अध्याय आठ का समापन वाचन एक और सामाजिक बुराई है, वह है चुगली करना। यहाँ नूरसी चुगली की परिभाषा देते हैं और अपने पाठकों को इससे बचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, आयत को रेखांकित करते हुए कि क्या तुममें से कोई अपने मृत भाई का मांस खाना पसंद करेगा? (अल-हुजुरात 49:12)। वह अपना लेख इस प्रकार समाप्त करते हैं
चार अवसरों को स्पष्ट करते हुए, अर्थात् शिकायत करना, सहयोग के लिए परामर्श करना, किसी व्यक्ति का गैर-अपमानजनक तरीके से वर्णन करना तथा किसी लज्जित पापी का उल्लेख करना, जब चुगली करना अनुमेय हो सकता है।

ईमानदारी और भाईचारा नूरसी के लिए दो अभिन्न गुण हैं। वह हमेशा अध्याय नौ में इन दोनों का एक साथ उल्लेख करता है, इसलिए, नूरसी ने ईमानदारी पर जो लेख लिखा है, उसे दिखाता है। पहले वाचन में, नूरसी अपने सामाजिक विचारों को प्रस्तुत करते हैं
मुसलमानों के बीच स्पष्ट विवाद और सहयोग की कमी के सात कारणों का विश्लेषण।

अध्याय नौ के दूसरे भाग में, नूरसी चार आवश्यक नियम स्थापित करते हैं, जिनके बारे में उनका कहना है कि सच्ची ईमानदारी प्राप्त करने के लिए इनका पालन किया जाना चाहिए। वह बताते हैं
सार्वजनिक लोकप्रियता प्राप्त करने के बजाय ईश्वरीय प्रसन्नता की खोज करना आवश्यक है
ईश्वरीय सेवा में किसी की भी सर्वोच्च प्राथमिकता। अपने साथी भाइयों और बहनों की विनाशकारी तरीके से आलोचना न करना दूसरा नियम है जिसे नूरसी अपने पाठकों के लिए स्थापित करते हैं। ईमानदारी और सच्चाई में सारी ताकत तलाशना नूरसी का तीसरा नियम है। चौथे नियम में, नूरसी अपने पाठकों को ईर्ष्या करने के बजाय अपने भाइयों और बहनों की उपलब्धियों पर गर्व करने की सलाह देते हैं। अंत में, नूरसी इस लेख को यह कहते हुए समाप्त करते हैं कि भौतिक लाभ प्राप्त करने के लिए प्रतिद्वंद्विता

लाभ, उच्च सांसारिक स्थिति अर्जित करने की दिशा में काम करना, भय और लालच मुख्य बाधाएं हैं जो ईमानदारी को नष्ट करती हैं, और दिव्य सेवा के लोगों को इन जाल में फंसने से बचना चाहिए।

दसवाँ अध्याय, जो मूल रूप से नूरसी की पुस्तक द फ्लैशेस में दिखाई देता है, बीमार लोगों के लिए छब्बीस आध्यात्मिक उपचार देता है। चूँकि लगभग हर कोई बीमार है या उसके किसी करीबी को बीमारी है, इसलिए यह पढ़ना राहत के रूप में आता है और उन लोगों के मूड को ऊपर उठाता है जो बीमारी से पीड़ित हैं और जिनके दोस्त या परिवार के सदस्य बीमार हैं। पैगंबर की हदीस, 'सबसे गंभीर परीक्षणों से पीड़ित लोग पैगंबर हैं, फिर संत और उनके जैसे लोग' पर व्याख्या करते हुए, नूरसी बीमारी को सजा के बजाय एक पुरस्कार के रूप में मानते हैं। उनका सुझाव है कि बीमारी वास्तव में पापों के प्रायश्चित के रूप में कार्य करती है और इस दुनिया और परलोक दोनों में उच्च आध्यात्मिक पद प्राप्त करने में मदद करती है। वह इस तथ्य पर प्रकाश डालते हैं कि लोग अधिक आध्यात्मिक हो जाते हैं और बीमार होने पर अधिक प्रार्थना करते हैं। इसलिए, बीमारी अधिक आध्यात्मिक पुरस्कार अर्जित करने के मामले में कुछ फायदेमंद है। नूरसी द्वारा आगे रखा गया एक और तर्क यह है कि ईश्वर के कई दिव्य नाम और गुण हैं, जिनमें से प्रत्येक के लिए

खुद को प्रकट करने के लिए कुछ निश्चित शर्तें होती हैं। बीमारी के मामले में, ईश्वरीय नाम द हीलर (अश-शफी) खुद को प्रकट करता है क्योंकि लोग बीमार हो जाते हैं, फिर ठीक हो जाते हैं। परिशिष्ट में, निन्यानबे दिव्य नामों और गुणों की सूची पाठक को इन नामों के प्रकट होने के लिए आवश्यक शर्तों पर विचार करने के लिए दी गई है।

नूरसी ने दूसरे अध्याय में 'धनवान व्यक्ति और उसके नौकर' का रूपक दिया है।
समय (पहली बार यह दिव्य नियति पर अध्याय तीन में दिखाई देता है) और तर्क देता है
चूँकि मनुष्य को अपने शरीर और उसे दी गई शक्तियों पर स्वामित्व का दावा करने का कोई अधिकार नहीं है, इसलिए वह केवल ईश्वर को धन्यवाद दे सकता है, शिकायत नहीं कर सकता।

नूरसी द्वारा अपने एक छात्र हाफ़िज़ हलीद इफ़ेंदी को उनके बेटे की मृत्यु पर लिखा गया निजी पत्र दसवें अध्याय को पूरा करता है। यह कोई साधारण पत्र नहीं है, बल्कि सांत्वना की शक्ति से लिखा गया पत्र है। यहाँ नूरसी ने हाफ़िज़ हलीद इफ़ेंदी के साथ-साथ पाँच अच्छी ख़बरें और सांत्वनाएँ प्रस्तुत की हैं।

किसी और ने भी अपना बच्चा खो दिया है। कुरान के अमर युवाओं (अल-वाकिया 56:17) में एक युवा मृतक के वर्णन के साथ, हम इस पत्र को पाते हैं

सांत्वना बहुत आरामदायक और सशक्त है।

अध्याय ग्यारह में नूरसी के रमजान के पवित्र महीने के दौरान उपवास के बारे में विचार प्रस्तुत किए गए हैं। नूरसी उपवास को केवल उपवास का कार्य नहीं मानते हैं।
खाने, पीने और संभोग से परहेज़ करना। उसके लिए उपवास भी एक नियम है
सामाजिक, व्यक्तिगत और आध्यात्मिक लाभ लाता है। नूरसी उपवास के आठ ज्ञानों के बारे में विस्तार से बताते हैं। उदाहरण के लिए, उपवास आत्मा के लिए ईश्वर की कृपाओं के बारे में जागरूक होने और उसके प्रति अधिक आभारी होने का सबसे अच्छा तरीका है। उपवास लोगों को एक-दूसरे के प्रति अधिक सहानुभूति दिखाने के लिए भी प्रेरित करता है क्योंकि वे भूख, प्यास और सभी प्रकार की शारीरिक कमज़ोरियों का अनुभव करते हैं। नूरसी आगे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि कैसे उपवास लोगों को अपने शरीर और आत्मा को अनुशासित करने में मदद करता है। अध्याय

इलेवन में द लेटर्स से एक और अंश भी है जिसमें नूरसी व्याख्यान देते हैं
कैसे परमेश्वर को धन्यवाद देना उन सबसे मौलिक प्रतिक्रियाओं में से एक है जिसकी परमेश्वर लोगों से अपेक्षा करता है और कैसे उसे उचित रूप से धन्यवाद दिया जाए।

इस पुस्तक का अंतिम वाचन ईश्वरीय सेवा के सेवकों को धोखा देने के लिए छह शैतानी युक्तियों और तरकीबों के बारे में है। यहाँ पाठक के पास नूरसी की छह व्यक्तिगत कमज़ोरियों की व्याख्या को पढ़ने का एक और मौका है जो कुरान के सेवकों की टीम भावना को नुकसान पहुँचाती हैं। नूरसी ने मूल रूप से इस टुकड़े को छह तरकीबें कहा था और यह रिसाले-ए नूर में कई अलग-अलग जगहों पर दिखाई देता है। पाठक तुरंत पहचान सकता है कि इन छह युक्तियों का आंशिक रूप से ईमानदारी पर अध्याय नौ में मुख्य बाधाओं के रूप में उल्लेख किया गया था जो ईमानदारी को नष्ट करती हैं। छह शैतानी युक्तियों में से पहली है पद और पद की इच्छा। नूरसी बताते हैं कि यह कैसे लोगों के बीच प्रतिद्वंद्विता और ईर्ष्या का कारण बनता है

यह कुरान के सेवकों के बीच शत्रुता को बढ़ावा देता है तथा उनके सामंजस्यपूर्ण सहयोग को नुकसान पहुंचाता है। नूरसी के अनुसार, दूसरी शैतानी रणनीति डर है। डर इंसानों को एक सुरक्षात्मक उपकरण के रूप में दिया जाता है ताकि वे खतरे से बच सकें और सुरक्षित रह सकें। यह उन्हें कायर या पागल बनाने के लिए नहीं दिया जाता है। उनका सुझाव है कि उचित सावधानी हमेशा आवश्यक है, लेकिन डर के कारण कार्रवाई के क्षेत्र से भागना एक ऐसी चीज है जिससे मुसलमानों को हर समय बचना चाहिए। नूरसी लालच को तीसरी शैतानी रणनीति के रूप में आगे बढ़ाते हैं। नूरसी के अनुसार शैतान की चौथी रणनीति, मजबूत राष्ट्रवादी भावनाएँ हैं जो लोगों को खतरनाक रूप से मजबूत नस्लवाद की ओर ले जाती हैं।

नूरसी अपने अनुयायियों को सलाह देते हैं कि लोगों की विविधता के कारण मतभेद नहीं होना चाहिए।
उनके बीच विवाद है। कुरान के सेवकों को गुणों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए
लोगों की जाति या रंग नहीं, बल्कि उनकी पहचान। अहंकार और आलस्य दो अन्य शैतानी चालें हैं जो लोगों को कुरान की सेवा से दूर ले जाती हैं।

यह पुस्तक इस सच्ची उम्मीद के साथ तैयार की गई है कि पहली बार पढ़ने वाले पाठक नूरसी के लेखन का स्वाद चख सकें, जिसे सामूहिक रूप से रिसाले-ए-नूर कहा जाता है, और आगे के अध्ययन में रुचि विकसित कर उनसे लाभ उठा सकें। अगर पाठक को कोई कमी नज़र आती है, तो वह मेरी है।

बेदुज्जमान सैद नर्सी: उनका
जीवन और प्रवचन

1960 की जुलाई की एक धूल भरी, गर्म रात में, सैन्य वाहनों का एक काफिला तेजी से आगे बढ़ रहा था
दक्षिण-पूर्वी तुर्की के उरफ़ा शहर के केंद्र में हलील अर-रहमान मस्जिद की ओर। कमांडिंग अधिकारी ने अपना पसीना पोंछा और ड्राइवर को तेज़ी से आगे बढ़ने का निर्देश दिया। काफिला आखिरकार मस्जिद पर पहुंचा, जल्दी से मस्जिद की ओर जाने वाली सड़कों को घेर लिया और परिसर को सुरक्षित कर लिया। और सैनिक

वे अपने हाथों में कुल्हाड़ी और फावड़े लेकर सैन्य ट्रकों के पीछे से कूद पड़े।
हाथ। आधी रात के ठीक आधे बज रहे थे। सैनिकों ने सबसे पहले तीन महीने पुरानी कब्र के ऊपर से संगमरमर का विशाल स्लैब हटाया। उन्होंने जल्दी से मिट्टी खोदी और हरे रंग के ताबूत तक पहुँच गए। ताबूत खोला गया, और शव को बाहर निकाला गया
जल्दी से एक नए गैल्वेनाइज्ड धातु के ताबूत में स्थानांतरित कर दिया गया जिसे सैन्य ट्रकों में से एक के पीछे ले जाया गया था। सैनिकों ने ताबूत को सील कर दिया और उसे ट्रक के पीछे सुरक्षित कर दिया। वे जितनी जल्दी हो सके परिसर से चले गए
आया।

काफिला स्थानीय नागरिक हवाई अड्डे पर पहुंचा। अब रात के 1 बज रहे थे। गैल्वेनाइज्ड ताबूत को प्रतीक्षारत C-47 सैन्य कार्गो विमान में स्थानांतरित किया गया।
विमान ने 12 जुलाई, 1960 को सुबह 1 बजे के कुछ समय बाद उड़ान भरी। इसका गंतव्य अफ्योन था, जो उरफा से लगभग 900 किमी पश्चिम में स्थित एक शहर है। एक बार जब कार्गो विमान अफ्योन में एक सैन्य हवाई पट्टी पर उतरा, तो शेष 176 किमी की दूरी जमीन से तय की जानी थी। पार्टी अंततः इस्पार्टा सिटी कब्रिस्तान पहुँची। यह लगभग सुबह का समय था। उन्होंने जल्दी से शव को पहले से खोदी गई कब्र में फिर से दफना दिया। आधिकारिक

कागज़ात पर हस्ताक्षर किये गये और बाद में उसे अंकारा में प्रधानमंत्री के अभिलेखागार में सुरक्षित रख दिया गया।2
इस सैन्य कार्रवाई का उद्देश्य किसी और का नहीं बल्कि सईद नूरसी का शव निकालना था, जिनकी मृत्यु चार महीने से भी कम समय पहले, 23 मार्च 1960 को हुई थी।

27 मई 1960 को 37 छोटे सैन्य अधिकारियों ने एक लम्बे समय से रची गई योजना को अंजाम दिया।
लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित प्रधानमंत्री के खिलाफ सैन्य तख्तापलट

---

[2] परिशिष्ट 3 देखें: इस्तांबुल कब्रिस्तान में सईद नूरसी को पुनः दफनाए जाने का आधिकारिक दस्तावेज।
(नूरसी का मृत्यु प्रमाण पत्र)

अदनान मेंडेरेस। प्रधानमंत्री मेंडेरेस की डेमोक्रेट पार्टी को दस साल पहले 22 मई 1950 को रिपब्लिकन पीपुल्स पार्टी (RPP) के उम्मीदवार और प्रधानमंत्री इस्मेट इनोनू के खिलाफ़ पहली चुनावी जीत मिली थी। यह तुर्की के एकदलीय निरंकुशता से वास्तविक लोकतंत्र में परिवर्तन की शुरुआत थी।

व्यापक जन समर्थन के साथ, मेंडेरेस ने शीघ्र ही अपना पद छोड़ दिया।
तीन दशक से भी ज़्यादा समय पहले आरपीपी ने प्रतिबंध लगाए थे। इन प्रतिबंधों में सबसे प्रमुख था अरबी में इस्लामी प्रार्थना (अज़ान) पर प्रतिबंध हटाना। 1957 के चुनावों में मेंडेरेस को दूसरी बार बहुमत हासिल करना था4

इस बार उन्होंने आरपीपी और सेना को और अधिक परेशान किया, जो मूलतः एक ही संगठन थे। जब सेना और आरपीपी को एहसास हुआ कि मतपेटी के माध्यम से सत्ता हासिल करने की संभावना लगभग नगण्य या नगण्य है, तो उन्होंने प्लान बी पर अपना ध्यान केंद्रित किया।

सेना ने संसद के हर एक सदस्य, 235 सेना जनरलों, 3,500 से ज़्यादा सेना अधिकारियों और 1,402 शिक्षाविदों को गिरफ़्तार कर लिया। उन्हें जबरन सेवानिवृत्ति पर भेजकर या बर्खास्त करके जल्दी से नियंत्रित किया गया। शायद इस खूनी तख्तापलट की अंतिम कीमत प्रधानमंत्री अदनान मेंडेरेस, विदेश मंत्री फतिन रुस्तु ज़ोरलू और वित्त मंत्री हसन पोलाटकन को चुकानी पड़ी। राष्ट्रपति कैनेडी के अंतिम समय में हस्तक्षेप के बावजूद,

[5] सैनिक शासकों ने लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित मेंडर्स, ज़ोरलू और पोलाटकन को मार डाला।

यह तुर्की के लोकतंत्र के संघर्ष की एक संक्षिप्त कड़ी का अंत था। इसमें केवल राजनीतिज्ञों और सेना के सदस्यों को ही नुकसान नहीं उठाना पड़ा।
नूरसी के शव को भी सैनिक विद्रोहियों के क्रोध का सामना करना पड़ा।

सईद नूरसी6 (1877-1960) संभवतः बीसवीं सदी में तुर्की द्वारा निर्मित सबसे प्रभावशाली बुद्धिजीवियों में से एक हैं। यह अध्याय उनके जीवन की जांच ऐतिहासिक और राजनीतिक दृष्टिकोणों की चर्चा के माध्यम से करता है जिसने उनके प्रवचन को आकार दिया। यह नूरसी के बौद्धिक बदलाव का विश्लेषण समाजशास्त्रीय चिंताओं से भौतिकवाद की दार्शनिक चुनौतियों में करता है, न कि उनके जीवन के कालानुक्रमिक विवरण के बजाय।

---

[3] 14 मई 1950 चुनाव: डेमोक्रेट पार्टी को 52.67% वोट मिले और 487 सीटों में से 415 सीटें हासिल हुईं।

[4] 27 अक्टूबर 1957 चुनाव में मेंडेरेस को 48.88% वोट मिले और 610 में से 424 सीटें हासिल हुईं संसद की सीट.

[5] नूर बचूर, "कैनेडी का ब्रेकिंग संदेश: इसे लटकाओ मत," 20 जून 2007, सबा अखबार, यूआरएल एक्सेस किया गया: 15 जून 2008।

[6] पारंपरिक अंग्रेजी संस्करण, 'सईद नूरसी' का प्रयोग आमतौर पर 'सैद नूरसी' के स्थान पर किया जाता है

नूरसी का जन्म 1877 में पूर्वी अनातोलिया7 में कुर्दिश माता-पिता के घर हुआ था ।8 उस समय, जिस क्षेत्र में उनका जन्म हुआ उसे कुर्दिस्तान कहा जाता था और यह कुर्दिस्तान के भीतर था।
ओटोमन साम्राज्य की सीमाएँ। नूरसी का जीवन दो पूरी तरह से अलग-अलग शासन-व्यवस्थाओं में फैला था: पहला, ओटोमन साम्राज्य, जो एक संसद के साथ एक लोकतांत्रिक राजतंत्र था, और फिर तुर्की गणराज्य, 1923 में ओटोमन साम्राज्य की राख पर बना एक धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र।

कुर्द माता-पिता के कारण, नूरसी स्थानीय भाषा कुर्द बोलते थे, लेकिन वे तुर्की भाषा भी बोलते थे, जो राज्य की आधिकारिक भाषा थी, तथा अरबी भाषा भी बोलते थे, जो विज्ञान, ज्ञान और धर्म की भाषा थी।

इन कारकों के अनुसार, नूरसी के जीवन को पारंपरिक रूप से तीन अवधियों में विभाजित किया जाता है। पहला काल उनके जन्म 1877 से 1920 तक का है। नूरसी खुद अपने जीवन के इस 37 साल के हिस्से को 'ओल्ड सैद' युग कहते हैं। दूसरा काल है
1920 से 1950 तक, जब नूरसी ने अपनी महान कृति, रिसाले -ए नूर (प्रकाश के पत्र) का निर्माण किया। नूरसी ने अपने जीवन के इस हिस्से को 'नया सैद' युग कहा। उनके जीवन के अंतिम दस वर्ष, 1950 से 1960 तक, 'तीसरे सैद' के रूप में जाने जाते हैं।
अवधि।

ओल्ड सैद काल (1877-1916)

नूरसी ने अपने जीवन के पहले तीस साल पूर्वी अनातोलिया में विभिन्न मदरसों (धार्मिक विद्यालयों) में विभिन्न विषयों का अध्ययन करते हुए बिताए। एक प्रतिभाशाली छात्र के रूप में, नूरसी को अपने द्वारा भाग लिए गए सभी पाठ्यक्रमों को पूरा करने के लिए केवल थोड़े समय की आवश्यकता थी। इसलिए, वह पढ़ाए जाने वाले लगभग सभी विज्ञानों का काफी तेज़ी से अध्ययन करने में सफल रहे। उन्होंने अधिकांश ग्रंथों को पढ़ा और याद किया, जिनमें वे भी शामिल थे जो

मदरसे के पाठ्यक्रम का हिस्सा भी नहीं था। वह एक असाधारण प्रतिभाशाली व्यक्ति थे
परिणामस्वरूप, उन्हें बेदिउज़्ज़मान (उस समय का अद्वितीय) उपनाम दिया गया।

उन्नीसवीं सदी का अंत और बीसवीं सदी की शुरुआत 600 साल पुराने ओटोमन साम्राज्य के लिए एक चुनौतीपूर्ण दौर था। यह अलग-अलग मोर्चों पर युद्ध लड़ रहा था, आर्थिक तंगी, बढ़ते राष्ट्रवाद और कई अन्य राजनीतिक समस्याओं का सामना कर रहा था।

नूरसी को जल्दी ही यह बात समझ में आ गई कि साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर था।
और यह कि हल करने के लिए बहुत सारी समस्याएं थीं। उन्होंने पहचाना कि

---

[7] ओटोमन साम्राज्य के भौगोलिक पूर्व और पूर्वी यूरोप के बीच भ्रम से बचने के लिए
तुर्की गणराज्य, मैं अनातोलिया का भौगोलिक नाम उपयोग करता हूँ।

[8] हिजरी-ग्रेगोरियन कैलेंडर रूपांतरण और सटीक अभिलेखों की कमी के कारण नूरसी की जन्म तिथि के बारे में असहमति है। वाहिदे दूसरों की तुलना में 1877 को अधिक सटीक मानते हैं। सुकरान वाहिदे और इब्राहिम एम. अबू-रबी, 'इस्लाम इन मॉडर्न टर्की एन इंटेलेक्चुअल बायोग्राफी ऑफ बेदिउज्जमान सईद नूरसी' देखें।

शिक्षा प्रणाली में मुख्य खामियों को पहचाना और अपना समाधान तैयार किया। उस समय, शिक्षा प्रणाली के दो स्तर थे; एक सख्ती से धार्मिक शिक्षा और दूसरा आधुनिक विज्ञान (यानी, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, आदि)। इससे धार्मिक विद्वानों के बीच एक खाई पैदा हो गई, जिनके पास आधुनिक विज्ञान का बहुत कम या कोई ज्ञान नहीं था और वैज्ञानिकों के पास बहुत कम या कोई धार्मिक ज्ञान नहीं था।

नूरसी ने 'मदरसत उज-ज़ाह-रा' नामक विश्वविद्यालय के लिए एक परियोजना बनाई, जो इन दो स्तरों (यानी, पारंपरिक धार्मिक शिक्षा और आधुनिक विज्ञान) को एक साथ लाएगी। उन्होंने सुझाव दिया कि उनके विश्वविद्यालय का केंद्रीय परिसर बिटलिस में, एक परिसर वान में और दूसरा परिसर दियारबकिर में होना चाहिए। सभी अरबी, तुर्की और कुर्द भाषाओं का एक साथ उपयोग किया जाएगा। मुनाज़रत में, वे लिखते हैं:

> ··· इस विश्वविद्यालय (मदरसात उज-ज़हरा, काहिरा के अल-अज़हर विश्वविद्यालय की बहन) में अरबी भाषा अनिवार्य है, कुर्द भाषा स्वीकार्य है और तुर्की भाषा आवश्यक है ...9

यह विचार यकीनन कुर्द समस्या का समाधान होता जो आज भी बनी हुई है। अपनी महत्वाकांक्षी परियोजना को साकार करने के लिए,10 नूरसी 1907 में साम्राज्य की राजधानी इस्तांबुल गए। उन्होंने सुल्तान अब्दुलहमीद द्वितीय से मुलाकात की और अपना प्रस्ताव11 उनके सामने रखा। यह ओटोमन इतिहास का एक बहुत ही अशांत समय था क्योंकि दूसरा संविधान घोषित होने वाला था। अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करने के बाद, नूरसी को स्वागत योग्य व्यवहार नहीं मिला। वास्तव में, उन्हें मानसिक रूप से अस्वस्थ होने के आधार पर गिरफ्तार किया गया और कुछ समय के लिए जेल में रखा गया।12

---

[9] नर्सी ने कहा, मुनाज़ारत (इस्तांबुल: शब्द), 1956 में।

[10] नूरसी की शिक्षा सुधार परियोजना पर, सुकरान वाहिद लिखते हैं, "यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि शिक्षा सुधार के बारे में उनके विचार दूरगामी और क्रांतिकारी थे। धार्मिक शिक्षा और आधुनिक भौतिक विज्ञानों की संयुक्त शिक्षा के अलावा, जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, नूरसी ने मदरसा उज-ज़हरा में उस समय की तीन मुख्य शैक्षिक परंपराओं, मदरसों या 'धार्मिक स्कूलों', मकतबों या 'आधुनिक धर्मनिरपेक्ष स्कूलों' और सूफी टेककों और उनके द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने वाले विषयों को समेटने और एक साथ लाने का प्रस्ताव रखा। इस प्रकार यह उनके बीच की दरारों और समाज के परिणामी विभाजन को भर देगा ... वह छात्रों को उन विषयों में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए भी एक मजबूत वकील थे जिनके लिए उनके पास योग्यता थी, जो स्थापित अभ्यास से एक क्रांतिकारी बदलाव था।"

[11] अपने प्रस्ताव में, नूरसी लिखते हैं: "धार्मिक विज्ञान विवेक का प्रकाश है, और आधुनिक विज्ञान तर्क का प्रकाश है। दोनों के संयोजन से सत्य प्रकट होता है। छात्रों का प्रयास इन दो पंखों पर उड़ान भरेगा। जब वे अलग हो जाते हैं तो यह एक में कट्टरता को जन्म देता है, और दूसरे में धूर्तता और संदेह को।"

[12] नेकमेद्दीन साहिनर, बेदिउज्जमां ने नर्सी को अपने अज्ञात पक्षों के साथ कहा: उनका कालानुक्रमिक जीवन (इस्तांबुल: नेसिल, 1997) 93 पर।

1908 में यंग तुर्कों के नेतृत्व में संवैधानिक क्रांति हुई। क्रांति का परिणाम संसद की बहाली थी, जिसे 1878 में सुल्तान अब्दुलहमीद द्वितीय ने निलंबित कर दिया था। क्रांति में सुल्तान के खिलाफ सभी विपक्षी दलों का एक साथ आना देखा गया। सभी राष्ट्रवादी, धर्मनिरपेक्षतावादी, सुधारवादी व्यक्ति और बहुलवादी एकजुट हुए। यह लोकतंत्र की दिशा में एक सकारात्मक कदम लग रहा था, लेकिन इसने उन घटनाओं को जन्म दिया जिसने अंततः ओटोमन साम्राज्य को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। नूरसी, कई अन्य इस्लामवादियों की तरह, संवैधानिकता का समर्थन करते थे। केवल स्वतंत्रता और संवैधानिक के माध्यम से

उनका मानना था कि सरकार के द्वारा ही साम्राज्य को बचाया जा सकता है, प्रगति की जा सकती है और इस्लामी सभ्यता की स्थापना की जा सकती है।13

नूरसी एक प्रसिद्ध सार्वजनिक व्यक्ति बन गए। उन्होंने खुले तौर पर सार्वजनिक भाषण दिए,
और संविधानवाद के समर्थन में लेख लिखे। वे इत्तिहाद-ए मुहम्मदी सिमीयती (मुस्लिम एकता के लिए मुहम्मदन संघ) के संस्थापक सदस्य बन गए। 1909 में 31 मार्च की घटना के बाद , उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, कोर्ट मार्शल किया गया और 24 दिन जेल में बिताने के बाद बरी कर दिया गया। 1910 में, नूरसी ने अपनी पहली पुस्तक, नुटुक (भाषण) प्रकाशित की, जो उनके भाषणों का संग्रह था।

लेख और भाषण। 1911 में, उन्होंने कोर्ट मार्शल के समक्ष प्रस्तुत किए गए अपने बचाव को उसी शीर्षक, दीवान-ए हरब-ए ओरफी के तहत प्रकाशित किया। यह नूरसी की दूसरी प्रकाशित पुस्तक थी।

नूरसी ने इस्तांबुल छोड़ दिया और पूर्वी अनातोलिया चले गए ताकि वे फिर से कुर्द जनजातियों के बीच रह सकें। उन्होंने लोकतंत्र और संविधानवाद को आगे बढ़ने का रास्ता बताया।
उनके विचार और आदान-प्रदान बाद में दो पुस्तकों में प्रकाशित हुए। मुहाकमत (तर्क) ने ʿउलमा (विद्वानों) को संबोधित किया, और मुनाज़रत (चर्चा) ने आम जनता को संबोधित किया। ये दोनों रचनाएँ क्रमशः 1911 और 1913 में प्रकाशित हुईं। नूरसी ने पूर्व की तीन बीमारियों और तीन उपचारों के अपने निदान से विद्वानों और जनता दोनों को प्रभावित किया। उन्होंने कहा कि तीन बीमारियाँ 'अज्ञानता, गरीबी और आंतरिक संघर्ष' थीं, और उन्हें 'शिक्षा, उद्योग और एकता' के तीन उपचारों से लड़ना होगा।15

---

[13] सफ़ा मर्सेल, बेदिउज़्ज़मां ने नर्सी और राज्य दर्शनशास्त्र कहा (इस्तांबुल: येनी आसिया यायिनलारी, 1976) 223-35 पर।

[14] इकतीस मार्च की घटना इत्तिहाद वे तेराकी (संघ और प्रगति की समिति) के खिलाफ विद्रोह था, जिसने दूसरी संवैधानिक क्रांति के बाद सरकार की कमान संभाली थी। यह घटना रूमी कैलेंडर के अनुसार 31 मार्च 1325 (13 अप्रैल 1909) को हुई थी, इसलिए इसे इकतीस मार्च की घटना कहा जाता है।

[15] 1921 में नर्सी, दीवान-ए हरबी इरफ़ी (इस्तांबुल: नेसिल, 2004ई) ने कहा।

इसके बाद वे सीरिया के दमिश्क गए16, जहां उन्होंने उमय्यद मस्जिद में लगभग दस हजार लोगों के समक्ष अपना ऐतिहासिक दमिश्क धर्मोपदेश दिया, जिसमें एक सौ पचास विद्वान शामिल थे।17 अरबी में अपने भाषण में नूरसी ने छह बीमारियों की पहचान की और उनके उपचार की पेशकश की, जिसे वे 'कुरान की फार्मेसी' कहते हैं। उन्होंने कहा:

> इन देशों में वर्तमान समय की परिस्थितियों में, मैंने मानव जाति के सामाजिक जीवन की पाठशाला में एक सबक सीखा है और मैंने महसूस किया है कि जिस चीज ने विदेशियों, पश्चिम को भविष्य की ओर उड़ान भरने की अनुमति दी है, उसके मूल में यही है।
> प्रगति के पंख, जब तक कि इसने हमें रोके रखा और भौतिक विकास के मामले में, मध्य युग में हमें रोके रखा, छह भयानक बीमारियाँ हैं। ये बीमारियाँ हैं
> इन:
>
> पहला: सामाजिक जीवन में निराशा और आशाहीनता का उदय।
>
> दूसरा: सामाजिक और राजनीतिक जीवन में सत्यनिष्ठा की मृत्यु।
>
> तीसरा: शत्रुता का प्रेम।
>
> चौथा: उन प्रकाशमान बंधनों को न जानना जो विश्वासियों को एक दूसरे से बांधते हैं।
>
> पांचवां: निरंकुशता, जो धीरे-धीरे फैलती जा रही है, मानो वह विभिन्न संक्रामक रोग हों।
>
> छठा: अपने प्रयासों को केवल व्यक्तिगत लाभ तक सीमित रखना।
>
> मैं छह शब्दों के माध्यम से उस शिक्षा को समझाऊंगा जो मैंने कुरान की फार्मेसी से सीखी है, जो चिकित्सा की एक क्षमता के समान है। यह शिक्षा
> यह हमारे सामाजिक जीवन को उन छह भयंकर बीमारियों से मुक्त करने वाली औषधि है।18

इस स्तर पर, नूरसी अभी भी मुख्य रूप से साम्राज्य की सामाजिक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे। वह समय की सामाजिक समस्याओं की बुराइयों और उपचारों को स्पष्ट करना चाहते थे। उनके प्रसिद्ध दमिश्क उपदेश को दो बार अरबी में छापा गया और बाद में तुर्की में भी पुनः छापा गया। नूरसी ने दमिश्क छोड़ दिया और नए सुल्तान, मेहमद रेसद के साथ उनकी बाल्कन यात्रा में शामिल होने के लिए इस्तांबुल वापस चले गए। मिशन का उद्देश्य अभी भी ओटोमन ध्वज के तहत रहने वाले बाल्कन राष्ट्रों का समर्थन हासिल करना था। हालाँकि यह यात्रा इस मायने में सफल रही कि इसने ओटोमन साम्राज्य की संस्कृति को ताज़ा कर दिया।

पुराने संबंधों को खत्म करने के लिए, प्रथम विश्व युद्ध की आगामी घटनाओं ने अंततः बाल्कन को शेष साम्राज्य से अलग कर दिया। नूरसी के अपने लेख के अनुसार

[16] 1911 में सीरिया ओटोमन साम्राज्य का हिस्सा था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद ओटोमन साम्राज्य के युद्ध हारने के कारण सीरिया अलग हो गया और फ्रांसीसी शासनादेश के अधीन चला गया।

[17] नूरसी ने खुद द रेज में इस घटना की रिपोर्ट दी है और ये आंकड़े दिए हैं। देखें सईद नूरसी, द रेज रेज़ (इस्तांबुल: नेसिल, 2004बी) 1148 पर।

[18] 1961-62 में सईद नर्सी, हुत्बे-ए शामिये (इस्तांबुल: नेसिल, 1994) देखें।

इस बाल्कन यात्रा ने उन्हें मदरसा उज़-ज़हरा (पूर्व में इस्लामी आधुनिक विश्वविद्यालय) के लिए धन जुटाने में मदद की , जिसकी नींव 1848 में रखी गई थी।
अंततः 1913 में वैन में इसकी नींव रखी गई। 1914 में प्रथम विश्व युद्ध छिड़ जाने पर परियोजना को अचानक रोक दिया गया। नूरसी को अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए मिलिशिया में शामिल होना पड़ा।
अपने छात्रों के साथ पूर्वी प्रांतों में गए। अब, उनका मदरसा एक स्कूल और एक सैन्य अड्डा दोनों था। उनके मदरसे में आने वाले आगंतुकों द्वारा बताए गए विवरण बताते हैं कि कैसे किताबें और राइफलें दीवारों पर एक साथ लटकी हुई थीं।19

तमाम राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल के बावजूद नूरसी हमेशा इस्लाम की सच्चाइयों को ताज़ा करना चाहते थे, इस्लाम के दुश्मनों द्वारा फैलाए गए संदेहों को दूर करना चाहते थे।
धर्म का पालन करना, तथा बाह्यवादियों और चरमपंथियों द्वारा शोषण किये जाने वाले भूमिगत भय को दूर करना।20 उन्होंने द वर्ड्स में अपने जीवन के मिशन को स्पष्ट किया:

> एक बार मैंने एक सपना देखा: मैं अरारत पर्वत की तलहटी में था।
>
> अचानक विस्फोट हुआ, जिससे पूरी दुनिया में पहाड़ों के आकार की चट्टानें बिखर गईं, जिससे पूरी दुनिया हिल गई। फिर एक आदमी मेरे पास आया। उसने मुझसे कहा: "कुरान के चमत्कारी पहलुओं को संक्षेप में और संक्षिप्त रूप से समझाओ! मैंने सपने में ही सपने के अर्थ के बारे में सोचा, खुद से कहा:
>
> यहाँ विस्फोट मानव जाति में क्रांति का प्रतीक है। इसके परिणामस्वरूप सत्य और असत्य की कसौटी का मार्गदर्शन सर्वत्र ऊंचा उठेगा, और शासन करेगा। और इसकी चमत्कारिकता को स्पष्ट करने का समय आएगा!21

नूरसी के अनुसार, कुरान की व्याख्या (तफ़सीर) में तीन मुख्य भाग होने चाहिए: (1) वास्तविकता का तत्व (हकीका), (2) बयानबाजी का तत्व (बलागाह), और (3) सिद्धांत का तत्व (अक़ैद)।

नूरसी के शुरुआती लेखन (मुनाज़रत और मुहाक़मत) इस्लाम में वास्तविकता के तत्व पर बहुत ज़ोर देते हैं। नूरसी इस तथ्य से अच्छी तरह वाकिफ़ थे कि इस्लाम इसराइलियत (शुरुआती इस्लामी साहित्य में यहूदी या यहूदी-ईसाई किंवदंतियाँ) और प्राचीन यूनानी दर्शन द्वारा प्रदूषित हो चुका था। यह

बाह्यवादियों के लिए भ्रम की स्थिति पैदा हो गई। उन्होंने यह समझाने की कोशिश की कि आधुनिक विज्ञान और कुरान में कोई विरोधाभास नहीं है।22 कुरान में कुछ अभिव्यक्तियाँ तथ्यात्मक नहीं, बल्कि प्रतिनिधित्वात्मक हैं।

---

[19] साहिनर, बेदिउज़्ज़मान ने नर्सी को अपने अज्ञात पक्षों के साथ कहा: 165 पर उनका कालानुक्रमिक जीवन ।

[20] सुकरान वहीदे, इब्राहिम एम. अबू-रबी, इस्लाम एट द क्रॉसरोड्स: ऑन द लाइफ एंड थॉट देखें बेदिउज़्ज़मान सईद नूरसी (अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस, 2003) 8 पर।

[21] 6 देखें.

[22] सईद नूरसी, द वर्ड्स (इस्तांबुल: नेसिल, 2005) 336 देखें, जहां नूरसी ने लगभग इस्लाम की हकीकत (वास्तविकता) के लिए इस पूरी किताब का इस्तेमाल किया। उदाहरण के लिए, उन्होंने कुछ आयतों की व्याख्या की जैसे

नूरसी ने अल-इशारत अल-इजाज़ (चमत्कार के संकेत) पर काम करना शुरू किया , जो कुरान की चमत्कारिक वाक्पटुता को प्रदर्शित करने के लिए समर्पित है।
1913. 1916 में रूसी सेना द्वारा पकड़े जाने के कारण यह काम कभी भी पूरा नहीं हो सका, जैसा कि उन्होंने सोचा था। नूरसी ने जो दो सौ से ज़्यादा पन्ने लिखे, उनमें उन्होंने अरबी भाषा की कला के बेहतरीन ज्ञान के साथ कुरान की पहली आयतों पर टिप्पणी की। वाहिद ने कुरान के शब्द-क्रम (नज़्म) की व्याख्या करने में नूरसी की सूक्ष्मता के लिए समकालीन विद्वानों की प्रशंसा का वर्णन किया है, जो कि कुछ जगहों पर जुरजानी और ज़माख़शारी जैसे अतीत के महान गुरुओं की सूक्ष्मता से भी बेहतर है।23 युद्ध बंदी के रूप में वोल्गा नदी पर कोस्त्रोमा में लगभग दो साल बिताने के बाद, नूरसी वारसॉ और ऑस्ट्रिया के रास्ते रूस से इस्तांबुल भाग गया।24 चूँकि युद्ध में जर्मनी ओटोमन साम्राज्य का सहयोगी था, इसलिए नूरसी को जर्मनों से कुछ मदद मिली और वह इस्तांबुल वापस आ गया। पुराने सईद काल के अंतिम कुछ वर्षों के दौरान, नूरसी ने कई छोटी किताबें लिखीं: लेमात, इसारत और हुतुवत-ए-सीते। वह मदरसा शिक्षक संघ (1919) के निर्माण में भी शामिल थे, जिसका उद्देश्य मदरसों में शैक्षिक मानकों को बनाए रखना और बढ़ाना था। शराब की लत को फैलने से रोकने के लिए, नूरसी ने ग्रीन क्रिसेंट सोसाइटी (1920) की स्थापना में भाग लिया। जब 1918 में प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हुआ, तो ओटोमन साम्राज्य युद्ध हार चुका था और विदेशी सैनिकों ने उस पर आक्रमण कर दिया था। नूरसी ने आक्रमणकारियों को हटाने और स्वतंत्रता के लिए काम किया। वह अंततः अनातोलिया वापस चले गए और एकांत में चले गए। यह प्रभावी रूप से पुराने सईद युग का अंत और नए सईद की शुरुआत थी।

नया सैद काल (1923-1950)

संक्रमण काल (1916-1923) के दौरान, नूरसी ने कुरान को अपना एकमात्र मार्गदर्शक बनाने और दर्शनशास्त्र के नकारात्मक प्रभाव से खुद को मुक्त करने का निर्णय लिया।
उन्होंने अपनी अल-मथनावी अल-अरबी अल-नूरी लिखना शुरू किया। यह किताब नीत्शे, लैमार्क जैसे लोगों द्वारा समर्थित नास्तिक और भौतिकवादी दर्शन से लड़ने के लिए न्यू सैद के जीवन भर के संघर्ष की पहली किताब थी।

18:86: यहाँ तक कि जब वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ सूरज डूबता है तो उसने देखा कि वह समुद्र में डूब रहा है और उसके पास एक क़ौम को पाया। हमने कहा, "ऐ ज़ुलक़रनैन! या तो उन्हें एक क़ौम दे दो।"
51:48: और धरती को हमने फैला दिया है, फिर हमने उसे कितना अच्छा फैलाया है।

[23] देखें सुकरान वहीदे, सैद नूरसी की बौद्धिक जीवनी की ओर, सैद नूरसी में, मुहाकेमत (द रीज़निंग्स) (इस्तांबुल: नेसिल, 2004सी)।

[24] अबू-रबी, इस्लाम एट द क्रॉसरोड्स: ऑन द लाइफ एंड थॉट ऑफ बेदिउज्जमां सईद नूरसी, पृष्ठ 9.

डार्विन, कॉम्टे, बुचनर आदि। नूरसी के काम (रिसाले-ए नूर संग्रह) के 6,000 पृष्ठों में से ,25 मुख्य भाग 1920 के बाद बनाया गया था। शब्द, अक्षर, चमक, किरणें, साथ ही अल-मथनावी अल-अरबी अल-नूरी, नए सईद युग का फल हैं। सईद नूरसी के रिसाले-ए नूर का वर्णन करते हुए, वाहिद लिखते हैं:

> ... रिसाले-ए-नूर कुरान की व्याख्या है ... जो विश्वास की सच्चाई पर कुरान की शिक्षाओं की व्याख्या करती है, जिसमें पारंपरिक इस्लामी विज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान को शामिल किया गया है, और उन सच्चाइयों को स्थापित करते हुए, भौतिकवादी दर्शन के आधार का प्रभावी ढंग से खंडन किया गया है ... इस्लामी दुनिया में विश्वास के नवीनीकरण के लिए एक अनूठा तरीका है।26

दूसरे शब्दों में, रिसाले-ए-नूर एक कुरानिक व्याख्या (तफ़सीर) है, या कुरान पर एक सामयिक टिप्पणी है, जिसमें एक अद्वितीय, विशिष्ट दृष्टिकोण है। नूरसी ने रिसाले-ए-नूर के मुख्य भाग को कुरान के चार मुख्य उद्देश्यों को साबित करने के लिए समर्पित किया: (1) एकल निर्माता, यानी ईश्वर, या तौहीद का अस्तित्व (2)

नबूवत या नुबुव्वह (3) मृतकों का पुनरुत्थान, या हश्र और (4) न्याय या अदाला।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से यह स्पष्ट है कि नूरसी ने अपना ध्यान सामाजिक मुद्दों से हटाकर दर्शनशास्त्र की ओर क्यों लगाया, और अधिक विशेष रूप से भौतिकवादी दर्शनशास्त्र के खंडन की ओर। मुस्तफा केमल अतातुर्क द्वारा 1923 में तुर्की गणराज्य की घोषणा के साथ, एक नए धर्मनिरपेक्ष देश का जन्म एक धर्मशासित साम्राज्य से हुआ। इस नए शासन ने केमालिस्ट विचारधारा को अपने आधिकारिक राज्य दर्शन के रूप में अपनाया। इस विचारधारा की विशेषता छह सिद्धांत थे: गणतंत्रवाद, लोकलुभावनवाद, राष्ट्रवाद, क्रांतिवाद, धर्मनिरपेक्षता और राज्यवाद।27 अतातुर्क के अनुसार, नए राष्ट्र राज्य की प्रगति को शिक्षा और विज्ञान-आधारित प्रगति द्वारा निर्देशित किया जाना चाहिए जो प्रत्यक्षवाद, तर्कवाद और ज्ञानोदय के सिद्धांतों पर आधारित हो। नए शासन ने 1924 में खिलाफत के कार्यालय को समाप्त कर दिया और खिलाफत के स्थान पर लैटिन वर्णमाला को पेश किया।

अरबी वर्णमाला, जो कई शताब्दियों से प्रयोग में थी।28 इसका आम जनता पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। ऑगस्टे के प्रत्यक्षवादी विचार
कॉम्टे और लुडविग बुचनर तथा अन्य लोगों का भौतिकवाद, जो शुरू में
1900 के आरंभ में धर्मनिरपेक्ष स्कूलों में लोकप्रिय हो गया,29

---

[25] परिशिष्ट 1 देखें: सैद नूरसी के रिसाले-ए नूर संग्रह का कालक्रम और आरेख ।

[26] देखें सुकरान वाहिदे, सैद नूरसी की बौद्धिक जीवनी की ओर, सैद नूरसी, द फ्लैशेस (इस्तांबुल: नेसिल 2004ए) पृष्ठ 708 पर।

[27] अबू-रबी, इस्लाम एट द क्रॉसरोड्स: ऑन द लाइफ एंड थॉट ऑफ बेदिउज्जमां सईद नूरसी, पृ. 1.

[28] देखें डोनाल्ड एवरेट वेबस्टर, द टर्की ऑफ़ अतातुर्क: सोशल प्रोसेस इन द टर्किश रिफ़ॉर्मेशन (1939) पृष्ठ 245.

[29] सुरैया फ़ारूक़ी, 'ओटोमन इतिहास का दृष्टिकोण और स्रोतों का परिचय।'

अब यह नए गणराज्य की आधिकारिक विचारधारा बन गई थी। अरबी प्रार्थना पर प्रतिबंध और टेकके पर प्रतिबंध के साथ इस्लाम को सार्वजनिक जीवन से तुरंत हटा दिया गया। भौतिकवादी दर्शन विकासवादी सिद्धांतों के साथ स्कूली किताबों में शामिल हो गया, जबकि धर्म को पिछड़ापन करार दिया गया। नए शासन के इन चरम कार्यों के खिलाफ एक आम अप्रिय प्रतिक्रिया थी। 1925 के शेख सईद30 विद्रोह के बाद , नूरसी को गिरफ्तार कर लिया गया और जेल भेज दिया गया

हालांकि उन्होंने विद्रोह का विरोध किया, लेकिन बर्दुर में निर्वासन में चले गए। धर्म पर [32] वहां उन्होंने शुरुआत की स्थानीय लोगों के सवालों का जवाब देने के लिए छोटी संधियाँ लिखीं।
बरला में अपने निर्वासन के पहले तीन वर्षों में, उन्होंने द वर्ड्स को पूरा किया।
अगले वर्षों में, उनकी व्यक्तिगत संधियों को एक साथ लाकर दो और पुस्तकें बनाई गईं, द लेटर्स और द फ्लैशेस। चूँकि इन पुस्तकों का मुख्य उद्देश्य लोगों में इस्लामी आस्था को पुनर्जीवित करना था, इसलिए नूरसी जल्द ही शासन का दुश्मन बन गया। उसे बारला33 के एक सुदूर गाँव में रखने का राज्य का निर्णय स्पष्ट रूप से काम नहीं आया, क्योंकि वह एक बड़े दर्शक वर्ग को इकट्ठा करने और अपनी संधियों को फैलाने में कामयाब रहा, अनुयायियों की बदौलत जो उन्हें हाथ से कॉपी करते थे।

नूरसी को एक बार फिर बुलाया गया और 1934 में इस्पार्टा में एक और निर्वासन में स्थानांतरित कर दिया गया। हालाँकि उनकी शिक्षाएँ राजनीतिक नहीं थीं, लेकिन उनकी धार्मिक सामग्री के कारण उन्होंने केमालिस्ट शासन को बहुत नाराज़ किया। निर्माता (ईश्वर) की एकता, पैगंबरी, पुनरुत्थान और कुरान की चमत्कारिकता -

ये ऐसे विषय थे जो केमालिस्ट शासन को बिल्कुल पसंद नहीं थे। केमालिस्ट शासन का उद्देश्य सार्वजनिक जीवन से इस्लाम और उसके मूल्यों को मिटाना और तुर्की में एक नई पश्चिमी, धर्मनिरपेक्ष और भौतिकवादी जीवन शैली को बढ़ावा देना था। 1935 में, नूरसी और
उनके 120 छात्र

---

[30] सईद नूरसी और शेख सईद दोनों ही लोकप्रिय कुर्द व्यक्तित्व थे, लेकिन उन्हें एक साथ नहीं जोड़ा जाना चाहिए। शेख सईद ने कुर्द स्वतंत्रता हासिल करने के लिए नवगठित तुर्की गणराज्य के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया। कुर्द विद्रोहियों (15,000-मजबूत) को लगभग पचास हज़ार तुर्की सैनिकों ने कुचल दिया। शेख सईद को पकड़ लिया गया और मार डाला गया।

[३१] एम. सुकरु हानियोग्लु, डॉ. अब्दुल्ला सेवडेड को एक राजनीतिक विचारक और उनके काल (इस्तांबुल) के रूप में देखें
बुल) 370-72 पर।

[32] जब नूरसी को विद्रोह में आमंत्रित किया गया तो उन्होंने जवाब दिया: "तुर्की राष्ट्र ने सदियों से इस्लाम के ध्वजवाहक के रूप में काम किया है। इसने कई संतों को जन्म दिया है और कई शहीद दिए हैं।
ऐसी जाति के बेटों पर तलवार नहीं चलाई जानी चाहिए। हम मुसलमान हैं, हम उनके भाई हैं, और हम भाई को भाई से नहीं लड़वा सकते। शरिया के अनुसार यह जायज़ नहीं है। तलवार बाहरी दुश्मनों के खिलाफ़ खींची जानी चाहिए; इसका इस्तेमाल अंदर नहीं किया जाना चाहिए। इस समय हमारा एकमात्र उद्धार कुरान और ईमान की सच्चाइयों के ज़रिए रोशनी और मार्गदर्शन देना है; यह हमारे सबसे बड़े दुश्मन, अज्ञानता से छुटकारा पाना है। अपना यह प्रयास छोड़ दो, क्योंकि यह निष्फल होगा। कुछ डाकुओं की वजह से हज़ारों निर्दोष पुरुष और महिलाएँ मर सकते हैं।"

[33] उस समय बरला, एगिरदिर झील के दूसरी तरफ एक बहुत छोटा अलग-थलग गाँव था। अपनी किताब तारिहचे-ए हयाती (नूरसी की जीवनी) में, नूरसी ने बताया है कि कैसे एक छोटी नाव ने उन्हें झील के पार बरला पहुँचाया, क्योंकि वहाँ तक पहुँचने के लिए कोई सड़क नहीं थी।

उन्हें गिरफ्तार किया गया और उन पर "सुधारों का विरोध करने और एक गुप्त राजनीतिक संगठन से संबंधित होने ... राजनीतिक उद्देश्यों के लिए धर्म का शोषण करने,
एक ऐसा संगठन जो सार्वजनिक व्यवस्था और सूफीवाद की शिक्षा देने के लिए संभावित खतरा बन सकता है।"34 अदालत ने उनके 97 छात्रों को बरी कर दिया लेकिन ड्रेस कोड के विरोध के आधार पर नूरसी को ग्यारह महीने जेल की सजा सुनाई।35 इस्कीशेहर में अपनी सजा काटने के बाद नूरसी को कस्तमोनू में निर्वासित किया जाना था। कस्तमोनू निर्वासन के दौरान, उन्होंने द सुप्रीम साइन और द रेज़ के कुछ हिस्से लिखे। उन्हें एक बार फिर उनके 126 छात्रों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया और डेनिज़ली भेज दिया गया। इस्कीशेहर मुकदमे में इस्तेमाल किए गए आरोपों के समान ही उनके खिलाफ आरोप लगाए गए, लेकिन नूरसी और उनके सभी छात्रों को बरी कर दिया गया और रिसाले-ए नूर को मंजूरी दे दी गई। हालांकि, लगभग नौ महीने तक चले मुकदमे के दौरान, उन्हें डेनिज़ली जेल में कठोर परिस्थितियों में रखा गया था।

इस कठिन समय के दौरान जेल में ही ' फ़्रूट्स ऑफ़ बिलीफ़' लिखा गया। नूरसी को एमिरदाग में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा, जहाँ 1947 तक रिसाले-ए-नूर का काम पूरा हो गया।
नूरसी को एक बार फिर हिरासत में लिया गया और अफ्योन जेल भेज दिया गया, जहां उसे पहले भी उसी आरोप में बीस महीने और जेल में रहना पड़ा।
हालाँकि उन्हें और रिसाले-ए-नूर को एक बार फिर से बरी कर दिया गया था, लेकिन उन्हें यथासंभव लंबे समय तक जेल में रखने के लिए प्रक्रिया जानबूझकर धीमी थी। अब, नूरसी की उम्र सत्तर साल से अधिक थी, और निर्वासन और जेल में रहने की अवधि के कारण उनका स्वास्थ्य बहुत खराब था। उनके छात्रों के अनुसार, शासन जानबूझकर उन्हें जहर देकर और जेल की कोठरी में अत्यधिक ठंड के संपर्क में लाकर मारने की कोशिश कर रहा था।36 नए

1950 तक मुस्तफा कमाल अतातुर्क और उनकी रिपब्लिकन पीपुल्स पार्टी (RPP)37 द्वारा राज्य चलाया गया। आधुनिक तुर्की के इतिहास में यह 27 साल का काल, जिसे एकल-दलीय काल के रूप में जाना जाता है, अभी भी बहुत विवादास्पद है। कुछ लोगों के लिए, यह एक क्रूर तानाशाही थी, दूसरों के लिए, यह एक नया राज्य स्थापित करने की दिशा में एक आवश्यक कदम था। यह एक ऐसा दौर था जब दर्शन-आधारित विचारधाराएँ राजनीतिक प्रणालियों में तेज़ी से प्रभावशाली होती जा रही थीं

---

[34] सुकरान वाहिदे, सैद नूरसी के जीवन का कालक्रम, रॉबर्ट डब्ल्यू. ओल्सन, द इमर्जेंस ऑफ कुर्दिश नेशनलिज्म एंड द शेख सईद रिबेलियन, 1880-1925 (ऑस्टिन: यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास प्रेस, 1989) देखें।

[35] अतातुर्क ने 1925 में नया ड्रेस कोड लागू किया, जिसके तहत टोपी पहनना अनिवार्य कर दिया गया। टोपी पहनने से इनकार करने वाले को कड़ी सज़ा दी जाती थी।

[36] अबू-रबी, इस्लाम एट द क्रॉसरोड्स: ऑन द लाइफ एंड थॉट ऑफ बेदिउज्जमां सईद देखें
नूरसी xxi पर.

[37] रिपब्लिकन पीपुल्स पार्टी की स्थापना 9 सितंबर 1923 को अतातुर्क ने की थी। 1950 के आम चुनाव तक यह विपक्ष रहित एकमात्र पार्टी थी। पार्टी की विचारधारा केमलिज्म और सामाजिक लोकतंत्र है।

और जब इस्लामी समाजों में इस्लामी सभ्यता के पूरे इतिहास में सबसे क्रांतिकारी परिवर्तन हुए।38

अपने जबरन निर्वासन के कारण, नूरसी ने अपने छात्रों के करीबी सर्कल के बाहर शायद ही कभी लोगों से संपर्क किया हो। उनके संचार का मुख्य साधन उनके पत्र और संधियाँ थीं। अपने जीवन की दूसरी अवधि (न्यूयॉर्क) के दौरान

सईद काल) में उन्होंने अपने न्यायालय के बचाव के अलावा शायद ही कोई सार्वजनिक भाषण दिया हो। इसलिए, उनके पास अपने नेतृत्व और करिश्मे के बजाय रिसाले-ए-नूर को बढ़ावा देने का एकमात्र विकल्प था। कई मौकों पर, उन्होंने खुद को इसके लेखक के बजाय ' रिसाले-ए-नूर का छात्र' कहा। 1926 से, नूरसी ने अपने रिसाले-ए-नूर के बड़ी संख्या में अनुयायियों का निर्माण करना शुरू कर दिया, जिसे सामूहिक रूप से रिसाले-ए-नूर आंदोलन या नूरकस कहा जाता था। हालाँकि नए शासन ने लैटिन के पक्ष में अरबी वर्णमाला के उपयोग को समाप्त कर दिया, नूरसी

उन्होंने अपनी संधियाँ और पत्र ओटोमन वर्णमाला (अरबी) का उपयोग करके लिखे, जिससे वे आम जनता के लिए आसानी से समझ में आ गए। यहाँ, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि रिसाले-ए-नूर को आधुनिक लैटिन वर्णमाला में ही छापा गया था।

1956 में, अफ्योन कोर्ट द्वारा इसके खिलाफ लगाए गए सभी आरोपों को खारिज कर दिया गया। खास तौर पर सूफी टेक और मदरसों पर प्रतिबंध के बाद, जनता ने एक शून्यता और मार्गदर्शन की कमी का अनुभव किया। रिसाले-ए नूर ने इस कमी को पूरा किया और इसे व्यापक रूप से स्वीकार किया गया और इसके पाठ को इस्पार्टा और उसके आसपास के लोगों द्वारा पुनरुत्पादित किया गया।

रिसाले -ए नूर (प्रकाश के पत्र)

नूरसी के अनुसार, रिसाले-ए-नूर, चौदह पुस्तकों का एक संग्रह है और
कुरान से सीधे प्रेरित39 कुरान के अर्थों (तफ़सीर मनवी) पर सच्ची टिप्पणी है।40 अल-इशरत अल-इजाज़ में , नूरसी ने चार मुख्य उद्देश्यों (मकसद-ए-अरबा) पर प्रकाश डाला है , जिन्हें कुरान ने स्पष्ट किया है। ये हैं: ईश्वर की एकता या एकता (तौहीद), पैगंबरी की प्रकृति और आवश्यकता (नुबुव्वा), मृतकों का पुनरुत्थान (हश्र), और न्याय और पूजा (अदला और इबादत)।41 कुरान द्वारा इन चार तत्वों की व्याख्या को स्पष्ट करने के लिए, नूरसी ने अपने लेखन में कुछ विषयों की व्याख्या की है। टर्नर और होर्कुच का तर्क है कि इनमें से छह अलग-अलग विषय नूरसी के लेखन में दिखाई देते हैं।42

---

[38] अहमत दाउतोग्लू, "बेदीउज्जमान और 20वीं सदी की राजनीति" देखें, जो www.nur.org/en/nurcenter/nurlibrary/ Bediuzzaman_and_the_Politics_of_the_20th_ पर उपलब्ध है। सेंचुरी_198 को आखिरी बार 25 अक्टूबर 2014 को एक्सेस किया गया था।

[39] साहिनर, बेदिउज्जमान ने नर्सी को अपने अज्ञात पक्षों के साथ कहा: उनका कालानुक्रमिक जीवन।

[40] नूरसी, द लेटर्स, पृष्ठ 439.

[41] वही, पृ. 512.

[42] सईद नूरसी, चमत्कार के संकेत (इस्तांबुल: नेसिल, 2004d) 1167 पर।

i. ब्रह्मांड की पुस्तक (किताब-ए-कैनात) और ईश्वर के सुंदर नाम (अल-अस्मा अल-हुस्ना)

रिसाले-ए-नूर में नूरसी ने ब्रह्मांड को ईश्वर द्वारा लिखी गई एक किताब बताया है। उन्होंने बताया कि, एक दर्पण की तरह, ब्रह्मांड अपने निर्माता के सभी अलग-अलग सुंदर नामों और गुणों को दर्शाता है ।43

नूरसी, सभी प्राणियों को एक उद्देश्य के लिए बनाया गया है और वे अल्लाह की निशानियाँ (आयत) हैं।
इसलिए, मनुष्य के निर्माण का उद्देश्य ईश्वर में विश्वास प्राप्त करना है, जो ब्रह्मांडीय सिद्धांत की सही व्याख्या करके प्राप्त किया जा सकता है ।
आख्यान।

ii. स्वयं, या मानव 'मैं' (अना)

नर्सी के अनुसार, अना मनुष्य को उसके निर्माता द्वारा दिया गया भरोसा है। अना का पहला कार्य ईश्वर के सुंदर नामों को समझना है। दूसरा, अना
मनुष्य को दी गई एक कुंजी है जिससे वह सृष्टि के रहस्य को खोल सकता है। एना, मानव 'मैं', मनुष्य को दिया गया एक तुलना उपकरण है ताकि वह देख सके कि ईश्वर कहाँ खड़ा है और वह कहाँ खड़ा है। एना रिसालेसी (तीसवाँ शब्द) में , नर्सी

लिखते हैं:

> सर्वज्ञ निर्माता ने मनुष्य को एक ट्रस्ट के रूप में एक 'मैं' दिया है जिसमें संकेत और नमूने शामिल हैं जो दिखाते हैं और सच्चाई को पहचानने का कारण बनते हैं
> उनके प्रभुत्व (रुबुबियाह) के गुण और कार्य , ताकि 'मैं' माप की एक इकाई हो सके और प्रभुत्व के गुण और दिव्यता के कार्य ज्ञात हो सकें। हालाँकि, माप की इकाई का वास्तविक अस्तित्व होना आवश्यक नहीं है; ज्यामिति में काल्पनिक रेखाओं की तरह, माप की इकाई परिकल्पना और अनुमान द्वारा बनाई जा सकती है। यह नहीं है
>
> इसके वास्तविक अस्तित्व को ठोस ज्ञान द्वारा स्थापित किया जाना आवश्यक है और
> प्रमाण.45

iii. 'स्व-संदर्भित' और 'अन्य-संकेतक' (मा'ना-इ इस्मी, और
मन-ए-हरफ़ी)

जीवन के अर्थ और ब्रह्मांड की प्रकृति को समझने में सहायता के लिए, नूरसी ने मान-ए-इस्मी (वस्तुओं का सांकेतिक या आत्म-संदर्भित अर्थ) और मान-ए-हर्फी (अन्य-संकेतक अर्थ) की अवधारणाओं को प्रस्तुत किया।

वह बताते हैं कि ब्रह्मांड और जीवन को केवल मान-ए-हर्फ़ी46 (अर्थात् वह अर्थ जो ब्रह्मांड को दर्शाता है) के झरोखे से ही सही ढंग से समझा जा सकता है।

---

[43] नूरसी ने हदीस में सूचीबद्ध ईश्वर के शास्त्रीय 99 सुंदर नामों से भी अधिक का उल्लेख किया है ।

[44] यह विशेष विषय ईश्वर के अस्तित्व के लिए तर्क देने का नूरसी का पहला तरीका भी है, अर्थात ईश्वर का अस्तित्व।
टेलियोलॉजिकल (डिज़ाइन) तर्क, जो अध्याय 3 का केन्द्रबिन्दु विषय है।

[45] कॉलिन टर्नर और हसन होरकुक, सईद नर्सी (लंदन, न्यूयॉर्क: आईबी टॉरिस 2009) पृष्ठ 53.

[46] नूरसी 26वें वचन के परिशिष्ट में लिखते हैं: "के स्पष्ट अर्थ के अनुसार
चीजें (मान-इ-इस्मि), जो प्रत्येक चीज़ को स्वयं देखती है, सब कुछ क्षणभंगुर है, अभावग्रस्त है,

खुद से अलग कुछ)। अल-इशरत अल-इजाज में, वह बताते हैं कि कुरान प्राणियों का उल्लेख 'अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरे के लिए' करता है। यानी, यह ब्रह्मांड को सर्वशक्तिमान ईश्वर के अस्तित्व, एकता और उदात्तता के प्रमाण के रूप में बताता है।47 पुनरुत्थान पर दसवें वचन से यह स्पष्ट है कि नूरसी अपने तर्कों को मुख्य रूप से ब्रह्मांड में व्यवस्था, सभी प्राणियों में उद्देश्य और ब्रह्मांड में अपशिष्ट की अनुपस्थिति जैसे तथ्यों पर आधारित करते हैं। धर्म के दर्शन में ये दो प्रसिद्ध आस्तिक तर्क हैं, ब्रह्माण्ड संबंधी तर्क और उद्देश्य संबंधी तर्क, जिसे डिजाइन से तर्क के रूप में भी जाना जाता है, जिसकी जांच अगले अध्यायों में की जाएगी।

iv. कार्य-कारण

नूरसी अपने पाठकों को यह समझाने की पूरी कोशिश करते हैं कि ईश्वर से स्वतंत्र कारण और प्रभाव के बीच कोई आवश्यक संबंध नहीं है। वैज्ञानिक भौतिकवाद, जिसे नूरसी मानव जाति के लिए सबसे बड़ा खतरा मानते हैं, का दावा है कि जो कुछ भी वास्तव में अभी हो रहा है उसका प्रभावी कारण पिछले कारणों का संयुक्त परिणाम है। उदाहरण के लिए, जब एक जलती हुई माचिस किसी वस्तु को छूती है

सूखे कागज़ पर माचिस की तीली से लगी आग के कारण कागज़ जल जाता है। नूरसी अशरी के कार्य-कारण के दृष्टिकोण को बनाए रखते हुए प्रतीत होते हैं, जिसका समर्थन अल-ग़ज़ाली ने भी किया था। अशरी-अल-ग़ज़ाली की विचारधारा यह बताती है कि कागज़ के टुकड़े के जलने का वास्तविक कारण माचिस नहीं बल्कि ईश्वर है

नए प्रभाव को साकार करने के लिए परिस्थितियों का एक नया सेट बनाना। ईश्वर सभी कारणों (मुसब्बिब अल-अस्बाब) का निर्माता है ।

नूरसी बताते हैं कि लोग प्रकृति और प्राकृतिक घटनाओं को कारणता के संदर्भ में गलत समझते हैं। वह बताते हैं कि ईश्वर पूर्ण और निरंतर निर्माता है।

नूरसी के अनुसार, सृजन के दो प्रकार हैं। ये हैं इब्दा (शून्य से सृजन) और इंशा (मौजूदा सामग्री से क्रमिक निर्माण)। द फ्लैशेस में, नूरसी लिखते हैं:

आकस्मिक, अस्तित्वहीन। लेकिन उस अर्थ के अनुसार जो स्वयं के अलावा किसी और चीज़ को सूचित करता है (मान-ए-हर्फ़ी) और प्रत्येक चीज़ के संबंध में जो कि सर्वशक्तिमान निर्माता के नामों का दर्पण है और विभिन्न कर्तव्यों का पालन करता है, प्रत्येक एक साक्षी है, यह देखा गया है, और यह अस्तित्व में है।

इस स्तर पर व्यक्ति की शुद्धि और सफाई इस प्रकार होती है:

अपने अस्तित्व में वह अस्तित्वहीन है, और अपने अस्तित्वहीन होने में उसका अस्तित्व है। यानी, अगर वह खुद को महत्व देता है और खुद को अस्तित्व का श्रेय देता है, तो वह ब्रह्मांड जितना ही बड़ा अस्तित्वहीन अंधकार में है। यानी, अगर वह अपने व्यक्तिगत अस्तित्व पर भरोसा करता है और अस्तित्व के सच्चे दाता के बारे में बेखबर है, तो उसके पास जुगनू की तरह अस्तित्व का एक अलग प्रकाश है और

वह अस्तित्वहीनता और अलगाव के अंतहीन अंधकार में डूबा हुआ है। लेकिन अगर वह अहंकार को त्याग देता है और देखता है कि वह अस्तित्व के सच्चे दाता की अभिव्यक्तियों का दर्पण है, तो वह सभी प्राणियों और अनंत अस्तित्व को प्राप्त करता है। क्योंकि जो उस अनिवार्य अस्तित्व को पा लेता है, जिसके नामों की अभिव्यक्ति से सभी प्राणी प्रकट होते हैं, वह सब कुछ पा लेता है।”

[47] देखिये नूरसी, द वर्ड्स, पृष्ठ 241.

> प्राणियों का निर्माण दो तरीकों से होता है: एक है शून्य से सृजन जिसे उत्पत्ति और आविष्कार कहते हैं; और दूसरा है अस्तित्व में मौजूद तत्वों और चीजों को एक साथ लाकर अस्तित्व देना, जिसे संयोजन और संयोजन कहते हैं। जब दिव्य एकता और दिव्य एकता के रहस्य की अभिव्यक्ति के अनुसार, यह असीम आसानी से होता है, वास्तव में, इतनी आसानी से कि यह आवश्यक है। यदि इसे दिव्य एकता के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो यह असीम रूप से कठिन और तर्कहीन होगा, असंभवता की हद तक कठिन होगा।
>
> तथापि, यह तथ्य कि ब्रह्माण्ड में सभी प्राणी असीम सरलता और सुविधा के साथ, बिना किसी कठिनाई के, तथा पूर्ण रूप में अस्तित्व में आते हैं, स्वयंसिद्ध रूप से ईश्वरीय एकत्व की अभिव्यक्ति को दर्शाता है तथा सिद्ध करता है कि सब कुछ प्रत्यक्षतः महिमावान एक की कला है।48

नूरसी के अनुसार, परीक्षण (सिर्र-इ टेक्लिफ) के तत्व को बनाए रखने के लिए , ईश्वर अपनी वास्तविक शक्ति और महिमा को छिपाने के लिए कारणों का उपयोग करता है, लेकिन वह लोगों से यह समझने की अपेक्षा करता है कि वह उन घटनाओं का पूर्ण निर्माता और नियंत्रक है, जिन्हें वैज्ञानिक भौतिकवाद अन्यथा समझाता है।49

विश्वास और समर्पण (ईमान-इस्लाम)

नर्सी के अनुसार, मानवता का सच्चा उद्धार केवल विश्वास और समर्पण के बीच एक सही संतुलन के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए, मनुष्य को जांच और अनुसंधान के माध्यम से सच्चा विश्वास प्राप्त करने की आवश्यकता है।

रिसाले -ए नूर में नूरसी अपने पाठकों को ईमान-ए-तकलीदी (अनुकरण के माध्यम से विश्वास) से ईमान-ए-तहकीकी (जांच के माध्यम से विश्वास) की ओर ले जाने का प्रयास करते हैं।

वैज्ञानिक भौतिकवाद के खतरे से अवगत, नूरसी ने विज्ञान और प्रकृति के विपरीत विषय को विकसित किया है, जिसके अनुसार विज्ञान और प्रकृति अपने निर्माता के प्रमाण हैं।

सृष्टि के बंद दरवाजे

आखिरी विषय जिस पर नूरसी ने विस्तार से चर्चा की है, वह है 'सृष्टि के बंद दरवाजे', जो कि एना (मानव 'मैं') के दूसरे विषय से बहुत करीब से जुड़ा हुआ है। द वर्ड्स में, नूरसी बताते हैं:

> संसार की चाबी मनुष्य के हाथ में है और वह उसके स्वयं से जुड़ी हुई है। क्योंकि ब्रह्मांड के द्वार खुले हुए प्रतीत होते हुए भी वास्तव में बंद हैं। ईश्वर
> परमात्मा ने मनुष्य को एक ट्रस्ट के माध्यम से एक ऐसी कुंजी दी है, जिसे 'मैं' कहते हैं, जो संसार के सभी द्वार खोल देती है; उसने उसे एक रहस्यमय 'मैं' दिया है, जिसके द्वारा संसार के सभी द्वार खुल जाते हैं।
> ताकि वह ब्रह्मांड के निर्माता के छिपे हुए खजानों की खोज कर सके। लेकिन
> 'मैं' भी एक अत्यंत जटिल पहेली और रहस्य है

---

[48] नूरसी, चमत्कार के संकेत.

[49] द वर्ड्स में , नूरसी लिखते हैं: हाँ, गरिमा और भव्यता की मांग है कि कारण मन की दृष्टि में शक्ति के हाथ के लिए एक पर्दा हैं, जबकि दिव्य एकता और महिमा की मांग है कि कारण अपने हाथ वापस ले लें और कोई सच्चा प्रभाव न डालें। नूरसी, द फ्लैशेस 808 देखें।

> जिसे सुलझाना कठिन है। जब इसका वास्तविक स्वरूप और इसके निर्माण का उद्देश्य ज्ञात हो जाएगा, तो जैसे-जैसे इसका समाधान होगा, वैसे-वैसे ब्रह्मांड भी हल हो जाएगा।50

नूर्सियन दृष्टिकोण यह है कि मानव अस्तित्व का उद्देश्य जीवन और ब्रह्मांड की जांच और अन्वेषण करना है ताकि सच्चे विश्वास (ईमान-ए-तहकीकी) को प्राप्त करने के लिए सृष्टि के द्वार खोलने का प्रयास किया जा सके।51

नर्सी की शैली

नूरसी ने द वर्ड्स में संधियों को बहुत ही सरल भाषा में लिखा है।
उन पाठकों के लिए संदर्भ को स्पष्ट करने हेतु रूपक का प्रयोग किया गया जो उच्च शिक्षित नहीं थे।
फिर, वह रूपक के माध्यम से सच्चाई को उजागर करता है। निर्माता के प्रमाण के रूप में, नूरसी दो लोगों की कहानी बताता है जो एक देश से होकर यात्रा कर रहे हैं। एक व्यक्ति खाली दिमाग वाला है और नास्तिक दर्शन का प्रतिनिधित्व करता है, और दूसरा बुद्धिमान है और आस्तिक दर्शन का प्रतिनिधित्व करता है। देवता को अस्वीकार करने वाले खाली दिमाग वाले व्यक्ति को, बुद्धिमान व्यक्ति उत्तर देता है:

> हर गांव का मुखिया होना चाहिए; हर सुई का निर्माता और कारीगर होना चाहिए। और, जैसा कि आप जानते हैं, हर पत्र किसी न किसी के द्वारा लिखा जाना चाहिए।
> फिर, ऐसा कैसे हो सकता है कि इतने सुव्यवस्थित राज्य का कोई शासक न हो? और इतनी सारी दौलत का कोई मालिक कैसे नहीं हो सकता, जबकि हर घंटे एक रेलगाड़ी आती है जो कीमती और कलात्मक उपहारों से भरी होती है, मानो अदृश्य के दायरे से आ रही हो? और सभी घोषणाएँ और उद्घोषणाएँ, सभी मुहरें और टिकटें, उन सभी वस्तुओं पर पाई जाती हैं, सभी सिक्के और हर जगह लहराते झंडे
>
> राज्य के कोने-कोने में - क्या वे बिना मालिक के हो सकते हैं? ऐसा लगता है कि आपने विदेशी भाषाओं का थोड़ा-बहुत अध्ययन किया है, और आप इस इस्लामी लिपि को पढ़ने में असमर्थ हैं। इसके अलावा, आप उन लोगों से पूछने से इनकार करते हैं जो इसे पढ़ने में सक्षम हैं। अब आओ; मैं आपको राजा का सर्वोच्च आदेश पढ़कर सुनाता हूँ।

कार्यप्रणाली के संदर्भ में, नूरसी की शैली प्लेटो से मिलती जुलती है। कानूनों में, प्लेटो ने दो काल्पनिक पात्रों, क्लेनिआस और एथेनियन स्ट्रेंजर का उपयोग विरोधी विचारों को दर्शाने के लिए किया है। इसी तरह, ह्यूम ने अपने डायलॉग्स कंसर्निंग नेचुरल रिलिजन में, ब्रह्मांडीय आस्तिक, प्रयोगात्मक आस्तिक और दार्शनिक का प्रतिनिधित्व करने के लिए डेमिया, क्लेंथेस और फिलो के मुंह से बात की है।

संशयवादी.

नूरसी ने दर्शनशास्त्र (फाल्सफा) शब्द का प्रयोग निंदात्मक अर्थ में किया है, जिसका अर्थ है
नकारात्मक दर्शन (अर्थात भौतिकवादी, प्रकृतिवादी और नास्तिक)।

---

[50] नूरसी, द वर्ड्स 122.
[51] टर्नर और होर्कुच इन विषयों पर अधिक विस्तार से चर्चा करते हैं। देखें ibid., 241 पर।
[52] टर्नर और होर्कुक, सईद नूरसी 53-84 पर।

इस दर्शन को बदनाम करने के लिए, वह कुरान से बात करता है। वह कभी भी 'नास्तिक दर्शन' या 'आस्तिक दर्शन' जैसे शब्दों का इस्तेमाल नहीं करता। वह अक्सर फ़लसफ़ा (दर्शन) और कुरान के बीच टकराव पेश करता है।

तीसरा सैद काल (1950-1960)

आधुनिक तुर्की के इतिहास में शायद सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक 1950 में रिपब्लिकन पीपुल्स पार्टी (RPP) के 27 साल के एकदलीय शासन के बाद इसका पहला लोकतांत्रिक, बहुदलीय चुनाव था। अब, विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी (DP) को RPP को चुनौती देने की अनुमति दी गई और उसने भारी मतों से चुनाव जीता।53 DP की पहली कार्रवाइयों में से एक था, संविधान की धारा 123 को हटाना।

अरबी में प्रार्थना के लिए बुलाए जाने पर प्रतिबंध। यह स्पष्ट रूप से धर्म-विरोधी उत्पीड़न को समाप्त करने के मामले में एक बड़ा सकारात्मक कदम था। हालाँकि डीपी ने तुर्की में लोकतंत्र में गंभीरता से सुधार किया, लेकिन सरकारी अभियोजक, दंड संहिता के पुराने अनुच्छेद 163 को दिखाते हुए,54 अभी भी नूरसी के खिलाफ आरोप लगाने के लिए स्वतंत्र थे। वास्तव में, 1991 में दंड संहिता से अनुच्छेद 163 को हटाए जाने तक रिसाले-ए नूर और नूरकस के खिलाफ आरोप लगते रहे। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लोकतंत्र की ओर बदलाव और साम्यवादी रूस के उदय ने नूरसी को साम्यवाद के आसन्न खतरे से लड़ने के लिए रिसाले-ए नूर को बढ़ावा देने का अवसर दिया । नूरसी ने नास्तिकता को आम तौर पर देखा

सभी एकेश्वरवादी धर्मों के दुश्मन। 1953 में, उन्होंने ग्रीक ऑर्थोडॉक्स पैट्रिआर्क से मुलाकात की और आक्रामक के खिलाफ ताकतों को एकजुट करने पर अपने विचार पेश किए
नास्तिकता.55

नूरसी के जीवन में एक और महत्वपूर्ण मोड़ 1956 में रिसाले-ए-नूर को अदालत द्वारा बरी किया जाना था, जिसके परिणामस्वरूप अंकारा और इस्तांबुल दोनों में लैटिन वर्णमाला में सामूहिक रूप से मुद्रित और प्रतियाँ बनाई गईं। नूरसी ने इसे " रिसाले-ए-नूर उत्सव" कहा।56 उन्होंने कहा, 'अब से, मुझे किसी भी तरह की ज़रूरत नहीं है।

रिसाले-ए-नूर की सेवा में काम करना । यानी रिसाले-ए-नूर और उसके छात्र मेरे कर्तव्यों का पालन करेंगे।''57

---

[53] 1950 के चुनावों के नतीजे इस प्रकार थे: डेमोक्रेट पार्टी: 52.68% (415 सीटें), रिपब्लिकन पीपुल्स पार्टी: 39.45% (69 सीटें).

[54] पुराने तुर्की दंड संहिता के अनुच्छेद 163 को 1991 में हटा दिया गया था, जो राजनीतिक रूप से गैरकानूनी था धार्मिक गतिविधियों को प्रेरित किया और इस्लामी गणराज्य बनाने के उद्देश्य से धार्मिक संगठनों और राजनीतिक दलों की स्थापना पर प्रतिबंध लगा दिया।

[55] नूरसी के मुस्लिम-ईसाई संवाद के मुद्दे पर, देखें नूरसी, द वर्ड्स, पृष्ठ 20.

[56] सुकरान वाहिदे, सैद नूरसी के जीवन का कालक्रम देखें ज़ेड. सरितोप्राक में, 'सैद नूरसी मुस्लिम-ईसाई संबंधों पर विश्व शांति की ओर अग्रसर', इस्लाम और ईसाई मुस्लिम संबंध, 19/1 (2008), 25-37, 25-37 पर।

[57] अबू-रबी, इस्लाम एट द क्रॉसरोड्स: ऑन द लाइफ एंड थॉट ऑफ बेदिउज्जमां सईद नूरसी , तेईस.

अपने जीवन के अंतिम कुछ वर्षों में नूरसी एक स्वतंत्र व्यक्ति थे; उनके विचार और पुस्तकें सभी के लिए स्वतंत्र रूप से उपलब्ध थीं, और उनके हजारों अनुयायी थे।
उन्होंने उन जगहों की यात्रा की जो उनके जीवन की महत्वपूर्ण यादों से जुड़ी थीं। 1960 में वे पूर्वी तुर्की के उरफा पहुंचे, जहां 83 साल की उम्र में अपने होटल के कमरे में बुढ़ापे में शांतिपूर्वक उनकी मृत्यु हो गई।

निष्कर्ष

नूरसी तुर्की इतिहास के तीन विशिष्ट कालखंडों में रहे, जिनमें
उनके जीवन दर्शन पर इसका प्रभाव पड़ा। ओटोमन साम्राज्य के अंतिम कुछ दशकों के दौरान, वह मुख्य रूप से गिरते साम्राज्य को बचाने के बारे में चिंतित थे।
'बीमार आदमी' के नाम से प्रसिद्ध ओटोमन साम्राज्य अन्य देशों के निशाने पर रहा था।
साम्राज्यवादी राज्य इसे दुनिया के कई हिस्सों में अपने विस्तार के लिए एक बड़ा खतरा मानते थे। यह मुख्य रूप से इस तथ्य के कारण था कि ओटोमन सुल्तान मुसलमानों के आधिकारिक प्रमुख खलीफा का पद भी संभालते थे।
उपनिवेशों के लिए ब्रिटिश सचिव, ग्लेडस्टोन ने कुरान के खिलाफ खुलेआम युद्ध की घोषणा की,

उन्होंने कहा कि यही ब्रिटिश साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं के लिए मुख्य बाधा थी।58 नूरसी के विचारों ने यहीं से पहला मोड़ लिया। उन्होंने खुद को सभी अधिकार प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध किया।
कुरान को समझने और उसकी सच्चाई को साबित करने के लिए उपलब्ध ज्ञान। ओल्ड सईद काल, जो ओटोमन साम्राज्य के अंतिम वर्षों के साथ मेल खाता है,
नूरसी का यह राजनीतिक रूप से सबसे सक्रिय दौर था। वे सुधार की वकालत कर रहे थे
शिक्षा प्रणाली जो साम्राज्य के पतन को रोकने में मदद करेगी और इसके अलावा अन्य सामाजिक मुद्दों को हल करेगी।

साम्राज्य के पतन के साथ, नूरसी ने भौतिकवादी दर्शन से लड़ने का रुख किया जो नए तुर्की साम्राज्य की आधिकारिक विचारधारा बन गई है।
रिसाले-ए-नूर में यह स्पष्ट है कि द वर्ड, द लेटर्स और द फ्लैशेस जैसी रचनाओं में नास्तिकता के कलैम-शैली के खंडन की ओर एक बड़ा बदलाव है , जो सभी केमालिस्ट तुर्की के शुरुआती वर्षों के दौरान लिखे गए थे।

नूरसी ने धर्मनिरपेक्षता पर आपत्ति नहीं जताई, क्योंकि वह इसे आस्था की स्वतंत्रता की गारंटी मानते थे; हालाँकि, वह भौतिकवाद और मुख्य रूप से मुस्लिम जनता पर इसके नकारात्मक प्रभावों से गंभीर रूप से चिंतित थे। उन्होंने कलाम का एक अनूठा तरीका विकसित किया, जहाँ उन्होंने कुरान के बारे में संदेह के सवाल को संबोधित करने के लिए आधुनिक विज्ञान और मदरसा के पारंपरिक इस्लामी ज्ञान को मिलाया । मुहाकेमत और अल-इशरत अल-इजाज़ जैसे कार्यों के विपरीत , जो

विद्वानों को संबोधित थे, नूरसी के लेखन

---

[58] उपनिवेशों के लिए ब्रिटिश सचिव, ग्लेडस्टोन ने कहा: जब तक मुसलमानों के पास कुरान है, हम उन पर हावी नहीं हो पाएंगे। हमें या तो इसे उनसे छीन लेना चाहिए, या उन्हें इसके प्रति अपना प्रेम खोना चाहिए। वाहिदे, बायोग्राफी ऑफ बेदिउज्जमान सईद नूरसी देखें: 47 पर।

न्यू सैद काल के दर्शन मुख्य रूप से आम जनता के लिए थे। नूरसी ने बताया कि हर पाठक अपनी योग्यता के अनुसार रिसाले-ए-नूर से लाभ उठा सकता है । हालाँकि उन्होंने भौतिकवादी दार्शनिकों का नाम लेकर कोई व्यवस्थित संदर्भ नहीं दिया, लेकिन उनके काम का एक बड़ा हिस्सा उनके दर्शन का खंडन करने के लिए समर्पित था। सामान्य तौर पर, उन्होंने दर्शन की इस आधार पर निंदा की कि यह रहस्योद्घाटन के अधीन नहीं है। उन्होंने प्रसिद्ध दार्शनिकों की भी आलोचना की

इब्न-ए-सीना और अल-फ़राबी जैसे मुस्लिम दार्शनिकों (मुताकलिमुन) ने अपने निर्णयों के बारे में जो कुछ कहा है, वह नूरसी के कलाम से कहीं ज़्यादा मेल खाता है। नूरसी के कलाम को अल-ग़ज़ाली के विचारों के अनुरूप देखा जा सकता है, जिन्हें उन्होंने हुज्जत-उल इस्लाम के रूप में वर्णित किया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'इस्लाम का प्रमाण।'

अध्याय 1

अस्तित्व का उद्देश्य

मनुष्य और ब्रह्मांड

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

सूर्य और उसकी चमक की शपथ; और उसके पीछे चलने वाले चंद्रमा की शपथ
(अपने प्रकाश को प्रतिबिम्बित करता हुआ) और दिन जैसा कि वह उसे प्रकट करता है (सूर्य) और
रात जैसा कि वह उसे ढक लेती है; और आकाश और वह (सर्वोच्च)
जिसने इसको बनाया, और धरती को और उस (परमेश्वर) को भी।
जिसने उसे फैलाया है, और मानव-आत्मा और वह (सब-)
वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और अत्यन्त तत्वदर्शी है, जिसने इसे पूर्णतः रचा है।

(ऐश-शम्स 91:1–7)

भाई! अगर आप ज्ञान के ताबीज के बारे में थोड़ा समझना चाहते हैं
दुनिया की और मनुष्य की रचना की पहेली और रहस्य
यदि आप निर्धारित प्रार्थनाओं (सलाह) की वास्तविकता को जानना चाहते हैं, तो इस संक्षिप्त तुलना पर विचार करें
अपनी आत्मा के साथ.

एक समय एक राजा था। उसके पास धन के रूप में असंख्य खजाने थे।
हीरे, पन्ने और हर तरह के जवाहरात से युक्त। इनके अलावा उसके पास अन्य, छिपे हुए, अद्भुत खजाने थे। उपलब्धियों के रूप में उसके पास अजीबोगरीब कलाओं में निपुणता थी, और असंख्य अद्भुत विज्ञानों का व्यापक ज्ञान था, और गूढ़ विद्या की अंतहीन शाखाओं में महान पांडित्य था। अब, जैसे सुंदरता और पूर्णता का हर स्वामी अपनी सुंदरता और पूर्णता को देखना और प्रदर्शित करना चाहता है, वैसे ही वह गौरवशाली राजा एक प्रदर्शनी खोलना चाहता था और उसके भीतर प्रदर्शनियाँ लगाना चाहता था ताकि लोगों के सामने उसके शासन की महिमा, उसकी

चमचमाती दौलत, उसकी कला के चमत्कार और

उसका ज्ञान, और ताकि वह दो मामलों में उसकी सुंदरता और पूर्णता को देख सके:

पहला सम्मान: ताकि वह स्वयं अपनी विवेकपूर्ण आँखों से उन्हें देख सके।

दूसरा: ताकि वह दूसरों की नजर से देख सके।

इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, राजा ने एक विशाल और भव्य महल का निर्माण शुरू किया। उसने इसे शानदार अपार्टमेंट और आवासों में विभाजित किया, और

उसने अपने खजाने से हर तरह के रत्नों से इसे सजाया, और अपने हाथों से इतनी कला से भरा हुआ कि इसे बेहतरीन और सबसे सुंदर कामों से सजाया। उसने इसे अपनी बुद्धि की सबसे सूक्ष्म कलाओं से सजाया, और अपने ज्ञान के चमत्कारी कामों से इसे सजाया। फिर इसे पूरा करने के बाद, उसने इसे स्थापित किया

महल की चौड़ी मेज़ों पर हर तरह का स्वादिष्ट भोजन और हर तरह की चीज़ें रखी हुई थीं। उसने हर समूह के लिए एक उपयुक्त मेज़ तय की।

उन्होंने इतना भव्य और कलात्मक भोज आयोजित किया कि ऐसा लग रहा था मानो

उसने जो असीम अमूल्य उपहार फैलाए थे, वे सौ सूक्ष्म कलाओं के माध्यम से अस्तित्व में आए थे। फिर उसने अपने देश के सभी क्षेत्रों से अपने लोगों और प्रजा को दावत और तमाशा देखने के लिए आमंत्रित किया।

बाद में राजा ने एक सर्वोच्च सेनापति59 को शिक्षक के रूप में नियुक्त किया, ताकि वह

महल के उद्देश्य और उसकी सामग्री के अर्थ को जानना; लोगों को उसके निर्माता और उसकी सामग्री का वर्णन करना, महल की सजावट के रहस्यों को बताना, यह सिखाना कि उसके अंदर की कलाएँ किस ओर इशारा करती हैं, और यह समझाना कि वहाँ के सुंदर जड़े हुए आभूषण और सुरीली कढ़ाईयाँ क्या हैं; और महल में प्रवेश करने वालों को यह समझाना कि वे किस तरह से महल के मालिक की सिद्धियों और कलाओं को दर्शाते हैं, और उन्हें उन्हें देखने के सही आचरण के बारे में बताना, और आधिकारिक समारोहों के बारे में समझाना जैसा कि राजा, जो प्रकट नहीं हुए थे, चाहते थे कि वे हों। शिक्षक

और प्रशिक्षक ने महल के प्रत्येक क्षेत्र में एक सहायक नियुक्त किया था, जबकि वह स्वयं अपने छात्रों के बीच सबसे बड़े कमरे में बैठा था, और सभी दर्शकों के लिए निम्नलिखित घोषणा कर रहा था। उसने उनसे कहा:

"हे लोगों! इस महल को बनाकर और इन चीज़ों को प्रदर्शित करके हमारे स्वामी, जो महल के राजा हैं, खुद को आप लोगों के सामने प्रकट करना चाहते हैं। इसलिए आपको उन्हें पहचानना चाहिए और उन्हें जानने की कोशिश करनी चाहिए। और इन अलंकरणों के साथ वह खुद को आप लोगों का प्रिय बनाना चाहते हैं। इसके अलावा, वह अपना रूप भी दिखाते हैं।

इन उपहारों के माध्यम से जो आप देख रहे हैं, आपके लिए प्यार है, इसलिए आपको ऐसा करना चाहिए

[59] वह पैगम्बर मुहम्मद हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

उसकी आज्ञा का पालन करके भी उससे प्रेम करो। और इन दिखावटी वरदानों और उपहारों के माध्यम से जो देखे जा सकते हैं, वह तुम्हारे प्रति अपनी करुणा और दया दिखाता है, इसलिए तुम्हें धन्यवाद देकर उसके प्रति अपना सम्मान दिखाना चाहिए। और अपनी पूर्णता के इन कार्यों के माध्यम से वह अपनी उत्कृष्ट सुंदरता को तुम्हारे सामने प्रदर्शित करना चाहता है, इसलिए तुम्हें उसे देखने और उसका सम्मान पाने की अपनी उत्सुकता दिखानी चाहिए। और इन सजी हुई कलाकृतियों में से प्रत्येक पर एक विशेष मोहर और विशेष मुहर और एक अद्वितीय मुहर लगाने के माध्यम से, जो तुम देखते हो, वह यह दिखाना चाहता है कि सब कुछ उसके लिए विशेष है, और उसके अपने हाथ का काम है, और वह अकेला और अद्वितीय और स्वतंत्र और अलग है। इसलिए तुम्हें यह पहचानना चाहिए कि वह अकेला और अद्वितीय है, और उसका कोई समकक्ष, समान या मेल नहीं है, और स्वीकार करना चाहिए कि वह ऐसा है।" उसने राजा और इस पद के बारे में दर्शकों से इसी तरह के और भी उपयुक्त शब्द कहे। तब महल में प्रवेश करने वाले लोग दो समूहों में अलग हो गए।

पहला समूह: चूँकि इन लोगों को आत्म-ज्ञान था, वे बुद्धिमान थे, और उनके दिल सही जगह पर थे, जब उन्होंने महल के अंदर के अजूबों को देखा, तो उन्होंने कहा: "यहाँ बहुत बड़ी बातें हो रही हैं!" वे समझ गए कि यह व्यर्थ या कोई तुच्छ खेल नहीं था। वे उत्सुक थे, और जब उन्होंने महल के अंदर के अजूबों को देखा, तो उन्होंने कहा: "यहाँ बहुत बड़ी बातें हो रही हैं!" वे समझ गए कि यह व्यर्थ या कोई तुच्छ खेल नहीं था। वे उत्सुक थे, और जब उन्होंने महल के अंदर के अजूबों को देखा, तो उन्होंने कहा: "यहाँ बहुत बड़ी बातें हो रही हैं!"
आश्चर्य करते हुए: "मुझे आश्चर्य है कि इसका क्या ताबीज है और इसमें क्या है," उन्होंने अचानक मास्टर और प्रशिक्षक द्वारा दिए जा रहे भाषण को सुना, और उन्हें एहसास हुआ कि सभी रहस्यों की कुंजी उनके पास थी। इसलिए वे उनके पास गए और कहा: "आप पर शांति हो, हे मास्टर! वास्तव में, इस तरह के शानदार महल के लिए आपके जैसे सच्चे और सटीक प्रशिक्षक की आवश्यकता है। कृपया बताएं

हमें वह बताओ जो हमारे प्रभु ने तुम्हें बताया है!" सबसे पहले गुरु ने उन्हें भाषण दोहराया। उन्होंने ध्यान से सुना, और इसे स्वीकार करके बहुत लाभ उठाया। उन्होंने राजा की इच्छा के अनुसार काम किया। और क्योंकि राजा उनके उचित आचरण और शिष्टाचार से प्रसन्न था, उसने उन्हें एक और विशेष, ऊंचे, अकथनीय महल में आमंत्रित किया। और उसने उन्हें इस तरह से सम्मानित किया, जो एक उदार राजा के योग्य था, और ऐसी आज्ञाकारी प्रजा के लिए उपयुक्त था, और ऐसे अच्छे व्यवहार वाले मेहमानों के लिए उपयुक्त था, और ऐसे ऊंचे महल के लिए उपयुक्त था। उसने उन्हें स्थायी रूप से अपना बना लिया।

खुश।

जहाँ तक दूसरे समूह का प्रश्न है, क्योंकि उनके मन भ्रष्ट हो चुके थे और उनके
जब वे महल में दाखिल हुए, तो उनके हृदय बुझ गए, वे अपनी दुष्ट-आज्ञाकारी आत्माओं से पराजित हो गए और स्वादिष्ट भोजन के अलावा किसी और चीज पर ध्यान नहीं दिया।
उन्होंने सभी सद्गुणों के प्रति अपनी आँखें बंद कर लीं और सभी प्रकार के भोजन के प्रति अपने कान बंद कर लिए।
मालिक (शांति और आशीर्वाद उस पर हो) का मार्गदर्शन और अल्लाह की चेतावनी
उनके छात्र। उन्होंने जानवरों की तरह खुद को भर लिया

फिर वे सो गए। उन्होंने अमृत पी लिया जो कुछ अन्य मामलों के लिए तैयार किया गया था और जिसे पीना नहीं था। फिर वे नशे में हो गए और इतना चिल्लाने लगे कि उन्होंने अन्य दर्शकों को बहुत परेशान कर दिया।

वे महान निर्माता के नियमों के सामने अभद्र व्यवहार कर रहे थे। इसलिए महल के मालिक के सैनिकों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और ऐसे अभद्र लोगों के लिए उपयुक्त जेल में डाल दिया।

हे मित्र, जो मेरे साथ यह कथा सुन रहे हैं! आप समझ गए होंगे कि महान सृष्टिकर्ता ने इस महल का निर्माण उपर्युक्त उद्देश्यों के लिए किया है। इन उद्देश्यों की पूर्ति दो बातों पर निर्भर है:

पहला: उस गुरु का अस्तित्व, शांति और आशीर्वाद उस पर हो, जिसे हमने देखा और जिसकी वाणी हमने सुनी। क्योंकि अगर वह न होता, तो ये सारे उद्देश्य व्यर्थ हो जाते। क्योंकि अगर किसी समझ से परे किताब का कोई लेखक नहीं है, तो वह सिर्फ़ अर्थहीन कागज़ों से बनी होती है।

दूसरा यह है कि लोग गुरु की बातें सुनते हैं और उन्हें स्वीकार करते हैं। यानी गुरु का अस्तित्व महल के अस्तित्व का कारण है और लोगों का उनकी बातें सुनना महल के अस्तित्व को जारी रखने का कारण है। ऐसे में यह कहा जा सकता है कि अगर गुरु न होते तो महल में कोई बदलाव नहीं होता।

गुरु, शांति और आशीर्वाद उन पर हो, गौरवशाली राजा ने महल नहीं बनवाया होता। और फिर यह कहा जा सकता है कि जब लोग उसका पालन नहीं करते हैं
मालिक (शांति और आशीर्वाद उन पर हो) के निर्देशों के अनुसार, महल निश्चित रूप से परिवर्तित हो जाएगा।

मित्र! कहानी यहीं समाप्त होती है। यदि आप तुलना का अर्थ समझ गए हैं, तो आइए और इसकी वास्तविकता देखिए।

महल यह दुनिया है। इसकी छत मुस्कुराते हुए सितारों से जगमगाता हुआ आसमान है, और इसका फर्श, धरती का चेहरा पूर्व से पश्चिम तक कई तरह के फूलों से सजा हुआ है। जहाँ तक राजा का सवाल है, वह सबसे पवित्र, पूर्व-शाश्वत और पर-शाश्वत सम्राट है, जिसकी सातों आसमानों और धरती की सभी चीज़ें अपनी-अपनी भाषा से महिमा करती हैं और पूजा करती हैं। वह इतना शक्तिशाली राजा है कि उसने छह दिनों में आसमान और धरती का निर्माण किया, फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। वह शक्ति और महिमा से भरा हुआ है, जो रात और दिन को दो धागों की तरह, एक सफेद और एक काला, ब्रह्मांड के पन्नों पर अपने चिह्न लिखता है; वह जिसकी आज्ञा के आगे सूर्य, चंद्रमा और तारे वश में हैं।

महल के कमरे अठारह हज़ार दुनियाएँ हैं, जिनमें से प्रत्येक को व्यवस्थित किया गया है और उसके अनुरूप सजाया गया है। महल में आपने जो विचित्र कलाएँ देखीं, वे ईश्वरीय शक्ति के चमत्कार हैं जो आप इस दुनिया में देखते हैं,

और जो भोजन आपने वहां देखा वह ईश्वरीय दया के अद्भुत फलों का संकेत है
इस दुनिया में, खास तौर पर

1 कुरान 25:59

गर्मियों में, और सबसे बढ़कर बरला के बगीचों में। वहाँ का चूल्हा और रसोई यहाँ की धरती है, जिसके हृदय में अग्नि है, और धरती का चेहरा है। जबकि तुलना में आपने जो छिपे हुए खजानों के रत्न देखे हैं, वे पवित्र दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों के समान हैं। और वहाँ की कढ़ाई, और कढ़ाई के चिह्न, सुव्यवस्थित और बारीक ढंग से तैयार किए गए प्राणी हैं और शक्ति की कलम की सामंजस्यपूर्ण छापें हैं जो इस दुनिया को सुशोभित करती हैं और महिमा के सर्वशक्तिमान के नामों की ओर इशारा करती हैं।

जहाँ तक मालिक का सवाल है, वह हमारे मालिक मुहम्मद हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। उनके सहायक अन्य पैगम्बर हैं, उन पर शांति हो, और उनके शिष्य, संत और शुद्ध विद्वान हैं। महल में शासक के सेवक

इस दुनिया में फ़रिश्तों (उन पर शांति हो) को इंगित करें। और आमंत्रित अतिथियों को
इस भोज में देखने के लिए जिन्न और संसार के इस अतिथिगृह में रहने वाले मनुष्य तथा पशु हैं, जो मानवजाति के सेवक हैं।
जहाँ तक इन दो समूहों का प्रश्न है, इनमें से एक समूह आस्था रखने वाले लोगों का है, जो
वे सर्व-बुद्धिमान कुरान के छात्र हैं, आयतों और संकेतों के व्याख्याकार हैं
ब्रह्मांड की पुस्तक के अनुसार। दूसरा समूह अविश्वासी और नास्तिक लोग हैं।
विद्रोही, जो शैतान और उनकी दुष्ट-आज्ञाकारी आत्माओं का अनुसरण करते हैं; बहरे और गूंगे,
पशुओं के समान या उससे भी निम्न स्तर पर वे पथभ्रष्ट लोगों का समूह बनाते हैं, जो केवल इस संसार के जीवन को ही पहचानते हैं।

पहला समूह: ये वे लोग हैं जो खुशमिजाज़ और अच्छे हैं, जिन्होंने मालिक की बात सुनी, 'दो पंखों वाले'। वह न केवल ईश्वर का उपासक सेवक है, बल्कि उपासना के मामले में वह अपने पालनहार का वर्णन इस तरह करता है कि वह सर्वशक्तिमान ईश्वर के दरबार में अपने समुदाय का दूत है। और वह ईश्वर का सेवक भी है।

संदेशवाहक; संदेशवाहक के सम्बन्ध में वह अपने पालनहार के आदेशों को मनुष्यों और जिन्नों तक क़ुरआन के माध्यम से पहुँचाता है।

इस खुशहाल समुदाय ने पैगम्बर की बात मानी और कुरान को सुना।
उन्होंने खुद को निर्धारित प्रार्थनाओं से जुड़ा हुआ पाया, जो सभी प्रकार की पूजाओं का सूचक है, और ऊंचे पदों के भीतर कई सूक्ष्म कर्तव्य हैं। वास्तव में, उन्होंने विस्तार से उन कर्तव्यों और पदों को देखा, जिनकी ओर प्रार्थनाएँ अपने विभिन्न सूत्रों और कार्यों के साथ इशारा करती हैं। यह इस प्रकार था:

पहला: चूँकि उन्होंने ईश्वरीय कार्यों को देखा, और संबंधित व्यक्ति की अनुपस्थिति में एक लेन-देन के रूप में, स्वयं को प्रभुत्व की संप्रभुता के चमत्कारों को देखने की स्थिति में देखा, इसलिए उन्होंने ईश्वर की स्तुति और महिमा करने का कर्तव्य निभाया, यह घोषणा करते हुए: "ईश्वर सबसे महान है!"

दूसरा: उनके शानदार और अद्भुत कार्यों के संदेशवाहक के पद पर दिखाई देने के माध्यम से, जो पवित्र दिव्य नामों की अभिव्यक्तियाँ हैं,
यह कहते हुए: “परमेश्वर की महिमा हो! परमेश्वर की स्तुति हो !”, उन्होंने परमेश्वर को पवित्र करने और उसकी स्तुति करने का कर्तव्य निभाया।

तीसरा: अपनी आंतरिक और बाह्य इंद्रियों से ईश्वरीय दया के भण्डार में संचित दानों को समझने और अनुभव करने की स्थिति में, उन्होंने धन्यवाद और स्तुति का कर्तव्य निभाना शुरू कर दिया।

चौथा: अपनी आध्यात्मिक क्षमताओं के तराजू से दिव्य नामों के भण्डार के रत्नों को तौलने की स्थिति में, उन्होंने स्तुति का कर्तव्य शुरू किया और भगवान को सभी दोषों से मुक्त घोषित किया।

पांचवां: ईश्वरीय निर्णय की योजना पर शक्ति की कलम से लिखे गए पालनकर्ता के अधिसूचनाओं का अध्ययन करने के स्थान पर, उन्होंने चिंतन और प्रशंसा का कर्तव्य शुरू किया।

छठा: सृष्टि के सूक्ष्म, कोमल, उत्तम सौंदर्य को निहारना
वस्तुओं और प्राणियों में कला में, ईश्वर को सभी दोषों से मुक्त घोषित करने की स्थिति में, उन्होंने अपने सर्व-महिमावान रचयिता, अपने सर्व-सुन्दर रचयिता के प्रति प्रेम और लालसा का कर्तव्य उठाया। अर्थात्, ब्रह्माण्ड और कार्यों को देखने और पूजा की वस्तु की अनुपस्थिति में लेन-देन के माध्यम से उपर्युक्त पदों में कर्तव्यों का पालन करने के बाद, वे सर्व-बुद्धिमान रचयिता के लेन-देन और कार्यों को देखने की डिग्री तक पहुँच गए, जिससे, संबंधित व्यक्ति की उपस्थिति में एक लेन-देन के रूप में, उन्होंने सर्व-महिमावान रचयिता द्वारा अपनी कला के चमत्कारों के माध्यम से चेतन प्राणियों को स्वयं को ज्ञात करने के सामने ज्ञान और आश्चर्य के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की, और घोषणा की: "आपकी महिमा हो! हम आपको वास्तव में कैसे जान सकते हैं? जो आपको ज्ञात कराता है वह आपके कार्यों के चमत्कार हैं

कला!"

फिर, उन्होंने उस परम दयालु व्यक्ति द्वारा अपनी दया के सुंदर फलों के माध्यम से खुद को प्यार करने के लिए प्यार और जुनून के साथ जवाब दिया। "केवल आपकी ही हम पूजा करते हैं और केवल आपसे ही मदद मांगते हैं!", उन्होंने घोषणा की।

तब उन्होंने सच्चे दाता को धन्यवाद और प्रशंसा के साथ जवाब दिया, जो अपनी मधुर उदारता के माध्यम से अपनी दया और करुणा दिखा रहा है, और कहा: "आपकी जय हो! सभी प्रशंसा आपकी है! हम आपको कैसे धन्यवाद दे सकते हैं, जैसा कि आपका हक है? आप पूरी तरह से धन्यवाद के पात्र हैं! आपके सभी उपहार पूरे ब्रह्मांड में फैले हुए हैं, इसलिए स्पष्ट रूप से आपकी प्रशंसा और धन्यवाद का भजन गाएँ

उनके प्राणियों की भाषाएँ। दुनिया के बाज़ार में पंक्तिबद्ध और पृथ्वी के चेहरे पर बिखरे हुए आपके सभी उपहार आपकी घोषणा करते हैं

आपकी प्रशंसा और गुणगान करते हैं। आपकी उदारता और उदारता की गवाही देकर, आपकी दया और उदारता के सभी सुव्यवस्थित और अच्छी तरह से आनुपातिक फल आपके प्राणियों की निगाहों के सामने आपको धन्यवाद देते हैं।

तब उन्होंने उत्तर दिया, "ईश्वर सबसे महान है!" ईश्वरीय सौंदर्य, महिमा, पूर्णता और भव्यता की अभिव्यक्ति के सामने, जो ब्रह्मांड के चेहरे पर लगातार बदलती रहती है; उन्होंने अपनी नपुंसकता में श्रद्धापूर्वक सिर झुकाया, और प्रेम और आश्चर्य के साथ विनम्रता में दंडवत किया।

फिर अपनी गरीबी और ज़रूरत का इज़हार करते हुए, उन्होंने प्रार्थना के साथ जवाब दिया
और परम धन के स्वामी से प्रार्थना करते हुए अपनी संपत्ति की प्रचुरता और अपनी दया की व्यापकता का प्रदर्शन किया, और घोषित किया: "केवल आप से ही हम सहायता चाहते हैं!"

फिर उन्होंने सर्व-महिमावान निर्माता द्वारा प्राणियों की प्रदर्शनी में अपनी प्राचीन कला की सूक्ष्मताओं और चमत्कारों को प्रदर्शित करने पर सराहनापूर्वक प्रतिक्रिया व्यक्त की, और कहा: "भगवान ने क्या चमत्कार चाहा है!"

उनकी सराहना करते हुए उन्होंने कहा, “वे कितने सुन्दर ढंग से बनाये गये हैं!
भगवान ने क्या आशीर्वाद दिया है!” सभी को साक्षी बनाकर, उन्होंने आश्चर्य से कहा: “आओ! इन्हें देखो! प्रार्थना और समृद्धि के लिए जल्दी करो!”

और उन्होंने सम्राट के प्रति समर्पण और आज्ञाकारिता के साथ जवाब दिया
पूर्व-अनन्त काल और उत्तर-अनन्त काल में ब्रह्माण्ड के हर कोने में उसकी प्रभुता की संप्रभुता की घोषणा और उसकी एकता की अभिव्यक्ति।
यह घोषणा करते हुए कि: “हम सुनते हैं और मानते हैं!”, उन्होंने उसकी एकता की पुष्टि की।

फिर, समस्त लोकों के पालनहार के देवत्व के प्रकट होने के पूर्व, उन्होंने पूजा और विनम्र श्रद्धा के साथ प्रत्युत्तर दिया, जिसमें शामिल है
ज़रूरत के मुताबिक अपनी गरीबी का ऐलान करना और निर्धारित नमाज़ों के साथ, जो पूजा का सारांश है। इस प्रकार, अपने विभिन्न कार्यों को करने के माध्यम से
इस दुनिया के निवास के रूप में जानी जाने वाली शक्तिशाली मस्जिद में पूजा के कर्तव्य, वे
अपने जीवन के दायित्वों और कर्तव्यों को पूरा किया, और 'सर्वोत्तम' ग्रहण किया
वे सभी प्राणियों से ऊपर उठ गए, जिसके द्वारा, विश्वास और आश्वासन की शुभता और 'ट्रस्ट' के माध्यम से, वे पृथ्वी पर ईश्वर के विश्वसनीय प्रतिनिधि बन गए। और इस परीक्षण के क्षेत्र और परीक्षा के स्थान के बाद, उनके उदार पालनहार ने उन्हें उनके विश्वास के बदले में अनन्त सुख की ओर आमंत्रित किया, और उनके इस्लाम धर्म पर कायम रहने के पुरस्कार में शांति के निवास की ओर। वहाँ, उसने अपनी दया से उन पर इतनी चमकदार कृपाएँ बरसाईं कि न तो किसी आँख ने उन्हें देखा, न ही किसी कान ने सुना, न ही वे किसी मनुष्य के दिल में आई - और इसलिए उसने उन्हें ये प्रदान किए, और उन्हें अनंत काल और अनन्त जीवन दिया।

इच्छुक, दर्पण धारण करने वाले प्रेमी

शाश्वत, स्थायी सौंदर्य जो इसे देखता है वह निश्चित रूप से नष्ट नहीं होगा, बल्कि अनंत काल तक चला जाएगा। कुरान के छात्रों की अंतिम स्थिति ऐसी ही है। सर्वशक्तिमान ईश्वर हमें उनमें शामिल करें, आमीन!

जहाँ तक दूसरे समूह का सवाल है, पापी और दुष्ट, जब वे विवेक की उम्र में इस दुनिया के महल में दाखिल हुए, तो उन्होंने ईश्वरीय एकता के सभी प्रमाणों पर अविश्वास किया, और सभी वरदानों के प्रति कृतघ्नता दिखाई, और सभी प्राणियों पर मूल्यहीन होने का आरोप लगाकर, अविश्वासपूर्ण तरीके से उनका अपमान किया। और चूँकि उन्होंने ईश्वरीय नामों के सभी रूपों को अस्वीकार और अस्वीकार किया, इसलिए उन्होंने थोड़े समय में ही असीम अपराध कर दिया और अंतहीन दंड के पात्र बन गए। क्योंकि जीवन की पूंजी और मानवीय क्षमताएँ मनुष्य को उल्लिखित कर्तव्यों के लिए दी गई थीं

ऊपर।

हे मेरे मूर्ख आत्मा और मूर्ख मित्र! क्या तुम अपने जीवन का कर्तव्य समझते हो?
आवश्यकताओं के अनुसार अच्छे जीवन का पालन करने तक ही सीमित है
सभ्यता, और, यदि आप अभिव्यक्ति को क्षमा करेंगे, तो शारीरिक भूख को संतुष्ट करने के लिए? क्या आपको लगता है कि नाजुक और सूक्ष्म इंद्रियों का एकमात्र उद्देश्य,
क्या आपके जीवन रूपी यंत्र में सम्मिलित संवेदनशील क्षमताएं और अंग, सुव्यवस्थित अंग और प्रणालियां, जिज्ञासु भावनाएं और इंद्रियां इस क्षणभंगुर जीवन में आधार आत्मा की निम्न इच्छाओं को संतुष्ट करने तक ही सीमित हैं?

भगवान न करे! उनके निर्माण और आपके मूल अस्तित्व में समावेश के दो मुख्य उद्देश्य हैं:

पहला यह है कि सच्चे दाता की नेमतों की विविधताओं को तुम्हें बताकर, तुम्हें उसका धन्यवाद करने के लिए प्रेरित किया जाए। तुम्हें इस बात का ज्ञान होना चाहिए, और उसका धन्यवाद तथा उपासना करनी चाहिए।

दूसरा यह है कि अपनी शक्तियों के माध्यम से तुम्हें परमेश्वर में प्रकट पवित्र दिव्य नामों के सभी प्रकार के प्रकटीकरणों से परिचित कराना।

दुनिया में मौजूद हर चीज़ को पहचानना और आपको उनका अनुभव करवाना। और आपको, उनका अनुभव करके उन्हें पहचानकर, उन पर विश्वास करना चाहिए।

इस प्रकार, मनुष्य इन दो उपलब्धियों के माध्यम से विकसित और परिपूर्ण होता है।
बुनियादी लक्ष्य। उनके माध्यम से, मनुष्य एक सच्चा इंसान बनता है।

निम्नलिखित तुलना का अर्थ देखिए और देखिए कि
मानवीय क्षमताएँ पशु की तरह सांसारिक जीवन पाने के लिए नहीं दी गयी थीं।

उदाहरण के लिए, किसी ने अपने एक सेवक को बीस सोने के सिक्के देते हुए कहा,
नौकर ने उसे एक खास कपड़े से बने कपड़ों का एक सूट देने को कहा। नौकर गया और उसने अपने लिए सबसे बढ़िया किस्म के कपड़े से बना एक बढ़िया सूट खरीदा और उसे पहन लिया।
तभी उसने देखा कि उसके मालिक ने उसका एक और बेटा दे दिया है।

नौकरों को एक हज़ार सोने के सिक्के दिए और नौकर की जेब में कुछ बातें लिखकर कागज़ का एक टुकड़ा रखकर उसे कुछ काम निपटाने के लिए भेज दिया। अब, कोई भी समझदार व्यक्ति यह जान सकता है कि राजधानी नहीं थी

कपड़ों का एक सूट खरीदने के लिए, क्योंकि पहले नौकर ने बीस सोने के सिक्कों से बेहतरीन कपड़े का एक सूट खरीदा था, इसलिए हज़ार सोने के सिक्के निश्चित रूप से उस पर खर्च नहीं किए जाने थे। चूँकि दूसरे नौकर ने अपनी जेब में रखे कागज़ को नहीं पढ़ा था, और पहले नौकर को देखकर, उसने कपड़ों के एक सूट के लिए दुकानदार को सारे पैसे दे दिए थे, और फिर उसे सबसे निम्न श्रेणी का कपड़ा मिला था।

यदि उसने अपने मित्र के सूट से पचास गुना खराब कपड़ा और सूट खरीदा होता, तो उसके नियोक्ता को उसकी इस मूर्खता के लिए उसे कड़ी फटकार लगानी पड़ती और क्रोधित होकर उसे दंडित करना पड़ता।

हे मेरे आत्मा और मेरे मित्र! होश में आओ! अपने जीवन की पूंजी और संभावनाओं को देह के सुखों और इस क्षणभंगुर जीवन पर पशु की तरह या उससे भी निम्न स्तर पर खर्च मत करो। अन्यथा, भले ही तुम पचास गुना अधिक हो

यदि आप पूंजी के मामले में सबसे ऊंचे पशु से भी श्रेष्ठ हैं, तो आप सबसे निचले पशु से भी पचास गुना नीचे गिर जाएंगे।

हे मेरे असावधान आत्मा! यदि तू अपने जीवन के उद्देश्य और उसकी प्रकृति, अपने जीवन के स्वरूप, अपने जीवन के सच्चे अर्थ और उसके पूर्ण सुख को कुछ हद तक समझना चाहता है, तो देख! तेरे जीवन के उद्देश्यों का सारांश नौ बातों में है:

प्रथम: ईश्वरीय दया के भण्डार में संचित वरदानों को अपनी इंद्रियों के तराजू पर तौलना तथा सार्वभौमिक धन्यवाद अर्पित करना।

दूसरा: अपनी प्रकृति में स्थित शक्तियों की कुंजियों से पवित्र दिव्य नामों के गुप्त खजानों को खोलना।

तीसरा: इस विश्व प्रदर्शनी में उपस्थित प्राणियों के समक्ष अपने जीवन के माध्यम से अद्भुत कलाओं और रहस्यों को सचेत रूप से प्रदर्शित करना और उन्हें ज्ञात कराना।

सूक्ष्म अभिव्यक्तियाँ जो दिव्य नामों ने आपसे जोड़ दी हैं।

चौथा: सृष्टिकर्ता के आधिपत्य के दरबार में अपनी आराधना की घोषणा करना

मौखिक रूप से और अपने स्वभाव की वाणी के माध्यम से।

पांचवां: जैसे औपचारिक अवसरों पर एक सैनिक सभी अलंकरण पहनता है

अपने राजा से प्राप्त किया है, और उसके सामने उपस्थित होने के माध्यम से, उसके प्रति अपने पक्ष के निशान प्रदर्शित करता है, यह सचेत रूप से अपने आप को सजाने के लिए है

सूक्ष्म इन्द्रियों के रत्न जो दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों ने तुम्हें दिए हैं, तथा पूर्व-शाश्वत ईश्वर की दृष्टि में प्रकट होने के लिए

गवाह।

छठा: जीवित प्राणियों द्वारा अपने रचयिता को, जिन्हें जीवन की अभिव्यक्तियाँ कहा जाता है, प्रणाम करना तथा उनके द्वारा अपने ईश्वर की महिमा का सचेतन रूप से अवलोकन करना।
निर्माता, जिसे जीवन के संकेत के रूप में जाना जाता है, और जीवन के सर्वश्रेष्ठ (वहीबुल हयात) की उनकी पूजा, जिसे जीवन के लक्ष्य के रूप में जाना जाता है, और उन्हें देखने के लिए उन पर चिंतन करना, और उन्हें प्रदर्शित करने के लिए उनकी गवाही देना।

सातवां: माप की इकाइयों के रूप में छोटे नमूनों को लेकर
आपके जीवन को दिए गए आंशिक ज्ञान, शक्ति और इच्छा जैसे गुणों को जानना, उन उपायों के माध्यम से सर्व-महिमावान निर्माता के पूर्ण गुणों और पवित्र गुणों को जानना है। उदाहरण के लिए, चूँकि, आपकी आंशिक शक्ति के माध्यम से,
ज्ञान और इच्छाशक्ति से आपने अपना घर सुव्यवस्थित ढंग से बनाया है,
यह जानना चाहिए कि संसार के महल का निर्माता ही उसका स्वामी है, और
शक्तिशाली, जानकार और बुद्धिमान इस हद तक कि यह आपके घर से भी बड़ा है।

आठवां: सृष्टिकर्ता की एकता और निर्माता की प्रभुता (रुबुबियाह) के विषय में संसार के प्रत्येक प्राणी द्वारा अपनी-अपनी भाषा में कहे गए शब्दों को समझना।

नौवां: अपनी नपुंसकता और कमजोरी, अपनी गरीबी और ज़रूरत के ज़रिए ईश्वरीय शक्ति और प्रभु की संपत्ति की डिग्री को समझना। जिस तरह भूख और ज़रूरत के प्रकारों के ज़रिए भोजन की खुशी और डिग्री और विविधता को समझा जाता है, उसी तरह आपको अपनी अनंत नपुंसकता और गरीबी के ज़रिए अनंत ईश्वरीय शक्ति और संपत्ति की डिग्री को समझना चाहिए। तो, संक्षेप में, आपके जीवन के लक्ष्य ऐसे ही हैं। अब अपने जीवन की प्रकृति पर विचार करें; इसका सारांश यह है:

यह दिव्य नामों से संबंधित चमत्कारों की सूची है; दिव्य गुणों को मापने का पैमाना है; ब्रह्मांड के भीतर दुनियाओं का संतुलन; शक्तिशाली दुनिया की सूची; ब्रह्मांड का नक्शा; ब्रह्मांड की विशाल पुस्तक का सारांश; दिव्य शक्ति के छिपे हुए खजाने को खोलने के लिए कुंजियों का एक गुच्छा; और प्राणियों में बिखरी हुई और समय से जुड़ी हुई पूर्णता का एक सबसे उत्कृष्ट नमूना। आपके जीवन की प्रकृति इन जैसे मामलों से बनी है।

अब, आपके जीवन का स्वरूप और उसके कर्तव्य का तरीका यह है: आपका जीवन एक उत्कीर्ण शब्द है, शक्ति की कलम द्वारा लिखा गया एक ज्ञान-प्रदर्शन करने वाला शब्द है।
देखा और सुना जाए तो यह ईश्वरीय नामों की ओर संकेत करता है। आपके जीवन का स्वरूप इन जैसे मामलों से मिलकर बना है।

अब आपके जीवन का सही अर्थ यह है: इसका दर्पण के रूप में कार्य करना
दिव्य एकता की अभिव्यक्ति और शाश्वत की अभिव्यक्ति

एक ही मांगा गया। कहने का तात्पर्य यह है कि, एक व्यापकता के माध्यम से मानो दुनिया में प्रकट सभी दिव्य नामों के लिए केंद्र बिंदु होने के नाते, यह एक ही और शाश्वत रूप से मांगे गए एक का दर्पण है।

अब, जहाँ तक आपके जीवन की पूर्णता की बात है, तो यह आपके जीवन के दर्पण में दर्शाए गए पूर्व-अनन्त सूर्य की रोशनी को देखना और उनसे प्रेम करना है। यह एक सचेतन प्राणी के रूप में उनके प्रति प्रेम प्रदर्शित करना है। यह उनके प्रति प्रेम के साथ अपने आप से परे जाना है। यह उनके प्रकाश के प्रतिबिंब को अपने भीतर स्थापित करना है।

अपने दिल के केंद्र में रहो। इसी रहस्य के कारण हदीस कुदसी60 कही गई, जिसे निम्नलिखित पंक्तियों द्वारा व्यक्त किया गया है, और यह आपको सर्वोच्चतम तक ले जाएगा:

आकाश और पृथ्वी मुझे समाहित नहीं कर सकते;

फिर भी, यह कैसी अजीब बात है कि मैं ईमानवालों के दिलों में बसा हूँ।61

और इसलिए, मेरी आत्मा! चूँकि तुम्हारा जीवन ऐसे उच्च लक्ष्यों की ओर उन्मुख है और ऐसे अमूल्य खजाने एकत्रित कर रहा है, तो क्या यह तर्क और निष्पक्षता के योग्य है कि तुम इसे सहज प्रवृत्ति की अस्थायी संतुष्टि पर खर्च करो?
आत्मा और क्षणभंगुर सांसारिक सुखों को बरबाद करना चाहते हैं? अगर आप इसे बरबाद नहीं करना चाहते हैं अपनी जान कुर्बान करने से पहले, कुरान की इस सूरा में दी गई शपथों पर विचार करें, जो उपरोक्त तुलना और सत्य की ओर संकेत करती हैं, और उसके अनुसार कार्य करें:

> सूर्य और उसकी चमक की शपथ; और चंद्रमा की शपथ, जो उसके पीछे चलता है; और दिन की शपथ, जो उसे प्रकट करता है; और रात की शपथ, जो उसे ढक लेती है;
> और आकाश और वह जिसने उसे बनाया और धरती और वह जिसने उसे फैलाया और मनुष्य और वह जिसने उसे पूर्ण रूप से रचा और जिसने उसे बुराइयों की चेतना से प्रेरित किया
>
> और जो उसके लिए बुरा है, और जो उसके लिए अच्छा और सही है, वह वास्तव में समृद्ध है जिसने इसे पवित्रता में उगाया है (भगवान के खिलाफ आत्म-उग्र विद्रोह से दूर); और वह वास्तव में खो गया है जिसने इसे भ्रष्ट कर दिया है (भगवान के खिलाफ आत्म-उग्र विद्रोह में)। (ऐश-शम्स 91: 1-10)

हे प्रभु, पैगम्बरी के आकाश के सूर्य, नबूवत के नक्षत्र के चंद्रमा (अर्थात, पैगंबर मुहम्मद), और उनके परिवार और साथियों, मार्गदर्शन के सितारों को आशीर्वाद और शांति प्रदान करें, और

---

[60] हदीस कुदसी (या पवित्र हदीस) हदीस की एक उप-श्रेणी है जो पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के कथन हैं। हदीस कुदसी को पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के शब्दों के रूप में माना जाता है।
अल्लाह, पैगंबर मुहम्मद द्वारा दोहराया गया, शांति और आशीर्वाद उन पर हो, और एक इस्नाद (हदीस का विज्ञान) की स्थिति पर दर्ज किया गया। अल-जुरजानी के अनुसार, हदीस कुदसी कुरान से इस मायने में अलग है कि पूर्व "पैगंबर मुहम्मद के शब्दों में व्यक्त" हैं, जबकि बाद वाले "अल्लाह के सीधे शब्द" हैं।

[61] देखें, अल-अजलुनी, कशफ अल-खफा, द्वितीय, 165; ग़ज़ाली, इह्या 'उलूम एड-दीन, iii, 14।

हम पर, और सभी ईमान वाले पुरुषों और सभी ईमान वाली स्त्रियों पर दया कर।
आमीन. आमीन. आमीन.62

अहंकार, स्वयं और मानव "मैं"

संसार की कुंजी मनुष्य के हाथ में है और वह उसके स्वयं से जुड़ी हुई है। क्योंकि ब्रह्मांड के द्वार खुले हुए प्रतीत होते हुए भी वास्तव में बंद हैं। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मनुष्य को एक ट्रस्ट के माध्यम से एक ऐसी कुंजी दी है, जिसे 'मैं' कहते हैं, जो संसार के सभी द्वार खोलती है; उसने उसे एक रहस्यमय 'मैं' दिया है, जिसके द्वारा वह ब्रह्मांड के रचयिता के छिपे हुए खजाने को खोज सकता है। लेकिन 'मैं' एक अत्यंत जटिल पहेली और एक ऐसा ताबीज भी है, जिसे सुलझाना कठिन है। जब इसका वास्तविक स्वरूप और इसके निर्माण का उद्देश्य ज्ञात हो जाएगा, तो जैसे-जैसे यह स्वयं सुलझेगा, ब्रह्मांड भी वैसा ही होगा।

सर्वज्ञ निर्माता ने मनुष्य को एक ट्रस्ट के रूप में एक 'मैं' दिया है जिसमें ऐसे संकेत और नमूने शामिल हैं जो उसकी प्रभुता (रुबुबियाह) के गुणों और कार्यों की सच्चाई को दिखाते हैं और पहचानने का कारण बनते हैं, ताकि 'मैं' माप की एक इकाई हो और प्रभुता के गुण और दिव्यता के कार्यों को जाना जा सके। हालाँकि, माप की इकाई के लिए वास्तविक अस्तित्व होना आवश्यक नहीं है; ज्यामिति में काल्पनिक रेखाओं की तरह, माप की एक इकाई परिकल्पना और अनुमान से बनाई जा सकती है। इसके वास्तविक अस्तित्व के लिए ठोस ज्ञान और प्रमाणों द्वारा स्थापित होना आवश्यक नहीं है।

प्रश्न: ईश्वर के गुणों और नामों का ज्ञान क्यों आवश्यक है?
सर्वशक्तिमान 'मैं' से जुड़ा हुआ है?

उत्तर: चूँकि एक निरपेक्ष और सर्वव्यापी चीज़ की कोई सीमा या अंत नहीं है, इसलिए न तो उसे कोई आकार दिया जा सकता है, न ही उसे कोई रूप दिया जा सकता है, न ही उसे निर्धारित किया जा सकता है; उसकी विशिष्टता क्या है, यह समझा नहीं जा सकता। उदाहरण के लिए, अंधकार के बिना एक अंतहीन प्रकाश को जाना या अनुभव नहीं किया जा सकता है।
लेकिन यदि वास्तविक या काल्पनिक अंधकार की एक रेखा खींच दी जाए, तो वह ज्ञात हो जाती है।
इस प्रकार, चूँकि सर्वशक्तिमान ईश्वर के गुण जैसे ज्ञान और शक्ति, तथा सर्वज्ञ और दयालु जैसे नाम सर्वव्यापी, असीम और बिना किसी समानता के हैं, इसलिए उन्हें निर्धारित नहीं किया जा सकता है, और वे क्या हैं, यह जाना या अनुभव नहीं किया जा सकता है। इसलिए, चूँकि उनकी कोई सीमा या वास्तविक अंत नहीं है, इसलिए एक काल्पनिक और काल्पनिक सीमा खींचना आवश्यक है। 'मैं' ऐसा करता है। यह अपने आप में एक काल्पनिक आधिपत्य (रुबुबियाह) (महानता और सर्वोच्चता), स्वामित्व,

---

[62] शब्द, 133-143 पर।

शक्ति और ज्ञान: यह एक रेखा खींचता है। ऐसा करके यह सभी समावेशी विशेषताओं पर एक काल्पनिक सीमा लगाता है, कहता है, "यहाँ तक, मेरा, उसके बाद,
उसका;" यह एक विभाजन बनाता है। अपने आप में माप की छोटी इकाइयों के साथ, यह धीरे-धीरे गुणों की वास्तविक प्रकृति को समझता है।

उदाहरण के लिए, जो कुछ उसका है उस पर उसका कल्पित आधिपत्य (रूबुबियाह)
'मैं' अपने सृष्टिकर्ता की आकस्मिक सृष्टि पर प्रभुता (रुबुबियाह) को समझ सकता है।

और अपने स्पष्ट स्वामित्व के साथ, वह सच्चे स्वामित्व को समझ सकता है
इसके निर्माता के बारे में कहते हुए: “जैसे मैं इस घर का मालिक हूँ, वैसे ही निर्माता भी है
ब्रह्मांड का मालिक।" और अपने आंशिक ज्ञान से, यह उसके ज्ञान को समझ सकता है, और अपनी अर्जित कला की थोड़ी मात्रा से, यह गौरवशाली निर्माता की मूल कला को समझ सकता है। उदाहरण के लिए, 'मैं' कहता है: "जैसे मैंने इस घर को बनाया और इसे व्यवस्थित किया, वैसे ही किसी ने ब्रह्मांड को बनाया और इसे व्यवस्थित किया होगा," इत्यादि। हजारों रहस्यमय अवस्थाएं, गुण और धारणाएं जो सभी दिव्य गुणों और कार्यों को एक हद तक ज्ञात और दिखाती हैं, 'मैं' में निहित हैं। दूसरे शब्दों में, 'मैं' दर्पण की तरह है, और माप की एक इकाई और खोज के उपकरण की तरह, इसका एक सांकेतिक अर्थ है; अपने आप में कोई अर्थ न होने के कारण, यह अर्थ दर्शाता है

यह मानव की मोटी रस्सी से एक सचेत धागा है, मानवता के सार के परिधान से एक महीन धागा है, यह एक अलिफ (पहला धागा) है
यह मनुष्य के चरित्र की पुस्तक से लिया गया है, तथा इसके दो चेहरे हैं।

इनमें से पहला चेहरा अच्छाई और अस्तित्व की ओर देखता है। इस चेहरे से वह केवल अनुग्रह प्राप्त करने में सक्षम है; जो दिया जाता है उसे स्वीकार करता है, खुद वह नहीं कर सकता
सृजन। यह चेहरा सक्रिय नहीं है; इसमें सृजन करने की क्षमता नहीं है। इसका दूसरा चेहरा बुराई की ओर देखता है और अस्तित्वहीनता की ओर जाता है। वह चेहरा सक्रिय है; इसमें सृजन करने की क्षमता नहीं है।
कार्य करने की शक्ति। इसके अलावा, 'मैं' की वास्तविक प्रकृति सांकेतिक है; यह अपने अलावा अन्य चीजों का अर्थ दर्शाता है। इसका प्रभुत्व (रुबुबियाह) काल्पनिक है। इसका अस्तित्व इतना कमजोर और अवास्तविक है कि यह अपने आप में कुछ भी सहन या समर्थन नहीं कर सकता है। बल्कि, यह एक तरह का पैमाना या माप है, जैसे थर्मामीटर या बैरोमीटर जो चीजों की डिग्री और मात्रा को इंगित करता है; यह एक ऐसा माप है जो आवश्यक अस्तित्व के निरपेक्ष, सर्वव्यापी और असीम गुणों को ज्ञात करता है।

इस प्रकार जो मनुष्य अपने स्वरूप को इस प्रकार जानता है, तथा उसके अनुसार आचरण करता है, वह मनुष्य है।
इसके अनुसार, कुरान की शुभ सूचना में यह बात सम्मिलित है:

वह वास्तव में समृद्ध है जिसने इसे पवित्रता से (धर्म से दूर) उगाया है
परमेश्वर के विरुद्ध आत्म-प्रशंसा करने वाला विद्रोह) (ऐश-शम्स 91:9)

वह सही मायनों में ट्रस्ट का पालन करता है और अपने 'मैं' की दूरबीन के माध्यम से देखता है कि ब्रह्मांड क्या है और वह क्या कर्तव्य निभा रहा है। जब वह ब्रह्मांड के बारे में जानकारी प्राप्त करता है, तो वह देखता है कि उसका 'मैं' इसकी पुष्टि करता है। यह ज्ञान उसके लिए प्रकाश और ज्ञान के रूप में रहेगा, और अंधकार और व्यर्थता में परिवर्तित नहीं होगा। जब 'मैं' इस तरह से अपना कर्तव्य पूरा करता है, तो वह अपनी काल्पनिक प्रभुता और कथित स्वामित्व को छोड़ देता है, जो माप की इकाइयाँ हैं, और यह कहता है: "उसकी संप्रभुता है और सभी प्रशंसा उसके लिए है; उसका न्याय है और तुम सब उसके पास वापस आओगे।" यह सच्ची पूजा प्राप्त करता है। यह 'सबसे उत्तम आदर्श' का दर्जा प्राप्त करता है।

लेकिन अगर, अपनी रचना की बुद्धिमत्ता को भूलकर और अपने कर्तव्य का परित्याग कर दिया जाए
प्रकृति में, 'मैं' अपने आप को केवल नाममात्र और स्पष्ट प्रकृति के प्रकाश में देखता है।
अर्थात, यदि वह मानता है कि वह स्वयं का मालिक है, तो वह ट्रस्ट के साथ विश्वासघात करता है, और यह निम्न श्रेणी में आता है,

और वह सचमुच खो गया है जिसने इसे भ्रष्ट कर दिया है (आत्म-प्रशंसा करने वाले विद्रोह में)
परमेश्वर के विरुद्ध) (ऐश-शम्स 91:10)।

इसलिए, ट्रस्ट का यह पहलू, जो ईश्वर के साथ साझीदारों को जोड़ने, बुराई और गुमराही को जन्म देता है, उससे आकाश, पृथ्वी और पहाड़ भयभीत हो गए थे; वे ईश्वर के साथ काल्पनिक साझीदारों को जोड़ने से डर गए थे।

अध्याय दो

बुराई और दुख की समस्या

प्रश्न १: शैतान क्यों बनाए गए? सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने शैतान और बुराइयों को बनाया;
इसमें कौन सी बुद्धिमानी है? क्या बुराई पैदा करना बुरा नहीं है, और क्या बुराई को पैदा करना बुरा नहीं है?

उत्तर: नहीं। बुराई का निर्माण बुराई नहीं है, बल्कि बुराई का 'अधिग्रहण' या बुराई की इच्छा, बुराई है। सृजन और अस्तित्व में लाना सभी परिणामों को देखता है, जबकि ऐसी इच्छा एक विशेष परिणाम को देखती है, क्योंकि यह एक है

विशेष संबंध। उदाहरण के लिए, बारिश के हज़ारों परिणाम होते हैं, और वे सभी अच्छे होते हैं। अगर गलत चुनाव के कारण कुछ लोगों को बारिश से नुकसान होता है, तो वे यह नहीं कह सकते कि बारिश का निर्माण दया नहीं है, वे

यह नहीं कहा जा सकता कि बारिश का निर्माण बुरा है। क्योंकि यह उनके गलत चुनाव और झुकाव के कारण है कि यह उनके लिए बुरा है। इसके अलावा, आग के निर्माण में कई लाभ हैं, और वे सभी अच्छे हैं। लेकिन अगर कुछ लोग अपने गलत चुनाव और इसके दुरुपयोग के कारण आग से नुकसान उठाते हैं, तो वे यह नहीं कह सकते कि आग का निर्माण बुरा है; क्योंकि यह केवल उन्हें जलाने के लिए नहीं बनाया गया था।

बल्कि, उन्होंने भोजन पकाते समय गलती से अपना हाथ आग में डाल दिया, और उस नौकर को अपने लिए शत्रु बना लिया।

संक्षेप में, कम बुराई अधिक भलाई के लिए स्वीकार्य है। यदि कोई बुराई जो अधिक भलाई के लिए स्वीकार्य है, वह अधिक भलाई के लिए स्वीकार्य है।

यदि एक छोटी सी बुराई को छोड़ दिया जाए, तो एक बड़ी बुराई को अंजाम दिया जाएगा। उदाहरण के लिए, जिहाद के लिए सैनिकों को भेजने से निश्चित रूप से कुछ छोटी-मोटी भौतिक और शारीरिक हानियाँ और बुराइयाँ होती हैं, लेकिन जिहाद में एक बड़ी भलाई है जिससे इस्लाम को बचाया जा सकता है।

काफिरों द्वारा जीत लिया जाना। अगर उन छोटी बुराइयों के कारण जिहाद छोड़ दिया जाता है, तो बड़ी अच्छाई के चले जाने के बाद बड़ी बुराई आएगी। और वह
बिल्कुल गलत है। उदाहरण के लिए, गैंग्रीन से संक्रमित उंगली को काटना अच्छा और सही है, हालांकि यह स्पष्ट रूप से एक बुराई है। क्योंकि अगर इसे नहीं काटा जाता है, तो हाथ को काटना पड़ेगा, और यह एक बड़ी बुराई होगी।

इस प्रकार, बुराइयों, नुकसानों, क्लेशों, शैतानों और हानिकारक चीजों का निर्माण और अस्तित्व में लाना, बुरा और बुरा नहीं है, क्योंकि वे कई महत्वपूर्ण परिणामों के लिए बनाए गए हैं जो वे देते हैं। उदाहरण के लिए, शैतानों को स्वर्गदूतों को परेशान करने के लिए नहीं रखा गया है, और स्वर्गदूत प्रगति नहीं कर सकते हैं; उनकी डिग्री तय और कम है। हालाँकि, मानवता की दुनिया में प्रगति और गिरावट की डिग्री अनंत हैं। निम्रोद और फिरौन से लेकर सच्चे संतों और पैगंबरों तक, प्रगति करने के लिए एक बहुत लंबी दूरी है।

इस प्रकार शैतानों की रचना और मनुष्य की जवाबदेही के रहस्य और पैगम्बरों के भेजे जाने के माध्यम से, परीक्षण और परीक्षा और प्रयास और प्रतिस्पर्धा का एक क्षेत्र खोला गया है ताकि कोयले जैसी नीच आत्माओं को हीरे जैसी ऊँची आत्माओं से अलग किया जा सके। अगर प्रयास और प्रतिस्पर्धा न होती, तो मानवता की खान में हीरे और कोयले जैसी क्षमताएँ बराबर रहतीं। सबसे ऊँचे स्तर पर सत्यवादी अबू बकर की आत्मा उसी स्तर पर रहती, जिस स्तर पर सबसे निचले स्तर पर अबू जहल की थी। इसका मतलब यह है कि चूँकि शैतानों और बुराइयों की रचना महान और सार्वभौमिक परिणामों की ओर देखती है, इसलिए उनका अस्तित्व में आना बुरा या बुरा नहीं है। बुराइयाँ और बुरे उदाहरण जो दुर्व्यवहारों और विशेष कारणों से उत्पन्न होते हैं जिन्हें प्रवृत्ति या विकल्प के रूप में जाना जाता है, वे मनुष्य के 'अधिग्रहण' और विकल्प से संबंधित हैं, न कि ईश्वरीय रचना से।

प्रश्न 2: मानवता का बड़ा हिस्सा अविश्वासी बन जाता है क्योंकि
शैतान का अस्तित्व। वे अविश्वास को अपनाते हैं और नुकसान सहते हैं, इसके बावजूद
पैगम्बरों का अस्तित्व। यदि, नियम के अनुसार "बहुमत के पास है
शब्द, "परिणामस्वरूप बहुसंख्यक बुराई से पीड़ित हैं, तो बुराई का निर्माण बुराई है
और यह भी कहा जा सकता है कि पैगम्बरों को भेजना दया नहीं है।
यह बहुत?

उत्तर: गुणवत्ता के संबंध में मात्रा का कोई महत्व नहीं है। वास्तविक बहुमत गुणवत्ता को देखता है। उदाहरण के लिए, यदि खजूर के सौ बीज हैं और उन्हें धरती के नीचे नहीं रखा जाता है और पानी नहीं दिया जाता है और इसलिए वे रासायनिक प्रतिक्रिया से नहीं गुजरते हैं और जीवन के लिए संघर्ष नहीं करते हैं, तो वे केवल सौ हैं

बीज लगभग कुछ भी मूल्य के नहीं होते। लेकिन अगर उन्हें पानी दिया जाए और वे जीवन के लिए संघर्ष करें, और फिर सौ में से अस्सी अपने दोषपूर्ण बनावट के कारण सड़ जाएँ, लेकिन बीस फल देने वाले पेड़ बन जाएँ, तो क्या आप कह सकते हैं, "उन्हें पानी देना बुरा था क्योंकि उनमें से अधिकांश सड़ गए?" बेशक, आप ऐसा नहीं कह सकते, क्योंकि बीस बीस हज़ार के बराबर हो गए हैं। जो अस्सी खो देता है और बीस हज़ार पाता है, उसे कोई नुकसान नहीं होता, और यह बुरा नहीं हो सकता।

और उदाहरण के लिए, एक मोरनी सौ अंडे देती है, और वे पाँच सौ अंडों के बराबर होते हैं। यदि मुर्गी सौ अंडों सौ कुरुश.[63] पर बैठ जाए और उनमें से अस्सी खराब हो जाएं, तो क्या होगा?
बीस मोरों के अंडे से बच्चे निकले, तो क्या यह कहा जा सकता है कि बहुत बड़ा नुकसान हुआ और यह मामला बुरा था; कि अंडों पर मुर्गी को बैठाना बुरा था और बुरा हुआ? नहीं, ऐसा नहीं है, बल्कि यह अच्छा है। मोर की प्रजाति और अंडा परिवार ने चार सौ कुरुश के अस्सी अंडे खो दिए, लेकिन अस्सी लीरा के बीस मोर प्राप्त किए ।

इस प्रकार, पैगम्बरों को भेजने और मनुष्य की जवाबदेही के रहस्य के माध्यम से, और शैतानों के साथ संघर्ष और लड़ाई के माध्यम से, लाखों पैगम्बरों और लाखों संतों और हजारों-करोड़ों शुद्ध विद्वानों के बदले में, जो उन्होंने प्राप्त किए हैं, जो सूर्य के समान हैं,

मानवता की दुनिया के चाँद और सितारों के अलावा, मानव जाति ने अविश्वासियों और कपटियों को भी खो दिया है, जो संख्या की दृष्टि से असंख्य हैं, गुणवत्ता की दृष्टि से महत्वहीन हैं, और हानिकारक जानवरों के समान हैं।

प्रश्न 3: सर्वशक्तिमान परमेश्वर विपत्तियाँ भेजता है और क्लेश देता है; क्या यह
क्या यह विशेषकर निर्दोष लोगों और यहां तक कि पशुओं के प्रति भी अत्याचार नहीं है?
उत्तर: भगवान न करे, प्रभुता उसकी है। वह अपनी संपत्ति पर अपनी मर्जी से शासन करता है। इसके अलावा, एक कुशल कारीगर आपको मजदूरी के बदले में एक मॉडल बनाता है और आपको एक ऐसा रत्नजड़ित वस्त्र पहनाता है जिसे उसने बहुत ही कलात्मक ढंग से गढ़ा है। फिर अपनी कला और कौशल को प्रदर्शित करने के लिए, वह उसे छोटा और लंबा करता है, उसे नापता है और उसे काटता है, और वह आपको बैठाता है और खड़ा करता है। क्या आप उससे कह सकते हैं: "तुमने उस वस्त्र को बदसूरत बना दिया है जिसने मुझे सुंदर बनाया। तुमने मुझे परेशान किया है, मुझे बैठाया और खड़ा किया।" बेशक, आप ऐसा नहीं कह सकते। अगर आपने ऐसा कहा, तो आप

पागल।

ठीक उसी तरह, सर्वशक्तिमान निर्माता ने आपको एक अत्यंत कलात्मक रूप से निर्मित प्राणी पहनाया है जो आँख, कान और जीभ जैसी शक्तियों से सुसज्जित है। अपने विभिन्न नामों की कढ़ाई को प्रदर्शित करने के लिए, वह आपको बीमार बनाता है, वह आपको कष्टों से पीड़ित करता है, वह आपको भूखा बनाता है, वह आपको भूखा बनाता है, वह आपको बीमार बनाता है, वह आपको पीड़ा देता है, वह आपको भूखा बनाता है, वह आपको पीड़ा देता ...
वह तुम्हें तृप्त करता है, वह तुम्हें प्यासा बनाता है; वह तुम्हें ऐसी अवस्थाओं में घुमाता है। जीवन के सार को मजबूत करने और अपने नामों की अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करने के लिए, वह तुम्हें ऐसी अनेक स्थितियों में यात्रा कराता है। यदि आप कहते हैं:
जैसा कि तुलना में संकेत मिलता है, "आप मुझ पर ये विपत्तियाँ क्यों डालते हैं?", ज्ञान के सौ उदाहरण आपको चुप करा देंगे। किसी भी स्थिति में,
शांति, विश्राम, आलस्य, एकरसता और कार्य से गिरफ्तारी

---

[63] लीरा तुर्की मुद्रा की इकाई है। 1 लीरा 100 कुरुश के बराबर होता है, क्योंकि 1 अमेरिकी डॉलर 100 सेंट के बराबर होता है।

अस्तित्वहीनता और हानि के रूप। क्रिया और परिवर्तन अस्तित्व और
अच्छा। जीवन कर्म के द्वारा पूर्णता प्राप्त करता है, कष्टों के द्वारा प्रगति करता है। जीवन ईश्वरीय नामों के प्रकटीकरण के माध्यम से विभिन्न कर्मों को प्रकट करता है, यह शुद्ध होता है, शक्ति प्राप्त करता है, यह प्रकट होता है और फैलता है, यह अपना नियत मार्ग लिखने के लिए एक गतिशील कलम बन जाता है; यह अपना कर्तव्य निभाता है, और परलोक में पुरस्कार प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त करता है।

इस प्रकार, आपके विवाद के तीनों प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में ये हैं।
इनका स्पष्टीकरण 'शब्दों' में मिलता है ।

परमेश्वर की शरण ढूँढ़ना

शैतान

मैं शापित शैतान से परमेश्वर की शरण चाहता हूँ।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

कह दो, "ऐ मेरे रब! मैं शैतानों की उकसावे और उकसावे से तेरी पनाह माँगता हूँ। ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ कि वे मेरे पास मौजूद रहें।

"

(अल-मुमिनुन 23:97-98)

प्रश्न 4: यद्यपि दुष्ट आत्माएं किसी भी तरह से ब्रह्मांड में हस्तक्षेप नहीं करती हैं
सृष्टि के सम्बन्ध में, और अपनी दया और कृपा के माध्यम से सर्वशक्तिमान परमेश्वर सत्य के लोगों का पक्ष लेता है, और सत्य और वास्तविकता की आकर्षक सुन्दरताएँ और गुण सत्य के लोगों को मजबूत और प्रोत्साहित करते हैं, और गुमराही की घृणित कुरूपता गुमराह लोगों को विद्रोह करती है, शैतान के समूह को अक्सर ऊपरी हाथ प्राप्त करने का क्या कारण है?

और सत्य के लोग हमेशा शैतान की बुराई से बचने के लिए परमेश्वर की शरण क्यों लेते हैं?

उत्तर: बुद्धि और उद्देश्य यह है: अधिकांश भाग के लिए, गुमराही और बुराई नकारात्मक, विनाशकारी और गैर-अस्तित्व से संबंधित हैं। जबकि अधिकांश मामलों में, मार्गदर्शन और अच्छाई सकारात्मक, रचनात्मक, मरम्मत करने वाले होते हैं,
और अस्तित्व से संबंधित हैं। हर कोई जानता है कि एक आदमी बीस लोगों द्वारा बीस दिनों में बनाई गई इमारत को एक दिन में नष्ट कर सकता है। हाँ, हालाँकि मानव जीवन सभी बुनियादी अंगों और जीवन की स्थितियों के अस्तित्व के माध्यम से जारी रहता है, और यह सर्व-महिमावान निर्माता की शक्ति के लिए विशेष है, एक अंग को अलग करके, एक अत्याचारी व्यक्ति को मृत्यु प्रकट कर सकता है, जो जीवन के संबंध में अस्तित्वहीन है। "विनाश आसान है" कहावत इस कारण से बन गई है

कहावत.

इसी कारण से गुमराह लोग कभी-कभी सत्य के लोगों पर, जो कि सबसे शक्तिशाली होते हैं, विजय प्राप्त कर लेते हैं, जबकि उनकी शक्ति वास्तव में बहुत कमज़ोर होती है। लेकिन सत्य के लोगों के पास एक ऐसा दुर्ग होता है जो इतना अजेय होता है कि जब वे उसमें शरण लेते हैं, तो वे भयंकर शत्रु उनके निकट नहीं आ सकते; वे केवल अपने शत्रुओं को ही पराजित कर सकते हैं।
कुछ नहीं। यदि वे कुछ अस्थायी नुकसान पहुंचाते हैं, तो आयत के अनुसार,

> मूसा ने अपने लोगों से कहा: "परमेश्वर से मदद माँगो और धीरज धरते हुए दृढ़ रहो।
> धरती निस्संदेह अल्लाह की है और वह इसे अपने बन्दों में से जिसे चाहता है, उसका वारिस बना देता है। अन्तिम परिणाम अल्लाह का भय माननेवाले, डर रखनेवालों के पक्ष में है।" (सूरा अल-आराफ 7:128)

अनंत पुरस्कार और लाभ क्षति की भरपाई करते हैं। और वह अभेद्य
गढ़, वह किलाबंद किला, मुहम्मद (शांति और आशीर्वाद उन पर हो) का शरिया और उनके आचरण हैं।

प्रश्न 5: शैतानों का निर्माण, जो शुद्ध रूप से दुष्ट हैं, तथा उनका आस्थावान लोगों को परेशान करना, तथा उनके कारण बहुत से लोगों का आस्था न करना तथा नर्क में जाना, भयानक तथा कुरूप प्रतीत होता है। परम सुन्दर, परम करुणामय, वास्तव में दयालु की दया तथा सुंदरता इस असीम कुरूपता तथा भयानक विपत्ति की अनुमति कैसे देती है? बहुत से लोगों ने इस प्रश्न के बारे में पूछा है, तथा यह बहुत से लोगों के मन में आता है।

उत्तर: छोटी-मोटी बुराइयों के अलावा, अनेक सार्वभौमिक अच्छाइयाँ भी हैं।
शैतान के अस्तित्व में उसके उद्देश्य, तथा मानवीय उपलब्धियाँ और सिद्धियाँ शामिल हैं।
हां, एक बीज से लेकर एक विशाल वृक्ष तक जितनी भी डिग्री होती है, मानव स्वभाव में निहित क्षमताएं उससे कहीं अधिक होती हैं। एक छोटे कण से लेकर सूर्य तक डिग्री होती हैं। इन क्षमताओं और संभावनाओं को विकसित करने के लिए, क्रिया की आवश्यकता होती है।
आवश्यक है, एक लेन-देन आवश्यक है। प्रगति के तंत्र की कार्रवाई
इस तरह के लेन-देन में प्रयास के माध्यम से लाया जाता है। और प्रयास बुरी आत्माओं और हानिकारक चीजों के अस्तित्व के माध्यम से होता है। अन्यथा मनुष्य का स्थान स्वर्गदूतों की तरह स्थिर होता।

मानव जाति में कोई वर्ग नहीं है, जो हजारों प्रजातियों के समान है। और एक छोटी सी बुराई से बचने के लिए अच्छे के हजारों उदाहरणों को त्यागना बुद्धिमत्ता और न्याय के विपरीत है।

निश्चित रूप से अधिकांश लोग शैतान के कारण गुमराही को अपनाते हैं, लेकिन
महत्व और मूल्य अधिकतर गुणवत्ता पर ध्यान देते हैं; वे मात्रा पर बहुत कम या बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते
बिल्कुल नहीं। अगर किसी के पास एक हजार दस बीज हैं और वह उन्हें जमीन के नीचे दबा देता है, और धरती के नीचे उन बीजों में रासायनिक प्रतिक्रिया होती है जिसके परिणामस्वरूप उनमें से दस बीज बीज बन जाते हैं।
पेड़ और एक हजार सड़न, लाभ आदमी को प्राप्त होता है

दस बीज जो पेड़ बन गए हैं, निश्चित रूप से हज़ार सड़े हुए बीजों से होने वाले नुकसान को कम कर देते हैं। ठीक उसी तरह, आत्मा और शैतान के खिलाफ संघर्ष के माध्यम से, दस सिद्ध पुरुषों द्वारा प्राप्त लाभ, सम्मान, ज्ञान और मानव जाति के लिए मूल्य, जो सितारों की तरह हैं, निश्चित रूप से गुमराह लोगों द्वारा मानव जाति को होने वाले नुकसान को कम कर देते हैं जो अविश्वास को गले लगाते हैं, जो इतने नीच हैं कि उन्हें कीड़े के रूप में माना जाता है। चूंकि यह ऐसा है, इसलिए ईश्वरीय दया, ज्ञान और न्याय ने शैतान के अस्तित्व की अनुमति दी है, और उसे मनुष्यों को परेशान करने की अनुमति दी है।

ऐ ईमान वालों! इस भयानक दुश्मन के खिलाफ़ तुम्हारा कवच कुरान की बेंच पर गढ़ा गया ईश्वर का भय है। और तुम्हारी ढाल है नबी (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) के आचरण। और तुम्हारा हथियार है शैतान से ईश्वर की शरण मांगना, और क्षमा मांगना, और ईश्वरीय सुरक्षा में शरण लेना।64

---

[64] नर्सी, द फ्लैशेस एट 618.

अध्याय 3

दिव्य निर्धारण

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान, दयावान है। कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसके भंडार हमारे पास न हों, और हम उसे निश्चित मात्रा में ही उतारते हैं।

(अल-हिज्र 15:21)

हमने सब कुछ लिख लिया है और उसे एक स्पष्ट अभिलेख में रख लिया है।

(या-सिन 36:12)

ईश्वरीय निर्णय65 और चुनाव की शक्ति66 दो महत्वपूर्ण बातें हैं।
हम कई 'विषयों' में उनके कुछ रहस्यों को उजागर करने का प्रयास करेंगे।

पहला विषय:

ईश्वरीय निर्णय और चुनाव की शक्ति राज्य और विवेक से संबंधित विश्वास के पहलू हैं जो इस्लाम और विश्वास की अंतिम सीमाओं को दर्शाते हैं; वे सैद्धांतिक नहीं हैं और ज्ञान से संबंधित नहीं हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि एक आस्तिक हर चीज को सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर रखता है, यहां तक कि अपने कार्यों और खुद को भी, जब तक कि अंततः चुनाव की शक्ति उसके सामने नहीं आ जाती, तब तक वह इससे बच नहीं सकता

उसका दायित्व और जिम्मेदारी। यह उससे कहता है: "आप जिम्मेदार हैं और
ताकि वह अपने अच्छे कामों पर घमंड न करे।
कर्मों और उपलब्धियों के बारे में, ईश्वरीय निर्णय उसका सामना करते हुए कहता है: "अपनी सीमाओं को जानो; जो उन्हें निर्धारित करता है वह तुम नहीं हो।" जी हाँ, ईश्वरीय निर्णय और चुनाव की शक्ति ईमान और इस्लाम की अंतिम डिग्री पर हैं; पहले को आत्मा को अभिमान से बचाने के लिए और दूसरे को उसे अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करने के लिए ईमान के मामलों में शामिल किया गया है।

दुष्ट आत्माएं ईश्वरीय आदेश से चिपकी रहती हैं

---

[65] ईश्वरीय निर्धारण (क़दर) को भाग्य या नियति के नाम से भी जाना जाता है।
[66] चुनाव की शक्ति या इच्छाशक्ति (जुज़ी इरादा, जुज़-ए इख़्तियारी), जिसे स्वतंत्र इच्छा के रूप में भी जाना जाता है
[67] मैंने कुछ विषयों को उनकी अत्यधिक जटिलता के कारण छोड़ दिया है।

अपने द्वारा की गई बुराइयों की जिम्मेदारी से खुद को मुक्त करना, तथा उन्हें दिए गए गुणों के कारण उनका अभिमानी और अहंकारी होना तथा चुनाव की शक्ति पर भरोसा करना, ऐसे कार्य हैं जो ईश्वरीय निर्णय के रहस्य और चुनाव की शक्ति के ज्ञान के बिल्कुल विपरीत हैं; ये ज्ञान से संबंधित मामले नहीं हैं जो ऐसे कार्यों को जन्म दे सकते हैं। साधारण लोगों के लिए जो आध्यात्मिक रूप से प्रगति नहीं कर पाए हैं, ऐसे अवसर हो सकते हैं जब ईश्वरीय निर्णय का उपयोग किया जाता है, और ये आपदाएँ और संकट हैं।

जब यह निराशा और दुख का इलाज है, तो यह आपदाओं को दूर करता है। लेकिन इसका इस्तेमाल विद्रोह को सही ठहराने और भविष्य के मामलों में नहीं किया जाना चाहिए ताकि यह अपव्यय और आलस्य का कारण बन जाए। कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वरीय निर्धारण को लोगों को उनके दायित्वों और जिम्मेदारी से मुक्त करने के लिए विश्वास के मामलों में शामिल नहीं किया गया है, बल्कि उन्हें घमंड और अहंकार से बचाने के लिए शामिल किया गया है।

जबकि चुनाव की शक्ति को बुराइयों का स्रोत बनने के लिए शामिल किया गया है, न कि सद्गुणों का स्रोत बनने के लिए, ताकि लोग फिरौन की तरह बन जाएं।

हाँ, जैसा कि कुरान में कहा गया है, मनुष्य अपनी बुराइयों के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है, क्योंकि वह स्वयं ही है।
जो बुराइयों को चाहता है। चूँकि बुराइयाँ विनाशकारी होती हैं, इसलिए मनुष्य एक ही बुरे काम से बहुत विनाश कर सकता है, जैसे एक माचिस से घर जला देना,
और वह भयंकर दण्ड का पात्र बन जाता है।

हालाँकि, उसे अच्छे कामों पर गर्व करने का अधिकार नहीं है; उसका हिस्सा
उनमें बहुत कम है। क्योंकि जो चाहता है और अच्छे कर्मों की आवश्यकता है
ईश्वरीय दया है, और जो उन्हें बनाता है वह प्रभुत्वशाली शक्ति है। अनुरोध और उत्तर, कारण और कारण, दोनों ईश्वर से हैं।
मनुष्य केवल प्रार्थना, विश्वास, चेतना और सहमति के माध्यम से उन्हें प्राप्त करता है। जहाँ तक बुराइयों का सवाल है, यह

मनुष्य की आत्मा जो उन्हें चाहती है, चाहे वह क्षमता से हो या फिर इच्छा से, जैसे सूर्य की श्वेत और सुन्दर रोशनी में कुछ पदार्थ काले और सड़ जाते हैं, और यह कालापन उनकी क्षमता से संबंधित है, लेकिन यह सर्वशक्तिमान ईश्वर ही है जो एक दिव्य नियम के माध्यम से बुराइयों को पैदा करता है जिसमें असंख्य लाभ शामिल हैं। अर्थात्, कारण और मांग आत्मा से है, इसलिए यह आत्मा ही है जो जिम्मेदार है, जबकि यह सर्वशक्तिमान ईश्वर ही है जो बुराइयों को पैदा करता है और उन्हें अस्तित्व में लाता है, और चूंकि उनके अन्य परिणाम और फल हैं जो अच्छे हैं, इसलिए वे अच्छे हैं।

उपरोक्त कारण से ही बुराई का 'अधिग्रहण' (कस्ब) अर्थात् बुराई का 'अधिग्रहण' (कस्ब) होता है।
बुराई की चाहत बुराई है, लेकिन बुराई का निर्माण बुराई नहीं है। एक आलसी आदमी जो बारिश से नुकसान उठाता है, जिसमें अच्छे के कई उदाहरण शामिल हैं, वह यह नहीं कह सकता कि बारिश दया नहीं है। हां, इसके निर्माण में एक छोटी सी बुराई के साथ-साथ अच्छे के कई उदाहरण भी हैं। उस अच्छाई को एक पल के लिए छोड़ देना

छोटी बुराई बड़ी बुराई बन जाती है। इसलिए, छोटी बुराई अच्छाई के समान हो जाती है। ईश्वरीय सृष्टि में कोई बुराई या कुरूपता नहीं है। वे तो उसके सेवक की इच्छा और उसकी क्षमता पर निर्भर करते हैं।

इसके अलावा, ईश्वरीय निर्धारण बुराई और कुरूपता दोनों से मुक्त है
परिणामों और फलों के संबंध में, और तर्क और कारण के संबंध में अत्याचार और कुरूपता से मुक्त। क्योंकि ईश्वरीय निर्धारण सच्चे कारणों को देखता है और न्यायपूर्ण तरीके से कार्य करता है। मनुष्य अपने निर्णय कारणों के आधार पर बनाते हैं
जिसे वे सतही तौर पर देखते हैं और शुद्ध न्याय के दायरे में गलती कर बैठते हैं
ईश्वरीय निर्णय। उदाहरण के लिए, एक न्यायाधीश आपको चोरी का दोषी पाता है और
तुम्हें जेल भेज देता है। तुम चोर नहीं हो, लेकिन तुमने एक हत्या की है जिसके बारे में कोई नहीं जानता। इस प्रकार, ईश्वरीय निर्णय ने भी तुम्हें सजा सुनाई
आपको कारावास की सज़ा दी गई, लेकिन इसने आपको गुप्त हत्या के लिए सज़ा सुनाई और निष्पक्ष रूप से काम किया। चूँकि न्यायाधीश ने आपको चोरी के लिए सज़ा सुनाई, जिसके बारे में आप नहीं जानते थे, इसलिए उसने अन्याय किया। इस प्रकार, एक ही चीज़ में ईश्वरीय निर्धारण और ईश्वरीय सृजन का न्याय और मनुष्य का गलत चुनाव या अधिग्रहण दो मामलों में स्पष्ट था; आप अन्य चीज़ों के लिए इसके साथ समानताएँ बना सकते हैं। यानी, उत्पत्ति और अंत, स्रोत और शाखा, कारण और परिणाम के संबंध में, ईश्वरीय निर्धारण और सृजन बुराई, कुरूपता और अत्याचार से मुक्त हैं।

प्रश्न: मनुष्य के पास अपनी पसंद की शक्ति से सृजन करने की कोई क्षमता नहीं है और उसके पास 'अधिग्रहण' के अलावा कुछ भी नहीं है, जो कि सैद्धांतिक है, तो फिर ऐसा कैसे है कि कुरान में उसे आकाशों और पृथ्वी के निर्माता के प्रति विद्रोही और शत्रुतापूर्ण दिखाया गया है, जो उसके बारे में बहुत शिकायत करता है; निर्माता स्वयं और अपने सभी फ़रिश्तों को विद्रोही लोगों के विरुद्ध अपने विश्वासी सेवकों की सहायता के लिए प्रेरित करता है, और उन्हें सबसे अधिक महत्व देता है?

उत्तर: क्योंकि अविश्वास, विद्रोह और बुराई विनाश और गैर-अस्तित्व हैं। हालाँकि, विशाल विनाश और गैर-अस्तित्व के असंख्य उदाहरण एक सैद्धांतिक मामले और गैर-अस्तित्व के एक उदाहरण से उत्पन्न हो सकते हैं। एक बड़े जहाज के पतवार चलाने वाले द्वारा अपना कर्तव्य त्यागने से जहाज डूब सकता है और उस पर कार्यरत सभी लोगों का श्रम व्यर्थ हो सकता है; विनाश के वे सभी उदाहरण गैर-अस्तित्व के एक उदाहरण से उत्पन्न होंगे। इसी तरह, चूँकि अविश्वास और विद्रोह गैर-अस्तित्व और विनाश हैं, इसलिए चुनाव की शक्ति उन्हें एक सैद्धांतिक मामले के माध्यम से भड़का सकती है और भयानक परिणाम पैदा कर सकती है। क्योंकि यद्यपि अविश्वास केवल एक बुराई है, यह पूरे ब्रह्मांड का अपमान करता है, इसे बेकार और निरर्थक होने का आरोप लगाता है, और सभी प्राणियों को नकारता है, जो सबूत दिखाते हैं

ईश्वरीय एकता का, तथा ईश्वरीय नामों की सभी अभिव्यक्तियों के प्रति तिरस्कारपूर्ण है। इसलिए यह शुद्ध बुद्धि है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर अविश्वासियों के बारे में गंभीर शिकायतें करता है, उन्हें ब्रह्मांड और सभी प्राणियों तथा ईश्वरीय नामों के नाम पर भयानक रूप से धमकाता है; यह शुद्ध न्याय है कि

उन्हें अनन्त दण्ड भुगतना चाहिए। चूँकि अविश्वास और विद्रोह के माध्यम से मनुष्य विनाश का मार्ग अपनाता है, इसलिए सेवा के एक छोटे से कार्य से वह बहुत सारे कार्य कर सकता है। इसलिए अविश्वास के सामने, विश्वासी लोग

सर्वशक्तिमान ईश्वर की असीम कृपा की आवश्यकता है। क्योंकि एक उपद्रवी बच्चे के कारण जो घर को जलाने की कोशिश कर रहा है, दस मजबूत आदमी जिन्होंने इसे बचाने और मरम्मत करने का बीड़ा उठाया है, उन्हें बच्चे के माता-पिता से विनती करनी पड़ सकती है, या राजा का सहारा भी लेना पड़ सकता है। उसी तरह विश्वासियों को भी कई लोगों की ज़रूरत है
विद्रोही लोगों का सामना करने के लिए ईश्वरीय कृपा।

संक्षेप में, यदि ईश्वरीय निर्धारण और चुनाव की शक्ति के बारे में बोलने वाले व्यक्ति में पूर्ण विश्वास है और वह ईश्वरीय उपस्थिति के बारे में जानता है, तो वह ब्रह्मांड और खुद को सर्वशक्तिमान ईश्वर के अधीन मानता है, यह जानते हुए कि वे उनके अधीन हैं। उसे उनके बारे में बोलने का अधिकार है। क्योंकि वह खुद को और हर चीज को सर्वशक्तिमान ईश्वर से जानता है, इसलिए वह जिम्मेदारी लेता है, इसे आधार बनाता है

वह अपनी पसंद की शक्ति पर निर्भर करता है। वह स्वीकार करता है कि यह बुराइयों का स्रोत है और अपने पालनहार को दोषमुक्त घोषित करता है। वह उपासना के दायरे में रहता है और सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा उसे सौंपे गए दायित्वों को पूरा करता है।
इसके अलावा, वह अपने अच्छे कामों और उपलब्धियों पर गर्व नहीं करता; वह
बल्कि ईश्वरीय निर्णय की ओर देखता है और धन्यवाद देता है। वह अपने ऊपर आने वाली विपत्तियों में ईश्वरीय निर्णय को देखता है, और धैर्य के साथ उन्हें सहता है।

लेकिन अगर ईश्वरीय निर्णय और चुनाव की शक्ति के बारे में बोलने वाला व्यक्ति लापरवाह और लापरवाह है, तो उसे उनके बारे में बोलने का कोई अधिकार नहीं है। क्योंकि, अपने गलत मार्गदर्शन से प्रेरित होकर, उसकी दुष्ट आत्मा ब्रह्मांड को कारणों से जोड़कर ईश्वर की संपत्ति को उनके बीच बांट देती है। और वह खुद के स्वामित्व को खुद को बताता है। वह अपने कार्यों को खुद को बताता है।

और कारणों के लिए। अपनी जिम्मेदारी और दोषों के लिए, वह ईश्वरीय निर्धारण का हवाला देता है।
वह अंततः सर्वशक्तिमान ईश्वर को ही चुनाव करने की शक्ति प्रदान करेगा, तथा ईश्वरीय निर्णय को सबसे अंत में मानेगा; इस प्रकार उन पर चर्चा करना निरर्थक हो जाता है। उन पर चर्चा करना केवल आत्मा का एक छल है जो उनमें निहित बुद्धि के सर्वथा विपरीत है, ताकि ऐसे व्यक्ति को पाप से बचाया जा सके।

ज़िम्मेदारी।

...

चौथा विषय: ईश्वरीय निर्धारण एक प्रकार का ज्ञान है। ज्ञान
ज्ञात वस्तु पर निर्भर है। यानी, यह उसे वैसे ही जानता है जैसा वह है। ज्ञात वस्तु ज्ञान पर निर्भर नहीं है। यानी, ज्ञान के सिद्धांत मौलिक नहीं हैं, ताकि ज्ञान ज्ञात वस्तु को उसके बाहरी अस्तित्व के संबंध में निर्देशित करे। क्योंकि ज्ञात वस्तु का सार और उसका बाहरी अस्तित्व इच्छाशक्ति को देखता है और शक्ति पर आधारित होता है। साथ ही, पूर्व-अनंत काल अतीत तक पहुँचने वाली श्रृंखला की नोक नहीं है जिसे माना जाना चाहिए

चीजों के अस्तित्व में अंतिम बिंदु और बाध्यता का स्रोत। बल्कि, पूर्व-अनंत काल अतीत, वर्तमान और भविष्य को एक साथ रखता है, उन्हें देखता है
ऊपर से दर्पण की तरह। ऐसी स्थिति में, अतीत के समय के अंत की कल्पना करना सही नहीं है जो आकस्मिकता के क्षेत्र में वापस फैला हुआ है और इसे पूर्व-अनंत काल कहना, और यह मान लेना कि चीजें क्रम से पूर्व-अनंत काल के ज्ञान में प्रवेश करती हैं, और स्वयं इसके बाहर है; इस तरह से तर्क करना सही नहीं है।

इस रहस्य को समझाने के लिए निम्नलिखित उदाहरण पर विचार करें:
मान लीजिए आपके हाथ में एक दर्पण है और आपके दाहिनी ओर का क्षेत्र अतीत और वर्तमान है।
आपके बाईं ओर का क्षेत्र, भविष्य; दर्पण केवल वही धारण करता है जो उसके विपरीत है। फिर एक गति के साथ यह दोनों पक्षों को धारण करता है, लेकिन यह सब कुछ धारण नहीं कर सकता। दर्पण को जितना नीचे रखा जाए, उसमें कम दिखाई देगा, और जितना ऊपर उठेगा, वह जिस क्षेत्र को घेरता है, वह फैलता जाता है, जब तक कि यह दोनों पक्षों को एक साथ पूरी तरह से धारण नहीं कर सकता। इस स्थिति में दर्पण में प्रतिबिंबित क्षेत्रों में जो कुछ भी होता है, उसे एक दूसरे से पहले या बाद में नहीं कहा जा सकता है, या अनुरूप या अनुरूप नहीं कहा जा सकता है

एक दूसरे का विरोध करते हैं। ईश्वरीय निर्धारण पूर्व-शाश्वत ज्ञान का हिस्सा है, और हदीस के शब्दों में, पूर्व-शाश्वत ज्ञान "एक ऊंचे स्थान पर है जो अपने ऊंचे दृष्टिकोण से वह सब कुछ शामिल करता है जो पूर्व-शाश्वत काल से लेकर बाद के अनंत काल तक रहा है और होगा।" हम और हमारा तर्क इससे बाहर नहीं हो सकते

ताकि हम अतीत के क्षेत्र के लिए एक दर्पण की तरह हो सकें।

प्रश्न: ईश्वरीय निर्धारण का संबंध कारण और प्रभाव से है। यानी यह प्रभाव इस कारण से होगा। ऐसी स्थिति में यह नहीं कहा जा सकता कि "चूंकि फलां व्यक्ति की मृत्यु फलां समय पर निर्धारित है, तो उस व्यक्ति का क्या दोष है जिसने अपनी इच्छा से राइफल चलाई, क्योंकि यदि उसने गोली नहीं चलाई होती, तो दूसरा व्यक्ति भी मर जाता?" ऐसा क्यों नहीं कहा जा सकता?

उत्तर: क्योंकि ईश्वरीय नियति ने निर्दिष्ट किया था कि फलां व्यक्ति की मृत्यु उस व्यक्ति की राइफल से होगी। यदि आप मानते हैं कि उसने राइफल नहीं चलाई, तो आप मान रहे हैं कि ईश्वरीय नियति में कोई दोष नहीं था।

अगर आप कल्पना करें कि आप उसकी मौत का फैसला किस आधार पर करेंगे?
कारण और प्रभाव को जबरिया की तरह अलग-अलग माना गया है,

[68] या फिर तुम मुताज़िलियों की तरह ईश्वरीय निर्णय को नकारते हो , तुम सुन्नी विचारधारा को छोड़ देते हो और विधर्मियों में शामिल हो जाते हो। हम सत्यवादी लोग कहते हैं: “अगर उसने राइफल नहीं चलाई होती, तो हम नहीं जानते कि वह मरता या नहीं।” जबरिया कहते हैं: “अगर उसने राइफल नहीं चलाई होती, तो भी वह मर जाता।” जबकि मुताज़िलियों का कहना है: “अगर उसने राइफल नहीं चलाई होती, तो वह नहीं मरता।”

...

सातवां विषय: निश्चय ही मनुष्य की इच्छा शक्ति और चुनाव करने की शक्ति कमजोर और सैद्धांतिक मामला है, लेकिन सर्वशक्तिमान परमेश्वर, जो पूर्णतया बुद्धिमान है, ने इसे बनाया है।
वह कमजोर और आंशिक इच्छा उसकी सार्वभौमिक इच्छा के संबंध के लिए एक शर्त है।
वह वास्तव में कहता है: "मेरे सेवक! तुम अपनी इच्छा से जिस रास्ते पर जाना चाहोगे, मैं तुम्हें वहीं ले चलूँगा। ऐसी स्थिति में जिम्मेदारी
तुम्हारा है!" यदि तुलना गलत नहीं है, तो आप एक शक्तिहीन बच्चे को अपने कंधों पर ले लेते हैं और उसे चुनने का विकल्प देते हुए कहते हैं कि आप उसे ले जाएंगे
जहाँ भी वह चाहे। बच्चा ऊँचे पहाड़ पर जाना चाहता है इसलिए आप
उसे वहाँ ले जाओ, लेकिन या तो उसे सर्दी लग जाती है या वह गिर जाता है। तो बेशक आप उसे डांटते हैं, कहते हैं, "तुम वहाँ जाना चाहते थे," और आप उसे एक थप्पड़ मारते हैं।
इस प्रकार, सर्वशक्तिमान ईश्वर, जो न्याय करने वालों में सबसे दृढ़ है, अपने सेवक की इच्छा को, जो कि अत्यंत कमजोर है, एक शर्त बनाता है, और उसकी सार्वभौमिक इच्छा उसका अनुसरण करती है।

संक्षेप में, हे मनुष्य! तेरी इच्छाशक्ति जिसे चुनाव की शक्ति कहते हैं, अत्यंत दुर्बल है, किन्तु बुरे कर्मों और विनाश में उसका हाथ अत्यंत लम्बा है।
और नेकियों में बहुत कम समय लगता है। अपनी उस इच्छा का एक हाथ प्रार्थना में लगा दो, ताकि वह भलाई की श्रृंखला का फल बन कर जन्नत तक पहुँच जाए।
कर्मों को आगे बढ़ाओ, और अनंत सुख की ओर बढ़ो। और अपना दूसरा हाथ क्षमा मांगने के लिए दो, ताकि वह बुरे कर्मों के लिए छोटा हो जाए और पाप के लिए नहीं पहुंचे।
नरक का ओलियंडर-वृक्ष, जो उस शापित वृक्ष का एक फल है। अर्थात, जैसे
प्रार्थना और परमेश्वर पर भरोसा करने से काम करने की प्रवृति बहुत मज़बूत होती है
अच्छाई, इसलिए पश्चाताप और क्षमा मांगने से बुराई करने की प्रवृत्ति कट जाती है, और उसके अपराधों का अंत हो जाता है।

(तक)

ईश्वरीय निर्णय के सम्बन्ध में एक प्रश्न:

पहले विषय में आपने साबित किया कि ईश्वरीय निर्धारण के बारे में सब कुछ अच्छा और सुंदर है। यहाँ तक कि इससे होने वाली बुराई भी अच्छी है, और कुरूपता भी सुंदर है। लेकिन इस दुनिया में आपदाएँ और क्लेश इस बात का खंडन करते हैं

वह कथन.

[68] परिशिष्ट 4 देखें: इस्लाम में विचारधाराएँ (मज़हब)।

उत्तर: हे मेरे आत्मा और मेरे मित्र, जो तीव्र करुणा से तीव्र पीड़ा का अनुभव करते हैं! यह तथ्य कि सभी गुण और सिद्धियाँ अस्तित्व में लौट आती हैं और यह कि
सभी विद्रोह, विपत्तियों और दोषों का आधार अस्तित्वहीनता है, यह इसका प्रमाण है
कि अस्तित्व शुद्ध अच्छाई है और अस्तित्वहीनता शुद्ध बुराई है। चूँकि अस्तित्वहीनता ही
शुद्ध बुराई, परिस्थितियाँ जो या तो अस्तित्वहीनता का परिणाम देती हैं या अस्तित्व का संकेत देती हैं
इसमें बुराई भी शामिल है। इसलिए, जीवन, अस्तित्व का सबसे चमकदार प्रकाश,
विभिन्न परिस्थितियों से गुजरते हुए, उसे शक्ति मिलती है; वह सामना करता है
विभिन्न परिस्थितियों में शुद्ध किया जाता है; यह अनेक गुण ग्रहण करता है और उत्पन्न करता है
वांछित परिणाम प्राप्त करता है, और कई चरणों में प्रवेश करता है और व्यापक रूप से प्रदर्शित करता है
जीवनदाता के नामों का प्रभाव इस तथ्य के कारण है कि कुछ
जीवित प्राणियों के साथ दुःख, विपत्ति, कठिनाई और क्लेश के रूप में चीजें घटित होती हैं, जिससे उनके जीवन में अस्तित्व की रोशनी नवीनीकृत हो जाती है, और गैर-अस्तित्व का अंधकार दूर हो जाता है और उनका जीवन शुद्ध हो जाता है।
क्योंकि गिरफ्तारी, विश्राम, मौन, आलस्य, आराम और एकरसता सभी गुणधर्मों में एकरूप हैं।
और एक स्थिति के रूप में, अस्तित्वहीनता। यहां तक कि सबसे बड़ा आनंद भी एकरसता के कारण शून्य हो जाता है।

संक्षेप में, चूँकि जीवन सबसे सुन्दर नामों की छाप प्रदर्शित करता है,
जो कुछ भी होता है वह अच्छा होता है। उदाहरण के लिए, एक बहुत अमीर और असीम रूप से कुशल व्यक्ति जो कई शिल्पों में निपुण है, एक घंटे और
मजदूरी के बदले में, एक दुखी व्यक्ति को एक आभूषणों से सजे, कलात्मक ढंग से तैयार किए गए वस्त्र पहनाता है। यह वस्त्र उसने दुखी व्यक्ति को एक आदर्श के रूप में प्रस्तुत करने और अपनी कला और अपने व्यापक कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए बनाया था।
वह आदमी पर वस्त्र का काम करता है, उसे विभिन्न रूप देता है, और उसे बदलता है।
अपनी कला की हर किस्म को प्रदर्शित करने के लिए वह उसे काटता है, बदलता है, लंबा-छोटा करता है। क्या मजदूरी पाने वाले गरीब आदमी को न्यायोचित ठहराया जा सकता है यदि
वह उस व्यक्ति से कहता है: "तुम मुझे परेशान कर रहे हो। तुम मुझे झुकने और खड़े होने पर मजबूर कर रहे हो। इस वस्त्र को काटकर और छोटा करके जो मुझे और अधिक सुंदर बनाता है, तुम मेरी सुंदरता को खराब कर रहे हो"? क्या उसे उससे यह कहने का अधिकार है: "तुम निर्दयी और अनुचित तरीके से काम कर रहे हो"? इस प्रकार, उसके समान, अपने सबसे सुंदर नामों के प्रभाव को प्रदर्शित करने के लिए, सर्व-महिमावान निर्माता, अद्वितीय निर्माता, कई परिस्थितियों में मेरे वस्त्र को बदल देता है।

वह जीवित प्राणियों को वस्त्र पहनाता है, जो इंद्रियों और सूक्ष्म शक्तियों जैसे आंख, कान, कारण और हृदय से सुसज्जित है। वह इसे बहुत ही भीतर से बदल देता है
अनेक परिस्थितियाँ। इनमें दुःख और विपत्ति के रूप में परिस्थितियाँ हैं जो उनके कुछ नामों के अर्थों को दर्शाती हैं, और ज्ञान की चमक के भीतर दया की किरणें, और दया की उन किरणों के भीतर सुंदरता के सूक्ष्म उदाहरण हैं।

(तक)

अध्याय 4

भौतिकवाद या ईश्वर?

यह ग्रंथ प्रकृतिवादी नास्तिकता को बिना किसी पुनर्जीवन की संभावना के मार डालता है, तथा अविश्वास की आधारशिला को पूरी तरह से तोड़ देता है।

एक अनुस्मारक

यह लेख नौ असंभवताओं के माध्यम से समझाता है, जिनमें शामिल हैं
कम से कम नब्बे असंभव हैं, बस उन प्रकृतिवादियों द्वारा अपनाया गया तरीका कितना अनुचित, असभ्य और अंधविश्वासी है जो नास्तिक हैं ।69
यहाँ चर्चा इसलिए की जा रही है क्योंकि इन असंभवताओं को रिसाले-ए-नूर के अन्य खंडों में आंशिक रूप से समझाया गया है और तर्कों में कुछ चरणों को छोड़ दिया गया है। इसलिए, यह विचार आता है कि ऐसा कैसे हुआ कि उन प्रसिद्ध और कथित रूप से प्रतिभाशाली दार्शनिकों ने इतनी स्पष्ट रूप से स्पष्ट बात को स्वीकार कर लिया

अंधविश्वास, और उसी रास्ते पर चलते रहना जारी है। खैर, सच तो यह है कि वे ऐसा नहीं कर सकते थे
इसकी वास्तविकता को देखें। और जो कोई भी इस पर संदेह करता है, मैं उसे विस्तार से समझाने तथा स्पष्ट और निर्णायक तर्कों के माध्यम से यह साबित करने के लिए तैयार हूं कि ये असभ्य, घृणित और अनुचित असंभवताएं उनके मार्ग का आवश्यक और अपरिहार्य परिणाम हैं; वास्तव में, उनके पंथ का सार यही है।70

---

[69] प्रकृतिवाद वह विचार या विश्वास है कि केवल प्राकृतिक नियम और शक्तियाँ ही दुनिया में काम करती हैं - अलौकिक या आध्यात्मिक के विपरीत। प्रकृतिवाद वह विचार या विश्वास है कि प्राकृतिक दुनिया से परे कुछ भी मौजूद नहीं है। प्रकृतिवादियों का मानना है कि प्राकृतिक नियम वे नियम हैं जो प्राकृतिक ब्रह्मांड की संरचना और व्यवहार को नियंत्रित करते हैं, कि हर चरण में बदलता ब्रह्मांड इन नियमों का एक उत्पाद है।

[70] इस ग्रंथ को लिखने का कारण कुरान पर किये जा रहे हमले थे।
उन लोगों द्वारा जो हर उस चीज़ को अंधविश्वास कहते थे जिस तक उनका भ्रष्ट दिमाग नहीं पहुँच पाता था, जो प्रकृति का इस्तेमाल अविश्वास को सही ठहराने के लिए कर रहे थे, और विश्वास की सच्चाइयों को सबसे आक्रामक और बदसूरत तरीके से बदनाम कर रहे थे। उन हमलों ने मेरे दिल में एक तीव्र क्रोध को जगाया जिसके परिणामस्वरूप उन विकृत नास्तिकों और सत्य के मिथ्याचारियों को जोरदार और कठोर थप्पड़ मिले। अन्यथा, रिसाले-ए-नूर द्वारा आम तौर पर अपनाया जाने वाला तरीका एक सौम्य, विनम्र और प्रेरक तरीका है।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।
उनके रसूलों ने कहा: "क्या ईश्वर, आकाश और पृथ्वी के निर्माता के बारे में कोई संदेह हो सकता है?

(इब्राहीम 14:10)

एक अलंकारिक प्रश्न के माध्यम से यह घोषित करते हुए कि सर्वशक्तिमान ईश्वर के बारे में कोई संदेह नहीं हो सकता है और न ही होना चाहिए, यह श्लोक स्पष्ट रूप से ईश्वरीय अस्तित्व और एकता को प्रदर्शित करता है।

हमारी चर्चा से पहले एक बात का उल्लेख करना आवश्यक है:

जब मैं 1922 में अंकारा गया था, तो इस्लाम की सेना की यूनानियों पर जीत के परिणामस्वरूप आस्था रखने वाले लोगों का मनोबल बहुत ऊंचा था। लेकिन मैंने देखा कि नास्तिकता की एक घिनौनी धारा विश्वासघाती रूप से उनके दिमाग को तोड़ने, जहर देने और नष्ट करने की कोशिश कर रही थी। "हे भगवान!" मैंने कहा, "यह राक्षस आस्था के मूल सिद्धांतों को नुकसान पहुँचाने वाला है।" उस समय, चूँकि उपर्युक्त श्लोक ईश्वर के अस्तित्व और एकता को स्पष्ट रूप से स्पष्ट करता है,

मैंने इससे सहायता मांगी और अरबी में एक ग्रंथ लिखा जिसमें सर्वज्ञ कुरान से लिए गए प्रमाण शामिल थे जो उस नास्तिक धारा को तितर-बितर करने और नष्ट करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली थे। मैंने इसे अंकारा में येनी गुन प्रेस में छपवाया। लेकिन, अफसोस, अरबी जानने वाले कम थे और इसे गंभीरता से लेने वाले दुर्लभ थे। साथ ही, इसका तर्क बेहद संक्षिप्त और स्पष्ट था।

संक्षिप्त रूप। परिणामस्वरूप, ग्रंथ का वह प्रभाव नहीं हुआ जो होना चाहिए था और दुख की बात है कि नास्तिकता की धारा बढ़ती गई और उसे बल मिला। अब, मैं प्रमाण के एक हिस्से को तुर्की में समझाने के लिए बाध्य महसूस करता हूँ।

चूँकि इसके कुछ भागों की व्याख्या रिसाले-ए-नूर के अन्य खंडों में पूरी तरह से की जा चुकी है , इसलिए इसे यहाँ सारांश रूप में लिखा जाएगा। वे अनेक प्रमाण आंशिक रूप से इस प्रमाण में सम्मिलित हैं; इसलिए प्रत्येक को इस प्रमाण का एक तत्व माना जा सकता है।
सबूत।

परिचय

ऐ लोगो! तुम्हें मालूम होना चाहिए कि कुछ ऐसे मुहावरे हैं जो आम तौर पर इस्तेमाल किए जाते हैं और उनसे अविश्वास का संकेत मिलता है। ईमान वाले भी उनका इस्तेमाल करते हैं, लेकिन उनके निहितार्थों को समझे बिना। हम उनमें से तीन सबसे महत्वपूर्ण शब्दों को स्पष्ट करेंगे।

पहला वाक्य: कारण ही इसका सृजन करते हैं।

दूसरा वाक्यांश: यह स्वयं बनता है; यह अस्तित्व में आता है और बाद में अस्तित्वहीन हो जाता है।

तीसरा वाक्यांश: यह स्वाभाविक है; प्रकृति इसकी आवश्यकता बनाती है और इसका निर्माण करती है।

वास्तव में, चूँकि प्राणियों का अस्तित्व है और इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता है, और चूँकि प्रत्येक प्राणी बुद्धिमानी और कलात्मक ढंग से अस्तित्व में आता है, और चूँकि प्रत्येक समय से बाहर नहीं है, बल्कि निरंतर नवीनीकृत होता रहता है, तो हे सत्य के मिथ्यावादी, तुम यह कहने के लिए बाध्य हो कि या तो संसार में कारण प्राणियों का निर्माण करते हैं, उदाहरण के लिए, यह पशु; अर्थात्, यह कारणों के एक साथ आने से अस्तित्व में आता है, या यह कि यह स्वयं को बनाता है, या इसका अस्तित्व में आना प्रकृति की आवश्यकता और आवश्यक प्रभाव है, या यह कि इसे बनाया गया है।

एक सर्वशक्तिमान और सर्व-महिमावान की शक्ति के माध्यम से। चूँकि बुद्धि इन चार के अलावा कोई रास्ता नहीं खोज सकती, अगर पहले तीन निश्चित रूप से असंभव, अमान्य और बेतुके साबित होते हैं, तो दिव्य एकता का मार्ग, जो चौथा रास्ता है, अनिवार्य रूप से और स्व-स्पष्ट रूप से और बिना किसी संदेह या संदेह के, सत्य साबित होगा।

पहला तरीका: कारण इसे बनाते हैं

यह कल्पना की जाती है कि वस्तुओं और प्राणियों का निर्माण और अस्तित्व ब्रह्मांड में कारणों के एक साथ आने से होता है। हम इसकी अनेक असंभवताओं में से केवल तीन का ही उल्लेख करेंगे।

पहली असंभवता

कल्पना कीजिए कि एक फार्मेसी है जिसमें सैकड़ों जार और शीशियाँ हैं जो बिल्कुल अलग-अलग पदार्थों से भरी हैं। एक जीवित औषधि और एक जीवित उपाय एक ही हैं।

उन औषधियों से हमें जो भी चाहिए वो हम फार्मेसी में जाते हैं और देखते हैं कि वे वहां प्रचुर मात्रा में, फिर भी बहुत विविधता में पाए जाते हैं। हम उनमें से प्रत्येक की जांच करते हैं
औषधियों को देखें और देखें कि सामग्री अलग-अलग लेकिन सटीक रूप से ली गई है
प्रत्येक जार और शीशी से मात्रा, इस से एक औंस, उस से तीन,
अगले से सात, और इसी तरह। यदि एक औंस ज़्यादा या बहुत कम लिया गया होता, तो औषधि जीवित नहीं होती और उसका असर नहीं दिखता
विशेष गुणवत्ता। इसके बाद, हम जीवित उपचार का अध्ययन करते हैं। फिर से, सामग्री है
जार से एक विशेष माप में लिया गया है ताकि यदि सबसे छोटा भी
यदि राशि बहुत अधिक या बहुत कम ली गई होती, तो उपचार अपना विशेष गुण खो देता।

अब, हालांकि जार की संख्या पचास से अधिक है,2 सामग्री को मिलाया गया है
प्रत्येक से माप और मात्रा के अनुसार लिया गया जो सभी अलग-अलग हैं। क्या यह
किसी भी तरह से यह संभव या संभावित नहीं है कि शीशियों और जार को किसी अजीब संयोग या हवा के अचानक झोंके से गिरा दिया गया हो और केवल सटीक, हालांकि अलग-अलग, मात्राएं ही ली गई हों

2 इसका अर्थ उस समय आवर्त सारणी में ज्ञात तत्वों की संख्या हो सकता है।

उनमें से प्रत्येक से अलग हो जाना चाहिए था, और फिर खुद को व्यवस्थित करना चाहिए और उपाय बनाने के लिए एक साथ आना चाहिए था? क्या इससे अधिक अंधविश्वासी, असंभव और बेतुका कुछ भी हो सकता है? अगर कोई मूर्ख बोल सकता, तो वह कहेगा: "मैं इस विचार को स्वीकार नहीं कर सकता!" और सरपट भाग जाएगा!

इसी तरह, प्रत्येक जीवित प्राणी की तुलना जीवित औषधि से की जा सकती है, और प्रत्येक पौधे को जीवित औषधि से। क्योंकि वे ऐसे पदार्थों से बने हैं जिन्हें वास्तव में असंख्य और वास्तव में विभिन्न पदार्थों से सबसे सटीक माप में लिया गया है। यदि इन्हें कारणों और तत्वों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है और यह दावा किया जाता है, "कारणों ने इन्हें बनाया है," तो यह सौ गुना अनुचित, असंभव और बेतुका है, ठीक वैसे ही जैसे यह दावा करना था कि फार्मेसी में औषधि शीशियों के गिरने से अस्तित्व में आई;

दुर्घटना।

संक्षेप में, इस ब्रह्माण्ड के विशाल औषधालय में जो महत्वपूर्ण पदार्थ हैं, जो सर्वज्ञ और सनातन ईश्वर के दिव्य निर्धारण और आदेश के तराजू पर मापे जाते हैं, वे केवल असीम बुद्धि, अनंत ज्ञान और सर्वव्यापी इच्छाशक्ति के द्वारा ही अस्तित्व में आ सकते हैं। वह अभागा व्यक्ति जो यह घोषित करता है कि वे अंधे, बहरे और असंख्य तत्वों और कारणों और प्रकृतियों के कार्य हैं, जो बाढ़ की तरह बहते हैं; और वह मूर्ख, विह्वल व्यक्ति जो दावा करता है कि वह अद्भुत औषधि स्वयं ही बह गई

जब शीशियों को गिरा दिया गया और खुद ही बन गया, तो निश्चित रूप से अनुचित और निरर्थक है। वास्तव में, इस तरह का इनकार और अविश्वास एक मूर्खतापूर्ण है
बेतुकापन.

दूसरी असंभवता

यदि सभी चीजों का श्रेय सर्वशक्तिमान और सर्व-महिमावान ईश्वर को न देकर कारणों को दिया जाए, तो यह आवश्यक हो जाता है कि ब्रह्मांड में मौजूद कई तत्व और कारण प्रत्येक सजीव प्राणी के अस्तित्व में हस्तक्षेप करें।

जबकि यह कि विभिन्न और परस्पर विरोधी और परस्पर विरोधी कारण अपने आप ही पूर्ण क्रम में, बेहतरीन संतुलन के साथ और एक छोटे से प्राणी, जैसे कि एक मक्खी, के अस्तित्व में पूर्ण सामंजस्य के साथ एक साथ आ जाएं, यह इतनी स्पष्ट असंभवता है कि थोड़ी सी भी चेतना वाला कोई भी व्यक्ति कहेगा: "यह असंभव है; यह हो ही नहीं सकता!"

मक्खी का छोटा शरीर ब्रह्मांड के अधिकांश तत्वों और कारणों से जुड़ा हुआ है; वास्तव में, यह उनका सारांश है। यदि इसे पूर्व-शाश्वत और सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो उन भौतिक कारणों के लिए मक्खी के तत्काल आसपास मौजूद होना आवश्यक है; बल्कि, उन सभी को उसके छोटे शरीर में प्रवेश करना चाहिए; और यहां तक कि उनका प्रवेश भी होना चाहिए

इसकी आँखों की प्रत्येक कोशिका, जो इसके शरीर के सूक्ष्म नमूने हैं। क्योंकि यदि कोई कारण भौतिक प्रकृति का है, तो उसके लिए उसके प्रभाव के तत्काल आसपास और अंदर मौजूद होना आवश्यक है। और इसके लिए यह स्वीकार करना आवश्यक है कि ब्रह्मांड के घटक और तत्व उस सूक्ष्म कोशिका के अंदर भौतिक रूप से मौजूद हैं, एक ऐसी जगह जो इसके एंटीना की नोक के लिए भी बहुत छोटी है, और वे वहां एक मास्टर की तरह सामंजस्य में काम करते हैं।

इस तरह का तरीका तो सबसे मूर्ख सोफिस्टों को भी शर्मिंदा कर देता है।

तीसरी असंभवता

यह एक स्थापित नियम है कि, "यदि किसी प्राणी में एकता है, तो वह केवल एक ही प्राणी से, एक ही हाथ से उत्पन्न हो सकता है।" विशेष रूप से यदि वह एक परिपूर्ण व्यवस्था और संवेदनशील संतुलन के भीतर एक व्यापक जीवन प्रदर्शित करता है, तो यह स्वतः-स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि वह अनेक हाथों से उत्पन्न नहीं हुआ है, जो संघर्ष और भ्रम का कारण हैं, बल्कि यह कि वह एक ही हाथ से उत्पन्न हुआ है जो सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है। इसलिए, एक सुव्यवस्थित और संतुलित प्राणी को, जिसमें ऐसी एकता है, असंख्य, बेजान, अज्ञानी, आक्रामक, अचेतन, अराजक, अंधे और बहरे प्राकृतिक कारणों के उलझे हुए हाथों के लिए जिम्मेदार ठहराना, जिनका अंधापन और बहरापन उनके एक साथ आने और असंख्य संभावनाओं के तरीकों के बीच घुलने-मिलने से बढ़ता है, उतना ही अनुचित है जितना कि असंख्य असंभवताओं को एक साथ स्वीकार करना। यदि हम इस असंभवता को एक तरफ रख दें और मान लें कि भौतिक कारणों के प्रभाव होते हैं, तो ये प्रभाव केवल सीधे संपर्क और स्पर्श के माध्यम से हो सकते हैं।

हालाँकि, प्राकृतिक कारणों का संपर्क जीवित प्राणियों के बाह्य भागों से होता है।
और फिर भी हम देखते हैं कि ऐसे प्राणियों के अंदरूनी भाग, जहाँ भौतिक कारणों के हाथ न तो पहुँच सकते हैं और न ही छू सकते हैं, कला के मामले में उनके बाह्य भागों की तुलना में दस गुना अधिक नाजुक, सुव्यवस्थित और परिपूर्ण हैं। इसलिए, यद्यपि छोटे सजीव प्राणी, जिन पर भौतिक कारणों के हाथ और अंग किसी भी तरह से स्थित नहीं हो सकते हैं, वास्तव में वे प्राणियों के बाह्य भागों को एक साथ छू भी नहीं सकते हैं, वे अपनी कला और सृजन के मामले में सबसे बड़े प्राणियों की तुलना में अधिक विचित्र और अद्भुत हैं, उन्हें उन निर्जीव, अज्ञानी, अपरिष्कृत, दूर, विशाल, परस्पर विरोधी, बहरे और अंधे कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराना केवल सजीव प्राणियों की संख्या में वृद्धि के कारण बहरेपन और अंधेपन का परिणाम हो सकता है।

दूसरा तरीका: यह स्वयं बनता है

इसमें भी कई असंभवताएँ शामिल हैं और यह कई पहलुओं में बेतुका और असंभव है। हम इन असंभवताओं के तीन उदाहरण बताएँगे।

पहली असंभवता

अरे जिद्दी इनकार करने वाले! तुम्हारे अहंकार ने तुम्हें इतना मूर्ख बना दिया है कि तुम न जाने कैसे सौ असंभव चीजों को एक साथ स्वीकार करने का फैसला कर लेते हो। अपने लिए

हम एक प्राणी हैं, कोई साधारण पदार्थ नहीं जो निर्जीव और अपरिवर्तनशील है।

आप एक बहुत ही सुव्यवस्थित मशीन की तरह हैं जो लगातार नवीनीकृत होती रहती है और एक अद्भुत महल की तरह हैं जो निरंतर परिवर्तन से गुजर रहा है।

कण आपके शरीर में निरंतर काम कर रहे हैं। आपके शरीर का ब्रह्मांड के साथ एक संबंध और पारस्परिक संबंध है, विशेष रूप से जीविका और प्रजातियों के स्थायित्व के संबंध में, और इसके भीतर काम करने वाले कण उस संबंध को खराब न करने या संबंध को तोड़ने के लिए सावधान रहते हैं।

इस सावधानी से वे अपना काम शुरू करते हैं, मानो पूरे ब्रह्मांड को ध्यान में रखते हुए। इसके भीतर आपके रिश्तों को देखते हुए, वे उसी के अनुसार अपनी स्थिति लेते हैं। और आप अपनी बाहरी और आंतरिक इंद्रियों से उनके द्वारा ली गई अद्भुत स्थिति के अनुसार लाभान्वित होते हैं।

यदि आप यह स्वीकार नहीं करते कि आपके शरीर के कण पूर्व-शाश्वत और सर्वशक्तिमान के कानून के अनुसार गतिशील छोटे अधिकारी हैं,

या कि वे एक सेना हैं, या ईश्वरीय निर्धारण की कलम की नोंक हैं, जिनमें से प्रत्येक कण एक कलम की नोंक है, या कि वे शक्ति की कलम द्वारा अंकित बिंदु हैं, जिनमें से प्रत्येक कण एक बिंदु है, तो आपकी आंख में काम करने वाले प्रत्येक कण में एक ऐसी आंख होनी चाहिए जो आपके शरीर के हर अंग और हिस्से के साथ-साथ पूरे ब्रह्मांड को देख सके, जिसके साथ आप जुड़े हुए हैं। इसके अलावा, आपको प्रत्येक कण को सौ प्रतिभाओं के बराबर बुद्धि प्रदान करनी होगी, जो आपके पूरे अतीत और भविष्य, और आपके पूर्वजों और वंशजों, आपके अस्तित्व के सभी तत्वों की उत्पत्ति और आपके सभी पोषण के स्रोतों को जानने और पहचानने के लिए पर्याप्त है।

एक हजार प्लेटो के ज्ञान और चेतना को एक ही व्यक्ति को देना

आप जैसे व्यक्ति के पास इस तरह के मामलों में एक कण के बराबर भी बुद्धि नहीं है, यह एक हजार गुना अधिक पागलपन भरा अंधविश्वास है!

दूसरी असंभवता

आपका अस्तित्व एक हज़ार गुम्बदों वाले अद्भुत महल जैसा है जिसमें पत्थर एक साथ लटके हुए हैं और बिना किसी सहारे के खड़े हैं। वास्तव में, आपका अस्तित्व एक हज़ार गुम्बदों वाले अद्भुत महल जैसा है जिसमें पत्थर एक साथ लटके हुए हैं और बिना किसी सहारे के खड़े हैं।

इस प्रकार के महल की अपेक्षा यह हजार गुना अधिक अद्भुत है, क्योंकि आपके अस्तित्व का महल निरंतर उत्तम क्रम में नवीकृत होता रहता है।

आपकी अद्भुत आत्मा, हृदय और अन्य सूक्ष्म क्षमताओं को छोड़कर, आपके शरीर का प्रत्येक अंग महल के एक-गुंबददार भाग जैसा दिखता है। गुंबद के पत्थरों की तरह, कण एकदम सही संतुलन और क्रम में एक साथ खड़े हैं, जो आंख और जीभ को दर्शाता है, उदाहरण के लिए, प्रत्येक एक अद्भुत इमारत, कला का असाधारण काम और शक्ति का चमत्कार है।

यदि ये कण ब्रह्माण्ड के मुख्य वास्तुकार के आदेश पर निर्भर न होते, तो प्रत्येक कण को शरीर के अन्य सभी कणों पर पूर्णतः प्रभुत्वशाली तथा पूर्णतः स्वतंत्र होना पड़ता।

उनमें से प्रत्येक के अधीनस्थ; और दोनों एक दूसरे के बराबर तथा अपनी प्रमुख स्थिति के संबंध में विरोधी; और अधिकांश का उद्गम और स्रोत दोनों
वे गुण जो केवल अनिवार्यतः विद्यमान एक से संबंधित हैं, और अत्यंत सीमित हैं; और दोनों निरपेक्ष रूप में, और पूर्णतः व्यवस्थित रूप में
व्यक्तिगत कलाकृति जो केवल एकता के रहस्य के माध्यम से, एकता के एकल का कार्य हो सकती है।

जिस किसी में भी थोड़ी सी भी चेतना होगी वह समझ सकता है कि
यह स्पष्ट रूप से असंभव है; उन कणों को इस तरह की कलाकृति का श्रेय देना।

तीसरी असंभवता

यदि आपका अस्तित्व पूर्व-शाश्वत और सर्वशक्तिमान की कलम से 'लिखा' नहीं है, जो एकता का एकमात्र है, और इसके बजाय प्रकृति और कारणों द्वारा 'मुद्रित' है, तो प्रकृति में न केवल आपके शरीर में कोशिकाओं की संख्या के अनुसार, बल्कि उनके हजारों संयोजनों की संख्या के अनुसार मुद्रण-खंड होने चाहिए, जो संकेंद्रित वृत्तों में व्यवस्थित हैं। क्योंकि, उदाहरण के लिए, यदि यह पुस्तक जो हम अपने हाथ में पकड़ते हैं, लिखी गई है, तो एक कलम इसे अपने लेखक के ज्ञान पर भरोसा करके लिख सकती है। यदि, दूसरी ओर, यह लिखा नहीं है और इसके लेखक की कलम को इसका श्रेय नहीं दिया जाता है, और यदि यह कहा जाता है कि यह अस्तित्व में है

यदि यह अपने आप ही लिखा गया है या इसे प्रकृति का मान लिया गया है, तो एक मुद्रित पुस्तक के रूप में प्रत्येक अक्षर के लिए एक अलग लोहे की कलम होना आवश्यक होगा ताकि इसे मुद्रित किया जा सके।
मुद्रित। मुद्रण-यंत्र में वर्णमाला के अक्षरों की संख्या के अनुसार टाइप के टुकड़े होने चाहिए ताकि पुस्तक के अक्षर उनके माध्यम से अस्तित्व में आ सकें; एक कलम के स्थान पर उन अक्षरों की संख्या के अनुसार कलम की आवश्यकता होती है।

जैसा कि देखा जा सकता है, कभी-कभी एक पूरा पृष्ठ उन अक्षरों में से एक बड़े अक्षर में एक छोटे पेन से बढ़िया लिपि में लिखा जाता है, ऐसे में एक अक्षर के लिए हज़ार पेन की ज़रूरत होगी। बल्कि, अगर यह आपके शरीर का रूप ले ले, जिसमें उसके सभी अवयव एक दूसरे के भीतर हों, तो यह आपके लिए एक बहुत बड़ा काम होगा।

संकेन्द्रीय वृत्तों के लिए, प्रत्येक वृत्त में, प्रत्येक घटक के लिए, उनके द्वारा बनाए गए संयोजनों की संख्या के अनुसार मुद्रण-ब्लॉक होने चाहिए।

अब, देखिए, अगर आप दावा करते हैं कि यह, जिसमें सौ असंभवताएँ शामिल हैं, संभव है, तो फिर अगर उन्हें एक ही कलम से नहीं जोड़ा जाता है, तो उन सुव्यवस्थित, कलात्मक टुकड़ों, दोषरहित मुद्रण-ब्लॉक और लोहे की कलमों को बनाने के लिए, उसी संख्या में और कलम, मुद्रण-ब्लॉक और अक्षर आवश्यक होंगे। और उन्हें भी बनाया जाना चाहिए; और उन्हें भी सुव्यवस्थित और कलात्मक रूप से गढ़ा जाना चाहिए। और इसी तरह। यह अनंत तक चलता रहेगा ।

तुम भी समझ लो! यह सोच ऐसी है कि इसमें तुम्हारे शरीर में मौजूद कणों की संख्या तक की असंभवता और अंधविश्वास शामिल है। हे ईश्वर को नकारने वाले! यह देखो और गुमराही का रास्ता छोड़ दो!

तीसरा तरीका: प्रकृति इसे अनिवार्य बनाती है; प्रकृति इसे बनाती है

इस कथन में कई असंभव बातें हैं। हम इनमें से तीन का उल्लेख करेंगे।

उन्हें उदाहरण के माध्यम से समझाइए।

पहली असंभवता

यदि प्राणियों में, विशेषकर सजीव प्राणियों में, जो कला और सृजनात्मकता विवेकपूर्ण और बुद्धिमत्तापूर्ण है, उसका श्रेय ईश्वर की लेखनी को नहीं दिया जाता,
पूर्व-अनन्त सूर्य की नियति और शक्ति को, तथा इसके स्थान पर प्रकृति और शक्ति को, जो अन्धी, बहरी और अविवेकी है, आरोपित किया जाता है, तो यह आवश्यक हो जाता है कि प्रकृति या तो प्रत्येक वस्तु में अपनी रचना के लिए मशीनें और मुद्रण-यंत्र विद्यमान रखे, या प्रत्येक वस्तु में इतनी शक्ति और बुद्धि समाहित करे कि वह ब्रह्माण्ड की रचना और संचालन कर सके। इसका कारण यह है कि

इस प्रकार है:

सूर्य की अभिव्यक्तियाँ और प्रतिबिंब पृथ्वी के चेहरे पर कांच के सभी छोटे-छोटे टुकड़ों और बूंदों में दिखाई देते हैं। यदि उन लघु, प्रतिबिंबित काल्पनिक सूर्यों को आकाश में सूर्य के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो यह स्वीकार करना आवश्यक है
माचिस की तीली से भी छोटे कांच के प्रत्येक छोटे टुकड़े में एक वास्तविक सूर्य का बाह्य अस्तित्व है, जिसमें सूर्य के गुण होते हैं और जो, यद्यपि
आकार में छोटा, गहरा अर्थ रखता है; और इसलिए कांच के टुकड़ों की संख्या के अनुसार वास्तविक सूर्य को स्वीकार करना चाहिए।

ठीक उसी तरह, यदि प्राणियों और चेतन प्राणियों को प्रत्यक्षतः पूर्व-शाश्वत सूर्य के नामों की अभिव्यक्ति के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो यह स्वीकार करना आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक प्राणी में, विशेषकर चेतन प्राणियों में,

प्राणियों में एक प्रकृति, एक शक्ति या बस एक ईश्वर है जो अनंत शक्ति और इच्छा, और ज्ञान और बुद्धि को बनाए रखेगा। ऐसा विचार ब्रह्मांड की सभी असंभवताओं में सबसे बेतुका और अंधविश्वासी है। यह दर्शाता है कि एक व्यक्ति जो ब्रह्मांड के निर्माता की कला को काल्पनिक, महत्वहीन, अचेतन प्रकृति पर आरोपित करता है, निस्संदेह एक जानवर की तुलना में सच्चाई के प्रति कम सचेत है।

दूसरी असंभवता

यदि प्राणियों को, जो सर्वाधिक सुव्यवस्थित, सुसंयोजित, बुद्धिमान और कलात्मक रूप से निर्मित हैं, उस एक को न मानकर, जो असीम रूप से शक्तिशाली और बुद्धिमान है, प्रकृति को माना जाए, तो यह आवश्यक हो जाता है कि प्रत्येक मिट्टी में उतनी ही फैक्ट्रियां और छापेखाने हों, जितनी कि वर्तमान में हैं।

यूरोप में मिट्टी का प्रत्येक टुकड़ा असंख्य फूलों और फलों के विकास और निर्माण का साधन बन सकता है, जिसका वह मूल स्थान है

और कार्यशाला। फूलों के बीज मिट्टी के एक कटोरे में बारी-बारी से बोए जाते हैं, जो उनके लिए एक फूलदान का कर्तव्य निभाता है। मिट्टी के कटोरे में एक क्षमता स्पष्ट है जो उसमें बोए गए सभी फूलों को एक दूसरे से बहुत अलग आकार और रूप देगी। यदि वह क्षमता सर्व-महिमावान और सर्वशक्तिमान को नहीं दी जाती है, तो ऐसी स्थिति बिना किसी के अस्तित्व में आए नहीं हो सकती।

मिट्टी का कटोरा प्रत्येक के लिए अमूर्त, अलग और प्राकृतिक मशीनें
फूल।

ऐसा इसलिए है क्योंकि बीज, जैसे शुक्राणु और अंडे, जिस पदार्थ से बने होते हैं, वह एक ही है। यानी, वे ऑक्सीजन, हाइड्रोजन, कार्बन और नाइट्रोजन के एक व्यवस्थित, निराकार, पेस्ट जैसे मिश्रण से बने होते हैं। इसके साथ ही, चूँकि हवा, पानी, गर्मी और प्रकाश भी सरल, अचेतन हैं और बाढ़ में हर चीज़ के विरुद्ध बहते हैं, इसलिए यह तथ्य कि उन फूलों के सभी अलग-अलग रूप मिट्टी से सबसे सुव्यवस्थित और कलात्मक तरीके से निकलते हैं, यह स्पष्ट रूप से और अनिवार्य रूप से आवश्यक है कि कटोरे में मिट्टी में मौजूद हों।

उन्होंने अमूर्त, लघु मुद्रण-प्रेसों और कारखानों को यूरोप में मुद्रण-प्रेसों और कारखानों की संख्या के बराबर कर दिया, ताकि वे बड़ी संख्या में जीवित कपड़े और हजारों प्रकार के कढ़ाई वाले वस्त्र बुन सकें।

इस प्रकार, आप देख सकते हैं कि प्रकृतिवादियों का अविश्वासी विचार तर्क के दायरे से कितना दूर चला गया है। और यद्यपि बुद्धिहीन ढोंगी जो
प्रकृति को सृष्टिकर्ता मानकर “विज्ञान और तर्क के लोग” होने का दावा करते हैं, देखिए कि उनका विचार तर्क और विज्ञान से कितना दूर है, इसलिए उन्होंने एक ऐसे अंधविश्वास को अपना रास्ता बना लिया है जो किसी भी तरह से संभव नहीं है, जो असंभव है। इसे देखिए और उन पर हंसिए!

प्रश्न: यदि ऐसी असाधारण असंभवताएँ और दुर्गम कठिनाइयाँ तब होती हैं जब प्राणियों को प्रकृति के अधीन माना जाता है, तो वे कठिनाइयाँ कैसे दूर होती हैं जब उन्हें एकमात्र और शाश्वत रूप से चाहने वाले के अधीन माना जाता है? और कठिन असंभवता को उस आसान आवश्यकता में कैसे बदला जाता है?

उत्तर: हमने पहली असंभवता में देखा कि सूर्य के प्रतिबिंब की अभिव्यक्ति छोटे-छोटे काल्पनिक सूर्यों के माध्यम से अपनी चमक और प्रभाव को पूरी सहजता और बिना किसी परेशानी के सबसे छोटे निर्जीव कण से लेकर विशालतम महासागर की सतह तक हर जगह प्रदर्शित करती है। यदि प्रत्येक कण का सूर्य से संबंध विच्छेद कर दिया जाए, तो यह स्वीकार करना आवश्यक हो जाता है कि उन सूक्ष्म कणों में से प्रत्येक में, असंभवता के स्तर पर कठिनाई के साथ, एक वास्तविक सूर्य का बाह्य अस्तित्व बना रह सकता है।

इसी तरह, यदि प्रत्येक प्राणी को सीधे एकल और शाश्वत रूप से प्रार्थित एक के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो प्रत्येक प्राणी के लिए आवश्यक हर चीज को एक कनेक्शन और अभिव्यक्ति के माध्यम से आसानी और सुविधा के साथ उस तक पहुंचाया जा सकता है जो आवश्यकता के स्तर पर है। यदि कनेक्शन टूट जाता है और प्रत्येक प्राणी एक अधिकारी के रूप में अपनी स्थिति से कर्तव्यों के बिना प्राणी में वापस आ जाता है, और प्रकृति और उसके अपने उपकरणों पर छोड़ दिया जाता है, तो यह मानना आवश्यक हो जाता है कि, सौ हजार कठिनाइयों और बाधाओं के साथ जो असंभव की डिग्री तक पहुंचती हैं, अंधी प्रकृति के पास अपने भीतर एक शक्ति और बुद्धि है जिसके साथ वह ब्रह्मांड का निर्माण और प्रशासन कर सकती है ताकि वह अस्तित्व में ला सके

मक्खी जैसे सजीव प्राणी के अस्तित्व की अद्भुत मशीन, जो ब्रह्मांड का एक छोटा सा सूचकांक है। यह सिर्फ एक बार नहीं बल्कि हज़ारों बार असंभव है।

संक्षेप में, जिस प्रकार अनिवार्यतः विद्यमान परमेश्वर के लिए अपने सार के सम्बन्ध में किसी साझेदार या उसके समान का होना असम्भव और निषिद्ध है, उसी प्रकार उसके प्रभुत्व और प्राणियों की सृष्टि में अन्यों का हस्तक्षेप भी असम्भव और निषिद्ध है।

जहाँ तक दूसरी असंभवता में शामिल कठिनाइयों का सवाल है, जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में साबित हुआ है, अगर सभी चीजों को एकता के एक ही व्यक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो सभी चीजें एक ही चीज की तरह आसान और परेशानी मुक्त हो जाती हैं। जबकि अगर उन्हें कारणों और प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो एक ही चीज सभी चीजों जितनी मुश्किल हो जाती है। यह कई, निर्णायक सबूतों के साथ प्रदर्शित किया गया है और उनमें से एक का सारांश इस प्रकार है।

यदि कोई व्यक्ति सैनिक या अधिकारी होने के कारण राजा से जुड़ा है, तो उस संबंध की ताकत के कारण, वह अपनी व्यक्तिगत शक्ति से कहीं अधिक कर्तव्य निभा सकता है। वह कभी-कभी किसी व्यक्ति को पकड़ भी सकता है।

अपने राजा के नाम पर दूसरे राजा को नियुक्त करना। क्योंकि उसके पास स्वयं अपने कर्तव्यों और कार्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक उपकरण और शक्ति के स्रोत नहीं हैं
वह न तो खुद कुछ करता है और न ही उसे ऐसा करने के लिए मजबूर किया जाता है। इस संबंध के कारण, राजा के खजाने और सेना, जो उसके पीछे है और उसका समर्थन बिंदु है, उसके उपकरण और शक्ति के स्रोत ले जाते हैं। दूसरे शब्दों में, वह जो कर्तव्य निभाता है, वह राजा के व्यवसाय जितना ही भव्य और सेना के कार्यों जितना ही जबरदस्त हो सकता है।

दरअसल, एक चींटी ने अधिकारी बनकर फिरौन के महल को नष्ट कर दिया था।
इस संबंध के माध्यम से, एक मक्खी ने निम्रोद को मार डाला। और इस संबंध के माध्यम से, गेहूं के दाने के आकार के एक चीड़ के बीज से एक विशाल चीड़ के पेड़ के सभी भाग उत्पन्न हुए।[71]

अगर कनेक्शन टूट जाए और उस व्यक्ति को अधिकारी के रूप में अपने कर्तव्यों से मुक्त कर दिया जाए, तो उसे अपने काम के लिए ज़रूरी उपकरण और शक्ति के स्रोत खुद ही ढोने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। तब वह केवल अपनी शक्ति और गोला-बारूद के स्रोतों के अनुसार ही कर्तव्यों का पालन करने में सक्षम होगा। अगर उसे इस स्थिति में अपने कर्तव्यों को पहली स्थिति की तरह बेहद आसानी से पूरा करना पड़े, तो उसे अपनी पीठ पर सेना की शक्ति के स्रोत और राजा के शस्त्रागार और गोला-बारूद के कारखानों का बोझ उठाना होगा। लोगों को हंसाने के लिए कहानियाँ और अंधविश्वास गढ़ने वाले जोकर भी इस काल्पनिक विचार पर शर्मिंदा होंगे।

संक्षेप में, सभी प्राणियों को अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अधीन करना इतना आसान है कि यह आवश्यक है। जबकि उनकी रचना को प्रकृति के अधीन करना इतना कठिन है कि यह असंभव है और तर्क के दायरे से बाहर है।

तीसरी असंभवता

निम्नलिखित दो तुलनाएं, जो अन्य भागों में शामिल हैं
रिसाले-ए-नूर, इस असंभवता की व्याख्या करें।

---

[71] हाँ, इस सम्बन्ध के होने पर बीज को ईश्वरीय नियति और आदेश मिलता है।
उन अद्भुत कर्तव्यों को प्रदर्शित करता है। यदि कनेक्शन टूट जाए, तो बीज के निर्माण के लिए शक्तिशाली देवदार के पेड़ के निर्माण की तुलना में अधिक उपकरण, शक्ति और कला की आवश्यकता होगी।
पहाड़ पर मौजूद देवदार के पेड़ के लिए, जो ईश्वरीय शक्ति का काम है, अपने सभी अंगों और भागों के साथ शारीरिक रूप से मौजूद होना ज़रूरी है, जो कि बीज के भीतर केवल संभावित पेड़ है और ईश्वरीय निर्धारण का काम है। क्योंकि शक्तिशाली पेड़ का कारखाना बीज है। इसके भीतर का दृढ़ निश्चयी, संभावित पेड़ ईश्वरीय शक्ति के माध्यम से बाहरी दुनिया में प्रकट होता है, और एक भौतिक देवदार का पेड़ बन जाता है।

एक जंगली जंगली एक महल में घुसा जो खाली रेगिस्तान में बना था और सभ्यता के सभी फलों से सुसज्जित था। उसने महल के अंदर की ओर नज़र डाली और हज़ारों सुव्यवस्थित और कलात्मक रूप से सजी हुई चीज़ें देखीं। अपनी असभ्यता और अज्ञानता के कारण उसने कहा: "इसमें किसी बाहरी व्यक्ति का हाथ नहीं है, अंदर की किसी चीज़ ने ही इस महल को और इसकी सारी चीज़ों को बनाया होगा," और जाँच-पड़ताल शुरू कर दी।

हालाँकि, वह जो कुछ भी देखता था, उसकी अशिक्षित बुद्धि भी यह नहीं समझ पाती थी कि उसने वे चीजें कैसे बनाईं।

बाद में, उसने एक नोटबुक देखी जिसमें महल के निर्माण की योजना और कार्यक्रम, इसकी सामग्री की सूची और इसके प्रशासन के नियम लिखे हुए थे। निश्चित रूप से, नोटबुक भी, जो महल की बाकी वस्तुओं की तरह हाथ, आँख या उपकरण के बिना थी, महल के निर्माण और सजावट की क्षमता से पूरी तरह से रहित थी। लेकिन, जब उसने देखा कि बाकी सभी चीजों की तुलना में, नोटबुक अपने सभी सैद्धांतिक नियमों को शामिल करने के कारण पूरे महल से संबंधित थी, तो उसे कहना पड़ा: "यह वह नोटबुक है जिसने इस महल को व्यवस्थित, व्यवस्थित और सजाया है, और इन सभी वस्तुओं को बनाया है और उन्हें उनके स्थानों पर रखा है।" उसने अपनी असभ्यता को हास्यास्पद बकवास में बदल दिया।

इस प्रकार, बिल्कुल इस तुलना की तरह, एक मूर्ख जो प्रकृतिवादी विचार को मानता था, जो ईश्वर को नकारता है, ब्रह्मांड के महल में प्रवेश कर गया, जो तुलना में महल की तुलना में असीम रूप से अधिक सुव्यवस्थित, अधिक परिपूर्ण और हर जगह ज्ञान के चमत्कारी उदाहरणों से भरा हुआ है। यह न सोचते हुए कि यह

यह अनिवार्यतः विद्यमान उस परमेश्वर की कलाकृति थी, जो आकस्मिकता के क्षेत्र से बाहर है, और उस विचार को त्यागकर, उन्होंने ईश्वरीय व्यवहार के नियमों का एक संग्रह और प्रभुीय कला की एक सूची देखी, जो आकस्मिकता के क्षेत्र में ईश्वरीय निर्धारण को लिखने और मिटाने के लिए एक स्लेट की तरह है, और ईश्वरीय शक्ति के कार्य करने के नियमों के लिए एक निरंतर बदलती नोटबुक की तरह है, और जिसे अत्यंत भूल और गलत तरीके से 'प्रकृति' नाम दिया गया है, और उन्होंने कहा:

"इन चीजों के लिए एक कारण की आवश्यकता होती है और ऐसा प्रतीत होता है कि किसी अन्य चीज के लिए कोई कारण नहीं है।"
इस नोटबुक की तरह हर चीज़ के साथ संबंध। यह सच है कि कारण होगा
मैं किसी भी तरह से यह स्वीकार नहीं करता कि यह अदृश्य, अचेतन और शक्तिहीन नोटबुक इस रचना को अंजाम दे सकती है, जो कि एक पूर्ण प्रभुता का काम है और जिसके लिए अनंत शक्ति की आवश्यकता होती है। लेकिन चूंकि मैं शाश्वत निर्माता को नहीं पहचानता, इसलिए
सबसे उचित व्याख्या यह कहना है कि नोटबुक ने इसे बनाया है, और इसे बनाता है, इसलिए मैं यही कहूंगा।" जिसके उत्तर में हम कहते हैं:

हे अभागे मूर्ख! तेरी मूर्खता किसी भी चीज़ से बढ़कर है
कल्पना से परे! प्रकृति के दलदल से अपना सिर बाहर निकालो और अपने से परे देखो! एक सर्व-महिमावान निर्माता को देखो जिसके लिए कण-कण से लेकर सभी प्राणी हैं
ग्रह अपनी अलग-अलग ज़बानों से गवाही देते हैं और अपनी उंगलियों से किसकी ओर इशारा करते हैं! उस सनातन लेखक के प्रकट होने को देखो, जो महल बनाता है और जो उसका कार्यक्रम नोटबुक में लिखता है! उसके आदेश का अध्ययन करो, कुरान को सुनो! अपने उन्मादी प्रलाप से मुक्त हो जाओ!

दूसरी तुलना: एक देहाती गँवार एक शानदार महल की सीमा में दाखिल हुआ और वहाँ एक बेहद व्यवस्थित सेना की वर्दीदार हरकतें देखीं जो अपनी ड्रिल कर रही थी। उसने देखा कि एक बटालियन, एक रेजिमेंट और एक डिवीजन खड़ी थी।

सावधान रहें, आराम से खड़े रहें और मार्च करें, और आदेश मिलने पर गोली चलाएँ, जैसे कि वे एक ही सैनिक हों। चूँकि उसका असभ्य, असभ्य मन यह नहीं समझ पाया, इसलिए नकार दिया, कि देश के कानूनों और शाही फरमान के द्वारा एक कमांडर को कमान सौंपी गई थी, उसने कल्पना की कि सैनिकों को एक दूसरे से रस्सियों से बांधा गया था। उसने सोचा कि यह कितनी अद्भुत डोरी होगी, और वह आश्चर्यचकित हो गया।

बाद में, वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ता रहा और इस्तांबुल में हागिया सोफिया जैसी एक शानदार मस्जिद के पास पहुंचा। वह शुक्रवार की नमाज़ के समय वहां गया और
उसने मुसलमानों की भीड़ को उठते, झुकते, सजदा करते और आदमी की आवाज़ सुनकर बैठते देखा। चूँकि वह शरिया को नहीं समझता था, इसलिए उसने मुसलमानों की भीड़ को उठते, झुकते, सजदा करते और आदमी की आवाज़ सुनकर बैठते देखा।
अमूर्त, प्रकट किए गए नियमों का संग्रह, न ही अमूर्त नियम जो कानून देने वाले के आदेश से आगे बढ़ते हैं, उसने कल्पना की कि मण्डली एक दूसरे से भौतिक डोरी से बंधी हुई है, और यह अद्भुत डोरी उन्हें अधीन कर रही है और उन्हें कठपुतलियों की तरह चला रही है। और, इस विचार के साथ, जो इतना हास्यास्पद है कि सबसे अज्ञानी व्यक्ति भी हँसी से दहाड़ उठेगा, वह अपने रास्ते पर चला गया।

इस तुलना की तरह ही, एक नास्तिक जो भौतिकवादी विचार को मानता था, जो कि इनकार और शुद्ध पाशविकता है, ब्रह्मांड में प्रवेश करता है, जो कि पूर्व-अनंत काल और उत्तर-अनंत काल के सम्राट की असंख्य शक्तियों के लिए एक शानदार छावनी है, और उस पूर्व-अनंत काल के सर्व-पूज्य की एक सुव्यवस्थित मस्जिद है। उसने ब्रह्मांड के क्रम के अमूर्त नियमों की कल्पना की, जो पूर्व-अनंत काल के सम्राट की बुद्धि से निकलते हैं, प्रत्येक का भौतिक और भौतिक अस्तित्व है; और उसने प्रभुता की संप्रभुता के सैद्धांतिक नियमों और महान शरिया, सृष्टि के शरिया के नियमों और अध्यादेशों को , जो अमूर्त हैं और केवल ज्ञान के रूप में मौजूद हैं, प्रत्येक का बाह्य, भौतिक और भौतिक अस्तित्व है। लेकिन ईश्वरीय शक्ति के स्थान पर उन नियमों को स्थापित करना, जो

ज्ञान और वाणी के दिव्य गुणों से उत्पन्न तथा केवल ज्ञान के रूप में विद्यमान, तथा उन्हें सृष्टि का श्रेय देना; फिर उन्हें 'प्रकृति' नाम देना, तथा शक्ति को, जो कि प्रभुत्वशाली शक्ति का एक प्रकटीकरण मात्र है, एक स्वतंत्र सर्वशक्तिमान शक्ति-स्वामित्वधारी मानना, एक प्रकार से गलत है।

संसार में व्याप्त अज्ञानता से हजार गुना अधिक निम्न स्तर का अज्ञान है।
तुलना।

संक्षेप में, प्रकृतिवादी जिस काल्पनिक और अवास्तविक चीज़ को प्रकृति कहते हैं, अगर उसमें कोई बाहरी वास्तविकता है, तो वह ज़्यादा से ज़्यादा कला का काम हो सकती है; वह कलाकार नहीं हो सकती। वह एक कढ़ाई है, और कढ़ाई करने वाला नहीं हो सकता। वह आदेशों का एक समूह है; वह आदेशों को जारी करने वाला नहीं हो सकता। वह कानूनों का एक समूह है
सृष्टि है, और वह कानून बनाने वाला नहीं हो सकता। यह ईश्वर की गरिमा के लिए एक निर्मित आवरण मात्र है, और वह निर्माता नहीं हो सकता। यह निष्क्रिय और निर्मित है, और एक रचनात्मक निर्माता नहीं हो सकता। यह एक कानून है, शक्ति नहीं, और इसमें शक्ति नहीं हो सकती। यह प्राप्तकर्ता है, और स्रोत नहीं हो सकता।

निष्कर्ष

चूँकि प्राणी अस्तित्व में हैं, और जैसा कि इस ग्रंथ की शुरुआत में कहा गया था, बुद्धि प्राणियों के अस्तित्व को समझाने के लिए ऊपर बताए गए चार तरीकों के अलावा किसी और तरीके के बारे में नहीं सोच सकती, जिनमें से तीन को तीन स्पष्ट असंभवताओं के माध्यम से निर्णायक रूप से अमान्य और बेतुका साबित किया गया था, तो अनिवार्य रूप से और स्वयंसिद्ध रूप से ईश्वरीय एकता का मार्ग, जो चौथा मार्ग है, निर्णायक रूप से सिद्ध होता है। चौथा मार्ग, शुरुआत में उद्धृत कुरान की आयत के अनुसार:

> क्या ईश्वर, जो आकाशों और धरती का सृजनहार है, उसके अस्तित्व, एकत्व और पूर्ण प्रभुता के विषय में कोई संदेह हो सकता है? (इब्राहीम 14:10)

यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि अनिवार्य रूप से विद्यमान ईश्वरत्व के बारे में कोई संदेह या संकोच नहीं हो सकता है, और सभी चीजें सीधे ईश्वर से निकलती हैं।
उसकी शक्ति का हाथ है, और आकाश और पृथ्वी उसके अधीन हैं।

हे कारणों और प्रकृति के अभागे पूजक! चूँकि कारणों और प्रकृति की प्रकृति ही ऐसी है कि
प्रत्येक वस्तु, सभी वस्तुओं की तरह, सृजित होती है, क्योंकि वह कला से परिपूर्ण होती है और निरंतर नवीनीकृत होती रहती है, और, प्रभाव की तरह, प्रत्येक वस्तु का प्रत्यक्ष कारण भी सृजित होता है; और चूँकि प्रत्येक वस्तु के अस्तित्व के लिए बहुत से उपकरणों और बहुत से औजारों की आवश्यकता होती है, इसलिए एक परम शक्ति का स्वामी अवश्य होना चाहिए जो प्रकृति का सृजन करता है और कारण को अस्तित्व में लाता है। और उस परम शक्तिशाली को अपने प्रभुत्व और सृजन में भाग लेने के लिए शक्तिहीन मध्यस्थों की आवश्यकता नहीं है।

भगवान न करे! वह कारण और प्रभाव को एक साथ सीधे बनाता है।
अपनी बुद्धिमता और

अपने नामों के प्रकटीकरण में, क्रम और अनुक्रम के माध्यम से एक स्पष्ट कारण संबंध और सम्बन्ध स्थापित करके, वह कारणों और प्रकृति को अपनी शक्ति के हाथ के लिए एक पर्दा बना देता है, ताकि चीजों में स्पष्ट दोष, गंभीरता और दोष उन्हें दिए जाएं, और इस तरह उसकी गरिमा सुरक्षित रहे।

क्या एक घड़ीसाज़ के लिए घड़ी के दाँते बनाना और फिर उन्हें व्यवस्थित करके घड़ी बनाना आसान है? या क्या उसके लिए हर दाँते के पहिये में एक अद्भुत मशीन बनाना और फिर उसे एक ही पहिये पर छोड़ देना आसान है?

घड़ी को उन मशीनों के बेजान हाथों से बनाना? क्या यह संभावना की सीमा से परे नहीं है? चलो, तुम अपने अनुचित तर्क से न्याय करो, और
कहना!

और क्या एक लेखक के लिए स्याही, कलम और कागज इकट्ठा करना और फिर उनका इस्तेमाल करके खुद किताब लिखना आसान है? या क्या उसके लिए कागज, कलम और स्याही से एक लेखन-मशीन बनाना आसान है जिसके लिए अधिक कला और परेशानी की आवश्यकता होती है
किताब से ज़्यादा, और सिर्फ़ उसी किताब के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है, और फिर बेहोश मशीन से कहो: “चलो, तुम इसे लिखो!”, और खुद इसमें हस्तक्षेप न करो? क्या यह खुद लिखने से सौ गुना ज़्यादा मुश्किल नहीं है?

प्रश्न: हाँ, किताब लिखने वाली मशीन बनाना, खुद किताब लिखने से सौ गुना ज़्यादा मुश्किल है। लेकिन क्या यह एक तरह से आसान नहीं है, क्योंकि मशीन ही एक ही किताब की कई प्रतियाँ बनाने का ज़रिया है?

उत्तर: अपनी असीम शक्ति के माध्यम से, पूर्व-शाश्वत लेखक अपने नामों की अनंत अभिव्यक्तियों को लगातार नवीनीकृत करता है ताकि उन्हें हमेशा अलग-अलग तरीकों से प्रदर्शित किया जा सके। और इस निरंतर नवीनीकरण के माध्यम से, वह चीजों में पहचान और विशेष विशेषताओं को इस तरह से बनाता है कि कोई भी संदेश उनके नामों को अलग-अलग तरीकों से प्रदर्शित नहीं कर सकता।
अनन्त रूप से प्रार्थित एक या प्रभु की पुस्तक किसी भी अन्य पुस्तक के समान हो सकती है। किसी भी मामले में, प्रत्येक में अलग-अलग अर्थ व्यक्त करने के लिए अलग-अलग विशेषताएं होंगी।

यदि आपके पास आंखें हैं, तो मानव चेहरे को देखें: आप देखेंगे कि आदम के समय से लेकर आज तक, वास्तव में, अनंत काल तक, उनके आवश्यक अंगों की अनुरूपता के साथ, प्रत्येक चेहरे में सभी के संबंध में एक विशिष्ट चिह्न है।

अन्य चेहरे; यह एक निश्चित तथ्य है। इसलिए, प्रत्येक चेहरे को एक अलग किताब के रूप में माना जा सकता है। केवल, कलाकृति को प्रस्तुत करने के लिए, अलग-अलग लेखन-सेट,
व्यवस्था और रचना की आवश्यकता है। और सामग्री को इकट्ठा करने और उसे व्यवस्थित करने के लिए, और प्रत्येक के अस्तित्व के लिए आवश्यक हर चीज को शामिल करने के लिए, एक पूरी तरह से अलग कार्यशाला की आवश्यकता होगी।

अब, यह जानते हुए कि यह असंभव है, हमने प्रकृति को एक प्रिंटिंग प्रेस के रूप में सोचा। लेकिन रचना और मुद्रण के अलावा, जो प्रिंटिंग-प्रेस से संबंधित है, यानी एक विशिष्ट क्रम में टाइप सेट करना, पदार्थ

जो एक सजीव प्राणी का शरीर बनाते हैं, जिसकी रचना सौ गुना होती है
रचना और क्रम से अधिक कठिन, विशिष्ट अनुपात और विशेष क्रम में निर्मित, ब्रह्मांड के सबसे दूर के कोने से लाया जाना चाहिए, और मुद्रण-प्रेस के हाथों में सौंप दिया जाना चाहिए। लेकिन इन सभी चीजों को करने के लिए, अभी भी उस परम शक्तिशाली की शक्ति और इच्छा की आवश्यकता है, जो मुद्रण प्रेस का निर्माण करता है। यानी, मुद्रण प्रेस की यह परिकल्पना पूरी तरह से निरर्थक अंधविश्वास है।

इस प्रकार, घड़ी और किताब की इन तुलनाओं की तरह, सर्व-महिमावान निर्माता, जो सभी चीज़ों पर शक्तिशाली है, ने कारणों का निर्माण किया है, और इसी तरह वह प्रभावों का भी निर्माण करता है। अपनी बुद्धि के माध्यम से, वह प्रभाव को कारण से जोड़ता है।

अपनी इच्छा से, उसने महान शरिया, सृष्टि के शरिया की अभिव्यक्ति निर्धारित की है , जिसमें सृष्टि के विषय में दिव्य कानून शामिल हैं।

ब्रह्मांड में सभी गति का क्रम निर्धारित किया, और प्राणियों की प्रकृति निर्धारित की, जो केवल वस्तुओं में उस अभिव्यक्ति का दर्पण होना है, और उसका प्रतिबिंब होना है। और अपनी शक्ति के माध्यम से, उसने उस प्रकृति का चेहरा बनाया है

जिसने बाह्य अस्तित्व प्राप्त किया है, और उस प्रकृति पर वस्तुओं का निर्माण किया है, और उन्हें एक दूसरे के साथ मिश्रित किया है।

क्या इस तथ्य को स्वीकार करना आसान है, जो कि असंख्य सर्वाधिक तर्कसंगत प्रमाणों का निष्कर्ष है - वास्तव में, क्या कोई इसे स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं है? - या क्या उन भौतिक प्राणियों को, जिन्हें आप कारण और प्रकृति कहते हैं, जो निर्जीव, अचेतन, सृजित, गढ़े हुए और सरल हैं, प्रत्येक वस्तु के अस्तित्व के लिए आवश्यक असंख्य उपकरण और साजो-सामान प्रदान करना और उन कार्यों को पूरा करना आसान है?

क्या यह संभव नहीं है कि जो काम बुद्धिमानी और समझदारी से किए जाएं, वे पूरी तरह से असंभव हैं? हम यह निर्णय आप पर छोड़ते हैं कि आप अपने विवेकहीन दिमाग से क्या निर्णय लें!

अविश्वासी प्रकृति-पूजक ने उत्तर दिया: "चूँकि आप मुझसे निष्पक्ष और तर्कसंगत होने के लिए कह रहे हैं, इसलिए मुझे यह स्वीकार करना होगा कि अब तक मैंने जिस गलत रास्ते का अनुसरण किया है, वह एक जटिल असंभवता है, और बेहद हानिकारक और बदसूरत है। चेतना का एक कण भी रखने वाला कोई भी व्यक्ति आपके उपरोक्त विश्लेषणों से समझ जाएगा कि सृष्टि के कार्य को कारणों और प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराना निषिद्ध और असंभव है, और सभी चीजों को सीधे अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के लिए जिम्मेदार ठहराना अनिवार्य और आवश्यक है। मैं कहता हूँ: 'विश्वास के लिए सभी प्रशंसा भगवान की है,' और मैं उन पर विश्वास करता हूँ। केवल, मुझे एक संदेह है:

"मैं मानता हूं कि सर्वशक्तिमान ईश्वर सृष्टिकर्ता है, लेकिन अगर कुछ छोटे कारणों का इसमें हाथ है तो इससे उसकी प्रभुता की संप्रभुता को क्या नुकसान हो सकता है?
तुच्छ मामलों का निर्माण करके अपने लिए थोड़ी प्रशंसा और प्रसिद्धि प्राप्त करना? क्या यह किसी तरह से उसकी संप्रभुता को कम करता है?”

उत्तर: जैसा कि हमने रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में निर्णायक रूप से साबित किया है , शासन की पहचान यह है कि वह हस्तक्षेप को अस्वीकार करता है। सबसे तुच्छ शासक या अधिकारी अपने शासन के क्षेत्र में अपने बेटे के हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं करेगा। तथ्य यह है कि खलीफा होने के बावजूद, कुछ धर्मनिष्ठ सुल्तानों ने अपने निर्दोष बेटों को बेबुनियाद आधार पर मार डाला

यह आशंका कि बेटे उनके शासन में हस्तक्षेप करेंगे, यह दर्शाता है कि शासन में 'हस्तक्षेप की अस्वीकृति का कानून' कितना मौलिक है। और 'भागीदारी की रोकथाम का कानून', जो शासन के लिए अंतर्निहित स्वतंत्रता की आवश्यकता है, ने असाधारण उथल-पुथल के माध्यम से मानव जाति के इतिहास में अपनी ताकत दिखाई है जब भी किसी शहर में दो गवर्नर या किसी देश में दो राजा हुए हैं।

इस प्रकार, यदि शासन और संप्रभुता की भावना, जो कि मानव प्राणियों में एक छाया मात्र है, जो शक्तिहीन हैं और जिन्हें सहायता की आवश्यकता है, इस सीमा तक हस्तक्षेप को अस्वीकार करती है, दूसरों के हस्तक्षेप को रोकती है, अपनी संप्रभुता में भागीदारी को स्वीकार नहीं करती है, और अपनी स्थिति की स्वतंत्रता को इतनी ईर्ष्या से सुरक्षित रखने का प्रयास करती है, तो, यदि आप कर सकें, तो इसकी तुलना एक सर्व-महिमावान से करें जिसकी पूर्ण संप्रभुता प्रभुत्व की सीमा तक है, जिसका पूर्ण शासकत्व दिव्यता की सीमा तक है, पूर्ण स्वतंत्रता एकता की सीमा तक है, और आवश्यकता का पूर्ण अभाव पूर्ण शक्ति की सीमा तक है, और समझें कि उस शासकत्व की एक आवश्यक आवश्यकता और अपरिहार्य आवश्यकता हस्तक्षेप की अस्वीकृति, भागीदारी की रोकथाम, और भागीदारों का प्रतिकर्षण है।

अपने संदेह के दूसरे भाग के संबंध में आपने कहा: "यदि कुछ तुच्छ प्राणियों की पूजा कुछ कारणों की ओर निर्देशित होती है, तो इससे कणों से लेकर ग्रहों तक सभी प्राणियों की पूजा में क्या कमी आती है, जो कि अनिवार्य रूप से विद्यमान एक, सभी पूजाओं के परम लक्ष्य की ओर निर्देशित होती है?"

उत्तर: ब्रह्मांड के सर्वज्ञ रचयिता ने ब्रह्मांड को एक वृक्ष की तरह बनाया है, जिसमें चेतन प्राणी सबसे उत्तम फल हैं, और चेतन प्राणियों में उसने मनुष्य को उसका सबसे व्यापक फल बनाया है। और मनुष्य का सबसे महत्वपूर्ण फल, वास्तव में उसकी रचना का परिणाम, उसकी प्रकृति का उद्देश्य, और उसके जीवन का फल उसका धन्यवाद और आराधना है। क्या वह पूर्ण प्रभुता संपन्न और स्वतंत्र शासक, वह एकता का एकमात्र व्यक्ति, जो सृष्टि करता है, वह मनुष्य को धन्यवाद दे सकता है?

ब्रह्मांड में खुद को जानने और प्यार करने के लिए, दूसरों को मनुष्य, पूरे ब्रह्मांड का फल, और मनुष्य का धन्यवाद और पूजा, उसका सबसे ऊंचा फल देने के लिए? अपनी बुद्धि के बिल्कुल विपरीत, क्या वह व्यर्थ और

सृष्टि का परिणाम और ब्रह्मांड का फल व्यर्थ है? भगवान न करे! क्या वह जीवों की पूजा दूसरों को सौंपने से संतुष्ट होगा, जिससे उसकी बुद्धि

और उसके प्रभुत्व को नकारा जा सके? और यद्यपि वह प्रदर्शित करता है

अपने कार्यों के माध्यम से वह स्वयं को असीमित सीमा तक ज्ञात और प्रिय बनाना चाहता है, क्या वह अपने सबसे उत्तम प्राणियों को उनका धन्यवाद और कृतज्ञता, प्रेम और आराधना कारणों को सौंपकर उन्हें उसे भूलने के लिए विवश करेगा, और उन्हें ब्रह्माण्ड में उच्च उद्देश्यों को अस्वीकार करने के लिए विवश करेगा?

हे मित्र, प्रकृति की पूजा छोड़ दी है! अब यह काम तुम्हारा है।

तो उन्होंने जवाब दिया:

"ईश्वर की जय हो, अब मेरे ये दोनों संदेह दूर हो गए हैं।

और ईश्वरीय एकता के विषय में आपके दो प्रमाण जो दर्शाते हैं कि उपासना का एकमात्र सच्चा उद्देश्य वही है, तथा उसके अलावा कोई अन्य पूजा के योग्य नहीं है, इतने शानदार और शक्तिशाली हैं कि उन्हें नकारने के लिए उतने ही अहंकार की आवश्यकता होगी जितना सूर्य और दिन को नकारने के लिए।”

अध्याय 5

पूजा और आराधना के पीछे तर्क

प्रार्थना

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अल्लाह ने ईमान वालों से उनकी जान और माल खरीद लिया है, क्योंकि जन्नत उन्हीं के लिए है। (अत-तौबा 9:111)

यदि आप यह समझना चाहते हैं कि अपने शरीर और सम्पत्ति को ईश्वर को बेचना, उसका दास और उसका सैनिक बनना कितना लाभदायक व्यापार है, तथा कितना सम्मानजनक पद है, तो निम्नलिखित तुलना सुनें।

एक बार एक राजा ने अपने दो लोगों को एक-एक जागीर सौंपी, जिसमें सभी ज़रूरी कार्यशालाएँ, मशीनें, घोड़े, हथियार वगैरह शामिल थे। लेकिन चूँकि वह एक तूफ़ानी और युद्ध-ग्रस्त युग था, इसलिए किसी भी चीज़ में स्थिरता नहीं थी; या तो उसका गायब होना तय था या फिर बदल जाना। राजा ने अपनी असीम दया से एक बहुत ही महान लेफ्टिनेंट को उन दो लोगों के पास भेजा और एक दयालु आदेश के ज़रिए उन्हें निम्नलिखित संदेश दिया:

"अपनी वह सम्पत्ति मुझे बेच दो जो तुम्हारे पास ट्रस्ट के रूप में है, ताकि मैं उसे तुम्हारे लिए रख सकूँ।
इसे बिना किसी उद्देश्य के नष्ट न किया जाए। युद्ध समाप्त होने के बाद मैं इसे वापस कर दूंगा
पहले से बेहतर हालत में आपको सौंप दूंगा। मैं ट्रस्ट को आपकी संपत्ति मानूंगा और आपको इसके लिए ऊंची कीमत चुकाऊंगा। जहां तक कार्यशाला में मशीनरी और औजारों की बात है, तो उनका इस्तेमाल मेरे नाम से और मेरे कार्यक्षेत्र में किया जाएगा। लेकिन उनके इस्तेमाल की कीमत और शुल्क में हजार गुना वृद्धि की जाएगी। आपको मिलेगा

जो भी लाभ होगा, वह सब मैं ही दूंगा। आप गरीब हैं और संसाधनहीन हैं, और इन बड़े कामों की लागत वहन करने में असमर्थ हैं। इसलिए मैं सभी खर्चों और उपकरणों का प्रबंध कर लूंगा, और आपको सारी आय और लाभ दे दूंगा। सेना से विमुद्रीकरण के समय तक आपको इसे अपने पास रखना होगा। तो देखिए कि आपको किस तरह से लाभ होगा! अब अगर आप मुझे संपत्ति नहीं बेचते हैं, तो आप देख सकते हैं कि कोई भी व्यक्ति अपने पास मौजूद संपत्ति को सुरक्षित नहीं रख सकता है, और आप भी वह खो देंगे जो आपके पास अभी है

पकड़ो। यह बिना किसी कीमत के चला जाएगा, और तुम मेरी पेशकश की उच्च कीमत खो दोगे। नाजुक और कीमती उपकरण और तराजू, कीमती धातुएँ जिनका उपयोग किया जाना है,
भी अपना सारा मूल्य खो देंगे.

आपको प्रशासन और संरक्षण की परेशानी और चिंता होगी, लेकिन साथ ही अपने विश्वासघात के लिए दंडित भी किया जाएगा। तो पाँच तरीके देखें
जिसे तुम खो सकते हो! इसके अलावा, अगर तुम मुझे संपत्ति बेचते हो, तो तुम मेरे सैनिक बन जाओगे और मेरे नाम पर काम करोगे। एक आम कैदी या अनियमित सैनिक के बजाय, तुम एक महान राजा के स्वतंत्र लेफ्टिनेंट होगे।”

इस कृपापूर्ण आदेश को सुनने के बाद, दोनों में से अधिक बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा: "निश्चित रूप से, मुझे बेचने पर गर्व और खुशी है। मैं हज़ार गुना धन्यवाद देता हूँ।" लेकिन दूसरा व्यक्ति घमंडी, स्वार्थी और भ्रष्ट था; उसकी आत्मा फिरौन की तरह घमंडी हो गई थी।72 मानो उसे उस संपत्ति पर हमेशा के लिए रहना था, उसने इस दुनिया के भूकंप और कोलाहल को अनदेखा कर दिया। उसने कहा: "नहीं!

राजा कौन है? मैं अपनी संपत्ति नहीं बेचूंगा, न ही अपना आनंद खराब करूंगा।" थोड़े समय के बाद, पहला आदमी इतने ऊंचे पद पर पहुंच गया कि हर कोई उसके राज्य से ईर्ष्या करने लगा।
उसे राजा का अनुग्रह प्राप्त हुआ और वह राजा के महल में सुखपूर्वक रहने लगा।
इसके विपरीत दूसरे की हालत ऐसी हो गई कि हर किसी को उस पर दया आ गई, लेकिन साथ ही
उसने कहा कि वह इसके लायक था। क्योंकि उसकी गलती के परिणामस्वरूप, उसकी खुशी और संपत्ति चली गई, और उसे सजा और पीड़ा झेलनी पड़ी। हे मनमौजी आत्मा!
इस दृष्टांत की दूरबीन से सत्य का चेहरा देखिए। जहाँ तक राजा की बात है, वह पूर्व-अनंत काल और उत्तर-अनंत काल का सम्राट है, आपका पालनहार और निर्माता। सम्पदा, मशीनरी, उपकरण और तराजू आपकी संपत्ति हैं जबकि आप

जीवन की तह; उन संपत्तियों के भीतर आपका शरीर, आत्मा और हृदय, और आपकी बाहरी और आंतरिक इंद्रियां जैसे आंख और जीभ, बुद्धि और कल्पना। जहां तक सबसे महान लेफ्टिनेंट का सवाल है, वह ईश्वर का महान दूत है; और सबसे बुद्धिमान आदेश विवेकपूर्ण कुरान है, जो उस व्यापार का वर्णन करता है जिसकी हम इस आयत में चर्चा कर रहे हैं, 'वास्तव में ईश्वर ने ईमान वालों से उनके प्राण और संपत्ति खरीद ली है ताकि जन्नत उन्हें मिले।' (अत-तौबा 9:111)। युद्ध का उफनता हुआ क्षेत्र दुनिया की तूफानी सतह है, जो निरंतर बदलती, विलीन और पुन: निर्मित होती रहती है और प्रत्येक व्यक्ति को यह सोचने पर मजबूर करती है: "चूंकि सब कुछ हमारे हाथ से निकल जाएगा, नष्ट हो जाएगा और खो जाएगा, क्या ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे हम इसे किसी शाश्वत चीज़ में बदल सकें और इसे सुरक्षित रख सकें?"

इन विचारों में मग्न रहते हुए, वह अचानक कुरान की दिव्य वाणी सुनता है, जो कहती है: "वास्तव में, एक सुंदर और आसान रास्ता है, जिसमें पाँच लाभ निहित हैं।" वह रास्ता क्या है? प्राप्त की गई अमानत को उसके असली मालिक को वापस बेचना। ऐसी बिक्री से पाँच गुना लाभ होता है।

---

[72] फिरौन मानव जाति की संचित बुराई का प्रतिनिधित्व करता है। वह केवल प्राचीन काल का शासक नहीं है
मिस्र.

पहला लाभ: क्षणभंगुर संपत्ति चिरस्थायी हो जाती है। इस क्षीण होते जीवन के लिए,
जब वह अनन्त और स्वयंभू महिमावान प्रभु को समर्पित हो जाता है और उनके लिए खर्च किया जाता है, तो वह अनन्त काल में परिवर्तित हो जाता है। यह अनन्त फल देता है। किसी के जीवन के क्षण स्पष्ट रूप से गायब हो जाएंगे और गुठली और बीज की तरह सड़ जाएंगे।

लेकिन तब धन्यता और मंगल के फूल अनंत काल के क्षेत्र में खिलेंगे और खिलेंगे, और प्रत्येक मध्यवर्ती क्षेत्र में एक चमकदार और आश्वस्त करने वाला पहलू भी प्रस्तुत करेगा।

दूसरा लाभ: इसके बदले में जन्नत की ऊँची कीमत दी जाती है।
तीसरा लाभ: प्रत्येक अंग और प्रत्येक इन्द्रिय का मूल्य एक हजार गुना बढ़ जाता है।
बुद्धि एक औज़ार की तरह है। अगर आप इसे सर्वशक्तिमान ईश्वर को नहीं बेचते, बल्कि आत्मा के लिए इस्तेमाल करते हैं, तो यह एक अशुभ, हानिकारक और कमज़ोर करने वाला औज़ार बन जाएगा जो आपके कमज़ोर व्यक्ति को अतीत के सभी दुखों और भविष्य के भयानक भय से बोझिल कर देगा; यह एक अशुभ और विनाशकारी औज़ार की श्रेणी में आ जाएगा। यही कारण है कि एक पापी व्यक्ति अपनी बुद्धि की परेशानियों और चोटों से बचने के लिए अक्सर नशे या तुच्छ सुख का सहारा लेता है। लेकिन अगर आप अपनी बुद्धि को उसके सच्चे मालिक को बेचते हैं और उसकी ओर से उसका इस्तेमाल करते हैं, तो बुद्धि एक ताबीज की चाबी की तरह बन जाएगी, जो करुणा के अनंत खजाने और सृष्टि में मौजूद ज्ञान के तिजोरियों को खोल देगी।

एक और उदाहरण लेते हैं, आँख इंद्रियों में से एक है, जो देखने की एक खिड़की है।
आत्मा इस दुनिया को देखती है। यदि आप इसे सर्वशक्तिमान ईश्वर को नहीं बेचते हैं, बल्कि इसे आत्मा की ओर से, क्षणभंगुर, अस्थायी सुंदरता और दृश्यों को देखकर, काम में लाते हैं, तो यह एक होने के स्तर तक डूब जाएगा

वासना और कामुक आत्मा को संतुष्ट करो। लेकिन अगर तुम अपनी आँख अपने सर्वज्ञ निर्माता को बेच दो, और उसका उपयोग उसकी ओर से और उसके द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर करो
तब आपकी आंखें अस्तित्व की महान पुस्तक के पाठक, प्रभु की कला के चमत्कारों के साक्षी, इस पृथ्वी के बगीचे में दया के पुष्पों को चूसने वाली धन्य मधुमक्खी के स्तर तक उठ जाएंगी।

एक और उदाहरण जीभ और स्वाद की इंद्री का है। अगर आप इसे अपने बुद्धिमान निर्माता को नहीं बेचते हैं, बल्कि इसे आत्मा की खातिर और पेट की खातिर इस्तेमाल करते हैं, तो यह डूब जाती है और पेट के अस्तबल के द्वारपाल और उसके कारखाने के चौकीदार के स्तर तक गिर जाती है। लेकिन अगर आप इसे उदार प्रदाता को बेचते हैं, तो जीभ में मौजूद स्वाद की इंद्री

ईश्वरीय खजाने के कुशल पर्यवेक्षक के पद तक पहुंच जाएगा
करुणा, परमेश्वर की अनन्त शक्ति की रसोई में एक आभारी निरीक्षक।

इसलिए, हे बुद्धि, ध्यान से देखो! विनाश के साधन और सभी अस्तित्व की कुंजी के बीच अंतर देखो! और ध्यान से देखो, हे आँख! एक घृणित दलाल और दिव्य पुस्तकालय के विद्वान पर्यवेक्षक के बीच अंतर देखो! और हे जीभ, अच्छी तरह से स्वाद लो! एक अस्तबल के द्वारपाल या एक कारखाने के चौकीदार और भगवान की दया के खजाने के अधीक्षक के बीच अंतर देखो!

इनसे अन्य सभी औज़ारों और अंगों की तुलना करें, और तब आप समझ जाएँगे कि वास्तव में आस्तिक को स्वर्ग के योग्य स्वभाव प्राप्त होता है और अविश्वासी को नरक के योग्य स्वभाव प्राप्त होता है। उनमें से प्रत्येक को प्राप्त होने का कारण

उनका संबंधित मूल्य यह है कि आस्तिक, अपने विश्वास के आधार पर, अपने निर्माता के भरोसे का उपयोग उसकी ओर से और उसके द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर करता है, जबकि अविश्वासी भरोसे को धोखा देता है और इसे सहज ज्ञान के लिए उपयोग करता है।

आत्मा।

चौथा लाभ: मनुष्य असहाय है और अनेक दुर्भाग्यों से घिरा हुआ है।

वह गरीब है, और उसकी ज़रूरतें बहुत हैं। वह कमज़ोर है, और जीवन का बोझ बहुत भारी है। अगर वह सर्वशक्तिमान महिमावान पर भरोसा नहीं करता, तो उसे

उस पर भरोसा रखें और आत्मविश्वास से उसके अधीन रहें, उसका विवेक हमेशा परेशान रहेगा। निरर्थक यातनाएँ, दर्द और पछतावे उसका दम घोंट देंगे और उसे नशे में डाल देंगे, या उसे जानवर में बदल देंगे।

पाँचवाँ लाभ: जिन लोगों ने प्रकाश का अनुभव किया है और जिन पर चीज़ों की सच्ची प्रकृति का पर्दा पड़ा है, वे चुने हुए लोग जिन्होंने सत्य को देखा है, वे सभी

इस बात पर सहमत हुए कि आपके अंगों और उपकरणों द्वारा की गई ईश्वर की सभी पूजा और महिमा का उच्च पुरस्कार आपको सबसे बड़ी जरूरत के समय, स्वर्ग के फलों के रूप में दिया जाएगा।

यदि आप इस व्यापार को इसके पांच गुना लाभ के साथ ठुकरा देते हैं, इसके अलावा

इसके लाभ से वंचित होने पर आपको पांच गुना हानि होगी।

पहली हानि: वह संपत्ति और संतान जिसके प्रति तुम इतने आसक्त हो, वह आत्मा और उसकी सनक जिसकी तुम पूजा करते हो, वह यौवन और जीवन जिसके प्रति तुम आसक्त हो, सब कुछ नष्ट हो जाएगा और खो जाएगा; तुम्हारे हाथ खाली हो जाएंगे। लेकिन वे अपने पीछे पाप और पीड़ा छोड़ जाएंगे, जो तुम्हारी गर्दन पर जुए की तरह बंधी रहेगी।

दूसरा नुकसान: विश्वासघात की सज़ा आपको भुगतनी पड़ेगी। क्योंकि आपने सबसे कीमती औज़ारों का इस्तेमाल सबसे बेकार चीज़ों पर करके खुद के साथ अन्याय किया होगा।

तीसरी हानि: मनुष्य की सभी बहुमूल्य क्षमताओं को पशुओं से भी निम्न स्तर तक गिराकर, आपने ईश्वर की बुद्धि का अपमान और उल्लंघन किया होगा।

चौथी हानि: अपनी दुर्बलता और दरिद्रता में, आपने जीवन का भारी बोझ अपने दुर्बल कंधों पर डाल लिया होगा, और आप निरन्तर क्षणभंगुरता और अलगाव के आघातों के नीचे कराहते और विलाप करते रहेंगे।

पाँचवाँ नुकसान: आप एक बदसूरत रूप धारण कर लेंगे, जो आपके सामने नरक के द्वार खोलने के लिए उपयुक्त होगा, दयालु व्यक्ति के सुंदर उपहार जैसे कि
बुद्धि, हृदय, आँख और जीभ, तुम्हें अनन्त जीवन और परलोक में अनन्त सुख की नींव रखने के लिए दी गई हैं।

अब क्या ट्रस्ट को बेचना इतना मुश्किल है? क्या यह इतना बोझिल है कि बहुत से लोग इस सौदे से दूर भागते हैं? बिलकुल नहीं! यह बिलकुल भी बोझिल नहीं है।
क्योंकि अनुमेय की सीमाएँ व्यापक हैं, और मनुष्य के लिए काफी पर्याप्त हैं
इच्छा; निषिद्ध पर अतिक्रमण करने की कोई आवश्यकता नहीं है।
ईश्वर प्रकाश हैं और उनकी संख्या कम है। ईश्वर का दास और सैनिक होना एक अवर्णनीय रूप से सुखद सम्मान है। किसी का कर्तव्य केवल ईश्वर के नाम पर कार्य करना और सभी कामों को शुरू करना है, एक सैनिक की तरह; ईश्वर की ओर से लेना और देना; उनकी अनुमति और कानून के अनुसार चलना और स्थिर रहना। यदि कोई कमी करता है, तो उसे उनसे क्षमा मांगनी चाहिए, कहना चाहिए:

"हे प्रभु! हमारे पापों को क्षमा कर, और हमें अपना दास स्वीकार कर। हमें अपने भरोसे के पक्के धारक बना, जब तक कि वह समय न आ जाए जब वह हमसे छीन लिया जाए। आमीन!" और उससे विनती करो।

उपासना के गुण (उबुदिय्यह)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अब ऐ इंसानों! अपने रब की इबादत करो। (अल-बक़रा 2:21)

यदि आप यह समझना चाहते हैं कि उपासना में कितना बड़ा लाभ और सुख निहित है, तथा दुराचार और अपव्यय में कितनी बड़ी हानि और बरबादी है, तो निम्नलिखित कहानी को सुनें और उस पर ध्यान दें, जो एक तुलना के रूप में है:

एक बार, दो सैनिकों को दूर के शहर में जाने का आदेश मिला। वे चल पड़े और साथ-साथ यात्रा करते रहे, जब तक कि सड़क दो भागों में नहीं आ गई। दो भागों में बंट जाने पर एक व्यक्ति ने उनसे कहा, "दाहिनी ओर की सड़क से कोई नुकसान नहीं होता, और जो लोग इसे लेते हैं, उनमें से दस में से नौ को बहुत लाभ होता है और वे बहुत आराम महसूस करते हैं।

जबकि बाईं ओर की सड़क कोई लाभ नहीं देती है, और इस पर यात्रा करने वाले दस में से नौ यात्री नुकसान उठाते हैं। लेकिन दूरी के मामले में वे एक जैसे हैं। बस एक अंतर है: जो लोग बाईं ओर की सड़क लेते हैं, जिस पर कोई नियम नहीं है और कोई अधिकारी नहीं है, वे बिना सामान और हथियार के यात्रा करते हैं। उन्हें एक स्पष्ट हल्कापन और भ्रामक सहजता महसूस होती है। जबकि जो लोग दाईं ओर की सड़क पर यात्रा करते हैं,

जो सैन्य आदेश के तहत है, उन्हें पौष्टिक राशन से भरा किट-बैग, चार ओक्का या उससे अधिक वजन का और लगभग दो किलो वजन की एक शानदार सेना राइफल ले जाने के लिए मजबूर किया जाता है।

[73] जो हर दुश्मन को परास्त कर देगा और उसे परास्त कर देगा..."

जब दोनों सैनिकों ने इस शिक्षाप्रद व्यक्ति की बातें सुन लीं, तो भाग्यशाली व्यक्ति ने दाईं ओर का रास्ता पकड़ लिया। उसने अपनी पीठ पर एक बैटमैन का वजन लादा , लेकिन उसका दिल और आत्मा हज़ारों लोगों से बच गए।

डर और दूसरों के प्रति कृतज्ञता की भावना । जहाँ तक दूसरे की बात है, तो वे बदकिस्मत हैं,

सैनिक होने के कारण उसने सेना छोड़ दी। वह सेना के नियमों के अनुसार नहीं चलना चाहता था।

---

[73] 1 ओक्का लगभग 2.8 पाउंड या 1,300 ग्राम के बराबर होता है। किय्ये, ओक्का का दूसरा नाम है। 1 बैटमैन 8 ओक्का या 5-30 पाउंड के बराबर होता है।

[74] बैटमैन माप की एक पुरानी इकाई है। 1 बैटमैन 7.6 किलो के बराबर होता है।

आदेश दिया और वह बाईं ओर चला गया। उसे एक का भार उठाने से मुक्त कर दिया गया
बैटमैन, लेकिन उसका दिल हज़ारों बैटमैन के कर्ज के बोझ से दबा हुआ था, और उसकी आत्मा असंख्य भय से कुचली हुई थी। वह हर किसी से भीख मांगते हुए और हर वस्तु और हर घटना के सामने कांपते हुए अपने रास्ते पर आगे बढ़ा जब तक कि वह अपने गंतव्य पर नहीं पहुंच गया। और वहां उसे एक विद्रोही और भगोड़ा के रूप में दंडित किया गया।

जहाँ तक उस सैनिक का सवाल है जो सेना के आदेश से प्यार करता था, अपने बैग और राइफल की रखवाली करता था और दाएँ हाथ का रास्ता लेता था, वह किसी के अधीन नहीं था, किसी से नहीं डरता था और शांत मन और विवेक के साथ अपने रास्ते पर आगे बढ़ता रहा जब तक कि वह उस शहर में नहीं पहुँच गया जिसे वह ढूँढ़ रहा था। वहाँ उसे एक सम्माननीय सैनिक के योग्य पुरस्कार मिला जिसने अपना कर्तव्य ईमानदारी से निभाया था।

हे विद्रोही आत्मा, जान लो कि उन दो यात्रियों में से एक उन लोगों का प्रतिनिधित्व करता है
जो ईश्वरीय कानून के अधीन रहते हैं, जबकि दूसरा विद्रोही और अपनी इच्छाओं का पालन करने वालों का प्रतिनिधित्व करता है। सड़क जीवन की सड़क है, जो आती है
आत्मा की दुनिया से, कब्र से होकर, और परलोक में जाता है। जहाँ तक किट बैग और राइफल का सवाल है, वे ईश्वर की पूजा और भय हैं।
उपासना में एक स्पष्ट बोझ होता है, लेकिन इसके अर्थ में एक सहजता और हल्कापन होता है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। क्योंकि निर्धारित प्रार्थनाओं में उपासक घोषणा करता है, "मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है।" इसका अर्थ है
कहो, वह हर चीज़ में रहमत के ख़ज़ाने का दरवाज़ा पाता है, क्योंकि वह ईमान लाता है और कहता है, "उसके अलावा कोई पैदा करनेवाला और रोज़गार देनेवाला नहीं है। नुकसान और फ़ायदा दोनों उसके हाथ में हैं। वह अत्यन्त तत्वदर्शी है, वह कोई काम व्यर्थ नहीं करता, और वह अत्यन्त दयावान है, उसकी कृपा और दया बहुत है।" और वह दुआ के साथ दरवाज़ा खटखटाता है। इसके अलावा, वह देखता है कि हर चीज़ उसके अपने पालनहार के आदेश के अधीन है, इसलिए वह उसकी शरण लेता है। वह उस पर भरोसा करता है और उस पर निर्भर रहता है, और हर विपत्ति के विरुद्ध मज़बूत होता है; उसका ईमान उसे पूर्ण आत्मविश्वास देता है।

वास्तव में, हर सच्चे सद्गुण की तरह, साहस का स्रोत ईश्वर में विश्वास और पूजा है। और हर अधर्म की तरह, कायरता का स्रोत गुमराही है।

वास्तव में, एक सच्चे प्रबुद्ध हृदय वाले उपासक के लिए, यह संभव है कि यदि पृथ्वी का गोला बम बन जाए और फट जाए, तो भी वह भयभीत नहीं होगा। वह इसे अनंत काल से चाहने वाले की शक्ति के चमत्कार के रूप में सुखद आश्चर्य के साथ देखेगा। लेकिन जब एक प्रसिद्ध पतित दार्शनिक ने तथाकथित प्रबुद्ध मन लेकिन बिना हृदय के एक धूमकेतु देखा

आकाश में, वह ज़मीन पर काँप उठा, और बेचैनी से बोला: “क्या वह धूमकेतु पृथ्वी से टकराने वाला नहीं है?” (एक बार, अमेरिका ऐसे ही धूमकेतु के डर से काँप उठा था, और कई लोग आधी रात को अपने घरों से बाहर निकल आए थे।)

हां, हालांकि मनुष्य को अनगिनत चीजों की जरूरत है, लेकिन उसकी पूंजी कुछ भी नहीं है, और हालांकि वह अंतहीन आपदाओं के अधीन है, उसकी शक्ति भी कुछ भी नहीं है। बस, उसकी पूंजी और शक्ति केवल वहीं तक फैली हुई है जहां तक उसका हाथ पहुंच सकता है। हालांकि, उसकी उम्मीदें, इच्छाएं, दर्द और क्लेश वहीं तक पहुंचते हैं जहां तक आंख और कल्पना पहुंच सकती है। कोई भी व्यक्ति जो पूरी तरह से अंधा नहीं है, वह देख और समझ सकता है कि मानव के लिए कितना बड़ा लाभ, खुशी और इनाम है

आत्मा जो इस प्रकार नपुंसक और कमजोर है, तथा जरूरतमंद और अभावग्रस्त है, वह पूजा है,
ईश्वर की एकता की पुष्टि, ईश्वर पर भरोसा और उसके प्रति समर्पण।

यह स्पष्ट है कि हानिकारक मार्ग की अपेक्षा सुरक्षित मार्ग अधिक बेहतर है, भले ही उसके सुरक्षित होने की संभावना दस में से एक ही क्यों न हो। लेकिन उपासना के मार्ग पर, जिसकी चर्चा हम यहाँ कर रहे हैं, दस में से नौ संभावनाएँ हैं कि यह अनन्त सुख के भण्डार की ओर ले जाएगा, साथ ही यह सुरक्षित भी है। जबकि असंख्य विशेषज्ञों और गवाहों की गवाही से - जो सर्वसम्मति की हद तक है - यह स्थापित हो चुका है कि लाभहीन होने के अलावा, और दुराचारी लोग भी इसे स्वीकार करते हैं, दुराचार और अपव्यय का मार्ग अनन्त दुख में समाप्त होता है।

सृष्टि के रहस्यों को उजागर करने वालों के अनुसार यह बात पूर्णतः निश्चित है।

संक्षेप में, परलोक की तरह, इस दुनिया में भी खुशी इबादत और सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए सिपाही बनने में निहित है। ऐसे में, हमें लगातार कहना चाहिए: "उसकी आज्ञाकारिता और सफलता के लिए ईश्वर की प्रशंसा हो," और हमें उसका शुक्रिया अदा करना चाहिए कि हम मुसलमान हैं...

प्रतिदिन पाँच क्रियाएँ करने के लाभ

प्रार्थना (सलाह)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

निर्धारित नमाज़ें धर्म के स्तंभ हैं।75

यदि आप इस निश्चय के साथ समझना चाहते हैं कि दो और दो चार होते हैं तो निर्धारित प्रार्थनाएँ कितनी मूल्यवान और महत्वपूर्ण हैं और वे कितने कम खर्च में प्राप्त की जाती हैं, और वह व्यक्ति कितना पागल और हानिकारक है जो उन्हें पढ़ता है।
यदि आप उनकी उपेक्षा करते हैं, तो कृपया निम्नलिखित कहानी पर ध्यान दें, जो इस प्रकार है:
तुलना:

एक बार, एक शक्तिशाली शासक ने अपने दो सेवकों को चौबीस सोने के सिक्के दिए और उन्हें दो महीने की दूरी पर अपने एक समृद्ध, शाही खेत में बसने के लिए भेज दिया। उसने उन्हें आदेश दिया, "इस पैसे का इस्तेमाल अपने टिकट के लिए करो, और इससे अपने घर के लिए जो भी ज़रूरी हो खरीदो। वहाँ एक है

खेत से एक दिन की दूरी पर स्टेशन है। और वहाँ सड़क परिवहन, रेलवे, नावें और हवाई जहाज़ दोनों हैं। आप अपनी पूंजी के अनुसार इनका लाभ उठा सकते हैं।"

ये निर्देश पाकर दोनों सेवक चल पड़े। उनमें से एक
वह भाग्यशाली था इसलिए उसने स्टेशन तक पहुँचने के लिए थोड़ी सी रकम खर्च की। और उस खर्च में कुछ ऐसा व्यवसाय भी शामिल था जो उसके मालिक को इतना लाभदायक और पसंद आया कि उसकी पूंजी हज़ार गुना बढ़ गई। दूसरे नौकर के लिए, चूँकि वह बदकिस्मत और आवारा था, उसने स्टेशन तक पहुँचने के रास्ते में सोने के तेईस सिक्के खर्च कर दिए, उसे जुए और मौज-मस्ती में बरबाद कर दिया।

मनोरंजन के लिए एक सोने का सिक्का बचा था। उसके दोस्त ने उससे कहा: "इस आखिरी सोने के सिक्के को टिकट पर खर्च करो ताकि तुम्हें लंबी यात्रा न करनी पड़े और भूखा न रहना पड़े। इसके अलावा, हमारे मालिक बहुत उदार हैं; शायद वह पैसे ले लेंगे
तुम पर दया करेंगे और तुम्हारी गलतियों को माफ करेंगे, और तुम्हें

---

[75] हदीस की रिपोर्ट तिर्मिज़ी, ईमान, 8 में दी गई है; इब्न माजाह, फ़ितन, 12; मुसनद, वी, 231; अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, द्वितीय, 76.

एक हवाई जहाज़ भी। फिर हम एक दिन में वहाँ पहुँच जाएँगे जहाँ हम रहने जा रहे हैं। अन्यथा आपको एक रेगिस्तान में अकेले और भूखे चलने के लिए मजबूर होना पड़ेगा जिसे पार करने में दो महीने लगते हैं। सबसे मूर्ख व्यक्ति भी समझ सकता है कि वह कितना मूर्ख, हानिकारक और नासमझ होगा यदि वह हठ के कारण उस एक बचे हुए सोने के टुकड़े को टिकट पर खर्च न करे, जो खजाने की चाबी की तरह है, और इसके बजाय इसे क्षणिक आनंद के लिए व्यसन पर खर्च कर दे। क्या ऐसा नहीं है?

ऐ तुम जो निर्धारित नमाज़ों का पालन नहीं करते! और ऐ मेरी अपनी आत्मा! जो नमाज़ पढ़ना पसंद नहीं करती! तुलना में शासक हमारा पालनहार, हमारा निर्माता है। दो यात्रा करने वाले सेवकों में से, एक उन भक्तों का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी नमाज़ों को उत्साह के साथ अदा करते हैं, और दूसरा, वे ग़ाफ़िल जो अपनी नमाज़ों की उपेक्षा करते हैं। सोने के चौबीस टुकड़े हर चौबीस घंटे के दिन में जीवन हैं। और शाही क्षेत्र जन्नत है। जहाँ तक स्टेशन का सवाल है, वह क़ब्र है। यात्रा मनुष्य का क़ब्र, फिर पुनरुत्थान और आख़िरत की ओर जाने का मार्ग है। मनुष्य अपने कर्मों और ईश्वर के प्रति अपने भय की शक्ति के अनुसार अलग-अलग हद तक उस लंबी यात्रा को तय करते हैं। कुछ सच्चे भक्तों ने एक दिन में बिजली की तरह एक हज़ार साल की दूरी तय की है। और कुछ ने कल्पना की गति से एक दिन में पचास हज़ार साल की दूरी तय की है। महान क़ुरआन अपनी दो आयतों के साथ इस सत्य का संकेत करता है।

तुलना में टिकट निर्धारित प्रार्थनाओं को दर्शाता है। प्रतिदिन एक घंटा पाँच प्रार्थनाओं के साथ-साथ वुज़ू करने के लिए पर्याप्त है।

तो जो व्यक्ति इस क्षणभंगुर सांसारिक जीवन पर तेईस घंटे खर्च करता है, और परलोक के लंबे जीवन पर एक घंटा भी खर्च नहीं करता, वह कितना नुकसान करता है; वह अपने आप को कितना नुकसान पहुँचाता है; वह कितना अनुचित व्यवहार करता है। क्योंकि जो कोई भी अपने आप को विवेकशील समझता है, वह यह नहीं समझ सकता कि ऐसे व्यक्ति का आचरण तर्क और बुद्धि के कितने विपरीत है, और वह तर्क से कितना दूर हो गया है, यदि वह इसे विवेकपूर्ण समझते हुए अपनी आधी संपत्ति एक लॉटरी में दे देता है जिसमें एक हजार लोग भाग ले रहे हैं और जीतने की संभावना है

जीत एक हजार में एक होती है, और इसका एक चौबीसवां हिस्सा भी किसी को नहीं मिलता
शाश्वत खजाना जहां जीतने की संभावना सौ में से निन्यानबे पर सत्यापित की गई है?

इसके अलावा, आत्मा, हृदय और मन को प्रार्थना में बहुत आसानी मिलती है।
और यह शरीर के लिए कोई कष्टकारी काम नहीं है। इसके अलावा, सही इरादे से निर्धारित नमाज़ पढ़ने वाले व्यक्ति के सभी अन्य कार्य भी निर्धारित नमाज़ की तरह हो जाते हैं।
वह अपने जीवन की पूरी पूंजी को परलोक को सौंप सकता है। वह अपने क्षणभंगुर जीवन को एक मामले में स्थायी बना सकता है।

अध्याय 6

पुनरुत्थान और

इसके बाद

रूपकों, तुलनाओं और कहानियों के रूप में इन ग्रंथों को लिखने का मेरा उद्देश्य समझ को आसान बनाना और यह दिखाना है कि इस्लाम की सच्चाइयाँ कितनी तर्कसंगत, उचित, सुस्थापित और सुसंगत हैं। कहानियों का अर्थ उन सच्चाइयों में निहित है जो उन्हें समाप्त करती हैं; प्रत्येक कहानी अपने अंतिम सत्य की ओर इशारा करने वाले एक संकेत की तरह है। इसलिए, वे केवल काल्पनिक कहानियाँ नहीं हैं, बल्कि

वास्तविक सत्य.

नर्सी ने कहा

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु है, कृपालु है।

अब देखो अल्लाह की दया के निशान कि कैसे वह मुर्दा ज़मीन को उसके मरने के बाद ज़िंदा कर देता है। तो वही है जो मुर्दों को ज़िंदा करेगा। वह हर चीज़ पर पूरी ताक़त रखता है।

(आर- कक्ष 30:50)

भाई, यदि आप पुनरुत्थान और परलोक के विषय में सरल और आम भाषा में, सीधे अंदाज में चर्चा करना चाहते हैं, तो मेरी आत्मा के साथ निम्नलिखित तुलना सुनें।

एक बार दो व्यक्ति स्वर्ग (जन्नत) के समान सुन्दर देश से होकर यात्रा कर रहे थे (उस देश से हमारा अभिप्राय संसार है)। उन्होंने अपने चारों ओर देखा तो पाया कि सभी ने अपने घर और दुकान के दरवाजे खुले छोड़ रखे हैं और उसकी रखवाली पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। धन और सम्पत्ति आसानी से उपलब्ध थी, और उन पर कोई दावा करने वाला नहीं था। उन दो यात्रियों में से एक ने जो कुछ भी चाहा, उसे हथिया लिया, उसे चुरा लिया और हड़प लिया। अपनी प्रवृत्ति के अनुसार उसने हर प्रकार का अन्याय और घृणित कार्य किया। उस देश के किसी भी व्यक्ति ने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। लेकिन उसके मित्र ने उससे कहा:

"तुम क्या कर रहे हो? तुम्हें सजा मिलेगी और मैं भी तुम्हारे साथ मुसीबत में फंस जाऊंगा। यह सारी संपत्ति राज्य की है। इस देश के लोग, यहां तक कि बच्चे भी, सभी सैनिक या सरकारी कर्मचारी हैं। वे वर्तमान में नागरिक हैं इसलिए वे तुम्हारे काम में दखल नहीं दे रहे हैं। लेकिन यहां के कानून सख्त हैं। राजा ने हर जगह टेलीफोन लगवा दिए हैं और उसके एजेंट हर जगह मौजूद हैं। जल्दी जाओ और मामले को सुलझाने की कोशिश करो।"

लेकिन उस मूर्ख व्यक्ति ने अपनी हठधर्मिता में कहा: "नहीं, यह राज्य की संपत्ति नहीं है; यह किसी दान-संपत्ति की है, और इसका कोई स्पष्ट या प्रत्यक्ष स्वामी नहीं है। हर कोई इसका अपनी इच्छानुसार उपयोग कर सकता है। मुझे इन बढ़िया चीजों के उपयोग से खुद को वंचित करने का कोई कारण नहीं दिखता। मैं यह नहीं मानूंगा कि ये किसी की हैं

जब तक मैं उसे अपनी आँखों से न देख लूं।" वह इसी तरह से बहुत दार्शनिक कुतर्कों के साथ बोलता रहा, और दोनों के बीच एक गंभीर चर्चा हुई
उन्हें।

पहले तो खाली दिमाग वाले आदमी ने कहा: "यहाँ राजा कौन है? मैं तो देख नहीं सकता।"
"और फिर उसके दोस्त ने जवाब दिया:

"हर गांव का अपना मुखिया होना चाहिए; हर सुई का अपना निर्माता और कारीगर होना चाहिए। और, जैसा कि आप जानते हैं, हर अक्षर किसी न किसी के द्वारा लिखा जाना चाहिए। फिर, यह कैसे हो सकता है कि इतने सुव्यवस्थित राज्य का कोई शासक न हो? और इतनी सारी दौलत का कोई मालिक कैसे नहीं हो सकता, जब हर घंटे एक रेलगाड़ी76 आती है जो कीमती और कलात्मक उपहारों से भरी होती है, मानो अदृश्य के दायरे से आ रही हो? और सभी घोषणाएँ और उद्घोषणाएँ, सभी मुहरें और टिकटें, उन सभी वस्तुओं, सभी सिक्कों और झंडों पर पाई जाती हैं

राज्य के हर कोने में लहराते हुए - क्या वे बिना मालिक के हो सकते हैं? ऐसा लगता है कि आपने विदेशी भाषाओं का थोड़ा बहुत अध्ययन किया है, और इस इस्लामी लिपि को पढ़ने में असमर्थ हैं। इसके अलावा, आप उन लोगों से पूछने से इनकार करते हैं जो इसे पढ़ने में सक्षम हैं।
अब आओ, मैं तुम्हें राजा का सर्वोच्च आदेश पढ़कर सुनाता हूँ।"

फिर उस मूर्ख व्यक्ति ने जवाब दिया: "अच्छा, मान लीजिए कि कोई राजा है; मैं उसकी सारी संपत्ति का जो मामूली-सा उपयोग कर रहा हूँ, उससे उसे क्या नुकसान हो सकता है? क्या इसके कारण उसका खजाना कम हो जाएगा? किसी भी स्थिति में, मुझे यहाँ जेल या सज़ा जैसी कोई चीज़ नज़र नहीं आती।"

उसके दोस्त ने जवाब दिया: "यह ज़मीन जो तुम देख रहे हो, वह युद्धाभ्यास का मैदान है। यह,
इसके अलावा, उनकी अद्भुत शाही कलाओं की एक प्रदर्शनी भी होगी। फिर भी यह हो सकता है
एक अस्थायी धर्मशाला के रूप में माना जाता है, जो नींव से रहित है। क्या आप

---

[76] यह एक वर्ष के चक्र को दर्शाता है। दरअसल, हर वसंत ऋतु में नदी से आने वाली रसद से भरी एक गाड़ी होती है।
अदृश्य का क्षेत्र.

क्या आप यह नहीं देखते कि हर दिन एक कारवां आता है और दूसरा चला जाता है और गायब हो जाता है? यह लगातार खाली और भरा जा रहा है। जल्द ही पूरी भूमि बदल जाएगी; इसके निवासी दूसरे और अधिक स्थायी क्षेत्र में चले जाएंगे। वहाँ हर किसी को उसकी सेवाओं के अनुसार पुरस्कृत या दंडित किया जाएगा।"

उस विश्वासघाती मूर्ख ने विद्रोही स्वर में कहा: "मैं इस पर विश्वास नहीं करता। क्या यह संभव है कि एक पूरी भूमि नष्ट हो जाए और दूसरे राज्य में स्थानांतरित हो जाए?"

उसके वफादार दोस्त ने तब उत्तर दिया: "चूंकि आप इतने जिद्दी और विद्रोही हैं, इसलिए आइए, मैं आपको असंख्य उपलब्ध प्रमाणों में से बारह के साथ यह दिखा दूं कि एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण है, पुरस्कार और उदारता का एक क्षेत्र और दंड और कारावास का एक क्षेत्र है, और जिस तरह यह दुनिया हर दिन आंशिक रूप से खाली हो जाती है, उसी तरह एक दिन ऐसा भी आएगा जब यह पूरी तरह से खाली हो जाएगी और नष्ट हो जाएगी।77

पहला पहलू: क्या यह संभव है कि किसी भी राज्य में, और विशेष रूप से इस तरह के शानदार राज्य में, आज्ञाकारी सेवा करने वालों के लिए कोई पुरस्कार न हो और विद्रोह करने वालों के लिए कोई दंड न हो? पुरस्कार और दंड यहाँ वस्तुतः अस्तित्वहीन हैं; इसलिए कहीं और एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण होना चाहिए।

दूसरा पहलू: इस राज्य के संगठन और प्रशासन पर गौर करें!
देखिए कैसे हर किसी को, सबसे गरीब और सबसे कमज़ोर लोगों को भी, उत्तम और अलंकृत भोजन उपलब्ध कराया जाता है। बीमार लोगों की सबसे अच्छी देखभाल की जाती है। शाही और स्वादिष्ट भोजन, व्यंजन, रत्न जड़ित सजावट, कढ़ाई वाले वस्त्र,

शानदार दावतें - सभी यहाँ पाए जाते हैं। देखें कि कैसे हर कोई अपने कर्तव्यों पर पूरा ध्यान देता है, सिवाय खाली दिमाग वाले लोगों के जैसे

खुद को। कोई भी अपनी सीमा का एक इंच भी उल्लंघन नहीं करता। सबसे बड़ा
सभी पुरुषों में से एक विनम्र और आज्ञाकारी सेवा में लगा हुआ है,

---

[77] रूमी ने अपनी मथनावी में गर्भ में भ्रूण की कहानी बताई है। क्या होगा अगर कोई गर्भ में भ्रूण से कहे, "तुम्हारी काली दुनिया के बाहर कोई चमत्कारी ढंग से व्यवस्थित ब्रह्मांड नहीं है; स्वादिष्ट भोजन से भरी एक विशाल पृथ्वी; सुगंधित पहाड़, महासागर और मैदान

फसलों से भरे हुए बाग-बगीचे और खेत; आपकी पहुंच से परे एक चमकीला आकाश, जिसमें सूर्य, चांद की किरणें और अनगिनत तारे हैं; और दक्षिण, उत्तर और पश्चिम से हवाएं आ रही हैं, और बगीचे मीठे फूलों से भरे हुए हैं जैसे किसी विवाह भोज में भोज हो।

इस दुनिया के अजूबे वर्णन से परे हैं। तुम एक अंधेरी जेल में रहकर क्या कर रहे हो, उस संकरी नली से खून पी रहे हो?" लेकिन गर्भ-जगत ही एक भ्रूण को सब कुछ पता है। और वह विशेष रूप से प्रभावित नहीं होगा। ऐसी आश्चर्यजनक कहानियों से, खारिज करते हुए कहते हुए: "तुम पागल हो। यह सब एक भ्रामक कल्पना है।"

एक दिन आप पीछे मुड़कर देखेंगे और खुद पर हंसेंगे। आप कहेंगे, "मुझे यकीन नहीं होता कि मैं इतना सोया हुआ था! मैं सच कैसे भूल गया?
उस दुख और बीमारी पर यकीन करना कितना हास्यास्पद है।
बुरे सपनों के अलावा और कुछ भी नहीं है।"

भय और भय के भाव के साथ। इस राज्य के शासक के पास, तब, महान उदारता और सर्वव्यापी करुणा होनी चाहिए, साथ ही, साथ ही, महान गरिमा, उच्च विस्मय और सम्मान भी होना चाहिए। अब उदारता के लिए आवश्यकता है

उदारता; करुणा परोपकार से अलग नहीं हो सकती; और महानता और सम्मान यह अनिवार्य बनाते हैं कि अशिष्ट लोगों को दंडित किया जाए। लेकिन इस क्षेत्र में उस उदारता और महानता की आवश्यकता का एक हजारवां हिस्सा भी देखने को नहीं मिलता। उत्पीड़क अपनी शक्ति बनाए रखता है, और उत्पीड़ित, अपना अपमान, क्योंकि वे दोनों इस क्षेत्र से प्रस्थान करते हैं और पलायन करते हैं। फिर, उनके मामले उसी सर्वोच्च न्यायाधिकरण के पास छोड़ दिए जाते हैं जिसके बारे में हम बात करते हैं।

तीसरा पहलू: देखो, किस उच्च बुद्धि और व्यवस्था के साथ मामलों का प्रबन्ध किया जाता है, और किस सच्चे न्याय और संतुलन के साथ लेन-देन किया जाता है!
अब एक बुद्धिमान राजनीति की मांग है कि जो लोग राज्य के संरक्षण में शरण लेते हैं, उन्हें अनुग्रह प्राप्त होना चाहिए, और न्याय की मांग है कि प्रजा के अधिकारों को संरक्षित किया जाए, ताकि राज्य की महिमा को नुकसान न पहुंचे। लेकिन यहाँ इस देश में, ऐसी बुद्धि और न्याय की आवश्यकताओं का एक हजारवाँ हिस्सा भी पूरा नहीं किया जाता है; उदाहरण के लिए, आप जैसे खाली दिमाग वाले लोग आमतौर पर इस राज्य को बिना दण्ड के छोड़ देते हैं। इसलिए हम फिर से कहते हैं, मामलों को सर्वोच्च न्यायाधिकरण के विचार के लिए स्थगित कर दिया जाता है।

चौथा पहलू: यहाँ प्रदर्शित इन असंख्य और अद्वितीय रत्नों को देखें, भोज की तरह सजाए गए इन अद्वितीय व्यंजनों को! वे दर्शाते हैं कि इन देशों के शासक के पास असीम उदारता और अक्षय खजाना है। अब ऐसी उदारता और ऐसा खजाना एक ऐसे उदार प्रदर्शन के योग्य और अपेक्षित है जो शाश्वत होना चाहिए और जिसमें सभी संभावित इच्छाएँ शामिल हों। वे आगे यह भी चाहते हैं कि जो लोग उस प्रदर्शन में भाग लेने के लिए अतिथि के रूप में आते हैं, वे अनंत काल तक वहाँ रहें और मृत्यु और वियोग का दर्द न झेलें। क्योंकि जिस तरह दर्द का अंत सुखद होता है, उसी तरह आनंद का अंत भी दर्दनाक होता है! इन प्रदर्शनों और उनसे संबंधित घोषणाओं को देखें! और इन उद्घोषकों को चमत्कार करने वाले सम्राट की बेहतरीन और नाजुक कलाओं की घोषणा करते हुए और उनकी शक्ति का प्रदर्शन करते हुए सुनें

पूर्णता! वे उसकी अद्वितीय और अदृश्य सुंदरता की घोषणा कर रहे हैं, और उसकी छिपी हुई सुंदरता की सूक्ष्म अभिव्यक्तियों की बात कर रहे हैं; तो, उसके पास एक महान और आश्चर्यजनक अदृश्य सौंदर्य और पूर्णता होनी चाहिए।
इस दोषरहित छिपी हुई पूर्णता के लिए ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो इसकी सराहना और प्रशंसा करे, जो इसे निहारते हुए कहे, माशा अल्लाह!, इस प्रकार इसे प्रदर्शित करे और ज्ञात करे।

जहाँ तक छिपी हुई और बेजोड़ खूबसूरती की बात है, तो उसे भी देखने और दिखने की ज़रूरत होती है, या यूँ कहें कि खुद को दो तरह से देखना होता है। पहला तरीका है अलग-अलग दर्पणों में खुद को देखना और दूसरा है मंत्रमुग्ध दर्शकों और चकित प्रशंसकों के चिंतन के ज़रिए खुद को देखना। छिपी हुई खूबसूरती

सुन्दरता चाहती है, फिर, देखना और देखा जाना, स्वयं पर चिरकाल तक चिंतन करना और
बिना रुके चिंतन किया जाता है। यह उन लोगों के लिए भी स्थायी अस्तित्व की इच्छा रखता है
जो इसे विस्मय और आनंद से देखते हैं। शाश्वत सौंदर्य कभी भी क्षणिक प्रशंसक से संतुष्ट नहीं हो सकता; इसके अलावा, एक प्रशंसक जो वापसी की उम्मीद के बिना नष्ट होने के लिए नियत है, जब भी वह अपनी मृत्यु की कल्पना करेगा, उसका प्रेम शत्रुता में बदल जाएगा, और उसकी प्रशंसा और सम्मान अवमानना में बदल जाएगा। अज्ञात और अपरिचित से घृणा करना मनुष्य के स्वभाव में है। अब हर कोई इस क्षेत्र की धर्मशाला को बहुत जल्दी छोड़ देता है और गायब हो जाता है, केवल एक पल से अधिक समय के लिए पूर्णता और सुंदरता की एक रोशनी या छाया को देखे बिना,

इसलिए, यह आवश्यक है कि वह एक शाश्वत क्षेत्र की ओर जाए जहाँ वह दिव्य सौंदर्य और पूर्णता का चिंतन करेगा।

पांचवां पहलू: देखो, इन सब बातों से यह स्पष्ट है कि वह अद्वितीय सत्ता
वह सबसे महान दयावान है। क्योंकि वह दुर्भाग्य के हर शिकार को तुरंत सहायता प्रदान करता है, हर सवाल और याचिका का जवाब देता है; और अपने सबसे छोटे से छोटे व्यक्ति की भी दयापूर्वक सबसे छोटी ज़रूरत को पूरा करता है। उदाहरण के लिए, अगर किसी चरवाहे की भेड़ के पैर में चोट लग जाए, तो वह या तो कुछ दवा देता है या किसी पशु चिकित्सक को भेजता है।

आओ, चलें; उस द्वीप पर एक बड़ी सभा है। सभी कुलीन लोग
देश के सभी लोग वहाँ इकट्ठे हुए हैं। देखो, एक बहुत ही महान सेनापति, उच्च अलंकरण धारण किए हुए, एक प्रवचन दे रहा है, और कुछ चीजों का अनुरोध कर रहा है
उस दयालु राजा से। सभी उपस्थित लोग कहते हैं: "हाँ, हम भी यही चाहते हैं," और उसके शब्दों की पुष्टि करते हैं और सहमति देते हैं। अब उस सेनापति के शब्द सुनिए जो अपने राजा का कृपापात्र है:

"हे राजा, जो हमें अपनी उदारता से पालता है! आपने जो उदाहरण और छायाएँ हमें दिखाई हैं, उनका स्रोत और उद्गम हमें दिखाइए! हमें अपने शासन के आसन के निकट ले जाइए; हमें इन रेगिस्तानों में नष्ट न होने दीजिए! हमें अपने सान्निध्य में ले जाइए और हम पर दया कीजिए! आपने हमें यहाँ जो स्वादिष्ट उदारता का स्वाद चखाया है, उसका हमें वहाँ भी खिलाइए! हमें हताशा और निराशा से मत सताइए।

निर्वासन! अपनी तड़पती, आभारी और आज्ञाकारी प्रजा को उनके हाल पर मत छोड़ो; उन्हें नष्ट मत करो!" क्या तुम उसे इस तरह विनती करते नहीं सुनते? क्या यह संभव है कि इतना दयालु और शक्तिशाली राजा अपने सबसे प्रिय और महान सेनापति के बेहतरीन और उच्चतम उद्देश्य को पूरी तरह से पूरा न करे?

इसके अलावा, उस कमांडर का उद्देश्य सभी पुरुषों का उद्देश्य है, और इसकी पूर्ति के लिए सेनापति की प्रसन्नता, करुणा और न्याय की आवश्यकता होती है।
राजा के लिए यह आसान बात है, कठिनाई नहीं, जिससे उसे परेशानी कम होती है।
संसार के आश्रम में मौजूद आनंद के क्षणिक स्थानों की तुलना में यह अधिक कठिन है। इन गवाही के स्थानों पर जो केवल पाँच या छह दिनों तक चलेंगे, तथा इस राज्य की नींव पर इतना प्रयास करने के बाद,

अपनी शक्ति के उदाहरण प्रदर्शित करने के लिए, वह निस्संदेह अपने शासन की सीट पर इस तरह से सच्चे खजाने, पूर्णता और कौशल का प्रदर्शन करेगा, और खुले तौर पर
हमारे सामने ऐसे दृश्य हैं कि हमारी बुद्धि चकित हो जाएगी।

इस परीक्षण क्षेत्र में भेजे गए लोगों को उनके हाल पर नहीं छोड़ा जाएगा; उनके लिए आनंद के महल या कालकोठरी प्रतीक्षा कर रही होगी।
छठा पहलू: अब आओ, देखो! ये सभी भव्य रेलगाड़ियाँ, विमान, मशीनें, गोदाम और प्रदर्शनियाँ दिखाती हैं कि एक राजसी राजा मौजूद है और पर्दे के पीछे शासन करता है।78 ऐसे शासक को अपने योग्य प्रजा की आवश्यकता होती है। लेकिन उसकी प्रजा एक ऐसे गेस्टहाउस में इकट्ठी होती है जो रोज़ भरता और खाली होता रहता है।

इसके अलावा, अब उनके विषय युद्धाभ्यास के लिए एक परीक्षण मैदान पर एकत्र होते हैं, एक ऐसा मैदान जो हर घंटे बदला जाता है। फिर से, उनके विषय एक प्रदर्शनी हॉल में रहते हैं
कुछ मिनटों के लिए उनकी परोपकारिता के उदाहरण, उनकी चमत्कारी कला के अमूल्य उत्पाद देखने के लिए। लेकिन प्रदर्शनी हर पल बदलती रहती है। जो कुछ भी बचता है
जो आता है, वह वापस नहीं आता और जो आता है, वह चला जाता है। यह सब साबित करता है कि स्थायी हैं

---

[78] युद्ध के नियमों के अनुसार, जब सेना को युद्धाभ्यास के दौरान "अपने हथियार उठाओ और संगीनों को ठीक करो" कहा जाता है, तो यह ओक के जंगल जैसा दिखता है। जब किसी गैरीसन के सैनिकों को उत्सव के दिन अपनी परेड वर्दी और पदक पहनने का आदेश दिया जाता है, तो सेना हर रंग के फूलों से भरे एक अलंकृत बगीचे जैसी दिखती है। पृथ्वी की सभी प्रजातियों के साथ ऐसा ही है

बेरहम पौधे और पेड़, जो जिन्न, मानवता और जानवरों की तरह, अनन्त राजा की असीम रूप से विविध सेनाओं में से केवल एक हैं, जब उन्हें आदेश मिलता है बनो! और यह जीवन के रखरखाव के संघर्ष में है, और आदेश है “अपने बचाव के लिए अपने हथियार और उपकरण उठाओ और अपने जीवन को बनाए रखो!” उस समय, वे सभी पौधे और पेड़ अपनी संगीनों को ठीक करते हैं, काँटों वाले पेड़ों और पौधों के रूप में, और परेड या युद्ध के मैदान में खड़ी एक शानदार सेना की तरह दिखते हैं।

प्रत्येक वसंत का दिन और सप्ताह प्रत्येक वनस्पति प्रजाति के लिए उत्सव के दिन की तरह होता है। प्रत्येक प्रजाति अपने आप को शाश्वत राजा की निगरानी और साक्षी दृष्टि के सामने प्रस्तुत करती है, रत्नजड़ित
उन्होंने जो अलंकरण उन्हें प्रदान किए हैं, मानो वे परेड कर रहे हों और अपने द्वारा दिए गए बहुमूल्य उपहारों को प्रदर्शित कर रहे हों। ऐसा लगता है मानो वे उनकी आज्ञा का पालन कर रहे हों कि "दिव्य कलात्मकता द्वारा निर्मित वस्त्र पहनें और उनकी रचनात्मकता द्वारा बनाए गए अलंकरण (फूल और फल) पहनें।" ऐसे समय में, पृथ्वी का चेहरा एक शानदार उत्सव के दिन एक शानदार परेड में एक गैरीसन का प्रतिनिधित्व करता है जो सैनिकों की वर्दी और रत्नजड़ित सजावट से चमक रहा है। ऐसा

उद्देश्यपूर्ण और सुव्यवस्थित उपकरण और सजावट उन सभी को, जो अंधे नहीं हैं, यह प्रदर्शित करती है कि ये केवल एक राजा के आदेश के कारण घटित होते हैं जिसके पास असीम शक्ति और असीमित अधिकार हैं।
बुद्धि।

महल और स्थायी निवास, साथ ही उद्यान और खजाने जो नमूनों के शुद्ध और उत्कृष्ट मूल से भरे हुए हैं, जो हम यहाँ देखते हैं उससे परे हैं। यही कारण है कि हम यहाँ खुद को परिश्रम करते हैं। हम यहाँ काम करते हैं, और वह हमें वहाँ हमारी क्षमता के अनुकूल खुशी के रूप और डिग्री के साथ पुरस्कृत करता है।

सातवाँ पहलू: आओ, थोड़ा चलें और देखें कि इन सभ्य लोगों में क्या है। देखिए, हर जगह, हर कोने में,

फोटोग्राफर बैठे हैं और तस्वीरें ले रहे हैं। देखिए, हर जगह लेखक बैठे हैं और चीज़ें लिख रहे हैं। सब कुछ रिकॉर्ड किया जा रहा है। वे
सबसे कम महत्वपूर्ण कार्य, सबसे सामान्य घटना को पंजीकृत किया जा रहा है।
अब ऊंचे पहाड़ की ओर देखिए; वहां आप एक श्रेष्ठ फोटोग्राफर को देखेंगे जो राजा की सेवा में समर्पित होकर बैठा है;79 वह उन सभी चीजों की तस्वीरें ले रहा है
क्षेत्र में जो कुछ भी होता है, उसे दर्ज करें। राजा ने यह आदेश जारी किया होगा; "राज्य में किए गए सभी लेन-देन और किए गए कार्यों का रिकॉर्ड रखें।" दूसरे शब्दों में,
वह महान व्यक्ति सभी घटनाओं को पंजीकृत और फोटोग्राफिक रूप से रिकॉर्ड करवा रहा है। वह जो सटीक रिकॉर्ड रख रहा है, वह निस्संदेह एक दिन अपने विषयों को जवाब देने के लिए होगा।

अब क्या यह संभव है कि एक सर्वज्ञ और सर्वरक्षक प्राणी, जो अपने सबसे निचले दर्जे के लोगों के सबसे तुच्छ कामों की भी उपेक्षा नहीं करता, अपने सबसे महान लोगों के सबसे महत्वपूर्ण कामों को दर्ज न करे, उनसे जवाब न मांगे, उन्हें पुरस्कृत न करे और न ही उन्हें दण्डित करे? आखिरकार, उसके सबसे श्रेष्ठ लोग ही उसके गौरव के विरुद्ध, उसके गौरव के विपरीत और उसकी करुणा के लिए अस्वीकार्य काम करते हैं और वे काम इस दुनिया में दण्डित नहीं होते। इसलिए, यह आवश्यक है कि उनका निर्णय सर्वोच्च न्यायालय को स्थगित कर दिया जाए।

आठवाँ पहलू: आओ, मैं तुम्हें उस सम्राट द्वारा जारी किए गए आदेश पढ़कर सुनाता हूँ। देखो, वह बार-बार निम्नलिखित वादे और भयानक धमकियाँ देता है: "मैं तुम्हें तुम्हारे वर्तमान निवास से ले जाऊँगा और अपने शासन की गद्दी पर ले जाऊँगा।

वहाँ मैं आज्ञाकारी को सुख प्रदान करूँगा और दुष्टों को कैद करूँगा।

---

[79] यहाँ हम यह बताना चाहेंगे कि "सेवा के लिए समर्पित सर्वोच्च फोटोग्राफर" की छवि
राजा" संरक्षित पट्टिका का संकेत है। संरक्षित पट्टिका की वास्तविकता और अस्तित्व को छब्बीसवें श्लोक में इस प्रकार सिद्ध किया गया है: एक छोटा सा पोर्टफोलियो एक महान बहीखाते के अस्तित्व का सुझाव देता है; एक छोटा सा दस्तावेज़ एक महान रजिस्टर के अस्तित्व की ओर इशारा करता है; और छोटी बूंदें एक महान जल टैंक के अस्तित्व की ओर इशारा करती हैं। इसी तरह मनुष्यों की धारण क्षमताएँ, पेड़ों के फल, फलों के बीज और गिरी, प्रत्येक एक छोटे पोर्टफोलियो की तरह हैं, एक संरक्षित

लघु पट्टिका या उस कलम से निकली एक बूंद जो महान संरक्षित पट्टिका को अंकित करती है - वे एक सर्वोच्च धारण क्षमता, एक महान रजिस्टर, एक उत्कृष्ट संरक्षित पट्टिका के अस्तित्व की ओर इशारा करते हैं, संकेत देते हैं और साबित करते हैं। वास्तव में, वे इसे प्रत्यक्ष रूप से संवेदनशील बुद्धि के सामने प्रदर्शित करते हैं।

अवज्ञाकारी। उस अस्थायी निवास को नष्ट करके, मैं एक अलग राज्य स्थापित करूँगा जिसमें शाश्वत महल और कालकोठरी होंगी।

वह अपने द्वारा किए गए वादों को आसानी से पूरा कर सकता है, जो उसकी प्रजा के लिए इतने महत्वपूर्ण हैं। इसके अलावा, यह उसके गर्व और उसकी शक्ति के साथ असंगत है कि वह अपना वादा तोड़ दे। तो देखो, हे भ्रमित व्यक्ति! तुम अपनी झूठी कल्पना, अपनी व्याकुल बुद्धि, अपनी धोखेबाज आत्मा के दावों को स्वीकार करते हो, लेकिन एक ऐसे व्यक्ति के शब्दों को नकारते हो जिसे किसी भी तरह से अपना वादा तोड़ने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता है, जिसका उच्च कद ऐसी किसी भी विश्वासघात को स्वीकार नहीं करता है, और जिसकी सच्चाई के सभी दृश्यमान कार्य गवाही देते हैं।

निश्चित रूप से तुम एक बड़ी सज़ा के हकदार हो। तुम एक यात्री की तरह हो जो सूरज की रोशनी के लिए अपनी आँखें बंद कर लेता है और इसके बजाय अपनी कल्पना को देखता है। उसकी कल्पना अपने दिमाग की रोशनी से अपने भयानक अंधेरे रास्ते को रोशन करना चाहती है, हालाँकि यह एक चमकने वाले कीड़े से ज़्यादा कुछ नहीं है। एक बार जब राजा कोई वादा करता है, तो वह हर हाल में उसे पूरा करेगा। इसे पूरा करना उसके लिए सबसे आसान है, और इसके अलावा हमारे और सभी चीज़ों के लिए, साथ ही उसके और उसके राज्य के लिए भी सबसे ज़रूरी है।

इसलिए, यहां एक सर्वोच्च न्यायालय है और एक महान खुशी है।

नौवां पहलू: अब आइए! इन कार्यालयों और समूहों के प्रमुखों को देखें।80 प्रत्येक के पास राजा से व्यक्तिगत रूप से बात करने के लिए एक निजी टेलीफोन है। कभी-कभी वे सीधे उसके पास भी जाते हैं। देखें कि वे क्या कहते हैं और सर्वसम्मति से रिपोर्ट करते हैं कि राजा ने पुरस्कार और दंड के लिए सबसे शानदार और भयानक स्थान तैयार किया है। उनके वादे जोरदार हैं और उनकी धमकियाँ सबसे ज़्यादा हैं

कठोर। उनका गौरव और गरिमा ऐसी है कि वे किसी भी तरह से वादा तोड़ने में निहित नीचता तक नहीं गिरेंगे। इस रिपोर्ट के वाहक, जो इतने अधिक हैं कि उन्हें सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है, सर्वसम्मति की मजबूत एकमतता के साथ आगे रिपोर्ट करते हैं कि "उच्च की सीट और मुख्यालय

राजशाही, जिसके कुछ निशान यहाँ दिखाई देते हैं, यहाँ से बहुत दूर एक दूसरे क्षेत्र में है। इस परीक्षण-भूमि में मौजूद इमारतें अस्थायी हैं, और बाद में उन्हें शाश्वत महलों में बदल दिया जाएगा। ये स्थान

परिवर्तन। इस शानदार और अमर राजतंत्र के लिए, जिसका वैभव

इसके कार्यों से स्पष्ट है कि यह किसी भी तरह से इतने क्षणिक, अस्थायी, अस्थिर, महत्वहीन, परिवर्तनशील, दोषपूर्ण और अपूर्ण मामलों पर आधारित नहीं हो सकता है। यह इसके बजाय इसके योग्य, शाश्वत, स्थिर, स्थायी और गौरवशाली मामलों पर आधारित है। " फिर, एक और क्षेत्र है, और निश्चित रूप से हम इसकी ओर बढ़ेंगे।

---

[80] उदाहरण के लिए, कार्यालय प्रमुखों से हमारा तात्पर्य पैगंबरों और संतों से है। जहाँ तक टेलीफोन का सवाल है, यह ईश्वर के साथ एक संपर्क और संबंध है जो हृदय से निकलता है और यह ईश्वर के प्रति हमारी भावनाओं का दर्पण है।
रहस्योद्घाटन और प्रेरणा का पात्र। हृदय उस टेलीफोन के इयरपीस की तरह है।

दसवाँ पहलू: आओ, आज वसंत विषुव है। 81 कुछ परिवर्तन होंगे, और अद्भुत चीजें घटित होंगी। इस सुंदर वसंत के दिन, चलो सुंदर फूलों से सजे हरे मैदान पर टहलने चलते हैं। देखो, दूसरे लोग भी इसकी ओर आ रहे हैं। ज़रूर कोई जादू काम कर रहा है, क्योंकि इमारतें जो केवल खंडहर थीं, अचानक यहाँ फिर से उग आई हैं, और यह एक बार खाली मैदान एक आबादी वाले शहर की तरह बन गया है। देखो, हर घंटे यह एक अलग दृश्य दिखाता है, बिल्कुल सिनेमा स्क्रीन की तरह, और एक अलग आकार लेता है। लेकिन यह भी ध्यान दें, कि इन जटिल, तेज़ी से बदलते और विविध दृश्यों के बीच सही व्यवस्था मौजूद है, ताकि सभी चीजें अपने उचित स्थानों पर रखी जा सकें।

सिनेमा के पर्दे पर दिखाए जाने वाले काल्पनिक दृश्य इतने सुव्यवस्थित नहीं हो सकते, और लाखों कुशल जादूगर भी इस कला में अक्षम होंगे। तो फिर इस राजा ने, जिसे हम देख नहीं सकते, इससे भी बड़े चमत्कार किए होंगे।

हे मूर्ख! तू पूछता है: "यह विशाल राज्य कैसे नष्ट हो सकता है और कैसे नष्ट हो सकता है?
कहीं और पुनः स्थापित किया जाए?"

आप देखते हैं कि हर घंटे अनेक परिवर्तन और क्रांतियाँ होती हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरण जिसे आपका मन स्वीकार नहीं करेगा। इस एकत्रीकरण और बिखराव से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इन दृश्यमान और तीव्र जुड़ने और अलग होने, इन संयोजनों और विलीन होने के भीतर एक निश्चित उद्देश्य छिपा हुआ है। दस साल का प्रयास एक के लिए समर्पित नहीं होगा

एक साथ मिलकर एक घंटे से ज़्यादा समय तक नहीं टिकना चाहिए। इसलिए हम जो परिस्थितियाँ देख रहे हैं, वे अपने आप में अंत नहीं हो सकतीं; वे एक तरह की हैं
खुद से परे किसी चीज़ का दृष्टांत, उसकी नकल। वह महान व्यक्ति उन्हें चमत्कारी ढंग से लाता है, ताकि वे आकार लें और फिर विलीन हो जाएं, और परिणाम संरक्षित और दर्ज किया जाता है, ठीक उसी तरह जैसे युद्ध के मैदान पर युद्धाभ्यास के हर पहलू को लिखा और दर्ज किया जाता है। इसका मतलब है कि किसी महान सभा और बैठक में कार्यवाही

यहाँ जो कुछ घटित होगा, उसके आधार पर होगा। इसके अलावा, यहाँ जो कुछ घटित होगा, उसके परिणाम स्थायी रूप से किसी सर्वोच्च प्रदर्शनी में प्रदर्शित किए जाएँगे। सभी क्षणिक
और यहाँ जो परिवर्तनशील घटनाएँ हम देखते हैं, वे शाश्वत और अपरिवर्तनीय रूप का फल देंगी।

---

[81] वसंत विषुव वसंत की शुरुआत के बराबर है। फूलों से ढके हरे मैदान के लिए, यह वसंत ऋतु में पृथ्वी का चेहरा है। बदलते दृश्य और तमाशे वसंत प्राणियों के विभिन्न समूहों, गर्मियों के निर्माण के वर्गों और मनुष्यों और जानवरों के लिए पोषण का एक संकेत हैं, जिन्हें सर्वशक्तिमान और गौरवशाली निर्माता, सर्व-बुद्धिमान और सुंदर निर्माता, वसंत की शुरुआत से गर्मियों के अंत तक लाता है।

क्रमबद्ध क्रम में, अत्यंत करुणा के साथ नवीकरण करता है, तथा निर्बाध रूप से भेजता है।

इस संसार में हम जो भी विविधताएं देखते हैं, वे सब एक परम सुख, एक महान न्यायाधिकरण, तथा उन उच्च उद्देश्यों के लिए हैं, जो अभी तक हमें ज्ञात नहीं हैं।

ग्यारहवाँ पहलू: आओ, हे जिद्दी दोस्त! चलो हम पूर्व या पश्चिम, यानी अतीत या भविष्य की यात्रा करने वाले विमान या ट्रेन पर सवार हों। चलो देखते हैं कि उस प्राणी ने अन्य स्थानों पर क्या चमत्कार किए हैं। देखो, हर तरफ चमत्कार हैं जैसे कि आवास, खुले स्थान और प्रदर्शनियाँ जो हम देखते हैं। लेकिन वे सभी कला और रूप के संबंध में भिन्न हैं। हालाँकि, ध्यान दें कि स्पष्ट ज्ञान का संकेत देने वाली कौन सी व्यवस्था, स्पष्ट करुणा के क्या संकेत, उच्च न्याय के क्या संकेत और व्यापक दया के क्या फल, इन क्षणभंगुर आवासों, इन अस्थायी खुले स्थानों, इन क्षणभंगुर प्रदर्शनों में देखे जा सकते हैं। कोई भी व्यक्ति जो पूरी तरह से अंतर्दृष्टि से रहित नहीं है, वह निश्चित रूप से समझ जाएगा कि कोई भी ज्ञान उससे अधिक परिपूर्ण नहीं हो सकता, कोई भी प्रावधान उससे अधिक सुंदर नहीं हो सकता, कोई भी करुणा उससे अधिक व्यापक नहीं हो सकती और कोई भी न्याय उससे अधिक गौरवशाली नहीं हो सकता।

यदि, तर्क के लिए, जैसा कि आप कल्पना करते हैं, उसके राज्य के क्षेत्र में कोई स्थायी निवास, ऊंचे स्थान, निश्चित पद, स्थायी निवास या निवासी और संतुष्ट आबादी मौजूद नहीं थी; और यदि उसकी बुद्धि, करुणा, दया और न्याय के सत्यों के पास खुद को पूरी तरह से प्रकट करने का कोई क्षेत्र नहीं था (क्योंकि यह अस्थायी राज्य उनके पूर्ण प्रकटीकरण के लिए कोई स्थान नहीं है) - तो हम उस बुद्धि को अस्वीकार करने के लिए बाध्य होंगे जिसे हम देखते हैं,

हम जो करुणा देखते हैं, उसे नकारना, हमारी आँखों के सामने जो दया है, उसे नकारना, और न्याय को नकारना जिसके संकेत स्पष्ट हैं। यह वैसा ही होगा जैसा कि
सूर्य को नकारना उतना ही मूर्खतापूर्ण है, जितना कि सूर्य का प्रकाश, जिसका प्रकाश हम दोपहर में स्पष्ट रूप से देखते हैं। हमें उस व्यक्ति को भी मानना होगा, जिससे ये सभी बुद्धिमानी भरे उपाय, ये सभी उदार कार्य, ये सभी दयालु उपहार निकलते हैं, एक नीच जुआरी या विश्वासघाती तानाशाह (भगवान न करे!) के रूप में। यह सत्य को उल्टा करना होगा। और सत्य को उसके विपरीत में बदलना असंभव है, सभी तर्कसंगत प्राणियों की सर्वसम्मत गवाही के अनुसार, केवल उन मूर्ख सोफिस्टों को छोड़कर जो हर चीज को नकारते हैं।

तो फिर, वर्तमान से अलग एक क्षेत्र है। इसमें एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण है, न्याय का एक उच्च स्थान है, पुरस्कार का एक उच्च स्थान है, जहाँ यह सारी करुणा, बुद्धि, दया और न्याय पूरी तरह से प्रकट होंगे।

बारहवाँ पहलू: चलो, अब लौट चलें। सरदारों से बात करेंगे
और इन विभिन्न समूहों के अधिकारियों, और उनके उपकरणों को देखकर

पता लगाएँ कि क्या वह उपकरण उन्हें उस क्षेत्र में थोड़े समय तक जीवित रहने के लिए ही दिया गया है, या फिर किसी दूसरे क्षेत्र में सुखी दीर्घायु जीवन प्राप्त करने के लिए दिया गया है। आइए देखें। हम हर किसी को और उसके उपकरणों को नहीं देख सकते। लेकिन उदाहरण के तौर पर, आइए इस अधिकारी के पहचान पत्र और रजिस्टर को देखें। उसके कार्ड पर उसका पद, वेतन, कर्तव्य, आपूर्ति और निर्देश दर्ज हैं। देखिए, यह पद उसे कुछ दिनों के लिए नहीं दिया गया है; यह लंबे समय के लिए दिया जा सकता है। उसके कार्ड पर लिखा है: "आपको अमुक दिन राजकोष से इतना वेतन मिलेगा।" लेकिन जिस तारीख की बात हो रही है, वह आने में बहुत समय लगेगा।

इस राज्य के खाली हो जाने के बाद आओ। इसी तरह, उसके कार्ड पर उल्लिखित कर्तव्य इस अस्थायी राज्य के लिए नहीं दिया गया है, बल्कि राजा की निकटता में एक स्थायी सुख अर्जित करने के लिए दिया गया है। फिर, उसे दी गई आपूर्ति केवल कुछ दिनों की अवधि के लिए इस धर्मशाला में रहने के लिए नहीं हो सकती है; वे केवल एक लंबे और खुशहाल जीवन के लिए हो सकती हैं। निर्देश यह स्पष्ट रूप से बताते हैं कि उसे एक अलग स्थान के लिए नियत किया गया है, कि वह दूसरे राज्य के लिए काम कर रहा है।

अब इन रजिस्टरों को देखिए। इनमें हथियारों और उपकरणों के इस्तेमाल और निपटान के निर्देश हैं। अगर इसके अलावा कोई और क्षेत्र न होता, एक महान और शाश्वत, तो वह रजिस्टर जिसमें स्पष्ट निर्देश हैं और वह पहचान पत्र जिसमें स्पष्ट जानकारी है, दोनों ही बिल्कुल निरर्थक होते।

इसके अतिरिक्त, वह सम्मानित अधिकारी, वह महान सेनापति, वह सम्मानित प्रमुख, सभी मनुष्यों की तुलना में निम्न स्तर पर गिर जाएगा; वह सभी से अधिक दुखी, भाग्यहीन, अपमानित, पीड़ित, दरिद्र और कमजोर होगा।

यही सिद्धांत हर चीज़ पर लागू करें। आप जो कुछ भी देखते हैं वह इस बात की गवाही देता है कि इस क्षणभंगुर दुनिया के बाद एक और शाश्वत दुनिया मौजूद है।

हे मित्र! यह क्षणभंगुर संसार एक मैदान के समान है। यह शिक्षा का स्थान है,
बाजार। इसमें कोई संदेह नहीं कि सर्वोच्च न्यायाधिकरण और परम सुख इसके बाद आएगा। यदि आप इसे अस्वीकार करते हैं, तो आपको सभी अधिकारियों के पहचान पत्र, उनके उपकरण और उनके आदेशों को अस्वीकार करने के लिए भी बाध्य होना पड़ेगा; वास्तव में, आप

देश में मौजूद सभी व्यवस्था, उसमें सरकार के अस्तित्व और सरकार द्वारा उठाए जाने वाले सभी कदमों को भी नकारना होगा। तब आप मनुष्य कहलाने या सचेतन कहलाने के लायक नहीं रहेंगे। आप सोफिस्टों से भी ज्यादा मूर्ख होंगे।

सावधान, यह कल्पना न करें कि एक से दूसरे में सृष्टि का स्थानांतरण होने के प्रमाण
एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाने का अधिकार इन बारह तक ही सीमित है। ऐसे संकेत हैं

और गिनती और गणना से परे प्रमाण, सभी यह दिखाते हैं कि यह अस्थायी, परिवर्तनशील राज्य एक स्थायी और अपरिवर्तनीय क्षेत्र में बदल जाएगा। इसके अलावा असंख्य संकेत और प्रमाण हैं कि मनुष्यों को इस अस्थायी धर्मशाला से निकालकर सारी सृष्टि के शासन की शाश्वत सीट पर भेजा जाएगा।

मैं विशेष रूप से एक प्रमाण प्रस्तुत करूंगा जो सभी बारह पहलुओं से भी अधिक सशक्त है।

अब आओ, देखो, दूर से दिखाई दे रही महान सभा के बीच में
वही महान सेनापति जिसे हमने पहले द्वीप पर देखा था, अनेक अलंकरणों से सुसज्जित, एक घोषणा कर रहा है। चलो, हम चलें और सुनें।
देखो, वह तेजस्वी और महान सेनापति एक सर्वोच्च आदेश दे रहा है, जो बहुत ही सुन्दरता से लिखा हुआ है। वह कहता है:

"अपने आप को तैयार करो; तुम दूसरे और स्थायी राज्य में जाओगे, एक ऐसा राज्य जिसकी तुलना में यह एक कालकोठरी जैसा प्रतीत होगा। तुम हमारे राजा के शासन की सीट पर जाओगे, और वहाँ उसकी करुणा और उसकी उदारता प्राप्त करोगे,
यदि तुम इस आदेश का ध्यानपूर्वक पालन करोगे और इसका पालन करोगे। लेकिन यदि तुम विद्रोह करोगे और इसका उल्लंघन करोगे, तो तुम्हें भयानक कालकोठरी में डाल दिया जाएगा।" ऐसा संदेश वह देता है। यदि तुम आदेश को देखो, तो तुम पाओगे कि इस पर ऐसी चमत्कारी मुहर लगी है कि इसकी किसी भी तरह से नकल नहीं की जा सकती। तुम जैसे मूर्खों को छोड़कर हर कोई निश्चित रूप से जानता है कि यह आदेश राजा की ओर से है। इसके अलावा, महान सेनापति के पास ऐसी चमकदार सजावट है कि तुम्हारे जैसे अंधे लोगों को छोड़कर हर कोई अच्छी तरह से समझता है कि वह राजा के आदेशों का सच्चा संवाहक है।

क्या यह संभव है कि एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरण की शिक्षा, जिसे उस महान सेनापति ने अपने सर्वोच्च आदेश में चुनौती देते हुए व्यक्त किया है, पर आपत्ति की जा सकती है? नहीं, यह संभव नहीं है, जब तक कि हम जो कुछ भी हमने देखा है, उसे नकार न दें।

अब हे मित्र, बोलने की बारी तुम्हारी है। जो कहना है कहो।

"मुझे क्या कहना चाहिए? इस सबका खंडन करने के लिए क्या कहा जा सकता है? दोपहर के समय सूरज के खिलाफ कौन बोल सकता है? मैं केवल यही कहता हूँ: भगवान की स्तुति हो। एक लाख धन्यवाद कि मैं कल्पना और व्यर्थ कल्पना के प्रभुत्व से बच गया हूँ, और एक अनन्त कालकोठरी और जेल से मुक्त हो गया हूँ। मैं यह मानने लगा हूँ कि राजा के सान्निध्य में सुख का एक निवास है, जो इस भ्रमित और अस्थायी धर्मशाला से अलग है।"

पुनरुत्थान और परलोक की सच्चाई को इंगित करने वाली हमारी तुलना है
अब पूरा हो गया है। अब ईश्वर की कृपा से हम सबसे महान सत्य की ओर बढ़ेंगे। हम ऊपर चर्चित बारह पहलुओं के अनुरूप बारह परस्पर संबंधित सत्य प्रस्तुत करेंगे, साथ ही एक परिचय भी देंगे।

क्या परमेश्वर सचमुच मरे हुओं को ज़िंदा करने में सक्षम है?

तीसरा मूल बिन्दु

एजेंट के पास शक्ति होती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जिन मामलों की आवश्यकता है,
मृतकों का पुनरुत्थान मौजूद है। साथ ही, जो इसे लाएगा वह अत्यंत शक्तिशाली है। उसकी शक्ति में कोई कमी नहीं है। उसकी शक्ति के संबंध में सबसे बड़ी और सबसे छोटी चीजें समान हैं। उसके लिए वसंत बनाना उतना ही आसान है जितना कि एक फूल बनाना। हाँ, एक बहुत शक्तिशाली

यह संसार अपने सभी सूर्यों, तारों, लोकों, कणों और पदार्थों सहित अनंत भाषाओं के साथ उसकी महानता और शक्ति की गवाही देता है। क्या किसी संदेह या संदेह को यह अधिकार है कि वह शारीरिक पुनरुत्थान को ऐसी शक्ति से दूर समझे?

यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि इस दुनिया में हर युग में महिमावान सर्वशक्तिमान एक नया, यात्रा करने वाला, व्यवस्थित ब्रह्मांड बनाता है। वास्तव में, वह हर दिन एक नया, सुव्यवस्थित संसार बनाता है। वह निरंतर पूर्ण बुद्धि के साथ एक के बाद एक आकाश और पृथ्वी के मुख पर क्षणिक संसार और ब्रह्मांड बनाता और बदलता है। वह समय की डोरी पर सदियों, वर्षों, वास्तव में दिनों की संख्या तक नियमित संसारों को लटकाता है, और उनके माध्यम से

अपनी शक्ति की प्रचंडता को प्रदर्शित करता है। वह अपने सिर पर
वह वसंत के विशाल फूल को देखता है जिसे वह पुनरुत्थान की एक लाख कढ़ाई से सजाता है जैसे कि वह एक ही फूल हो, और इसके माध्यम से अपनी बुद्धि की पूर्णता और अपनी कला की सुंदरता को प्रदर्शित करता है। क्या ऐसे व्यक्ति के बारे में यह कहा जा सकता है, "वह मृतकों के पुनरुत्थान को कैसे ला सकता है, और वह इस दुनिया को परलोक में कैसे बदल सकता है?" आयत,

> तुम्हारी रचना और तुम्हारा पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान है। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। (लुक़मान 31:28)

सर्वशक्तिमान की संपूर्ण शक्ति की घोषणा करता है, कि उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है, कि सबसे छोटी चीज़ की तरह, सबसे बड़ी चीज़ भी उसकी शक्ति के लिए कोई कठिनाई नहीं पेश करती है, और यह कि उसकी शक्ति के लिए असंख्य व्यक्तियों को बनाना उतना ही आसान है जितना कि एक व्यक्ति को बनाना। हमने दसवें वचन के निष्कर्ष में श्लोक के आवश्यक अर्थ को संक्षेप में समझाया है, और नोक्ता (बिंदु) नामक ग्रंथ में और बीसवें पत्र में विस्तार से बताया है।

यहां चर्चा के संबंध में, हम इसके एक भाग को तीन 'विषयों' के रूप में स्पष्ट करेंगे, जो इस प्रकार है:

ईश्वरीय शक्ति आवश्यक है, ऐसे में नपुंसकता इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकती।
साथ ही, यह चीज़ों के आंतरिक आयामों से जुड़ा हुआ है, इसलिए बाधाएँ इसके साथ जुड़ नहीं सकतीं। साथ ही, इसका संबंध नियमों के अनुसार है, इसलिए
विशेष वस्तुएँ सार्वभौमिक के समान हैं, छोटी वस्तुएँ व्यापक वस्तुएँ के समान हैं।
हम इन तीन बातों को सिद्ध करेंगे।
पहला मामला: पूर्व-शाश्वत शक्ति परम शुद्ध और पवित्र दिव्य सार का आवश्यक अंतर्निहित गुण है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह सार के लिए आवश्यक रूप से अंतर्निहित है, इसे किसी भी तरह से इससे अलग नहीं किया जा सकता है। चूंकि ऐसा है, इसलिए वह सार जो शक्ति को आवश्यक बनाता है, वह स्पष्ट रूप से शक्ति के विपरीत नपुंसकता से प्रभावित नहीं हो सकता है। क्योंकि अगर ऐसा होता, तो इसमें विपरीतताओं का संयोजन शामिल होता। चूंकि सार नपुंसकता से प्रभावित नहीं हो सकता, इसलिए यह स्पष्ट रूप से उस शक्ति में हस्तक्षेप नहीं कर सकता जो उस सार का अंतर्निहित गुण है। चूंकि नपुंसकता उस आवश्यक शक्ति में हस्तक्षेप नहीं कर सकती, इसलिए स्पष्ट रूप से इसमें कोई डिग्री नहीं हो सकती। क्योंकि किसी चीज़ के अस्तित्व की डिग्री उसके विपरीतों के हस्तक्षेप के माध्यम से होती है।

उदाहरण के लिए, गर्मी की डिग्री ठंड के हस्तक्षेप के माध्यम से होती है, और सुंदरता की डिग्री कुरूपता के हस्तक्षेप के माध्यम से होती है; इसी तरह से और भी उदाहरण बनाए जा सकते हैं। चूँकि आकस्मिक प्राणियों में ये गुण सच्चे, प्राकृतिक और अंतर्निहित, आवश्यक गुण नहीं हैं, इसलिए उनके विपरीत गुण उनमें प्रवेश कर सकते हैं। डिग्री के अस्तित्व के साथ, विविधता, भिन्नता और परिवर्तन उत्पन्न हुए

दुनिया। चूँकि पूर्व-शाश्वत शक्ति में कोई डिग्री नहीं हो सकती, इसलिए अनिवार्य रूप से,
जो चीजें इसके द्वारा निर्धारित की जाएंगी, वे इसके संबंध में समान होंगी। सबसे बड़ा सबसे छोटे के बराबर होगा, और कण सितारों के समान होंगे। सभी मानव जाति का पुनरुत्थान उस शक्ति के लिए उतना ही आसान होगा जितना कि एक व्यक्ति को जीवन में उठाना
व्यक्तिगत; वसंत का निर्माण एक एकल को रूप देने जितना आसान है
फूल। जबकि यदि कारणों को जिम्मेदार ठहराया जाए, तो एक फूल का निर्माण वसंत की तरह कठिन होगा।

इस वचन के दूसरे पद में 'परमेश्वर सबसे महान है' के चौथे अंश के अंतिम भाग के पाद-टिप्पणी में, तथा बाईसवें वचन में, तथा बीसवें अक्षर में और उसके परिशिष्ट में यह सिद्ध किया गया है कि जब प्राणियों की रचना का श्रेय एकता के एकमात्र परमेश्वर को दिया जाता है, तो सभी चीजें एकता के एकमात्र परमेश्वर को दी जाती हैं।

एक चीज़ जितनी आसान हो जाती है। अगर उन्हें कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो एक चीज़ का निर्माण सभी चीज़ों की तरह ही मुश्किल और समस्याग्रस्त हो जाता है।
दूसरा मामला: ईश्वरीय शक्ति चीज़ों के अंदरूनी पहलू से जुड़ी है। जी हाँ, ईश्वरीय शक्ति चीज़ों के अंदरूनी पहलू से जुड़ी है।
ब्रह्मांड के दर्पण जैसे दो चेहरे हैं। एक उसका बाहरी चेहरा है, जो दर्पण से मिलता जुलता है।
दर्पण का रंगीन चेहरा, दूसरा उसका चेहरा है जो दिखता है

इसका निर्माता। यह दर्पण के चमकते चेहरे जैसा है। इसका बाहरी चेहरा विपरीतताओं का क्षेत्र है। यह वह जगह है जहाँ सुंदर और बदसूरत, अच्छा और बुरा, बड़ा और छोटा, मुश्किल और आसान जैसे मामले दिखाई देते हैं। इसी वजह से सर्व-महिमावान निर्माता ने अपनी शक्ति के निपटान के लिए स्पष्ट कारणों को एक पर्दा बना दिया है,

ताकि शक्ति का हाथ मन में सीधे तौर पर उन मामलों से संबंधित न लगे जो प्रथमदृष्टया महत्वहीन या अयोग्य हैं।

क्योंकि महिमा और गरिमा के लिए ऐसा होना आवश्यक है। लेकिन उसने कारणों और मध्यस्थों को वास्तविक प्रभाव नहीं दिया, क्योंकि एकता की एकता के लिए यह आवश्यक है कि उनमें कोई भी न हो।

जहाँ तक प्राणियों के चेहरे का सवाल है, जो अपने रचयिता की ओर देखता है, वह हर चीज में चमकता है, स्वच्छ है। व्यक्तित्व के रंग और विकृतियाँ उसमें हस्तक्षेप नहीं करतीं। यह पहलू बिना किसी मध्यस्थ के अपने रचयिता का सामना करता है। इसमें कारणों की कोई जंजीर और व्यवस्था नहीं है। कारण और प्रभाव इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकते। इसमें कुछ भी विकृत या टेढ़ा नहीं है। बाधाएँ इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकतीं। एक कण सूर्य का भाई बन जाता है।

संक्षेप में, ईश्वरीय शक्ति सरल, अनंत और अनिवार्य दोनों है। ईश्वरीय शक्ति से जुड़े स्थान में न तो कोई मध्यस्थ है, न ही कोई दाग है, न ही वह विद्रोह का स्थल है। इसलिए, ईश्वरीय शक्ति के क्षेत्र में महान को छोटे से अधिक स्थान नहीं मिलता। समुदाय को व्यक्ति से अधिक वरीयता नहीं मिलती। सार्वभौमिक ईश्वरीय शक्ति से विशेष से अधिक की अपेक्षा नहीं कर सकते।

तीसरा मामला: ईश्वरीय शक्ति का संबंध नियमों के अनुसार होता है। यानी वह बहुतों और थोड़े लोगों, बड़े और छोटे लोगों को एक ही मानती है। हम इस गूढ़ मामले को कई तुलनाओं के ज़रिए समझना आसान बना देंगे।

ब्रह्माण्ड में पारदर्शिता, पारस्परिकता, संतुलन, व्यवस्था, तटस्थता और आज्ञाकारिता ये सभी ऐसे मामले हैं जो अनेक को कुछ के बराबर बनाते हैं, तथा महान को छोटे के बराबर बनाते हैं।

पहली तुलना: यह पारदर्शिता के रहस्य को समझाती है।
उदाहरण के लिए, सूर्य की छवि और प्रतिबिंब, जो इसकी चमक और अभिव्यक्ति हैं, समुद्र की सतह पर और समुद्र की हर बूंद में एक ही पहचान प्रदर्शित करते हैं। यदि पृथ्वी का गोला कांच के अलग-अलग टुकड़ों से बना होता और बिना किसी आवरण के सूर्य के सामने खुला होता, तो सूर्य का प्रतिबिंब हर टुकड़े और पृथ्वी के पूरे चेहरे पर एक जैसा होता, बिना किसी बाधा के या टुकड़ों में विभाजित हुए या कम हुए। मान लीजिए, सूर्य ने इच्छाशक्ति से काम किया और अपनी इच्छाशक्ति के माध्यम से अपने प्रकाश की चमक और अपने प्रतिबिंब की छवि प्रदान की, तो उसके लिए यह अधिक कठिन नहीं होगा

पृथ्वी की पूरी सतह पर अपनी चमक प्रदान करना किसी एक पर प्रदान करने से बेहतर है

एकल कण.

दूसरी तुलना: यह पारस्परिकता के रहस्य से संबंधित है।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि जीवित प्राणियों, यानी मनुष्यों से बना एक विशाल घेरा है, जिसमें से प्रत्येक के हाथ में एक दर्पण है। इसके केंद्र में एक व्यक्ति मोमबत्ती पकड़े हुए है। केंद्रीय बिंदु के चारों ओर सभी दर्पणों में प्रतिबिंबित चमक और अभिव्यक्ति एक समान होगी, और इसका संबंध बिना किसी बाधा, विखंडन या कम होने के होगा।

तीसरी तुलना: यह संतुलन के रहस्य से संबंधित है।

उदाहरण के लिए, तराजू का एक विशाल सेट है जो बेहद सटीक और संवेदनशील है। दो सूर्य या दो तारे या दो पहाड़ या

यदि इसके दो पलड़ों में दो अंडे या दो कण रखे जाएं, तो उन विशाल संवेदनशील तराजूओं के एक पलड़े को आकाश की ओर उठाने तथा दूसरे को जमीन पर नीचे लाने के लिए समान बल की आवश्यकता होगी।

चौथी तुलना: यह व्यवस्था के रहस्य से संबंधित है।

उदाहरण के लिए, एक विशाल जहाज को एक छोटी खिलौना नाव की तरह आसानी से घुमाया जा सकता है।

पांचवीं तुलना: यह वियोग के रहस्य से संबंधित है।

उदाहरण के लिए, व्यक्तित्व से विमुख प्रकृति छोटे से लेकर बड़े तक सभी विशेषताओं को एक समान मानती है और बिना कम हुए या खंडित हुए उनमें प्रवेश करती है। बाह्य पहलू में मौजूद गुण

वैयक्तिकता हस्तक्षेप नहीं करती और भ्रम पैदा नहीं करती; वे दृष्टिकोण को नहीं बदलती
ऐसी ही एक विरक्त प्रकृति की। उदाहरण के लिए, सुई जैसी मछली में व्हेल के समान ही विरक्त प्रकृति होती है। या एक सूक्ष्म जीव में गैंडे के समान ही एक पशु प्रकृति होती है।

छठी तुलना: यह आज्ञाकारिता के रहस्य को प्रदर्शित करता है।

उदाहरण के लिए, एक कमांडर एक अकेले निजी सैनिक को “आगे बढ़ो!” के आदेश के साथ आगे बढ़ाता है, ठीक उसी तरह जैसे वह एक सेना को आगे बढ़ाता है। आज्ञाकारिता के बारे में इस तुलना के रहस्य की सच्चाई इस प्रकार है:

जैसा कि अनुभव से सिद्ध हुआ है, ब्रह्मांड में हर चीज में पूर्णता का एक बिंदु होता है, और हर चीज का उस बिंदु की ओर झुकाव होता है। बढ़ता झुकाव आवश्यकता बन जाता है। बढ़ती ज़रूरत इच्छा बन जाती है। बढ़ती इच्छा

आकर्षण बन जाता है, और आकर्षण, इच्छा, आवश्यकता और झुकाव प्रत्येक बीज और कर्नेल हैं जो चीजों के सार के साथ मिलकर सर्वशक्तिमान ईश्वर के रचनात्मक आदेशों के अनुरूप होते हैं। सच्चे की पूर्ण पूर्णता

आकस्मिक प्राणियों की प्रकृति पूर्ण अस्तित्व है। उनकी विशेष पूर्णता प्रत्येक के लिए एक विशिष्ट अस्तित्व है जो प्रत्येक प्राणी की क्षमताओं को संभावित से वास्तविक तक उभरने में मदद करती है। इस प्रकार, पूरे ब्रह्मांड की आज्ञाकारिता

ईश्वरीय आदेश "हो जाओ!" के समान ही है

एक कण की तरह, जो एक अकेले सैनिक की तरह है। पूर्व-शाश्वत इच्छा से आगे बढ़ते हुए "हो!" के पूर्व-शाश्वत आदेश के प्रति आकस्मिक प्राणियों की आज्ञाकारिता और अनुरूपता में सभी एक साथ निहित हैं, झुकाव, आवश्यकता, इच्छा और आकर्षण, जो दिव्य इच्छा की अभिव्यक्तियाँ भी हैं। तथ्य यह है कि जब सूक्ष्म जल को जमने का आदेश मिलता है, तो एक परिष्कृत झुकाव के साथ यह लोहे के टुकड़े को विभाजित कर सकता है, आज्ञाकारिता के रहस्य की ताकत को प्रदर्शित करता है।

यदि इन छः तुलनाओं को आकस्मिक प्राणियों की क्षमताओं और कार्यों में देखा जाए, जो दोषपूर्ण, सीमित और कमजोर हैं और जिनका कोई वास्तविक प्रभाव नहीं है, तो निस्संदेह यह देखा जाएगा कि पूर्व-शाश्वत शक्ति के संबंध में सब कुछ समान है, जो पूर्व-शाश्वत और उत्तर-शाश्वत दोनों है, और जो शुद्ध असत् से पूरे ब्रह्मांड का निर्माण करती है, और अपने प्रचंड कार्यों के माध्यम से प्रकट होने के कारण सभी मनों को आश्चर्यचकित कर देती है।

उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं हो सकता। ऐसी शक्ति को इन रहस्यों के छोटे तराजू पर नहीं तौला जा सकता, न ही वे आनुपातिक हैं। इनका उल्लेख विषय को समझने के करीब लाने और किसी भी संदेह को दूर करने के लिए किया गया है।

सारांश और परिणाम

चूँकि पूर्व-शाश्वत शक्ति अनंत है, और यह परम शुद्ध और पवित्र सार का अंतर्निहित, आवश्यक गुण है; और चूँकि प्रत्येक वस्तु का निर्मल, आवरणरहित आंतरिक पहलू इसकी ओर उन्मुख है और इसका सामना करता है, तथा आकस्मिकता के संबंध में संतुलन में है, जिसमें अस्तित्व और अ-अस्तित्व की समान संभावना शामिल है; और चूँकि यह आंतरिक चेहरा सृष्टि के आदेश और ब्रह्मांड के दिव्य नियमों का आज्ञाकारी है, जो महान शरिया, सृष्टि के शरिया का निर्माण करते हैं,

और यह बाधाओं और विभिन्न विशेषताओं से मुक्त और मुक्त है; निश्चित रूप से, सबसे छोटी चीज़ की तरह, सबसे बड़ी चीज़ उस शक्ति का विरोध नहीं कर सकती है, न ही उससे सबसे छोटी चीज़ से ज़्यादा की उम्मीद कर सकती है। जिस स्थिति में, पुनरुत्थान के समय आत्माओं के साथ सभी प्राणियों को जीवन में वापस लाना ईश्वरीय शक्ति के लिए वसंत में एक मक्खी को जीवन में वापस लाने से ज़्यादा कठिन नहीं है। इस प्रकार, का आदेश:

> तुम्हारी रचना और तुम्हारा पुनरुत्थान एक आत्मा की रचना और पुनरुत्थान के समान है।
> निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ देखने वाला है। (लुक़मान 31:28)

यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है; यह सत्य और सही है। और हमारा दावा कि “एजेंट के पास शक्ति है” निर्णायक रूप से सत्य साबित हुआ है; इस संबंध में इसे रोकने के लिए कुछ भी नहीं है।

चौथा मूल बिन्दु

जिस प्रकार ऐसी चीजें हैं जिनके लिए मृतकों का पुनरुत्थान और महान सभा आवश्यक है, और जो इसे लाएगा उसके पास ऐसा करने की शक्ति है, उसी प्रकार संसार में मृतकों के पुनरुत्थान और महान सभा की क्षमता है।

सभा। मेरे इस कथन में चार 'बातें' हैं कि 'यह स्थान
संभव।'

पहला, इस संसार की मृत्यु की सम्भावना।

दूसरा, इसकी वास्तविक मृत्यु है।

तीसरी संभावना यह है कि नष्ट हो चुकी मृत दुनिया का पुनर्निर्माण किया जाए और परलोक के रूप में पुनर्जीवित किया जाए।

चौथा, इसका वास्तविक पुनर्निर्माण और पुनरुत्थान है, जो संभव है।

पहला मामला: सृष्टि की मृत्यु संभव है। जो विकास के नियम के अधीन है, उसे अंतिम लक्ष्य तक विकसित होना चाहिए। जो अंतिम लक्ष्य तक विकसित होता है, उसका जीवनकाल सीमित होना चाहिए और इसलिए, उसका प्राकृतिक लक्ष्य निश्चित होना चाहिए। जिसका लक्ष्य निश्चित है, वह अनिवार्य रूप से मर जाता है। मानवता मृत्यु के अधीन एक सूक्ष्म जगत है; ब्रह्मांड को एक वृहद मानव प्राणी माना जा सकता है और इसलिए वह भी मृत्यु के अधीन है। तदनुसार, यह नष्ट हो जाएगा और अंतिम दिन की सुबह पुनर्जीवित हो जाएगा। जिस तरह एक जीवित वृक्ष (एक लघु ब्रह्मांड) खुद को विनाश से नहीं बचा सकता, उसी तरह "सृष्टि के वृक्ष" से उगने वाली "प्राणियों की शाखाएँ" नष्ट हो जाएँगी।

यदि ब्रह्मांड को शाश्वत इच्छा की अनुमति से किसी बाहरी विनाशकारी घटना द्वारा नष्ट नहीं किया जाता है, तो अंततः यह मरना शुरू हो जाएगा। वैज्ञानिक भी कहते हैं
कुरान के अनुसार, यह तीखी चीख़ देगा, और फिर निम्नलिखित चीज़ें घटित होंगी: जब सूरज अंधकारमय हो जाएगा; जब तारे नीचे गिरा दिए जाएँगे; जब पहाड़ हिलाए जाएँगे (अत-तकवीर 81:1-3) और जब आकाश खुल जाएगा; जब तारे बिखर जाएँगे; जब समुद्र उमड़ पड़ेगा (अल-इंफ़ितार 82:1-3)।

एक सूक्ष्म, सांकेतिक मामला

जैसे जल अपने ही नुकसान के लिए जम जाता है, बर्फ अपने ही नुकसान के लिए पिघल जाती है, बीज अपने ही नुकसान के लिए मजबूत हो जाता है, खोल के नुकसान के लिए दाना मजबूत हो जाता है, शब्द अर्थ के नुकसान के लिए कठोर हो जाता है, शरीर के कारण आत्मा कमजोर हो जाती है, और आत्मा के कारण शरीर सूक्ष्म हो जाता है, वैसे ही यह भी है।
यह संसार, जो सघन संसार है, परलोक अर्थात् सूक्ष्म जगत के कारण जीवन की मशीन के कार्य करने से पारदर्शी और परिष्कृत हो जाता है।
रचनात्मक शक्ति प्रकाश बिखेर रही है

घने, निर्जीव, बुझे, मृत पदार्थों पर आश्चर्यजनक क्रियाशीलता के साथ जीवन का प्रकाश डालना इस बात का संकेत है कि वह सूक्ष्म जगत के कारण इस घने जगत को जीवन के प्रकाश से विलीन, जला और प्रकाशित करता है।

वास्तविकता चाहे कितनी भी कमजोर क्यों न हो, वह मरती नहीं; वह नष्ट नहीं होती,
रूप। बल्कि, यह व्यक्तियों और रूपों में यात्रा करता है। वास्तविकता बढ़ती है, विकसित होती है, और
धीरे-धीरे फैलता है, जबकि खोल और आकार घिसकर महीन हो जाते हैं और टूट जाते हैं। उन्हें बेहतर रूप में नवीनीकृत किया जाता है ताकि वे पर्यावरण के अनुकूल बन सकें
स्थिर और विस्तारित वास्तविकता का कद। वृद्धि और कमी के संबंध में,
वास्तविकता और रूप विपरीत अनुपात में हैं। यानी जितना अधिक ठोस होगा, उतना ही अधिक वास्तविक होगा।
रूप जितना बढ़ता है, वास्तविकता उतनी ही कमजोर होती जाती है। रूप जितना कम ठोस होता जाता है, वास्तविकता उतनी ही मजबूत होती जाती है।

इस प्रकार, यह कानून पूर्णता की प्रक्रिया के कानून में शामिल सभी चीजों को शामिल करता है। इसका मतलब है कि एक समय निश्चित रूप से आएगा जब प्रकट दुनिया, जो ब्रह्मांड की शक्तिशाली वास्तविकता का खोल और रूप है, सर्वशक्तिमान निर्माता की अनुमति से टूट जाएगी। फिर इसे एक बेहतर रूप में नवीनीकृत किया जाएगा। आयत का अर्थ जिस दिन पृथ्वी को दूसरी धरती में बदल दिया जाएगा (इब्राहीम 14:48) साकार होगा।

संक्षेप में, दुनिया की मृत्यु संभव है। इसके अलावा, कोई भी चीज़ नहीं हो सकती
मुझे संदेह है कि यह संभव है.

दूसरा मामला: यह दुनिया की वास्तविक मृत्यु है। इस मामले का सबूत सभी प्रकट धर्मों की सर्वसम्मति है; सभी स्वस्थ प्रकृतियों की गवाही; ब्रह्मांड में सभी परिवर्तनों, रूपांतरणों और परिवर्तनों का संकेत; दुनिया के इस अतिथिगृह में उनकी मृत्यु के माध्यम से सदियों और वर्षों की संख्या का प्रमाण, सभी जीवित दुनिया और मोबाइल दुनिया की खुद की मृत्यु का प्रमाण।

यदि आप दुनिया की मृत्यु पीड़ा की कल्पना करना चाहते हैं जैसा कि कुरान उन्हें इंगित करता है, तो सोचें कि ब्रह्मांड के हिस्से एक दूसरे से एक सटीक, उच्च क्रम से कैसे बंधे हैं। वे इतने छिपे हुए, नाजुक, सूक्ष्म बंधन से बंधे हैं और एक क्रम के भीतर इतने बंधे हैं कि ऊंचे आकाशीय पिंडों में से एक को आदेश मिलने पर: "हो जाओ!" या, "अपना घर छोड़ दो

कक्षा में!", दुनिया अपनी मौत की पीड़ा में चली जाएगी। तारे टकराएँगे, आकाशीय पिंड घूमेंगे, अनंत अंतरिक्ष में लाखों तोपों और ग्लोब के आकार की बड़ी तोपों की विनाशकारी आवाज़ की तरह एक बड़ा शोर मचेगा। एक दूसरे से टकराते और टकराते हुए, चिंगारियों की बौछारें छोड़ते हुए, पहाड़ उड़ते हुए, समुद्र जलते हुए, पृथ्वी का चेहरा चपटा हो जाएगा।

इस प्रकार, इस मृत्यु और उन पीड़ाओं के माध्यम से, वह पूर्व-शाश्वत शक्ति वाला परमेश्वर ब्रह्मांड को हिला देगा। वह ब्रह्मांड को शुद्ध कर देगा, और नरक और नरक के मामले एक तरफ खींच लेंगे, और स्वर्ग और स्वर्ग के लिए उपयुक्त मामले दूसरी तरफ खींच लेंगे, और परलोक की दुनिया प्रकट हो जाएगी।

तीसरा विषय: जो संसार मर जाएगा, उसका पुनः जीवन में आना संभव है।
क्योंकि, जैसा कि दूसरे मूल बिन्दु में सिद्ध किया गया है, ईश्वरीय शक्ति में कोई कमी नहीं है, तथा उसे आवश्यक बनाने वाली चीजें अत्यंत शक्तिशाली हैं। पदार्थ संभव के दायरे में है। और यदि किसी संभावित पदार्थ में कुछ अत्यंत शक्तिशाली चीज है जो उसे आवश्यक बनाती है, तथा उसमें कोई कमी नहीं है।

एजेंट की शक्ति को संभव नहीं बल्कि वास्तविक माना जा सकता है।

एक संकेतात्मक बिंदु

यदि ब्रह्माण्ड का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाए तो पता चलेगा कि इसके भीतर दो तत्व हैं
वे तत्व जो सर्वत्र फैल गए हैं और जड़ जमा चुके हैं; उनके चिह्न और फल जैसे अच्छाई और बुराई, सुन्दरता और कुरूपता, लाभ और हानि, पूर्णता और दोष, प्रकाश और अंधकार, मार्गदर्शन और पथभ्रष्टता, प्रकाश और अग्नि, विश्वास और अविश्वास, आज्ञाकारिता और विद्रोह, तथा भय और प्रेम,

ब्रह्मांड में विपरीत एक दूसरे से टकराते रहते हैं। वे लगातार परिवर्तन और रूपांतरण के माध्यम से प्रकट होते रहते हैं। उनके पहिये किसी दूसरी दुनिया की फसलों की कार्यशाला की तरह घूमते हैं।

निश्चय ही, उन दो तत्वों की शाखाएँ और परिणाम, जो विपरीत हैं, अनंत काल तक जारी रहेंगे; वे एक दूसरे से संकेन्द्रित और पृथक हो जाएँगे। तब वे रूप में प्रकट होंगे।

स्वर्ग और नर्क। चूँकि इस क्षणभंगुर दुनिया से ही स्थायी दुनिया बनेगी, इसलिए इसके मूल तत्व निश्चित रूप से अनंत काल तक चले जाएँगे और

स्थायित्व.

वास्तव में, स्वर्ग और नरक सृष्टि के वृक्ष की शाखा के दो फल हैं, जो अनंत काल की ओर फैलते, झुकते और जाते हैं; वे ब्रह्मांड की श्रृंखला के दो परिणाम हैं; ईश्वरीय क्रियाकलापों की इस बाढ़ के दो भण्डार हैं; प्राणियों के दो कुंड हैं, जो अनंत काल की ओर लहरों में बहते हैं; और प्रकटीकरण का स्थान, एक ईश्वरीय कृपा का, दूसरा ईश्वरीय क्रोध का। जब शक्ति का हाथ प्रचंड गति से ब्रह्मांड को हिलाता है, तो वे दोनों कुंड उचित पदार्थों से भर जाते हैं।

इस अल्युसिव पॉइंट का रहस्य इस प्रकार है:

जैसा कि शाश्वत परोपकार और पूर्व-शाश्वत ज्ञान की आवश्यकता थी, पूर्व-शाश्वत सर्वज्ञ ने इस दुनिया को परीक्षण का स्थान, परीक्षा का क्षेत्र, अपने सबसे सुंदर नामों का दर्पण और उनकी कलम के लिए एक पृष्ठ बनाया।

ईश्वरीय निर्धारण और शक्ति। अब, परीक्षण और परीक्षा वृद्धि और विकास का कारण हैं। और विकास स्वभाव को प्रकट करने का कारण बनता है। और यह प्रकटन क्षमताओं को स्पष्ट होने का कारण बनता है। और क्षमताओं का यह उद्भव सापेक्ष सत्य को स्पष्ट होने का कारण बनता है। और सापेक्ष

सत्य के स्पष्ट हो जाने से सत्य की अभिव्यक्तियाँ उभरने लगती हैं।
सर्व-महिमावान निर्माता के सबसे सुंदर नामों को प्रदर्शित किया जाना चाहिए, और ब्रह्मांड को अनंत काल से मांगे जाने वाले के संदेश में बदल दिया जाना चाहिए। यह
परीक्षा के इस रहस्य और मनुष्य की जवाबदेही के रहस्य के माध्यम से
उच्च आत्माओं के हीरे जैसे सार को नीच आत्माओं के कोयले जैसे पदार्थ से शुद्ध किया जाता है, और दोनों को एक दूसरे से अलग किया जाता है।

इस प्रकार, चूँकि यह ऐसे रहस्यों के लिए था, तथा ज्ञान के अन्य अत्यंत सूक्ष्म और श्रेष्ठ उदाहरणों के लिए, जिनके बारे में हम अभी तक नहीं जानते हैं, इसलिए पूर्व-अनन्त सर्वज्ञ ने इस रूप में संसार की इच्छा की, उन्होंने ज्ञान के उन उदाहरणों के लिए इस संसार के परिवर्तन और रूपांतरण की भी इच्छा की। उन्होंने इसके परिवर्तन और रूपांतरण के लिए विपरीतताओं को एक साथ मिलाया, और उन्हें आमने-सामने लाया। लाभ के साथ हानि को मिलाकर, अच्छाई के साथ बुराई को मिलाकर, तथा सुंदरता के साथ कुरूपता को मिलाकर, उन्होंने उन्हें आटे की तरह एक साथ गूँथा,

और ब्रह्माण्ड को परिवर्तन और उत्परिवर्तन के नियम, तथा रूपांतरण और पूर्णता के सिद्धांत के अधीन बनाया।

एक दिन आएगा जब यह परीक्षा-सभा समाप्त हो जाएगी, और परीक्षण की अवधि समाप्त हो जाएगी, और दिव्य नाम अपना आदेश दे देंगे, और दिव्य निर्णय की कलम अपने संदेश लिखना समाप्त कर देगी,

और ईश्वरीय शक्ति ने अपनी कला की कढ़ाई पूरी कर ली है, और प्राणियों ने अपने कर्तव्यों को पूरा कर लिया है, और प्राणियों ने अपनी सेवा के कार्य पूरे कर लिए हैं, और हर चीज़ ने अपना अर्थ बता दिया है, और इस दुनिया ने परलोक के पौधे पैदा कर दिए हैं, और धरती ने सर्वशक्तिमान निर्माता की शक्ति के सभी चमत्कारों और उसकी कला के सभी आश्चर्यों को प्रदर्शित और प्रदर्शित कर दिया है, और यह

क्षणभंगुर संसार ने समय की डोरी से अनंत काल के दृश्य-चित्रों को जोड़ दिया है।

सर्व-महिमावान निर्माता के शाश्वत ज्ञान और पूर्व-शाश्वत उपकार के लिए परीक्षा और परीक्षण के परिणाम, उन दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों के सत्य,

ईश्वरीय निर्णय की कलम के संदेश, कला की उन नमूना-जैसी कढ़ाईयों के मूल, प्राणियों के कर्तव्यों के उद्देश्य और लाभ, प्राणियों की सेवा के कार्यों का प्रतिफल, ब्रह्माण्ड की पुस्तक में वर्णित अर्थों की सच्चाई, जन्मजात निराशा के बीजों का अंकुरण, न्याय के सर्वोच्च न्यायालय का उद्घाटन, इस दुनिया से लिए गए नमूना-जैसी चित्रमालाओं का प्रदर्शन, स्पष्ट कारणों के पर्दे का फटना,

और सब कुछ सीधे सर्व-महिमावान निर्माता को समर्पित करना। चूँकि सर्व-महिमावान निर्माता की पूर्व-शाश्वत बुद्धि और परोपकारिता इन सत्यों को अनिवार्य बनाती है, इसलिए उन्हें उन विपरीतताओं के शुद्धिकरण की आवश्यकता होती है ताकि वे उद्धार कर सकें

परिवर्तन और क्षणभंगुरता, रूपांतरण और विलुप्ति से दुनिया को अलग करना, और परिवर्तन के कारणों और संघर्ष के मामलों को अलग करना। और निश्चित रूप से वे पुनरुत्थान लाएंगे और इन परिणामों को प्राप्त करने के लिए उन विपरीतताओं को शुद्ध करेंगे।

इस प्रकार, इस शुद्धि के परिणामस्वरूप जहन्नम अपना शाश्वत और भयानक रूप धारण कर लेगा, और उसके निवासी धमकी प्रकट करेंगे और ऐ इनकार करनेवाले अपराधियों! तुम आज ही अलग हो जाओ! (या-सिन 36:59); जबकि जन्नत अपना शाश्वत और भव्य रूप धारण कर लेगी, और उसके रहनेवाले और उसके लोग

साथी निम्नलिखित पते प्रकट करेंगे:

शांति आप पर हो! आप अच्छे हैं और शुद्ध हो गए हैं (गंदगी से)

(और जो पाप के अवशेषों से मुक्त हो गया है, और सभी दुखों से छुटकारा पा लिया है) अतः उसमें प्रवेश करो और सदैव रहो! (अज़-ज़ुमर 39:73)

जैसा कि अट्ठाईसवें वचन के प्रथम चरण के दूसरे प्रश्न में सिद्ध है, अपनी संपूर्ण शक्ति के माध्यम से, पूर्व-अनन्त सर्वज्ञ परमेश्वर इन दोनों घरों के निवासियों को शाश्वत और स्थायी शरीर प्रदान करेगा जो विघटन, परिवर्तन, बुढ़ापे या गिरावट के अधीन नहीं होगा। क्योंकि परिवर्तन के कोई कारण नहीं होंगे, जो गिरावट का कारण हैं।

चौथा मामला: यह संभव है, ऐसा होगा। बेशक, मरने के बाद दुनिया आख़िरत के रूप में फिर से जी उठेगी। दुनिया को बनाने वाला उसे नष्ट करने के बाद और भी बेहतर रूप में उसकी मरम्मत और पुनर्निर्माण करेगा और उसे आख़िरत के महलों में से एक में बदल देगा। इसका सबूत सबसे पहले पवित्र क़ुरआन की सहमति है, साथ ही उसकी सारी आयतें भी।

हजारों तर्कसंगत प्रमाणों और सभी प्रकट शास्त्रों से युक्त श्लोक, उसी प्रकार सर्वशक्तिमान के गुण जो उसकी शक्ति और उसकी सुंदरता से संबंधित हैं, और उसके सभी सुंदर नाम, स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं

इसकी घटना। इसी तरह उसने वादा किया कि वह अपने सभी स्वर्गीय आदेशों के माध्यम से पुनरुत्थान और महान सभा का निर्माण करेगा जो उसने अपने पैगम्बरों को भेजे थे। और चूँकि उसने वादा किया है, तो निश्चित रूप से ऐसा होगा

वह इसे पूरा करता है। आप दसवें वचन के आठवें सत्य का संदर्भ ले सकते हैं
इस मामले के संबंध में.

और जिस प्रकार सर्वप्रथम मुहम्मद साहब (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने अपने हजार चमत्कारों की शक्ति से, तथा सभी पैगम्बरों, रसूलों, संतों और धर्मियों ने इसके घटित होने पर सहमति व्यक्त की और इसकी सूचना दी, उसी प्रकार ब्रह्माण्ड भी अपनी समस्त सृजनात्मक निशानियों सहित इसके घटित होने की सूचना देता है।
घटना।

संक्षेप में, दसवें वचन ने अपनी समस्त सच्चाइयों के साथ, तथा अट्ठाईसवें वचन ने अपनी द्वितीय स्थिति में 'विशेष रूप से' अपने समस्त प्रमाणों के साथ, पिछली शाम को अस्त होने के पश्चात् प्रातःकाल सूर्य के उदय होने की निश्चितता के साथ यह प्रदर्शित कर दिया है कि इस संसार के जीवन के अस्त होने के पश्चात्, सत्य का सूर्य आख़िरत के जीवन के रूप में एक बार फिर प्रकट होगा।

इस प्रकार, सर्वज्ञ ईश्वरीय नाम से सहायता की मांग करना और कुरान की चमक से लाभ उठाना, आरंभ से लेकर यहां तक
हमारे स्पष्टीकरण ने चार 'मूलभूत बिंदुओं' का रूप ले लिया है ताकि हृदय को स्वीकृति के लिए, आत्मा को समर्पण के लिए तैयार किया जा सके और तर्क को आश्वस्त किया जा सके। लेकिन हम कौन हैं जो इस मामले पर बात करें? इस दुनिया के सच्चे मालिक, ब्रह्मांड के निर्माता, इन प्राणियों के स्वामी, क्या कहते हैं? हमें उनकी बात सुननी चाहिए। क्या इस क्षेत्र के स्वामी के बोलते समय अन्य लोग अनौपचारिक रूप से हस्तक्षेप करने का साहस कर सकते हैं?

हमें सर्वज्ञ निर्माता के पूर्व-शाश्वत प्रवचन को सुनना चाहिए जो
वह दुनिया की मस्जिद और शिक्षा के स्थान जो पृथ्वी है, में प्रत्येक उत्तरवर्ती शताब्दी के सभी वर्गों को संबोधित करते हुए हजारों फरमान सुनाते हैं, जैसे,

जब धरती भयंकर भूचाल के साथ कांपेगी;

और पृथ्वी अपना बोझ उठा लेती है;

और मनुष्य चिल्लाता है, "क्या बात है इसमें?"

उस दिन वह सारी ख़बरें सुनाएगी,

जैसा कि तुम्हारे रब ने उसे ऐसा करने की प्रेरणा दी है।

उस दिन सभी मनुष्य अलग-अलग समूहों में सामने आएंगे, ताकि उन्हें उनके कर्म (जो उन्होंने दुनिया में किए) दिखाए जाएं।

और इसलिए, जो कोई भी परमाणु के बराबर भी अच्छा काम करेगा, वह इसे देखेगा;

और जो कोई कण भर भी बुराई करेगा, वह उसे देखेगा। (अज़-ज़लज़ला 99:1-8)

जिससे धरती कांपने लगती है, और,

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें शुभ सूचना दे दो। उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनमें नहरें बहती होंगी। जब भी उन्हें उनसे फल दिए जाते हैं तो वे कहते हैं, "यही तो हमें पहले दिए गए थे।" निश्चय ही वे उन्हें उसी प्रकार दिए गए हैं, जैसे पहले दिए गए थे।

दुनिया में, और उससे ठीक पहले बागों में, आकार और रंग में परिचित ताकि वे अज्ञात होने के कारण बदसूरत न हों)। इसके अलावा, उनके लिए जीवनसाथी हमेशा के लिए शुद्ध (सभी प्रकार की सांसारिक अशुद्धियों से) हैं। वे

वहाँ (हमेशा) रहेंगे। (अल-बक़रा 2:25)

जो सभी प्राणियों को आनंद और उत्सुकता से भर देता है। हमें सभी प्रभुत्व के स्वामी, इस संसार के स्वामी और परमेश्वर के इन आदेशों पर ध्यान देना चाहिए।

इसके बाद, हमें कहना होगा, “हम इसमें विश्वास करते हैं और इसकी पुष्टि करते हैं।”

(अपनी अपूर्णता को स्वीकार करते हुए, तथा मामले की सच्चाई को समझते हुए) फ़रिश्तों ने कहा: "तू महिमावान है (इसमें कि तू किसी भी दोष से परे है, तथा व्यर्थ कार्य करने से परे है, तथा सम्पूर्णता के सभी गुण तेरे ही हैं।) हमें कोई ज्ञान नहीं, सिवाय उसके जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू ही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।" (अल-बक़रा 2:32)

ऐ हमारे पालनहार, यदि हम भूल जाएं या गलत काम कर दें तो हमें सज़ा न दे। (अल-बक़रा 2:286)

हे ईश्वर! हमारे स्वामी मुहम्मद और उनके परिवार को आशीर्वाद प्रदान कर, जिस प्रकार तूने हमारे स्वामी इब्राहीम और उनके परिवार को आशीर्वाद प्रदान किया था; वास्तव में, सारी प्रशंसा तेरी ही है, हे सर्वोत्कृष्ट।

अध्याय 7

ब्रह्मांड को पढ़ना

के लेंस के माध्यम से

कुरान

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

और जिसे बुद्धि दी गई है, उसे बड़ी भलाई दी गई है।

(अल-बकराह 2:269)

इस लेख में भगवान शिव के पवित्र ज्ञान और उनकी शिक्षाओं के बीच संक्षिप्त तुलना की गई है।

सर्वज्ञ क़ुरआन, दर्शन और विज्ञान का ज्ञान, तथा उस शिक्षा और प्रशिक्षण का संक्षिप्त सारांश जो क़ुरआन का ज्ञान मनुष्य को उसके व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जीवन में देता है, तथा अन्य ईश्वरीय शब्दों और सभी वाणी पर क़ुरआन की श्रेष्ठता का संकेत। इस वचन में चार सिद्धांत हैं।

पहला सिद्धांत

निम्नलिखित कहानी को दूरबीन से देखिए जो एक कहानी के रूप में है।

तुलना करें, और कुरान के ज्ञान तथा दर्शन और विज्ञान के ज्ञान के बीच अंतर देखें:

एक बार, एक प्रसिद्ध शासक जो धार्मिक और एक अच्छा शिल्पकार दोनों था

वह सर्वज्ञ कुरान को ऐसी लिपि में लिखना चाहता था जो उसके अर्थ में पवित्रता और उसके शब्दों में चमत्कारिकता के योग्य हो, ताकि उसके चमत्कारी स्वरूप को अद्भुत परिधानों से सजाया जा सके। इसलिए कलाकार-राजा ने कुरान को वास्तव में अद्भुत ढंग से लिखा। उसने इसके लेखन में अपने सभी कीमती रत्नों का इस्तेमाल किया। इसकी सच्चाईयों की महान विविधता को दर्शाने के लिए, उसने इसके कुछ अक्षरों को हीरे और पन्ने से और कुछ को हीरे और पन्ने से लिखा।

माणिक्य और गोमेद, और अन्य प्रकार के ब्रिलियंट और मूंगा, जबकि अन्य को उसने चांदी और सोने से अंकित किया। उसने इसे इस तरह से सजाया और सजाया

कि हर कोई, जो पढ़ना जानता था और

जो लोग इसे नहीं जानते थे, वे इसे देखकर आश्चर्यचकित और आश्चर्यचकित हो गए। खास तौर पर सत्य के लोगों की नज़र में, क्योंकि बाहरी सुंदरता इसकी शानदार सुंदरता और अद्भुत सजावट का संकेत थी।

इसका मतलब है कि यह वास्तव में एक अनमोल प्राचीन वस्तु बन गई। फिर शासक ने कलात्मक रूप से गढ़ी और रत्नजड़ित कुरान को एक यूरोपीय दार्शनिक और एक मुस्लिम विद्वान को दिखाया। उन्हें परखने और इनाम पाने के लिए, उसने उन्हें आदेश दिया: "तुम में से प्रत्येक इस की बुद्धिमत्ता और उद्देश्यों के बारे में एक काम लिखो!" सबसे पहले, उन्होंने कहा:

दार्शनिक, फिर विद्वान ने इसके बारे में एक किताब लिखी।
दार्शनिक की पुस्तक में केवल अक्षरों की सजावट और उनके संबंधों और स्थितियों तथा रत्नों के गुणों पर चर्चा की गई है और उनका वर्णन किया गया है। इसमें उनके अर्थ पर बिल्कुल भी चर्चा नहीं की गई है, क्योंकि यूरोपीय लोगों को अरबी लिपि का कोई ज्ञान नहीं था। उन्हें यह भी नहीं पता था कि अलंकृत अक्षर किस प्रकार के होते हैं।

कुरान एक किताब थी, एक लिखित कृति, जो एक अर्थ व्यक्त करती थी। वह इसे एक अलंकृत प्राचीन वस्तु के रूप में देखता था। वह अरबी नहीं जानता था, लेकिन वह एक बहुत अच्छा इंजीनियर था, और वह चीजों का बहुत सटीक वर्णन करता था, और वह एक कुशल रसायनज्ञ और एक चतुर जौहरी था। इसलिए इस आदमी ने अपनी रचनाएँ उन शिल्पों के अनुसार लिखीं।

जहाँ तक मुस्लिम विद्वान का प्रश्न है, जब उसने कुरान को देखा, तो उसे समझ में आया कि यह एक स्पष्ट पुस्तक है, सर्वज्ञ कुरान है। इस सत्य-प्रेमी व्यक्ति ने न तो बाह्य अलंकरणों को महत्व दिया, न अलंकृत अक्षरों में ही अपना मन लगाया। वह ऐसी चीज़ में लग गया जो दूसरे व्यक्ति द्वारा स्वयं को व्यस्त रखने वाले विषयों से लाखों गुना अधिक ऊँची, अधिक उन्नत, अधिक सूक्ष्म, अधिक महान, अधिक लाभकारी और अधिक व्यापक थी। अलंकरणों के आवरण के नीचे छिपे रहस्यों के पवित्र सत्यों और प्रकाशों पर चर्चा करने के लिए उसने वास्तव में एक बढ़िया टिप्पणी लिखी। फिर उन दोनों ने अपनी-अपनी रचनाएँ लीं और उन्हें महान शासक के सामने प्रस्तुत किया। शासक ने पहले दार्शनिक की रचना ली। उसने उसे देखा और पाया कि स्वार्थी और प्रकृति-पूजक व्यक्ति ने बहुत मेहनत की थी, लेकिन उसने सच्ची बुद्धिमत्ता वाली कोई बात नहीं लिखी थी। उसने उसका अर्थ कुछ भी नहीं समझा था। वास्तव में, उसने उसे भ्रमित किया था और उसका अनादर किया था

वह इसके प्रति बहुत ही असभ्य था और यहाँ तक कि वह बहुत ही बुरा व्यवहार करता था। उसने सत्य के स्रोत, कुरान को अर्थहीन सजावट मानकर उसका अपमान किया था और कहा था कि यह अर्थहीन है। इसलिए बुद्धिमान शासक ने उसके सिर पर उसके काम की मार डाली और उसे अपने सामने से निकाल दिया।

फिर उन्होंने दूसरे सत्य-प्रेमी, निष्ठावान विद्वान के कार्य को देखा और पाया कि यह एक अत्यंत उत्तम और लाभदायक भाष्य था।
मार्गदर्शन से भरपूर अत्यंत बुद्धिमानीपूर्ण रचना। "बधाई हो! ईश्वर करे

भगवान तुम्हें आशीर्वाद दे!”, उन्होंने कहा। इस प्रकार, बुद्धि यही है और वे उन लोगों को बुद्धि कहते हैं जिनके पास यह है ज्ञानी और बुद्धिमान। दूसरे व्यक्ति के लिए, वह एक शिल्पकार था जिसने अपने लक्ष्य को पार कर लिया था। फिर विद्वान के काम के लिए इनाम में, उसने आदेश दिया कि प्रत्येक पत्र के बदले में उसे अपने अक्षय खजाने से दस सोने के सिक्के दिए जाएँ।

अगर आप तुलना को समझ गए हैं, तो अब वास्तविकता को देखिए: अलंकृत कुरान यह कलात्मक रूप से गढ़ा गया ब्रह्मांड है, और इसका शासक पूर्व-शाश्वत सर्वज्ञ है। जहाँ तक दो व्यक्तियों का प्रश्न है, एक - यूरोपीय -

दर्शनशास्त्र और उसके दार्शनिकों का प्रतिनिधित्व करता है, और दूसरा, कुरान और उसके छात्र। हां, सर्वज्ञ कुरान ब्रह्मांड के महान कुरान का सबसे उत्कृष्ट व्याख्याता, सबसे वाक्पटु अनुवादक है। हां, यह वह मानदंड है जो मनुष्य और जिन्न को ब्रह्मांड के पन्नों और समय के पत्तों पर शक्ति की कलम द्वारा अंकित सृजन के संकेतों के बारे में निर्देश देता है। यह प्राणियों को, जिनमें से प्रत्येक एक सार्थक अक्षर है, दूसरे का अर्थ धारण करने वाले के रूप में देखता है, अर्थात यह उनके निर्माता के कारण उन्हें देखता है। यह कहता है, "वे कितने खूबसूरती से बनाए गए हैं! वे अपने निर्माता की सुंदरता को कितनी उत्कृष्टता से इंगित करते हैं!", इस प्रकार ब्रह्मांड की सच्ची सुंदरता दिखाते हैं। लेकिन जिस दर्शनशास्त्र को वे प्राकृतिक दर्शनशास्त्र या विज्ञान कहते हैं, वह प्राणियों के अक्षरों की सजावट और उनके रिश्तों में डूब गया है, और भ्रमित हो गया है; इसने वास्तविकता के रास्ते को भ्रमित कर दिया है। जबकि इस महान पुस्तक के अक्षरों को दूसरे अर्थ के रूप में देखा जाना चाहिए, अर्थात ईश्वर के कारण, उन्होंने ऐसा नहीं किया है; उन्होंने प्राणियों को स्वयं को इंगित करने के रूप में देखा है। अर्थात्, उन्होंने प्राणियों को प्राणियों के कारण देखा है, और उस तरह से उनकी चर्चा की है। यह कहने के बजाय कि, "उन्हें कितनी खूबसूरती से बनाया गया है," वे कहते हैं "वे कितने सुंदर हैं," और उन्हें बदसूरत बना दिया है। ऐसा करके उन्होंने ब्रह्मांड का अपमान किया है, और उसे उनके बारे में शिकायत करने के लिए मजबूर किया है। वास्तव में, धर्म के बिना दर्शन वास्तविकता से अलग एक कुतर्क है और ब्रह्मांड का अपमान है।

दूसरा सिद्धांत

नैतिक प्रशिक्षण और सर्व-बुद्धिमान की बुद्धि के बीच तुलना

कुरान व्यक्तिगत जीवन और दर्शनशास्त्र तथा विज्ञान की शिक्षाओं के बारे में बताता है: दर्शनशास्त्र का सच्चा विद्यार्थी फिरौन है, लेकिन वह एक घृणित फिरौन है जो लाभ के लिए सबसे नीच चीज़ की पूजा करता है; वह हर उस चीज़ को अपना 'रब' मानता है जिससे उसे लाभ हो सकता है। और वह अधार्मिक विद्यार्थी जिद्दी और विद्रोही है, लेकिन वह दोनों बदकिस्मत हैं।

साथ

अपनी हठधर्मिता को त्यागकर वह एक सुख के लिए अंतहीन अपमान को स्वीकार कर लेता है।
वह अपने विद्रोह के साथ-साथ अधम भी है और अपनी नीचता को दर्शाता है
कुछ तुच्छ लाभ के लिए शैतानी व्यक्तियों के पैर चूमना। और वह अधार्मिक छात्र अभिमानी और दबंग है, लेकिन चूँकि उसे कोई रास्ता नहीं मिल पाता
उसके दिल में सहारा का कोई बिंदु नहीं है, वह एक पूरी तरह से नपुंसक, घमंडी तानाशाह है। और
वह छात्र एक आत्म-केंद्रित लाभ चाहने वाला व्यक्ति है जिसका उद्देश्य और प्रयास है
अपनी पशुवत क्षुधा की तुष्टि करना; एक धूर्त अहंकारी जो कुछ राष्ट्रवादी हितों के भीतर अपने निजी हितों की तलाश करता है।

हालाँकि, कुरान की बुद्धिमता का सच्चा विद्यार्थी एक सेवक है, लेकिन वह सबसे महान प्राणी की भी पूजा करने के लिए नीचे नहीं गिरता है; वह एक सम्मानित दास है जो स्वर्ग जैसी सर्वोच्च लाभ को अपनी पूजा का लक्ष्य नहीं बनाता है।

और उसका शिष्य विनम्र होता है, वह धर्मी और सौम्य होता है, फिर भी अपने पालनहार की अनुमति के बाहर, वह स्वेच्छा से अपने पालनहार के अलावा किसी और के सामने खुद को नीचा और अपमानित नहीं करता। और वह कमजोर और अभावग्रस्त होता है, और वह अपनी कमजोरी और गरीबी को जानता है, लेकिन वह उस धन के कारण आत्मनिर्भर होता है जो उसके दयालु पालनहार ने उसके लिए आख़िरत में जमा कर रखा है, और वह शक्तिशाली होता है

क्योंकि वह अपने गुरु की असीम शक्ति पर निर्भर करता है। और वह केवल उसके लिए ही कार्य करता है और प्रयास करता है
भगवान के लिए, भगवान की प्रसन्नता के लिए, और पुण्य के लिए।

इस प्रकार, दोनों द्वारा दिए जाने वाले प्रशिक्षण को तुलना से समझा जा सकता है
दो छात्रों में से एक।

तीसरा सिद्धांत

मानव सामाजिक जीवन को दर्शन और विज्ञान तथा कुरान की बुद्धिमता जो प्रशिक्षण देती है वह यह है:

दर्शनशास्त्र समाज के जीवन में आधार के रूप में 'बल' को स्वीकार करता है।
इसका उद्देश्य 'लाभ' है। यह अपने जीवन का सिद्धांत 'संघर्ष' मानता है। यह समुदायों के बीच के बंधन को 'नस्लवाद और नकारात्मक राष्ट्रवाद' मानता है। इसके फल हैं 'आत्मा की भूख को संतुष्ट करना और मानवीय आवश्यकताओं को बढ़ाना।' हालाँकि, बल का चिह्न 'आक्रामकता' है।
लाभ का चिह्न - चूँकि वे हर इच्छा के लिए अपर्याप्त हैं - 'धक्का-मुक्की और खींचतान' है। जबकि संघर्ष का चिह्न 'झगड़ा' है। और नस्लवाद का चिह्न -

क्योंकि यह दूसरों को खाकर पोषित होता है - यह 'आक्रामकता' है। इन्हीं कारणों से इसने मानवजाति के सुख को नकार दिया है।

जहाँ तक कुरान की बुद्धि का सवाल है, इसका आधार बल के बजाय 'सत्य' है। यह लाभ के स्थान पर 'पुण्य और ईश्वर की प्रसन्नता' को अपना लक्ष्य बनाता है। यह जीवन के सिद्धांत के रूप में 'पारस्परिक सहायता' के सिद्धांत को अपनाता है।

संघर्ष का सिद्धांत। और इसमें 'धर्म, वर्ग और देश के संबंध' शामिल हैं
समुदायों को जोड़ने वाले बंधन बनना। इसका उद्देश्य आत्मा की वासनाओं के विरुद्ध अवरोध खड़ा करना, आत्मा को उत्कृष्ट विषयों की ओर प्रेरित करना, उच्च भावनाओं को संतुष्ट करना, तथा मनुष्य को मानवीय पूर्णता की ओर प्रेरित करना, उसे सच्चा मनुष्य बनाना है। और
'सत्य' की निशानी है 'सद्भाव'। सद्गुण की निशानी है 'एकजुटता'।
पारस्परिक सहायता का अर्थ है 'एक दूसरे की सहायता करने में तत्पर रहना।' धर्म का चिह्न है 'भाईचारा' और 'आकर्षण।' और आत्मा को नियंत्रित करने और उसे बांधने तथा उसे मुक्त करने और उसे पूर्णता की ओर प्रेरित करने का चिह्न है 'इस दुनिया और अगले जीवन में खुशी।'

चौथा सिद्धांत

यदि आप सभी ईश्वरीय धर्मग्रंथों में कुरान की श्रेष्ठता तथा सभी वाणी और लेखन पर इसकी सर्वोच्चता को समझना चाहते हैं, तो निम्नलिखित दो तुलनाओं पर विचार करें:

पहला: राजा के पास बोलने के दो तरीके होते हैं, संबोधन के दो तरीके। एक है अपने निजी टेलीफोन पर किसी छोटी सी बात, किसी निजी ज़रूरत से संबंधित सामान्य विषय पर बात करना। दूसरा, उदात्त के शीर्षक के तहत

संप्रभुता, सर्वोच्च प्रतिनिधि और सार्वभौमिक शासक का अर्थ है अपने आदेशों को ज्ञात करने और प्रख्यापित करने के उद्देश्य से किसी दूत या उच्च अधिकारी से बात करना, अपने आदेशों की घोषणा करते हुए एक उच्च आदेश के माध्यम से कथन करना।
महिमा.

दूसरा: एक व्यक्ति अपने हाथ में लिया हुआ दर्पण सूर्य के सामने रखता है। वह दर्पण की क्षमता के अनुसार सात रंगों से युक्त प्रकाश प्राप्त करता है। वह उस संबंध के माध्यम से सूर्य से जुड़ जाता है और उससे संवाद करता है, और यदि वह प्रकाश से भरे दर्पण को अपने अंधेरे घर या छत से ढके बगीचे की ओर मोड़ता है, तो उसे सूर्य के मूल्य के संबंध में नहीं, बल्कि लाभ होगा,

लेकिन दर्पण की क्षमता के अनुसार। हालाँकि, एक और आदमी अपने घर के बाहर या अपने बगीचे की छत पर चौड़ी खिड़कियाँ खोल लेता है।
वह आकाश में सूर्य के लिए रास्ते खोलता है। वह वास्तविक सूर्य के सतत प्रकाश से संवाद करता है और उससे बात करता है, और अपने स्वभाव की जीभ के माध्यम से कृतज्ञता में कहता है: "हे दुनिया की सुंदरता जो अपने प्रकाश से पृथ्वी के चेहरे को सुशोभित करती है और फूलों के चेहरों को मुस्कुराती है! हे आकाश की सुंदरता, सुंदर सूर्य! आपने मेरे छोटे से घर और बगीचे को प्रकाश और गर्मी से सुसज्जित किया है।" जबकि दर्पण वाला व्यक्ति ऐसा नहीं कह सकता। उस प्रतिबंध के तहत सूर्य का प्रतिबिंब और कार्य सीमित हैं;

वे प्रतिबंध के अनुसार हैं। कुरान को देखिए
दूरबीन का

इन दोनों तुलनाओं को देखकर इसकी चमत्कारिकता देखें और इसकी पवित्रता को समझें।

> कुरान कहता है:
>
> यदि धरती के सभी पेड़ कलम होते और सभी समुद्र स्याही होते, और उनमें सात और समुद्र जुड़ जाते, तो भी ईश्वर के शब्द (उसके आदेश, उसके सभी नामों और गुणों के कार्य जो उसकी आज्ञाओं के रूप में प्रकट होते हैं, और उसके द्वारा बनाए गए घटनाएँ और प्राणी) लेखन में समाप्त नहीं होते। निस्संदेह ईश्वर अप्रतिम सामर्थ्य वाला, अत्यन्त बुद्धिमान है (जिसे कोई निराश नहीं कर सकता, और जिसे कोई थका नहीं सकता)। (लुकमान 31:27)

अब, कुरान को ईश्वर के अनंत शब्दों में सर्वोच्च स्थान दिए जाने का कारण यह है: कुरान सबसे महान ईश्वरीय नाम से और हर नाम के सबसे महान स्तर से आया है। यह सम्मान के मामले में ईश्वर का वचन है।

यह उनके समस्त संसारों के पालनहार होने का संदेश है; यह सभी प्राणियों के ईश्वर की उनकी उपाधि के माध्यम से उनका आदेश है; यह उनके स्वर्ग और पृथ्वी के रचयिता होने के संबंध में एक संबोधन है; यह पूर्ण प्रभुत्व के संबंध में एक भाषण है; यह सार्वभौमिक ईश्वरीय संप्रभुता के कारण एक पूर्व-शाश्वत संबोधन है; उनकी सर्वव्यापी, व्यापक दया के दृष्टिकोण से परम दयालु के उपकारों की एक नोटबुक है; संचारों का एक संग्रह जिसके आरंभ में कभी-कभी ईश्वरत्व की उदात्त महिमा से संबंधित सिफर होते हैं; यह ज्ञान बिखेरने वाला पवित्र शास्त्र है, जो परमेश्वर की पहुंच से उतरता है।

महानतम नाम, सर्वोच्च सिंहासन के सर्वव्यापक क्षेत्र को देखता है और उसका निरीक्षण करता है। इन्हीं कारणों से कुरान को पूर्ण योग्यता के साथ ईश्वर के वचन की उपाधि दी गई है।

अन्य दिव्य शब्दों के संबंध में, वे भाषण हैं जो किसी विशेष सम्मान, एक छोटे शीर्षक, किसी विशेष नाम के आंशिक प्रकटीकरण के माध्यम से; किसी विशेष आधिपत्य, विशेष संप्रभुता, एक निजी दया के माध्यम से स्पष्ट हो गए हैं। उनकी डिग्री विशिष्टता और सार्वभौमिकता के संबंध में भिन्न होती है। अधिकांश प्रेरणा इसी प्रकार की होती है, लेकिन इसकी डिग्री बहुत भिन्न होती है। उदाहरण के लिए, सबसे विशिष्ट और सरल प्रेरणा जानवरों की है।

फिर साधारण लोगों की प्रेरणा होती है; फिर साधारण स्वर्गदूतों की प्रेरणा होती है; फिर संतों की प्रेरणा होती है, फिर उच्च स्वर्गदूतों की प्रेरणा होती है। इस प्रकार, यही कारण है कि एक संत जो प्रार्थना करता है

सीधे बिना किसी साधन के दिल के टेलीफोन से कहता है: "मेरा दिल मुझसे कहता है
मेरे पालनहार की खबर।" वह यह नहीं कहता, "यह मुझे सारे संसार के पालनहार के विषय में बताता है।" और वह कहता है: "मेरा हृदय मेरे पालनहार का दर्पण, सिंहासन है।"
पालनहार।" वह यह नहीं कहता, "यह सिंहासन है

सारे संसार के पालनहार का।" क्योंकि वह अपनी क्षमता के अनुसार और सत्तर हज़ार पर्दों के बराबर भाषण को व्यक्त कर सकता है। इस प्रकार, चाहे राजा द्वारा अपनी सर्वोच्च संप्रभुता के संबंध में जारी किया गया आदेश आम आदमी के तुच्छ भाषण से कितना ही अधिक ऊंचा और उच्चतर क्यों न हो, और चाहे आकाश में सूर्य के तेज का दर्पण में उसके प्रतिबिंब के प्रकट होने से कितना ही अधिक लाभ क्यों न हो, और चाहे उसकी श्रेष्ठता कितनी ही अधिक क्यों न हो, उस हद तक महान क़ुरआन अन्य सभी भाषणों और सभी पुस्तकों से श्रेष्ठ है।

क़ुरआन के बाद दूसरे स्तर पर पवित्र पुस्तकों और अवतरित शास्त्रों की श्रेष्ठता उनकी डिग्री के अनुसार है। उस श्रेष्ठता के रहस्य में उनका भी हिस्सा है। अगर उन सभी मनुष्यों और जिन्नों के अच्छे शब्दों को जो क़ुरआन से नहीं निकले हैं, एक साथ मिला दिया जाए, तो भी वे क़ुरआन के पवित्र पद को प्राप्त नहीं कर सकते और उसका अनुकरण नहीं कर सकते। अगर आप थोड़ा समझना चाहते हैं कि क़ुरआन किस तरह सबसे बड़े नाम से और हर नाम के सबसे बड़े स्तर से आता है, तो आयत अल- कुरसी और निम्नलिखित आयतों के सार्वभौमिक, उच्च कथनों पर विचार करें:

और उसी के पास ग़ैब की कुंजियाँ हैं। (सूरा अल-अनआम 6:59)
हे ईश्वर! सारे साम्राज्य का स्वामी। (अल-इमरान 3:26)
उसने रात को दिन के ऊपर पर्दा बना दिया, और दिन एक दूसरे की तलाश में लग गए। उसी ने सूर्य, चंद्रमा और सितारों को पैदा किया, जो सब उसके आदेश के अधीन हैं। (अल-आराफ 7:54)

हे धरती, अपना पानी निगल जा! और हे आकाश, अपनी बारिश रोक ले!
(हूद 11:44)
आकाश और पृथ्वी और उनमें जो कुछ है, वे सब उसकी स्तुति और महिमा करते हैं उसे। (अल-इज़राइल 17:44)
तुम्हारी रचना और तुम्हारा पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान है। निस्संदेह अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है।
(लुकमान 31:28)

हमने अमानत आकाशों और धरती की ओर पेश की, और
पहाड़। (अल-अहज़ाब 33:72)
जिस दिन हम आकाश को लपेट देंगे जैसे पुस्तकों के लिए लपेटा गया हो। (अल-अंबिया 21:104)

उन्होंने अल्लाह के विषय में कोई ऐसा उचित मूल्यांकन नहीं किया जो उसके लिए उचित हो। प्रलय के दिन सारी धरती उसके मुट्ठी भर लोगों के समान होगी।
(अल-ज़ुमर 39:67)

अगर हम इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर उतारते तो तुम उसे झुकते हुए देखते और अल्लाह के भय से टुकड़े-टुकड़े हो जाते। हम ऐसी मिसालें लोगों को इसलिए देते हैं ताकि वे इस पर विचार करें कि (क़ुरआन लोगों पर क्यों उतारा जा रहा है और उनकी ज़िम्मेदारी कितनी बड़ी और महत्वपूर्ण है) (अल-हश्र 59:21)

और उन सूरहों का अध्ययन करें जो अल-हम्दुलिल्लाह या तुसब्बिहु से शुरू होती हैं, और इस महान रहस्य की किरणों को देखें। अलिफ़ लाम के उद्घाटनों को भी देखें।
मीम, अलिफ लाम, रा, और हा मीम की शिक्षाओं को पढ़ें और ईश्वर की दृष्टि में कुरान के महत्व को समझें।

यदि आप इस चौथे सिद्धांत के मूल्यवान रहस्य को समझ गए हैं, तो आप समझ गए होंगे कि पैगंबरों के पास रहस्योद्घाटन ज्यादातर एक माध्यम से आता है
देवदूत और प्रेरणा ज्यादातर बिना किसी साधन के होती है। आप यह भी समझ गए होंगे कि महानतम संत पैगंबर के स्तर तक क्यों नहीं पहुंच पाते। और
आप कुरान की महानता, इसकी पवित्र महिमा और इसकी उच्च चमत्कारिकता के रहस्य को भी समझ गए होंगे। इसी तरह आप पैगंबर मुहम्मद के स्वर्गारोहण की आवश्यकता के रहस्य को भी समझ गए होंगे, यानी कि उनका स्वर्ग में जाना, सबसे दूर के लोटे के पेड़ पर जाना ,

दो कमान की दूरी पर, उस महान सर्वशक्तिमान से प्रार्थना की, जो उसके गले की नस से भी अधिक निकट है, और पलक झपकते ही वह जहाँ से आया था, वहीं लौट गया। वास्तव में, जिस प्रकार चंद्रमा का फटना उसके पैगम्बर होने का एक चमत्कार था, जिसके द्वारा उसने अपनी पैगम्बरी होने का प्रमाण दिया।

इसलिए स्वर्गारोहण उनकी ईश्वर के प्रति आराधना और दासता का एक चमत्कार था जिसके द्वारा उन्होंने आत्माओं और फ़रिश्तों को दिखाया कि वे ईश्वर के प्रिय थे।

हे ईश्वर, अपनी दया और आदर के अनुरूप उन्हें और उनके परिवार को आशीर्वाद और शांति प्रदान करें। आमीन।

बिस्मिल्लाह का गुण

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु है, कृपालु है और उसी से हम सहायता मांगते हैं।

सारी प्रशंसा ईश्वर के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है, तथा हमारे स्वामी मुहम्मद तथा उनके समस्त परिवार और साथियों पर आशीर्वाद और शांति हो।

बिस्मिल्लाह, "ईश्वर के नाम पर" सभी अच्छी चीजों की शुरुआत है। हमें भी इसी से शुरुआत करनी चाहिए। हे मेरी आत्मा, जान लो! जिस तरह यह मुबारक वाक्य इस्लाम की निशानी है,
इसी तरह यह सभी प्राणियों द्वारा अपनी स्वभावगत जीभों के माध्यम से निरंतर पढ़ा जाता है। यदि आप जानना चाहते हैं कि बिस्मिल्लाह कितनी अक्षय शक्ति है, कितना अनंत स्रोत है, तो निम्नलिखित कहानी सुनें जो तुलना के रूप में है। यह इस प्रकार है:

अरब के रेगिस्तानों से होकर यात्रा करने वाले को एक कबीलाई सरदार के नाम से यात्रा करनी पड़ती है और उसके संरक्षण में प्रवेश करना पड़ता है, क्योंकि इस तरह वह डाकुओं के हमलों से बच सकता है और अपनी ज़रूरतें पूरी कर सकता है। वह अपने आप असंख्य दुश्मनों और ज़रूरतों के सामने मर जाएगा। और इसलिए, दो आदमी ऐसी यात्रा पर निकले और रेगिस्तान में प्रवेश किया। उनमें से एक विनम्र था

और विनम्र, दूसरा अभिमानी और अभिमानी। विनम्र व्यक्ति ने एक आदिवासी सरदार का नाम धारण कर लिया, जबकि अभिमानी व्यक्ति ने ऐसा नहीं किया। पहला जहाँ भी जाता, सुरक्षित यात्रा करता। अगर उसे डाकुओं का सामना करना पड़ता, तो वह कहता: "मैं फलां आदिवासी सरदार के नाम पर यात्रा कर रहा हूँ," और वे उसे परेशान नहीं करते। अगर वह कुछ तंबुओं में आता, तो नाम के कारण उसके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाता। लेकिन अभिमानी व्यक्ति को अपनी पूरी यात्रा में अवर्णनीय विपत्तियों का सामना करना पड़ा। वह हर चीज़ के सामने काँपता था और हर चीज़ से भीख माँगता था। वह अपमानित था और तिरस्कार का पात्र बन गया था।

मेरी गर्वित आत्मा! तुम यात्री हो, और यह संसार एक रेगिस्तान है। तुम्हारी नपुंसकता और दरिद्रता की कोई सीमा नहीं है, और तुम्हारे शत्रु और आवश्यकताएं अनंत हैं। चूँकि ऐसा है, इसलिए रेगिस्तान के पूर्व-शाश्वत शासक और पर-शाश्वत स्वामी का नाम लो और पूरे ब्रह्मांड के सामने भीख मांगने और हर घटना के सामने कांपने से बचो।

हाँ, यह वाक्य इतना धन्य खजाना है कि आपकी असीम नपुंसकता और गरीबी आपको असीम शक्ति और दया से बांध देती है; यह आपकी नपुंसकता और गरीबी को सर्वशक्तिमान और दयालु के दरबार में सबसे स्वीकार्य मध्यस्थ बनाती है। जो व्यक्ति यह कहते हुए कार्य करता है, "ईश्वर के नाम पर,"

सेना में भर्ती होने वाले व्यक्ति जैसा दिखता है। वह सेना के नाम पर काम करता है
सरकार; उसे किसी का डर नहीं है; वह बोलता है, करता है

हर मामले में, और कानून और सरकार के नाम पर हर चीज का विरोध करता है।

शुरुआत में हमने कहा था कि सभी प्राणी स्वभाव की जीभ से "ईश्वर के नाम पर" कहते हैं। क्या यह सच है?

सचमुच, ऐसा ही है। यदि आप देखें कि एक भी व्यक्ति आया था और
यदि कोई व्यक्ति किसी शहर के सभी निवासियों को बलपूर्वक एक स्थान पर ले जाकर काम करने के लिए मजबूर करता है, तो आप निश्चिंत हो जाएंगे कि वह व्यक्ति अपने नाम पर और अपनी शक्ति से काम नहीं कर रहा था, बल्कि वह एक सैनिक था, जो सरकार के नाम पर काम कर रहा था और राजा की शक्ति पर निर्भर था।

उसी तरह, सभी चीजें सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर कार्य करती हैं, मिनट के लिए
बीज और अनाज जैसी चीजें अपने सिर पर बड़े-बड़े पेड़ रखती हैं; वे पहाड़ों की तरह बोझ उठाती हैं। इसका मतलब है कि सभी पेड़ कहते हैं: “ईश्वर के नाम पर” दया के खजाने से अपने हाथ भरते हैं, और उन्हें हमें अर्पित करते हैं। सभी बगीचे कहते हैं: “ईश्वर के नाम पर,” और दिव्य शक्ति की रसोई से कड़ाहे बन जाते हैं जिसमें विभिन्न प्रकार के विभिन्न खाद्य पदार्थ पकाए जाते हैं। गाय, ऊँट, भेड़ और बकरी जैसे सभी धन्य जानवर कहते हैं: “ईश्वर के नाम पर,” और दया की प्रचुरता से दूध के झरने पैदा करते हैं, जो हमें प्रदाता के नाम पर जीवन के जल जैसा सबसे नाजुक और शुद्ध भोजन प्रदान करते हैं। पौधों, पेड़ों और घासों की रेशम जैसी मुलायम जड़ें और जड़ें कहती हैं: “ईश्वर के नाम पर,” और कठोर चट्टान और धरती को भेदती और पार करती हैं।

ईश्वर का नाम, परम दयालु का नाम लेते ही सब कुछ उनके अधीन हो जाता है। जड़ें कठोर चट्टानों और धरती में फैलकर उतनी ही आसानी से फल देती हैं, जितनी आसानी से शाखाएं हवा में फैलकर फल देती हैं और नाजुक हरी पत्तियां अपनी नमी को बरकरार रखती हैं।

महीनों तक भीषण गर्मी में रहने के बाद, प्रकृतिवादियों के मुंह पर तमाचा मारो और उनकी अंधी आंखों में उंगली डालकर कहो: "यहां तक कि गर्मी और कठोरता, जिस पर तुम सबसे अधिक भरोसा करते हो, एक आदेश के अधीन हैं। क्योंकि मूसा के कर्मचारी की तरह, उनमें से प्रत्येक रेशमी जड़ आदेश के अनुरूप है, और हमने कहा, हे

हे मूसा, अपनी लाठी चट्टान पर मारो (अल-बक़रा 2:60) और चट्टान को चीर दो।
और सिगरेट के कागज़ की तरह महीन नाजुक पत्तियाँ आग की गर्मी के विरुद्ध आयत "ऐ आग" पढ़ती हैं, हमने आदेश दिया, "इब्राहीम के लिए ठंडी और शांतिपूर्ण हो!" (अल-अंबिया 21:69) , प्रत्येक इब्राहीम के सदस्यों की तरह है, शांति और आशीर्वाद उस पर हो।

चूँकि सभी चीज़ें कहती हैं: "ईश्वर के नाम पर," और ईश्वर के नाम पर ईश्वर की कृपा को धारण करते हुए, उन्हें हमें दे दो, इसलिए हमें भी कहना चाहिए: "ईश्वर के नाम पर।" हमें ईश्वर के नाम पर देना चाहिए, और ईश्वर के नाम पर लेना चाहिए। और हमें उन लापरवाह लोगों से नहीं लेना चाहिए जो ईश्वर के नाम पर देने में लापरवाही करते हैं।

प्रश्न: हम उन लोगों को कीमत देते हैं, जो थाली ढोने वाले की तरह हैं। तो परमेश्वर क्या कीमत चाहता है, सच्चा मालिक कौन है?

उत्तर: हाँ, उन मूल्यवान उपहारों और वस्तुओं के बदले में सच्चा वरदानदाता तीन चीज़ें चाहता है: एक है स्मरण, दूसरा है धन्यवाद, और तीसरा है मनन। शुरू में "ईश्वर के नाम पर" कहना स्मरण है, और अंत में "ईश्वर की स्तुति हो" कहना धन्यवाद है। और उन वरदानों को समझना और उनके बारे में सोचना, जो कला के अमूल्य चमत्कार हैं, अद्वितीय और शाश्वत रूप से चाहने वाले की शक्ति के चमत्कार और उनकी दया के उपहार हैं, मनन है। राजा का अनमोल उपहार आपको देने वाले एक तुच्छ व्यक्ति के पैर चूमना और उपहार के मालिक को न पहचानना चाहे कितनी भी मूर्खता क्यों न हो, उससे हज़ार गुना ज़्यादा मूर्खता है

कृपा के प्रत्यक्ष स्रोत की प्रशंसा और प्रेम करो तथा कृपा के सच्चे दाता को भूल जाओ।

हे मेरे मन! यदि तुम इस तरह से मूर्ख नहीं बनना चाहते, तो भगवान के नाम पर दो, भगवान के नाम पर लो, भगवान के नाम पर शुरू करो, और भगवान के नाम पर कार्य करो। और संक्षेप में यही बात है!

अध्याय 8

भाईचारा, लालच, दुश्मनीऔर
चुगली करना

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

ईमान वाले तो भाई-भाई हैं, अतः आपस में सुलह करा दो। भाइयो, और परमेश्वर के प्रति श्रद्धा और धर्मपरायणता में उसकी अवज्ञा से दूर रहो (विशेषकर एक दूसरे के प्रति अपने कर्तव्यों में) हे भाइयों, ताकि तुम पर दया की जाए (और तुम्हें व्यक्तिगत रूप से और समुदाय के रूप में दुनिया में एक अच्छा, पुण्य जीवन प्रदान किया जाए और परलोक में शाश्वत सुख प्रदान किया जाए)। (अल-हुजुरात 49:10)

भलाई और बुराई कभी बराबर नहीं हो सकती। बुराई को बेहतर (या सर्वोत्तम) चीज़ से दूर करो। फिर देखो कि जिसके और तुम्हारे बीच दुश्मनी थी, वह तुम्हारा जिगरी दोस्त बन गया है। (फ़ुस्सिलात 41:34)

वे (खुदा ने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें से) सुख-चैन और कठिनाई दोनों में खर्च करते हैं, हमेशा अपने क्रोध को नियंत्रित रखते हैं (भले ही वे भड़के हों और बदला लेने में सक्षम हों), और लोगों को (उनके अपराधों को) क्षमा करते हैं। अल्लाह ऐसे लोगों से प्रेम करता है जो भलाई करने में समर्पित हैं, और जानते हैं कि अल्लाह उन्हें देख रहा है। (अल-इमरान 3:134)

बिरादरी

विश्वासियों के बीच विवाद और मतभेद, तथा पक्षपात, हठ और ईर्ष्या, जो उनके बीच विद्वेष और शत्रुता को जन्म देती है, घृणित और निकृष्ट हैं, हानिकारक और पापपूर्ण हैं, यह ज्ञान और परमपिता परमेश्वर की संयुक्त गवाही से प्रमाणित होता है।
इस्लाम मानवता के लिए व्यक्तिगत, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन का आधार है। संक्षेप में, वे मनुष्य के जीवन के लिए ज़हर हैं। हम इस सत्य के अत्यंत असंख्य पहलुओं में से छह को प्रस्तुत करेंगे।

पहला पहलू

सत्य की दृष्टि से वे पापी हैं।

हे अन्यायी मनुष्य, जो एक आस्तिक के विरुद्ध द्वेष और शत्रुता पालता है! मान लीजिए कि आप एक जहाज़ या एक घर में हैं, जिसमें नौ निर्दोष लोग और एक अपराधी है। अगर कोई उस अपराधी की वजह से जहाज़ को डुबाने या घर को आग लगाने की कोशिश करे, तो आप जानते हैं कि वह कितना बड़ा पापी होगा। आप उसके पाप के खिलाफ़ स्वर्ग से रोएँगे। अगर जहाज़ पर एक निर्दोष व्यक्ति और नौ अपराधी भी हों, तो भी उसे डुबाना न्याय के सभी नियमों के विरुद्ध होगा।

इसी प्रकार, यदि किसी आस्तिक के व्यक्तित्व में भी ऐसी बातें हैं, जिनकी तुलना किसी मसीही से की जा सकती है।
प्रभु के निवास, ईश्वरीय जहाज, नौ नहीं, बल्कि बीस निर्दोष गुण जैसे कि ईमान, इस्लाम और पड़ोसीपन; और यदि आप उसके विरुद्ध द्वेष और शत्रुता का पोषण किसी एक आपराधिक गुण के कारण करते हैं जो आपको नुकसान पहुंचाता है और अप्रसन्न करता है, उसके अस्तित्व को डुबाने या उसके घर को जलाने का प्रयास करते हैं या चाहते हैं, तो आप भी एक महान अपराधी होंगे

अत्याचार.

दूसरा पहलू

वे बुद्धि की दृष्टि से भी पापपूर्ण हैं, क्योंकि यह स्पष्ट है कि शत्रुता और प्रेम विपरीत हैं, ठीक वैसे ही जैसे प्रकाश और अंधकार; अपने-अपने सार को बनाए रखते हुए, उन्हें संयुक्त नहीं किया जा सकता।

अगर किसी दिल में प्यार सच में पाया जाता है, तो उसे पैदा करने वाले कारणों की प्रधानता के कारण, तो उस दिल में दुश्मनी सिर्फ़ प्रतीकात्मक हो सकती है, और वह करुणा का रूप ले लेती है। मोमिन अपने भाई से प्यार करता है और उसे प्यार करना चाहिए, और उसमें कोई भी बुराई देखकर दुखी होता है। वह उसे कठोरता से नहीं बल्कि कोमलता से सुधारने की कोशिश करता है। यही वजह है कि पैगंबर की हदीस में कहा गया है, "किसी मोमिन को दूसरे पर गुस्सा नहीं करना चाहिए और उससे तीन दिन से ज़्यादा बात नहीं करनी चाहिए।"82

यदि शत्रुता उत्पन्न करने वाले कारण प्रबल हो जाएं, तथा किसी हृदय में सच्ची शत्रुता अपना स्थान बना ले, तो उस हृदय में प्रेम प्रतीकात्मक हो जाएगा, तथा बनावटीपन और चापलूसी का रूप ले लेगा।

हे अन्यायी मनुष्य! अब देखिये कि दुष्टों के प्रति द्वेष और शत्रुता रखना कितना बड़ा पाप है।
भाई विश्वासी! यदि आप कहें कि साधारण छोटे पत्थर अधिक हैं

---

[82] बुखारी, अदब, 57, 62; इस्ति'धन, 9; मुस्लिम, बीर, 23, 25, 26; अबू दाऊद, अदब, 47; तिर-मिधि, बिर्र, 21, 24; इब्न माजाह, मुक़द्दिमा, 7; मुसनद, आई, 176, 183; iii, 110, 165, 199, 209, 225; चतुर्थ, 20, 327, 328; वी, 416, 421, 422।

मक्का में काबा से भी अधिक मूल्यवान और अल-मदीना में उहुद पर्वत से भी अधिक महान, यह एक बदसूरत मूर्खता होगी। इसी तरह, ईमान जिसका मूल्य काबा के बराबर है, और इस्लाम जिसमें उहुद पर्वत की महिमा है, साथ ही अन्य इस्लामी विशेषताएँ हैं, प्रेम और सद्भाव की माँग करते हैं; लेकिन अगर आप ईमान और इस्लाम के बजाय कुछ ऐसी कमियों को प्राथमिकता देते हैं जो शत्रुता को जन्म देती हैं, लेकिन वास्तव में छोटे पत्थरों की तरह हैं, तो आप भी बहुत बड़ा अन्याय, मूर्खता और पाप कर रहे होंगे!

आस्था की एकता के लिए दिलों की एकता भी ज़रूरी है और हमारे धर्म की एकता के लिए हमारे समाज की एकता भी ज़रूरी है। आप इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि अगर आप किसी के साथ एक ही रेजिमेंट में हैं, तो आप उसके साथ दोस्ताना रिश्ता बना लेंगे; एक ही कमांडर के हुक्म के मुताबिक आप दोनों के होने से भाईचारे का रिश्ता बन जाएगा। इसी तरह आप किसी के साथ एक ही शहर में रहने से भाईचारे का रिश्ता महसूस करेंगे। अब एकता के बंधन, मिलन के बंधन और भाईचारे के रिश्ते उतने ही हैं जितने ईश्वरीय नाम हैं जो आस्था की रोशनी और चेतना के ज़रिए आपको दिखाए और दिखाए जाते हैं। आपका निर्माता, मालिक, पूजा की वस्तु और प्रदाता आप दोनों के लिए एक ही है; हज़ारों चीज़ें आपके लिए एक ही हैं। आपका पैगंबर, आपका धर्म, आपका क़िबला एक ही है; सैकड़ों चीज़ें आपके लिए एक ही हैं। फिर आपका गाँव एक है, आपका राज्य एक है, आपका देश एक है; दसियों चीज़ें आपके लिए एक ही हैं। ये सभी चीज़ें एकता और एकता, मिलन और सामंजस्य, प्रेम और भाईचारे को निर्देशित करती हैं, और वास्तव में ब्रह्मांड और ग्रह भी अदृश्य जंजीरों से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। अगर, इन सबके बावजूद, आप मकड़ी के जाले की तरह बेकार और क्षणभंगुर चीज़ों को पसंद करते हैं जो विवाद और कलह को जन्म देती हैं, द्वेष और दुश्मनी को, और एक आस्तिक के प्रति सच्ची दुश्मनी करते हैं, तो आप समझ जाएँगे - जब तक कि आपका दिल मर न जाए और आपकी बुद्धि बुझ न जाए - एकता के उस बंधन के प्रति आपका कितना बड़ा अनादर है, प्रेम के उस रिश्ते के प्रति आपका अपमान, आपका अपराध

भाईचारे के उस बंधन के खिलाफ!

तीसरा पहलू

आयत के अर्थ के अनुसार, कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठा सकता (अल-अनआम 6:164) जो शुद्ध न्याय को व्यक्त करता है, एक मोमिन के प्रति विद्वेष और शत्रुता को बढ़ावा देना एक अपराधी विशेषता के कारण उसमें पाए जाने वाले सभी निर्दोष गुणों की निंदा करने जैसा है, और इसलिए यह बहुत बड़ा अन्याय है। यदि आप आगे बढ़ते हैं और इसमें शामिल करते हैं

यदि तुम किसी मोमिन के सभी रिश्तेदारों से उसकी एक ही बुराई के कारण दुश्मनी करते हो, तो, निम्नलिखित आयत के अनुसार जिसमें सक्रिय कृदंत गहन रूप में है, वास्तव में मनुष्य बहुत अधिक गलत काम करने के लिए प्रवृत्त है (इब्राहीम 14:34) तो तुमने और भी बड़ा पाप और अपराध किया है, जिसके विरुद्ध सत्य, शरीयत और इस्लाम की बुद्धि तुम्हें चेतावनी देने के लिए एक साथ आती है। फिर तुम कैसे अपने आप को सही मान सकते हो, और कह सकते हो: "मैं सही हूँ"?

सत्य के दृष्टिकोण से, शत्रुता और सभी प्रकार की बुराई का कारण स्वयं बुराई है और मिट्टी की तरह सघन है: यह दूसरों को संक्रमित या हस्तांतरित नहीं कर सकता है। यदि कोई इससे सीखता है और बुराई करता है, तो यह एक और सवाल है। प्रेम को जगाने वाले अच्छे गुण प्रेम की तरह ही चमकदार होते हैं; संचारित होना और प्रभाव पैदा करना उनके कार्य का हिस्सा है। यही कारण है कि कहावत अस्तित्व में आई है, "मित्र का मित्र मित्र होता है," और यह भी कहा जाता है, "एक आँख के कारण कई आँखें प्यारी होती हैं।"

अतः हे अन्यायी मनुष्य! यदि सत्य के विषय में ऐसी ही दृष्टि है, तो यदि तुममें सत्य को देखने की क्षमता है, तो तुम अब समझ जाओगे कि जिस व्यक्ति को तुम नापसंद करते हो, उसके प्रिय तथा निर्दोष भाई-बन्धुओं के प्रति शत्रुता रखना कितना बड़ा अपराध है।

चौथा पहलू

व्यक्तिगत जीवन की दृष्टि से यह पाप है। निम्नलिखित चार सिद्धांत सुनो जो इस चतुर्थ पहलू का आधार हैं।

पहला सिद्धांत: जब आप जानते हैं कि आपका तरीका और राय सही है, तो आपको यह कहने का अधिकार है, "मेरा तरीका सही और सबसे अच्छा है।" लेकिन आपके पास यह कहने का अधिकार नहीं है कि, "मेरा तरीका सही और सबसे अच्छा है।"
यह कहना कि, “केवल मेरा मार्ग ही सही है।” “संतोष की आंख दोषों को देखने में बहुत मंद होती है; यह क्रोध की आंख ही है जो सभी दुर्गुणों को प्रदर्शित करती है” के भाव के अनुसार;83 आपका अन्यायपूर्ण दृष्टिकोण और विकृत राय निर्णायक न्यायाधीश नहीं हो सकता और दूसरे के विश्वास को अमान्य नहीं ठहरा सकता।

दूसरा सिद्धांत: यह आपका अधिकार है कि आप जो कुछ भी कहें वह सच हो, लेकिन यह जरूरी नहीं कि वह सच ही हो।
आपको वही सब कहना चाहिए जो सच है। क्योंकि कपटी इरादे वाला व्यक्ति कभी-कभी सलाह को बुरा मान सकता है और उसके खिलाफ़ प्रतिकूल प्रतिक्रिया कर सकता है।
तीसरा सिद्धांत: यदि आप शत्रुता को बढ़ावा देना चाहते हैं, तो इसे अपने दिल में मौजूद शत्रुता के खिलाफ़ निर्देशित करें, और इससे खुद को मुक्त करने का प्रयास करें। अपने शत्रु के प्रति शत्रु बनो।
बुराई करने वाली आत्मा और उसकी सनक को पहचानें और उसे सुधारने का प्रयास करें, क्योंकि यह
तुम्हें सबसे ज़्यादा नुकसान होगा। किसी के खिलाफ़ दुश्मनी न करें

---

[83] 'अली मावर्दी, अदब अल-दुनिया वा अद-दीन, 10; दीवान अल-शफ़ीई, 91.

उस हानिकारक आत्मा के कारण दूसरे विश्वासियों से दुश्मनी करना। फिर, यदि आप शत्रुता रखना चाहते हैं, तो अविश्वासियों और नास्तिकों की बहुतायत है; उनसे शत्रुता रखें। जिस तरह से प्रेम का गुण प्रेम को अपनी प्रतिक्रिया के रूप में प्राप्त करने के लिए उपयुक्त है, उसी तरह शत्रुता भी शत्रुता को अपनी उचित प्रतिक्रिया के रूप में प्राप्त करेगी।

अगर आप अपने दुश्मन को हराना चाहते हैं, तो उसकी बुराई का जवाब अच्छाई से दो। क्योंकि अगर आप बुराई से जवाब देंगे, तो दुश्मनी बढ़ेगी, और भले ही वह बाहरी तौर पर पराजित हो जाए, लेकिन उसके दिल में नफरत की भावना बनी रहेगी, और दुश्मनी बनी रहेगी। लेकिन अगर आप उसे अच्छाई से जवाब देंगे, तो वह पछताएगा और आपका दोस्त बन जाएगा। इन पंक्तियों का अर्थ: अगर आप नेक लोगों के साथ नेक व्यवहार करेंगे, तो वह आपका दोस्त बन जाएगा।

तुम्हारा, और यदि तुम नीच के साथ अच्छा व्यवहार करोगे, तो वह विद्रोह करेगा, [84] यह इस बात का चिह्न है कि मोमिन को नेक समझो, और नेक व्यवहार से वह तुम्हारे अधीन हो जाएगा। और अगर कोई दिखने में नीच भी हो, तो भी वह अपने ईमान के मामले में नेक है। अक्सर ऐसा होता है कि अगर तुम किसी बुरे आदमी से कहो, “तुम अच्छे हो, तुम अच्छे हो,” तो वह अच्छा बन जाएगा; और अगर तुम किसी अच्छे आदमी से कहो, “तुम बुरे हो, तुम बुरे हो,” तो वह बुरा बन जाएगा। इसलिए, कुरान के इन पवित्र सिद्धांतों पर ध्यान दो, क्योंकि खुशी और सुरक्षा इसी में मिलती है

उन्हें:

> यदि वे व्यर्थता से आगे बढ़ते हैं, तो वे सम्मानजनक उपेक्षा के साथ आगे बढ़ते हैं। (अल-फ़ुरक़ान 25:72)
>
> यदि तुम क्षमा करो, क्षमा करो और तरस खाओ, तो निश्चय ही अल्लाह अत्यन्त तरस खाने वाला, दयावान है। (अत-तग़ाबुन 64:14)

चौथा सिद्धांत: जो लोग द्वेष और शत्रुता रखते हैं, वे अपनी आत्मा, अपने भाई विश्वासी और ईश्वरीय दया के विरुद्ध अपराध करते हैं। ऐसा व्यक्ति अपने द्वेष और शत्रुता के द्वारा अपनी आत्मा को पीड़ादायक पीड़ा में डालता है। जब भी उसके शत्रु को कोई इनाम मिलता है, और उसके भय से पीड़ा होती है, तो वह अपनी आत्मा पर पीड़ा थोपता है। यदि उसकी शत्रुता ईर्ष्या से उत्पन्न होती है, तो यह सबसे गंभीर है

पीड़ा का एक रूप। ईर्ष्या सबसे पहले ईर्ष्या करने वाले को ही नष्ट कर देती है और जिससे ईर्ष्या की जाती है, उसके लिए इसका नुकसान या तो बहुत कम होता है या फिर होता ही नहीं।

ईर्ष्या का इलाज: ईर्ष्यालु व्यक्ति को उन चीज़ों के अंतिम परिणाम पर विचार करना चाहिए जो उसकी शत्रुता को भड़काती हैं। तब वह समझ जाएगा कि उसके प्रतिद्वंद्वी के पास जो सुंदरता, शक्ति, पद और धन है, वह क्षणिक और अस्थाई है। उनका लाभ बहुत कम है, और वे जो चिंता पैदा करते हैं, वह बहुत बड़ी है। यदि यह व्यक्तिगत गुणों का प्रश्न है जो उसे परलोक में पुरस्कार दिलाएंगे, तो वे

ईर्ष्या का विषय नहीं हो सकता। लेकिन अगर कोई किसी के कारण ईर्ष्या करता है

---

[84] मुतनबी, अल-उर्फ अल-तैयब फाई शरह दीवान एट-तैयब, 387 देखें।

उनमें से किसी को भी नहीं पहचानता, तो या तो वह स्वयं पाखंडी है, जो इस संसार में रहते हुए परलोक की वस्तुओं को नष्ट करना चाहता है, या वह उस व्यक्ति को पाखंडी समझता है, जिससे वह ईर्ष्या करता है, और इस प्रकार उसके प्रति अन्याय करता है।

यदि वह अपने दुर्भाग्य पर प्रसन्न होता है और प्राप्त उपहारों से दुःखी होता है, तो यह ऐसा है मानो वह अपने प्रति दिखाए गए दयालुता से नाराज है।
ईश्वरीय निर्धारण और ईश्वरीय दया की आलोचना करते हुए मानो वह उनकी आलोचना कर रहा हो और उन पर आपत्ति जता रहा हो। जो कोई ईश्वरीय निर्धारण की आलोचना करता है, वह अपने सिर को निहाई से टकराता है, जिस पर वह टूट जाएगा, और जो कोई ईश्वरीय दया पर आपत्ति जताता है, वह स्वयं उससे वंचित हो जाएगा।

न्याय और विवेक कैसे स्वीकार कर सकते हैं कि एक दिन की शत्रुता के लायक भी नहीं होने वाली किसी चीज़ के लिए प्रतिक्रिया एक साल की विद्वेष और शत्रुता होनी चाहिए? आप किसी भाई विश्वासी को किसी बुराई के लिए दोषी नहीं ठहरा सकते हैं।
निम्नलिखित कारणों से उन्होंने अपने अनुभव का भरपूर उपयोग किया:

सबसे पहले, ईश्वरीय निर्धारण में जिम्मेदारी का एक निश्चित हिस्सा होता है। उस हिस्से को कुल में से घटाना और संतोष और संतुष्टि के साथ उसका जवाब देना आवश्यक है।

दूसरे, आत्मा और शैतान का हिस्सा भी काट लिया जाना चाहिए, तथा मनुष्य पर दया करनी चाहिए क्योंकि उसकी आत्मा ने उसे पराजित कर दिया है, तथा उसका शत्रु बनने के बजाय उसके पश्चाताप की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

तीसरा, अपनी आत्मा में जो दोष है, उसे देखो, जिसे तुम नहीं देख पाते या देखना नहीं चाहते, उसके लिए भी कुछ हिस्सा काट लो। जो थोड़ा हिस्सा बच जाता है, उसे यदि तुम क्षमा, माफ़ी और उदारता से स्वीकार कर लो, तो वह भी तुम्हारे लिए अच्छा होगा।
अपने शत्रु पर शीघ्रता से और सुरक्षित तरीके से विजय प्राप्त करने का तरीका अपनाएँ, तो आप सभी पापों और हानियों से बच जाएँगे। लेकिन अगर, किसी शराबी और पागल व्यक्ति की तरह जो खरीद लेता है
कांच और बर्फ के टुकड़े मानो हीरे हों, तुम बेकार की बातों पर प्रतिक्रिया देते हो,
इस दुनिया की क्षणभंगुर, अस्थायी और महत्वहीन घटनाओं को हिंसक दुश्मनी, स्थायी विद्वेष और सतत शत्रुता के साथ, मानो आप जा रहे हों
यदि तुम अपने शत्रु के साथ अनंत काल तक संसार में रहो, तो यह घोर अपराध, पाप, मतवालापन और पागलपन होगा।

अगर तुम खुद से प्यार करते हो, तो इस हानिकारक दुश्मनी और बदला लेने की इच्छा को अपने दिल में मत आने दो। अगर यह तुम्हारे दिल में आ गई है, तो इसकी बातों पर ध्यान मत दो। शिराज के सत्यदर्शी हाफ़िज़ क्या कहते हैं, सुनो: "दुनिया कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिस पर बहस की जाए।" यह बेकार है क्योंकि यह क्षणभंगुर और गुज़रने वाली है। अगर यह दुनिया के बारे में सच है, तो यह स्पष्ट है कि दुनिया के छोटे-मोटे मामले कितने बेकार और महत्वहीन हैं! हाफ़िज़ ने यह भी कहा: "दोनों दुनियाओं की शांति इन दो शब्दों की समझ में निहित है: दोस्तों के प्रति उदारता, दुश्मनों के प्रति सहनशीलता।"

प्रश्न: "मेरे पास कोई विकल्प नहीं है, मेरे स्वभाव में शत्रुता है। मैं उन लोगों को अनदेखा नहीं कर सकता जो मेरा विरोध करते हैं।"

उत्तर: यदि दुष्ट चरित्र और बुरे स्वभाव का कोई निशान न दिखे, और आप बुरी नीयत से काम न करें, तो कोई बुराई नहीं है। यदि आपके पास कोई विकल्प न हो, तो आप अपनी दुश्मनी नहीं छोड़ सकते। यदि आप पहचानते हैं कि आप अपनी दुश्मनी से नफरत करते हैं, तो आप अपनी दुश्मनी नहीं छोड़ सकते।

अपने दोष को पहचानें और समझें कि उस विशेषता को अपनाना गलत है, तो यह गलत होगा

यह आपके लिए पश्चाताप और क्षमा मांगने का एक रूप है, जिससे आपको मुक्ति मिलती है

इसके बुरे प्रभावों से बचें। वास्तव में, हमने इस पत्र का विषय इसलिए लिखा है ताकि क्षमा की ऐसी मांग को संभव बनाया जा सके, सही और गलत में अंतर किया जा सके, और दुश्मनी को उचित रूप से प्रदर्शित होने से रोका जा सके।

ध्यान देने योग्य एक मामला: मैंने एक बार देखा कि पक्षपातपूर्ण पक्षपात के परिणामस्वरूप, धर्म के एक पवित्र विद्वान ने दूसरे विद्वान की निंदा में इतना आगे बढ़ गए, जिसके राजनीतिक विचारों से वे असहमत थे, कि उनका तात्पर्य यह था कि वे एक विद्वान थे।

अविश्वासी। उन्होंने एक कपटी व्यक्ति की भी सम्मानपूर्वक प्रशंसा की, जिसने उनके अपने विचार साझा किए। मैं राजनीतिक भागीदारी के इन बुरे परिणामों से स्तब्ध था। मैंने कहा: "मैं शैतान और राजनीति से ईश्वर की शरण लेता हूँ," और उस समय से राजनीति से दूर हो गया।

पांचवां पहलू

सामाजिक जीवन में हठ और पक्षपात अत्यंत हानिकारक हैं।

प्रश्न: एक हदीस में है कि: 'मेरे लोगों के बीच मतभेद ईश्वरीय दया का उदाहरण है,'85 और मतभेद के लिए पक्षपात की आवश्यकता होती है।

पक्षपात की बीमारी भी उत्पीड़ित आम लोगों को मुक्ति दिलाती है

उत्पीड़क अभिजात वर्ग से, क्योंकि अगर किसी शहर या गांव के अभिजात वर्ग एक साथ आ जाएं, तो वे उत्पीड़ित आम लोगों को नष्ट कर देंगे। अगर पक्षपात है, तो उत्पीड़ित व्यक्ति किसी एक पक्ष के पास शरण ले सकता है और इस तरह खुद को बचा सकता है।

विचारों के टकराव और विरोधाभास से ही सत्य अपनी पूरी सीमा तक स्पष्ट होता है।"

प्रश्न के पहले भाग का उत्तर: हदीस में जिस अंतर का इरादा किया गया है, वह सकारात्मक अंतर है। यानी, प्रत्येक पक्ष अपने स्वयं के विश्वास को बढ़ावा देने और फैलाने का प्रयास करता है; वह दूसरे के विश्वास को तोड़ने और नष्ट करने का प्रयास नहीं करता, बल्कि उसे सुधारने और सुधारने का प्रयास करता है। नकारात्मक अंतर को अस्वीकार कर दिया जाता है

हदीस, क्योंकि इसका उद्देश्य पक्षपातपूर्ण और शत्रुतापूर्ण ढंग से पारस्परिक विनाश करना है, और जो लोग एक-दूसरे के गले पर हैं, वे सकारात्मक रूप से कार्य नहीं कर सकते।

[85] अल-अजलुनी, कशफ अल-खफ़ा, 64; अल-मनावी, फ़यद अल-कादिर, i, 210-12।

प्रश्न के दूसरे भाग के बारे में हम कहते हैं: यदि पक्षपात सत्य के नाम पर हो, तो यह अपने अधिकारों की मांग करने वालों के लिए शरणस्थली बन सकता है। लेकिन जहाँ तक पक्षपात का सवाल है, तो यह सत्य के नाम पर पक्षपात करने वालों के लिए शरणस्थली बन सकता है।
पक्षपातपूर्ण और स्वार्थी पक्षपातपूर्ण होने के कारण, यह अन्यायियों के लिए शरणस्थली और उनके लिए सहायता का एक बिन्दु मात्र हो सकता है। क्योंकि यदि कोई शैतान पक्षपातपूर्ण पक्षपात करने वाले व्यक्ति के पास आता है, उसे अपने विचारों में प्रोत्साहित करता है और उसका पक्ष लेता है, तो वह व्यक्ति शैतान पर ईश्वर का आशीर्वाद बरसाएगा। लेकिन यदि विरोधी पक्ष में कोई देवदूत प्रकृति का व्यक्ति शामिल हो जाता है, तो वह - ईश्वर हमारी रक्षा करे! - उस पर शाप लगाने तक चला जाएगा।

प्रश्न के तीसरे भाग के बारे में हम कहते हैं: यदि विचारों का टकराव न्याय के नाम पर और सत्य के लिए होता है, तो मतभेद
इसका सम्बन्ध केवल साधनों से है; उद्देश्य और मूल प्रयोजन के सम्बन्ध में एकता है।
ऐसा अंतर सत्य के हर पहलू को प्रकट करता है और न्याय और सत्य की सेवा करता है। लेकिन विचारों के टकराव से जो उभरता है वह पक्षपातपूर्ण और पक्षपातपूर्ण है, और एक अत्याचारी, दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा के लिए होता है, जो अहंकार और प्रसिद्धि की चाह पर आधारित होता है - इससे जो उभरता है वह 'सत्य की चमक' नहीं है, बल्कि मतभेद की आग है। उद्देश्य की एकता आवश्यक है, लेकिन इस तरह के विरोधी विचार कभी भी अभिसरण का बिंदु नहीं पा सकते हैं

पृथ्वी पर कहीं भी। चूँकि वे सत्य के लिए भिन्न नहीं होते, वे अनंत तक बढ़ते हैं, और मतभेदों को जन्म देते हैं जिन्हें कभी भी हल नहीं किया जा सकता
मेलमिलाप हुआ।

संक्षेप में, यदि कोई व्यक्ति अपने आचरण के मार्गदर्शक सिद्धांतों, "ईश्वर के लिए प्रेम, ईश्वर के लिए नापसंद, ईश्वर के लिए न्याय"86 जैसे महान नियमों को नहीं अपनाता है, तो विवाद और कलह उत्पन्न होंगे। यदि कोई व्यक्ति यह नहीं कहता है, "ईश्वर के लिए नापसंद, ईश्वर के लिए न्याय" और उन सिद्धांतों का उचित ध्यान नहीं रखता है, तो न्याय करने के उसके प्रयासों का परिणाम अन्याय होगा।

एक महत्वपूर्ण सबक वाली घटना: इमाम अली, अल्लाह उनसे खुश हो, ने एक बार एक काफिर को जमीन पर पटक दिया। जब उन्होंने उसे मारने के लिए अपनी तलवार निकाली, तो काफिर ने उनके चेहरे पर थूक दिया। उन्होंने उसे मारे बिना ही छोड़ दिया। काफिर ने कहा: “तुमने मुझे क्यों नहीं मारा?” उसने जवाब दिया: “मैं तो मारने ही वाला था

भगवान के लिए। लेकिन जब तुमने मुझ पर थूका, तो मैं क्रोधित हो गया और
मेरे इरादे की पवित्रता मेरी आत्मा की प्रवृत्तियों से धूमिल हो गई थी। यह इस कारण है
यही कारण है कि मैंने तुम्हें नहीं मारा।” अविश्वासी ने उत्तर दिया: “यदि आपका धर्म इतना शुद्ध और निःस्वार्थ है, तो यह सत्य ही होगा।”
एक घटना ध्यान देने योग्य है: एक बार जब एक न्यायाधीश ने एक चोर का हाथ काटते समय क्रोध के लक्षण प्रदर्शित किए, तो न्यायप्रिय शासक, जो संयोगवश वहां पहुंचा, ने उसे पकड़ लिया।

---

[86] बुखारी, आस्था, 1; अबू दाऊद, सुन्नत, 2; मुसनद, वी, 146।

उसे अपने पद से हटाते हुए देखो। क्योंकि अगर उसने शरिया के नाम पर हाथ काटा होता, तो उसकी आत्मा को पीड़ित पर दया आती; उसने उसे क्रोध और दया दोनों से रहित तरीके से काटा होता। चूँकि उसकी आत्मा की प्रवृत्ति ने उसके काम में कुछ हिस्सा लिया था, इसलिए उसने न्याय के साथ काम नहीं किया।

एक खेदजनक सामाजिक स्थिति और समाज के जीवन को प्रभावित करने वाली एक भयानक बीमारी, जिस पर इस्लाम के हृदय को रोना चाहिए, वह है आंतरिक शत्रुओं को भूल जाना और त्याग देना, जब विदेशी शत्रु प्रकट होते हैं और आक्रमण होता है, तो यह सामाजिक कल्याण की एक मांग है जिसे सबसे आदिम लोगों द्वारा भी मान्यता प्राप्त है और लागू किया जाता है।

फिर जो लोग इस्लामी कौम की सेवा करने का दावा करते हैं, उन्हें क्या हो गया है कि जब असंख्य दुश्मन एक के बाद एक हमला करने के लिए मोर्चा संभाल रहे हैं, तब वे अपनी छोटी-मोटी दुश्मनी भूल जाते हैं और दुश्मनों के हमलों के लिए जमीन तैयार करते हैं? यह इस्लाम के सामाजिक जीवन के खिलाफ एक शर्मनाक बर्बरता और देशद्रोह है।

एक कहानी जिस पर विचार किया जाना चाहिए: हसनान नामक खानाबदोश जनजाति के दो समूह थे, जो एक दूसरे के विरोधी थे। हालाँकि दोनों पक्षों के पचास से ज़्यादा लोग मारे गए थे, लेकिन जब सिबगान या हैदरन जैसी कोई दूसरी जनजाति उनके खिलाफ़ आई, तो वे दोनों शत्रु समूह अपनी दुश्मनी भूल गए और कंधे से कंधा मिलाकर तब तक लड़े, जब तक कि विरोधी जनजाति को खदेड़ नहीं दिया गया, बिना एक बार भी अपने अंदरूनी मतभेदों को याद किए।

ऐ ईमान वालो! क्या तुम जानते हो कि ईमान वालो के कबीलों पर हमला करने के लिए दुश्मनों की कितनी जमातें खड़ी हैं? उनकी संख्या सौ से ज़्यादा है, जो एक के बाद एक कई वृत्तों की शृंखला की तरह हैं। ईमान वालो पर यह फर्ज है कि वे अपने दुश्मनों को उनके सामने पेश करें।
रक्षात्मक स्थिति में खड़े होकर, एक दूसरे का समर्थन करते हुए और उसकी मदद करते हुए। तो क्या यह आस्था रखने वालों के लिए उचित है कि वे अपने पक्षपातपूर्ण पक्षपात और शत्रुतापूर्ण विद्वेष के साथ दुश्मन के हमले में मदद करें और इस्लाम के दायरे में घुसने के लिए उसके लिए दरवाजे खोल दें? दुश्मनों के शायद सत्तर घेरे हैं, जिनमें गुमराह, नास्तिक,

और काफ़िरों को, उनमें से हर एक तुम्हारे लिए इस दुनिया के सभी आतंक और दुखों के समान हानिकारक है, और उनमें से हर एक तुम्हारे लिए लालच, क्रोध और घृणा के साथ देखता है। उन सभी के खिलाफ तुम्हारा दृढ़ हथियार, ढाल और गढ़ कोई नहीं है

इस्लाम के भाईचारे के अलावा अन्य। तो समझिए कि यह कितना विपरीत है
अंतरात्मा की आवाज और इस्लाम के हितों के लिए यह इस्लाम के किले को हिलाना है

छोटी-मोटी दुश्मनी और दूसरे बहानों का हिसाब! यह जान लो, और अपने पास आओ
होश!

पैगंबर मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की एक महान हदीस के अनुसार, दज्जाल87 और सुफियान88 जैसे खतरनाक और भयानक व्यक्ति दुनिया पर शासन करने आएंगे।

यदि वे अंततः नास्तिक हो जाएंगे, तथा मुसलमानों और मानव जाति के बीच लालच, मतभेद और घृणा का फायदा उठाएंगे, तो मानवता को अराजकता की ओर तथा इस्लाम की विशाल दुनिया को गुलामी की ओर ले जाने के लिए उन्हें केवल एक छोटी सी ताकत की आवश्यकता होगी।

ऐ ईमान वालो! अगर तुम अपमानजनक हालत में नहीं जाना चाहते

गुलामी, अपने होश में आओ और प्रवेश करो और उस गढ़ में शरण लो, वास्तव में ईमान वाले भाई-भाई हैं (अल-हुजुरात 49:10) ताकि उन अत्याचारियों से अपनी रक्षा करो जो तुम्हारे मतभेदों का फायदा उठाना चाहते हैं! अन्यथा तुम न तो अपनी जान की रक्षा कर सकोगे और न ही अपने अधिकारों की रक्षा कर सकोगे। यह स्पष्ट है कि यदि

दो महारथी आपस में कुश्ती लड़ रहे हैं, तो एक बच्चा भी उन्हें हरा सकता है। अगर दो पहाड़ तराजू में संतुलित हों, तो एक छोटा सा पत्थर भी उनके संतुलन को बिगाड़ सकता है और एक को ऊपर और दूसरे को नीचे गिरा सकता है। अतः ऐ ईमान वालों!

आपकी भावनाएं और पक्षपातपूर्ण रवैये के कारण आपकी ताकत खत्म हो जाती है।

पक्षपातपूर्ण, और आप छोटी-छोटी ताकतों से पराजित हो सकते हैं। यदि आपको अपनी सामाजिक एकजुटता में कोई दिलचस्पी है, तो "विश्वासी एक साथ एक अच्छी तरह से स्थापित इमारत की तरह हैं, जिसका एक हिस्सा दूसरे को सहारा देता है"89 के महान सिद्धांत को अपने जीवन में मार्गदर्शक सिद्धांत बनाएं! तब आप सफल होंगे

इस दुनिया में अपमान और परलोक में दुःख से मुक्ति।

छठा पहलू

शत्रुता और शत्रुता के परिणामस्वरूप आध्यात्मिक जीवन और उपासना की शुद्धता को नुकसान पहुंचेगा।

द्वेष, क्योंकि नीयत की शुद्धता जो मोक्ष का साधन है, नष्ट हो जाएगी। क्योंकि पक्षपाती व्यक्ति अपने द्वारा किए गए अच्छे कार्यों में अपने शत्रु से श्रेष्ठता की इच्छा करेगा और वह विशुद्ध रूप से ईश्वर के लिए कार्य करने में असमर्थ होगा। वह अपने निर्णय और व्यवहार में भी उसी को प्राथमिकता देगा जो उसका पक्ष लेता है; वह न्यायपूर्ण होने में असमर्थ होगा। इस प्रकार नीयत की शुद्धता और न्याय जो सभी अच्छे कार्यों और कर्मों का आधार है, शत्रुता और शत्रुता के कारण नष्ट हो जाएगा।

छठा पहलू अत्यंत जटिल है, लेकिन हम इसे यहीं संक्षिप्त कर देंगे क्योंकि

यह इस पर विस्तार से चर्चा करने का स्थान नहीं है।

---

[87] अल-दज्जाल, मसीह विरोधी, यीशु का कट्टर विरोधी है। वह यीशु के खिलाफ विद्रोह करने वाला व्यक्ति है ईश्वरीय रहस्योद्घाटन और पैगंबर। ज़ेकी सरितोप्राक, 'इस्लाम का यीशु', (2014) 94 देखें।

[88] सुफियान एक अधार्मिक व्यक्ति है, जिसके बारे में माना जाता है कि वह मुसलमानों के बीच धर्म को नष्ट करने की कोशिश में उभरा है। इस्लाम.

[89] बुखारी, सलाह, 88; अदब, 36; मज़ालिम, 5; मुस्लिम, बीर, 65; तिर्मिधि, बीर, 18; नसाई, ज़कात, 67; मुसनद, vi, 104, 405, 409।

लालच

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

निस्संदेह अल्लाह ही अत्यन्त प्रदत्तकर्ता, प्रभुत्वशाली, अत्यन्त प्रभावशाली है। (सूरा अज़-ज़रियात 51:58)

ऐसे कितने जीव हैं जो अपना सामान नहीं ढोते
(हे प्रभु! वे तो अपने पास कुछ नहीं रखते, परन्तु अल्लाह ही उन्हें रोज़ी देता है, और तुम्हें भी देता है।)
वह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है। (सूरा अन्कबूत 29:60)

ऐ ईमान वालो! अब तक तो तुम समझ ही गए होगे कि दुश्मनी कितनी नुकसानदेह होती है।
यह भी समझ लीजिए कि लालच एक और भयानक बीमारी है, जो इस्लाम के जीवन के लिए दुश्मनी की तरह ही हानिकारक है। लालच निराशा, कमी और अपमान लाता है; यह अभाव और अपमान का कारण है। यहूदियों का अपमान और अपमान, जिन्होंने किसी भी अन्य लोगों की तुलना में दुनिया पर लालच से छलांग लगाई है, इस सत्य का एक निर्णायक प्रमाण है। लालच पूरी दुनिया में अपने बुरे प्रभावों को प्रदर्शित करता है, सबसे सार्वभौमिक प्रजातियों से लेकर सबसे खास व्यक्तियों तक। इसके विपरीत, ईश्वर पर भरोसा रखते हुए अपने जीवन की तलाश करना, शांति लाएगा और हर जगह इसके लाभकारी प्रभावों को प्रदर्शित करेगा।

इस प्रकार, फलदार वृक्ष और पौधे, जो जीवित प्राणियों की एक प्रजाति हैं, जहां तक उन्हें पोषण की आवश्यकता होती है, वे जहां हैं, वहां संतुष्ट होकर जड़ें जमाए रहते हैं, जिससे उन्हें पोषण मिलता है।
भगवान पर उनका भरोसा और किसी भी तरह का लालच न दिखाना; यही कारण है कि उनका पोषण उनकी ओर तेज़ी से बढ़ता है। वे जानवरों की तुलना में बहुत ज़्यादा संतान पैदा करते हैं। इसके विपरीत, जानवर लालच से अपने पोषण की तलाश करते हैं, और इस कारण से वे इसे अपूर्ण रूप से और बहुत ज़्यादा प्रयास की कीमत पर ही प्राप्त कर पाते हैं। जानवरों के साम्राज्य में केवल बच्चे ही होते हैं जो अपनी कमज़ोरी और नपुंसकता की घोषणा करके भगवान पर अपना भरोसा दिखाते हैं; इसलिए उन्हें ईश्वरीय दया के ख़ज़ाने से उनका उचित और नाज़ुक पोषण पूरी तरह से मिलता है। लेकिन जंगली जानवर जो अपने पोषण पर लालच से झपटते हैं, वे केवल एक अवैध और घटिया पोषण की उम्मीद कर सकते हैं, जो बहुत ज़्यादा प्रयास के खर्च से प्राप्त होता है। ये दोनों

उदाहरण दर्शाते हैं कि लालच अभाव का कारण है, जबकि ईश्वर पर भरोसा और
संतोष ईश्वर की दया का साधन है।

मानव राज्य में, यहूदी और अधिक लालच से संसार से चिपके रहे हैं
और किसी भी अन्य लोगों की तुलना में अधिक जुनून के साथ अपने जीवन को प्यार किया है, लेकिन
उन्होंने बड़ी मेहनत से जो धन अर्जित किया है वह केवल अवैध संपत्ति है
जिस पर वे अस्थायी रूप से प्रबंधन करते हैं, और इससे उन्हें बहुत कम लाभ होता है।
इसके विपरीत, यह उन्हें दीनता और अपमान, मृत्यु और अपमान के प्रहारों का पात्र बनाता है, जो सभी लोगों द्वारा उन पर बरसाए जाते हैं। इससे पता चलता है कि लालच अपमान और हानि का स्रोत है। इसके अलावा लालची व्यक्ति के नुकसान के इतने सारे उदाहरण हैं कि "लालची व्यक्ति को नुकसान उठाना पड़ता है

निराशा और नुकसान के लिए" एक सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत सत्य बन गया है।
इसलिए, यदि आप धन से प्रेम करते हैं, तो उसे लालच से नहीं, बल्कि संतोष से प्राप्त करें, ताकि वह आपके पास बहुतायत में रहे। संतोष और संतुष्टि
लालची लोग उन दो व्यक्तियों के समान हैं जो किसी महान व्यक्ति के सभा-कक्ष में प्रवेश करते हैं।
उनमें से एक ने खुद से कहा: "यह काफी है कि वह मुझे अंदर आने दे ताकि मैं बाहर की ठंड से बच सकूँ। भले ही वह मुझे सबसे नीचे बैठने का इशारा करे
मैं इसे अपनी दयालुता मानूंगा।" दूसरा आदमी अहंकार से कहता है, मानो इस मामले में उसका कुछ अधिकार है और हर कोई उसका सम्मान करने के लिए बाध्य है: "मैं
उसे सबसे ऊंचा स्थान दिया जाना चाहिए।" वह लालच से अंदर आता है और अपनी निगाहें सबसे ऊंचे पदों पर टिकाता है, उनकी ओर बढ़ना चाहता है। लेकिन दर्शक-कक्ष का स्वामी उसे वापस कर देता है और उसे निचले स्थान पर बैठा देता है।

स्थिति। उसे धन्यवाद देने के बजाय, वह उसके खिलाफ क्रोधित है
उसके हृदय में जो कुछ है, वह उसकी निन्दा करता है। महल का स्वामी उससे नाराज हो जाएगा।

पहला व्यक्ति अत्यंत विनम्रतापूर्वक प्रवेश करता है और सबसे निचले स्थान पर बैठना चाहता है।
उसकी विनम्रता से दर्शक-कक्ष का स्वामी प्रसन्न होता है, और वह उसे ऊंचे स्थान पर बैठने के लिए आमंत्रित करता है। उसकी कृतज्ञता बढ़ जाती है, और उसकी कृतज्ञता बढ़ जाती है।

अब यह दुनिया परम दयालु के एक दर्शक-कक्ष की तरह है। पृथ्वी की सतह उसकी दया से सजाए गए भोज-कक्ष की तरह है। भोजन और उदारता की विभिन्न डिग्री दर्शक-कक्ष में बैठने की स्थिति के अनुरूप हैं।

इसके अलावा, हर कोई छोटी-छोटी बातों में भी लालच के बुरे प्रभावों का अनुभव कर सकता है। उदाहरण के लिए, हर कोई अपने दिल में जानता है कि जब
यदि दो भिखारी कुछ मांगते हैं, तो जो भिखारी लालच से उससे आग्रह करता है, उस पर वह क्रोधित होगा और उसकी मांग को अस्वीकार कर देगा; जबकि जो शान्तिप्रिय है, उस पर वह दया करेगा और जो वह मांगता है, उसे देगा।

या फिर एक और उदाहरण दें, अगर आप रात को सो नहीं पाते हैं और

यदि आप ऐसा करना चाहते हैं, तो आप सफल हो सकते हैं यदि आप अलग रहें। लेकिन यदि आप ऐसा करना चाहते हैं, तो आप सफल हो सकते हैं यदि आप अलग रहें।

लालच से सो जाओ, और कहो: “मुझे सोने दो, मुझे सोने दो,” तो नींद तुम्हें पूरी तरह से छोड़ देगी।

एक और उदाहरण यह है कि अगर आप किसी महत्वपूर्ण उद्देश्य के लिए किसी के आने का लालची तरीके से इंतज़ार करते हैं और लगातार कहते हैं: “वह अभी तक नहीं आया है,” तो अंततः आप अपना धैर्य खो देंगे और उठकर चले जाएँगे। लेकिन एक मिनट बाद वह व्यक्ति आ जाएगा, और आपका उद्देश्य विफल हो जाएगा।

इन सबका कारण यह है। एक रोटी बनाने के लिए खेत जोतना और काटना पड़ता है, अनाज को चक्की में ले जाना पड़ता है और रोटी को ओवन में पकाना पड़ता है। सभी चीजों की व्यवस्था में भी यही होता है।

भगवान की बुद्धि द्वारा निर्धारित एक निश्चित धीमी विचार-विमर्श है। अगर
लालच में व्यक्ति धीमी गति से विचार-विमर्श करके कार्य करने में असफल हो जाता है, वह सभी चीजों की व्यवस्था में उन चरणों पर ध्यान देने में असफल हो जाता है जिन्हें उसे उठाना चाहिए; वह या तो गिर जाएगा या उन चरणों को पार करने में असमर्थ होगा, और किसी भी स्थिति में वह अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाएगा।

हे भाईयों, तुम अपनी जीविका के मोह में मस्त हो और इस संसार के लोभ में मतवाले हो! लोभ तो हानिकारक और घातक है; फिर तुम अपने लोभ के कारण सब प्रकार के नीच कर्म क्यों करते हो? सब कुछ स्वीकार करो।

और आख़िरत में से बहुत कुछ त्याग देते हैं? अपने लालच के कारण तुम इस्लाम के सबसे महत्वपूर्ण स्तंभों में से एक, ज़कात की अदायगी को भी छोड़ देते हो, हालाँकि ज़कात हर किसी के लिए समृद्धि को आकर्षित करने और दुर्भाग्य को दूर करने का एक साधन है। जो व्यक्ति ज़कात नहीं देता है , वह निश्चित रूप से वह राशि खो देता है जो वह अन्यथा दे सकता था: या तो वह इसे किसी बेकार चीज़ पर खर्च कर देगा, या यह किसी दुर्भाग्य से उससे छीन ली जाएगी।

प्रथम शताब्दी के पांचवें वर्ष में मुझे एक सत्य स्वप्न आया।
विश्व युद्ध के दौरान मुझसे निम्नलिखित प्रश्न पूछा गया:

"इस भूख, आर्थिक नुकसान और शारीरिक कष्ट का कारण क्या है?
अब मुसलमानों को क्या परेशानी हो रही है?

मैंने स्वप्न में उत्तर दिया:

"जो धन हमें दिया जाता है, उसमें से अल्लाह तआला हमसे दसवां या चालीसवां हिस्सा मांगता है ताकि हम गरीबों की दुआओं से लाभ उठा सकें और द्वेष और ईर्ष्या से दूर रह सकें। लेकिन हमने लालच और लालच में ज़कात देने से मना कर दिया और अल्लाह तआला ने हमसे ज़कात ले ली

जहाँ चालीसवाँ बकाया था वहाँ तीसवाँ हिस्सा दिया गया, और जहाँ दसवाँ बकाया था वहाँ आठवाँ हिस्सा दिया गया।

---

[90] दसवां हिस्सा, अर्थात् अनाज के समान धन जो हर वर्ष नई फसल देता है; तथा जो कुछ भी वर्ष के दौरान वाणिज्यिक लाभ देता है उसका चालीसवां हिस्सा।

"उसने हमसे कहा कि हम हर साल एक महीने से ज़्यादा न रहें, सत्तर फ़ायदेमंद उद्देश्यों के लिए भूख से तड़पें। लेकिन हमने अपनी सहज आत्माओं पर दया की, और उस अस्थायी सुखद भूख से नहीं गुज़रे। फिर सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें पाँच साल तक उपवास करने के लिए मजबूर करके सज़ा दी, जिसमें सत्तर तरह के दुर्भाग्य भरे थे।

"उन्होंने हमसे चौबीस घंटे की अवधि में से एक घंटा ईश्वरीय अभ्यास में बिताने की भी मांग की, जो प्रसन्न करने वाला, उत्कृष्ट, प्रकाशमान और लाभकारी हो। लेकिन अपने आलस्य में हमने प्रार्थना के कर्तव्य की उपेक्षा की। वह एक घंटा अन्य घंटों के साथ जुड़ गया और बर्बाद हो गया। तपस्या के रूप में, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें अभ्यास और शारीरिक परिश्रम के एक रूप से गुजरने के लिए मजबूर किया जिसने प्रार्थना की जगह ले ली।"

मैं फिर जाग गया, और सोचने पर मुझे एहसास हुआ कि उस सपने में एक बहुत ही महत्वपूर्ण सत्य छिपा था। जैसा कि पच्चीसवें वचन में सिद्ध और स्पष्ट किया गया है, जब आधुनिक सभ्यता की तुलना कुरान के सिद्धांतों से की जाती है, तो मनुष्य के सामाजिक जीवन में सभी अनैतिकता और अस्थिरता इसी से उत्पन्न होती है।

दो स्रोत:

पहला: “एक बार मेरा पेट भर गया तो मुझे क्या परवाह कि दूसरे भूख से मर जाएं?”
दूसरा: “तुम काम करो और मैं खाऊंगा।”

इन दोनों को कायम रखने वाली एक बात यह है कि एक ओर सूद और ब्याज का प्रचलन है, और दूसरी ओर ज़कात का परित्याग है।

इन दो भयानक सामाजिक बीमारियों को ठीक करने में सक्षम उपाय ज़कात को एक सार्वभौमिक सिद्धांत के रूप में लागू करना और सूदखोरी को रोकना है। ज़कात न केवल व्यक्तियों और विशेष लोगों के लिए बल्कि खुशी का सबसे ज़रूरी सहारा है

यह समाज के लिए नहीं, बल्कि पूरी मानवता के लिए है। मनुष्य के दो वर्ग हैं: उच्च वर्ग और आम लोग। केवल ज़कात ही करुणा पैदा करेगी

और उच्च वर्गों में आम लोगों के प्रति उदारता, और आम लोगों में उच्च वर्गों के प्रति सम्मान और आज्ञाकारिता। ज़कात के अभाव में, उच्च वर्ग आम लोगों पर क्रूरता और अत्याचार के साथ उतरेंगे, और आम लोग उच्च वर्गों के खिलाफ़ द्वेष और विद्रोह में उठ खड़े होंगे। एक निरंतर संघर्ष, एक सतत संघर्ष होगा

पुरुषों के दो वर्गों के बीच विरोध। इसका परिणाम अंततः पूंजी और श्रम के बीच टकराव के रूप में होगा, जैसा कि रूस में हुआ था।

ऐ नेकदिल और नेकदिल लोगों! ऐ दरियादिली और उदारता के लोगों! अगर जकात के नाम पर दरियादिली के काम न किए जाएँ तो तीन तरह के नुकसानदेह नतीजे होते हैं। इस काम का कोई असर नहीं हो सकता, क्योंकि अगर आप खुदा के नाम पर नहीं देते तो आप असल में एक फ़र्ज़ थोप रहे हैं, और

किसी गरीब को फर्ज की भावना से कैद करना। तब तुम उसकी नमाज़ से वंचित हो जाओगे, एक ऐसी नमाज़ जो अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा क़बूल करने वाली होगी। असल में तुम कुछ नहीं बल्कि एक अधिकारी हो जिसे अल्लाह के फ़ायदों को उसके बंदों में बाँटने का काम सौंपा गया है; लेकिन अगर तुम खुद को दौलत का मालिक समझते हो, तो यह तुम्हारे द्वारा प्राप्त किए गए फ़ायदों के प्रति कृतघ्नता का काम है। इसके विपरीत, अगर तुम ज़कात के नाम पर देते हो, तो तुम्हें अल्लाह के नाम पर देने का सवाब मिलेगा; तुमने प्राप्त किए गए फ़ायदों के लिए शुक्र अदा किया होगा। ज़रूरतमंद व्यक्ति भी

वह आपके सामने झुकने और झुकने के लिए मजबूर नहीं होगा; उसके स्वाभिमान को ठेस नहीं पहुंचेगी और आपकी ओर से उसकी प्रार्थना स्वीकार की जाएगी। देखिए कि एक ओर तो जकात के रूप में उतना ही देना, जितना देना चाहिए, लेकिन पाखंड, प्रसिद्धि और दायित्व के थोपे जाने के अलावा कुछ भी नहीं कमाना; और दूसरी ओर, वही अच्छा काम करना, दोनों में कितना अंतर है।

ज़कात के नाम पर कर्म करना , और उसके द्वारा कर्तव्य पूरा करना, और प्रतिफल प्राप्त करना, ईमानदारी का गुण और उन लोगों की प्रार्थनाएँ जिनके आप हकदार हैं
लाभांवित?

> पवित्र है तू! हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह, तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (अल-बक़रा 2:32)

हे ईश्वर, हमारे गुरु मुहम्मद को आशीर्वाद और शांति प्रदान करें, जिन्होंने कहा: "ईमानदार, ईमानदार के लिए एक मजबूत इमारत की तरह है, जिसका एक हिस्सा दूसरे को सहारा देता है," और जिन्होंने यह भी कहा कि "संतुष्टि एक ऐसा खजाना है जो कभी नष्ट नहीं होता है,"91 और उनके परिवार और उनके साथियों को। और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है।

चुगली करना

उसके नाम में उसकी महिमा हो!
और ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करे।

शब्दों में , [92] कुरान की एक आयत में छः चमत्कारी तरीकों से चुगली करने से घृणा करने और हतोत्साहित करने का प्रभाव दिखाया गया है। यह भी दिखाया गया है कि चुगली करना कितना घृणित काम है।

कुरान, और इसलिए किसी और की जरूरत नहीं है

---

[91] सुयुति, अल-फत अल-कबीर, द्वितीय, 309; अहमद अल-हाशिमी, मुख्तार अल-अहादिथ अन-नबाविया, इस्तांबुल, 1967, 99।

[92] नूरसी, द वर्ड्स , पृ. 169.

विषय की व्याख्या। वास्तव में, कुरान द्वारा अपनी घोषणा कर दिए जाने के बाद, आगे कुछ भी करने की न तो संभावना है और न ही आवश्यकता है।

क़ुरआन ने इस आयत में चुगली करने वाले को छह निन्दाओं के साथ धिक्कारा है, " क्या तुममें से कोई अपने मरे हुए भाई का मांस खाना पसंद करेगा?" (अल-हुजुरात 49:12) और उसे इस पाप को करने से छह गंभीरता के साथ मना किया है। जब यह आयत उन लोगों के लिए निर्देशित की जाती है जो वास्तव में चुगली करते हैं, तो इसका अर्थ निम्नलिखित है।

जैसा कि सर्वविदित है, आयत की शुरुआत में हम्ज़ा का अर्थ प्रश्नवाचक है। यह प्रश्नवाचक अर्थ आयत के सभी शब्दों में पानी की तरह समा जाता है, जिससे प्रत्येक शब्द एक अतिरिक्त अर्थ ग्रहण कर लेता है। इस प्रकार पहला शब्द अपने हम्ज़ा के साथ पूछता है: "क्या ऐसा है कि तुम्हारे पास विवेक करने में सक्षम बुद्धि नहीं है, इसलिए तुम इस चीज़ की कुरूपता को समझने में विफल हो गए?"

दूसरा शब्द पूछता है: "क्या आपका हृदय, प्रेम और घृणा का स्थान है,
इतना भ्रष्ट हो गया है कि वह सबसे घृणित चीजों से भी प्रेम करता है?”

तीसरा शब्द जो आप में से कोई भी पूछता है: "सामाजिक और सभ्य जिम्मेदारी की आपकी भावना को क्या हो गया है कि आप सामाजिक जीवन के लिए जहरीली चीज को स्वीकार करने में सक्षम हैं?"

मांस खाने के लिए चौथा वचन पूछता है: "तुम्हारी मानवता की भावना को क्या हो गया है कि तुम अपने दोस्त को जंगली कुत्ते की तरह अपने नुकीले दांतों से फाड़ रहे हो?
जानवर?"

उसके भाई का पाँचवाँ वचन पूछता है: "क्या तुममें भाईचारे की भावना नहीं है, भाईचारे की भावना नहीं है, कि तुम उस दुष्ट को दाँत गड़ा सकते हो जो तुम्हारे साथ भाईचारे की असंख्य कड़ियों से बंधा हुआ है? क्या तुममें इतनी बुद्धि नहीं है कि तुम अपने ही अंगों को अपने ही दाँतों से काट सकते हो, इस तरह से पागलपन भरा?"

छठा शब्द मृत पूछता है: "तुम्हारा विवेक कहाँ है? क्या तुम्हारा स्वभाव इतना भ्रष्ट है कि तुम सारा सम्मान त्याग देते हो और इतना घिनौना काम करते हो कि अपने भाई का मांस खाते हो?"

तो फिर कविता के कुल अर्थ के अनुसार, साथ ही संकेत के अनुसार
इसके प्रत्येक शब्द, निंदा और चुगली बुद्धि के लिए प्रतिकूल हैं और
हृदय से, मानवता और विवेक से, प्रकृति और सामाजिक चेतना से।

तो आप देख सकते हैं कि यह आयत छः चमत्कारिक तरीकों से चुगली की निंदा करती है और छः चमत्कारिक तरीकों से लोगों को इससे रोकती है। चुगली वह घिनौना हथियार है जिसका इस्तेमाल दुश्मनी, ईर्ष्या और हठ करने वाले लोग सबसे ज़्यादा करते हैं।
और स्वाभिमानी लोग कभी भी इतना नीचे गिरकर काम नहीं करेंगे

अशुद्ध हथियार। किसी प्रसिद्ध व्यक्ति ने एक बार कहा था: “मैं अपने शत्रु को चुगली करके परेशान करने के लिए कभी भी नीचे नहीं गिरता, क्योंकि चुगली कमज़ोर, नीच और नीच लोगों का हथियार है।”

चुगली में ऐसी बात कहना शामिल है जो उस व्यक्ति के लिए नापसंदगी और अप्रसन्नता का कारण बनेगी यदि वह वहां उपस्थित होकर उसे सुन रहा हो।
अगर जो कहा गया है वह सच भी हो तो भी वह चुगली ही है। अगर वह झूठ है तो वह चुगली और बदनामी दोनों है और यह दोगुना घिनौना पाप है।
कुछ विशेष परिस्थितियों में चुगली करना स्वीकार्य हो सकता है:
पहला: यदि कोई शिकायत किसी अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत की जाए, ताकि उसकी सहायता से बुराई दूर हो और न्याय बहाल हो।
दूसरा: यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य के साथ सहयोग करने पर विचार कर रहा हो और आपसे सलाह लेने आए और आप उससे, केवल उसके लाभ के लिए और उसे सही सलाह देने के लिए, बिना किसी स्वार्थ के कहें: “उसके साथ सहयोग मत करो; यह तुम्हारे लिए नुकसानदेह होगा।”

तीसरा: यदि उद्देश्य किसी को बदनाम करना या बदनाम करना नहीं है, बल्कि केवल लोगों को जागरूक करना है, और कोई कहता है: “वह मूर्ख, भ्रमित आदमी अमुक स्थान पर गया था।”

चौथा: यदि चुगली का विषय खुला और निर्लज्ज पापी है; बुराई से परेशान नहीं होता, बल्कि इसके विपरीत अपने द्वारा किए गए पापों पर गर्व करता है; अपने गलत कामों में आनंद पाता है; और बिना किसी हिचकिचाहट के सबसे स्पष्ट तरीके से पाप करता है।

इन विशेष मामलों में, चुगली करना स्वीकार्य हो सकता है, बशर्ते कि यह बिना किसी स्वार्थ के तथा विशुद्ध रूप से सत्य और सामुदायिक कल्याण के लिए किया गया हो।
परन्तु इनसे अलग होकर वह अग्नि के समान है जो अच्छे कर्मों को उसी प्रकार भस्म कर देती है, जैसे ज्वाला लकड़ी को भस्म कर देती है।

यदि कोई व्यक्ति किसी की चुगली करता है या स्वेच्छा से उसकी बात सुनता है, तो उसे कहना चाहिए कि, "हे ईश्वर, मुझे और उसके प्रति जिसके विषय में मैंने बुरा कहा है, उसे क्षमा कर" तथा जब भी वह व्यक्ति चुगली करने वाले से मिले, तो उससे कहना चाहिए कि, "मुझे क्षमा कर।"

वह जो धीरज धरता है, वह जो धीरज धरता है

नर्सी ने कहा

अध्याय 9

ईमानदारी

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हमने यह किताब तुम पर सत्य के साथ उतारी है, अतः तुम अल्लाह की बन्दगी सत्य के साथ करो। ईमानदारी, क्योंकि परमेश्वर का धर्म ईमानदारी से किया जाने वाला धर्म है। (अज़-ज़ुमर 39:2)

विद्वानों को छोड़कर सभी मनुष्य नष्ट हो जायेंगे, और सभी विद्वान नष्ट हो जायेंगे, सिवाय उन लोगों के जो अपने ज्ञान के अनुसार कार्य करते हैं, और वे सभी नष्ट हो जायेंगे, सिवाय उन लोगों के जो सच्चे हैं, और यहाँ तक कि सच्चे लोग भी बड़े खतरे में हैं।93

उपरोक्त आयत और पैगंबर की महान उक्ति (हदीस) मिलकर यह प्रदर्शित करती है कि इस्लाम का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत ईमानदारी है। ईमानदारी से संबंधित असंख्य बिंदुओं में से, हम केवल पाँच को संक्षेप में समझाएँगे।

टिप्पणी: धन्य इस्पार्टा का एक शुभ चिह्न, जिसके कारण व्यक्ति को धन्यवाद देने की आवश्यकता होती है, वह यह है कि अन्य स्थानों की तुलना में, यहां धर्मपरायण लोगों, सूफी मार्ग का अनुसरण करने वालों और धार्मिक विद्वानों के बीच कोई प्रतिद्वंद्विता और विवाद नहीं दिखाई देता।
यदि अपेक्षित सच्चा प्रेम और एकता मौजूद न भी हो, तो तुलनात्मक रूप से कहें तो, कोई हानिकारक प्रतिद्वंद्विता और संघर्ष नहीं होता।

पहला बिंदु

प्रश्न: ऐसा क्यों है कि जहाँ दुनियावी और लापरवाह लोग, यहाँ तक कि गुमराह और पाखंडी लोग भी बिना किसी प्रतिद्वंद्विता के सहयोग करते हैं, वहीं धर्म के लोग, धार्मिक विद्वान और सूफी मार्ग पर चलने वाले लोग प्रतिद्वंद्विता में एक दूसरे का विरोध करते हैं, हालाँकि वे सत्य और सद्भाव के लोग हैं? वास्तव में सहमति सद्भाव के लोगों का अधिकार है और विवाद पाखंडियों का अधिकार है; ऐसा कैसे हुआ कि इन दोनों ने अपना स्थान बदल लिया है?

93 अल-अजलुनी, कशफ अल-खफ़ा, 2:415; अल-ग़ज़ाली, इहया 'उलूम एड-दीन, 3:414।

उत्तर: हम इस दर्दनाक, शर्मनाक और भयावह स्थिति के अनेक कारणों में से सात का उल्लेख करेंगे, जिनमें से एक कारण उत्साही लोगों को इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए प्रेरित करता है।
रोना।

पहला कारण

जिस प्रकार सत्य के लोगों में मतभेद सत्य के अभाव से उत्पन्न नहीं होता, उसी प्रकार उपेक्षा करने वालों में सहमति सत्य के अभाव से उत्पन्न नहीं होती।
सत्य के किसी भी कब्जे से उत्पन्न होता है। बल्कि यह है कि समाज में वर्गों को एक विशिष्ट कर्तव्य और विशेष कार्य सौंपा गया है, जैसे 'सांसारिक', राजनीति में लगे हुए लोग, और जिन्होंने धर्मनिरपेक्ष शिक्षा प्राप्त की है, और इस प्रकार विभिन्न समूहों, समाजों और समुदायों के कार्यों को परिभाषित किया गया है और एक दूसरे से अलग हो गए हैं।

इसी प्रकार, जीविका चलाने के लिए उन्हें जो कार्य करने हैं, उसके लिए उन्हें जो भौतिक पुरस्कार मिलेगा, तथा अपनी महत्वाकांक्षा और गर्व के लिए उन्हें लोगों से जो ध्यान मिलेगा, उसके लिए उन्हें जो नैतिक पुरस्कार मिलेगा, यह भी स्थापित और निर्दिष्ट है।94 इसलिए कोई भी चीज इतनी हद तक समान नहीं है कि वह संघर्ष, मतभेद और प्रतिद्वंद्विता उत्पन्न कर सके। हालाँकि,

चाहे वे जिस भी बुरे रास्ते पर चलें, वे एकता और अखंडता बनाए रखने में सक्षम होंगे।
समझौता।

लेकिन जहाँ तक धर्मावलंबियों, विद्वानों और मार्ग पर चलने वालों का प्रश्न है, प्रत्येक का कर्तव्य सभी मनुष्यों के प्रति है; उनका भौतिक प्रतिफल निश्चित या निर्दिष्ट नहीं है; और सामाजिक सम्मान, स्वीकृति और सार्वजनिक जीवन में उनका हिस्सा भी निश्चित नहीं है।
ध्यान पूर्वनिर्धारित नहीं होता। एक ही पद के लिए कई उम्मीदवार हो सकते हैं; प्रत्येक नैतिक और भौतिक पुरस्कार के लिए कई हाथ आगे बढ़ सकते हैं। इसलिए संघर्ष और प्रतिद्वंद्विता उत्पन्न होती है; सामंजस्य मतभेद में बदल जाता है, और सहमति विवाद में बदल जाती है।

अब इस भयावह बीमारी का इलाज और उपाय ईमानदारी है। ईमानदारी अपने ईश्वर की पूजा को प्राथमिकता देकर प्राप्त की जा सकती है।
अपनी आत्मा को, ईश्वर की प्रसन्नता को आत्मा की प्रसन्नता परास्त करके,
अहंकार, और इस प्रकार कविता का अर्थ प्रकट करते हुए, वास्तव में मेरा

---

[94] ध्यान रखें कि लोगों का ध्यान मांगा नहीं जा सकता, बल्कि केवल दिया जा सकता है। अगर दिया जाता है, तो उसमें आनंद नहीं लेना चाहिए। अगर कोई इसमें आनंद लेता है, तो ईमानदारी खत्म हो जाती है और उसकी जगह पाखंड आ जाता है।
यदि मनुष्य का ध्यान सम्मान और प्रसिद्धि की इच्छा के साथ है, तो यह पुरस्कार या इनाम नहीं है, बल्कि ईमानदारी की कमी के लिए निंदा और दंड है। मनुष्यों का ऐसा ध्यान, ऐसा सम्मान और प्रसिद्धि, ईमानदारी को नुकसान पहुंचाता है, जो सभी अच्छे कामों के लिए जीवन शक्ति का स्रोत है, और भले ही
वे कब्र के द्वार तक थोड़ी सी खुशी देते हैं, उस द्वार के दूसरी तरफ वे
पीड़ा का रूप ले लो। इसलिए किसी को लोगों का ध्यान आकर्षित करने की इच्छा नहीं करनी चाहिए, बल्कि उससे भागना चाहिए और उससे दूर रहना चाहिए। तुम सब जो प्रसिद्धि की पूजा करते हो और सम्मान और पद के पीछे भागते हो, सावधान हो जाओ!

इनाम केवल अल्लाह की ओर से है (हूद 11:29) मनुष्यों से मिलने वाले भौतिक और नैतिक इनाम को त्यागकर95 और इस प्रकार आयत का अर्थ प्रकट करके:

> रसूल के लिए बस इतना ही काम है कि वह पैग़ाम को पूरी तरह पहुँचा दे। (और) जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम छुपकर करते हो, अल्लाह उसे जानता है। (अल-माएदा 5:99)

और यह जानकर कि अच्छी स्वीकृति जैसे मामले, और एक बनाना
अनुकूल प्रभाव डालना और लोगों का ध्यान आकर्षित करना ईश्वर की चिंता और उसकी ओर से एक अनुग्रह है, और संदेश पहुंचाने में उनकी कोई भूमिका नहीं है, जो कि व्यक्ति का अपना कर्तव्य है, न ही वे इसके लिए आवश्यक हैं, न ही किसी पर इसका आरोप लगाया जाता है।
उन्हें प्राप्त करने के साथ-साथ-यह जानने से व्यक्ति ईमानदारी प्राप्त करने में सफल हो जाएगा, अन्यथा यह लुप्त हो जाएगा।

दूसरा कारण

गुमराह लोगों के बीच सहमति उनकी दीनता के कारण है और हिदायत करने वालों के बीच झगड़ा उनकी इज़्ज़त के कारण है। यानी कि गुमराह लोग, जो दुनियावी चिंताओं में डूबे हुए हैं, कमज़ोर और दीन हैं, क्योंकि वे अल्लाह पर भरोसा नहीं करते।

सत्य और वास्तविकता। अपने अपमान के कारण, उन्हें अपनी ताकत बढ़ाने की आवश्यकता है, और इस आवश्यकता के कारण वे पूरे दिल से दूसरों की सहायता और सहयोग को स्वीकार करते हैं। भले ही वे जिस मार्ग पर चलते हैं वह गुमराह करने वाला है, फिर भी वे अपनी सहमति बनाए रखते हैं। ऐसा लगता है जैसे वे अपनी नास्तिकता को सत्य की पूजा का रूप दे रहे हैं, अपने गुमराह करने को ईमानदारी का रूप दे रहे हैं, अपने अधर्म को एकजुटता का रूप दे रहे हैं, और अपने पाखंड को सच्चाई की पूजा का रूप दे रहे हैं।

सद्भाव, और इस प्रकार सफलता प्राप्त करना। वास्तविक के लिए

---

[95] दूसरों को खुद से ज़्यादा तरजीह देने के गुण को भी अपना मार्गदर्शक बनाना चाहिए, सहाबा के उसी गुण को जिसकी क़ुरआन में प्रशंसा की गई है। उदाहरण के लिए, जब कोई उपहार दे रहा हो या दान का काम कर रहा हो, तो हमेशा खुद से ज़्यादा पाने वाले को तरजीह देनी चाहिए, और
धार्मिक सेवा के लिए किसी भौतिक पुरस्कार की मांग या आंतरिक इच्छा किए बिना, अपने कार्य को पूरी तरह से ईश्वर की कृपा समझें और लोगों पर किसी दायित्व की भावना न थोपें। धार्मिक सेवा के बदले में कोई सांसारिक चीज़ नहीं मांगनी चाहिए, अन्यथा ईमानदारी खत्म हो जाएगी।
पुरुषों के पास कई अधिकार और दावे हैं, और वे ज़कात के हकदार भी हो सकते हैं। लेकिन इसकी मांग नहीं की जा सकती।
जब कोई व्यक्ति कुछ प्राप्त करता है तो यह नहीं कहा जा सकता कि "यह मेरी सेवा का पुरस्कार है।"
बल्कि पूर्ण संतुष्टि में व्यक्ति को हमेशा अपने से अधिक योग्य लोगों को प्राथमिकता देनी चाहिए। इस प्रकार वे दूसरों को स्वयं से अधिक प्राथमिकता देते हैं, यद्यपि
गरीबी उनका भाग्य है (अल-हश्र, 59: 9), इस भयानक खतरे से बचा जा सकता है और लाभ प्राप्त किया जा सकता है
ईमानदारी.

ईमानदारी, चाहे बुराई के लिए ही क्यों न हो, परिणाम अवश्य देती है, और मनुष्य जो भी ईमानदारी से चाहता है, ईश्वर उसे अवश्य प्रदान करता है।96

लेकिन जहाँ तक मार्गदर्शन और धर्म के लोगों, धार्मिक विद्वानों और सूफी मार्ग पर चलने वालों का प्रश्न है, चूँकि वे सत्य और वास्तविकता पर भरोसा करते हैं और उनमें से प्रत्येक सत्य के मार्ग पर केवल अपने पालनहार को याद करता है और उसकी सहायता पर भरोसा करता है, इसलिए वे अपने ईमान से गौरव प्राप्त करते हैं। जब वे कमज़ोर महसूस करते हैं,

वे मनुष्यों की ओर नहीं, बल्कि परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं और उससे सहायता मांगते हैं।
दृष्टिकोण में भिन्नता के कारण, वे उस व्यक्ति की सहायता की कोई वास्तविक आवश्यकता महसूस नहीं करते हैं जिसका दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से उनके अपने दृष्टिकोण के विपरीत है, और वे सहमति की कोई आवश्यकता नहीं देखते हैं
और एकता। वास्तव में, यदि हठ और अहंकार मौजूद हैं, तो कोई कल्पना करेगा
खुद को सही और दूसरे को गलत मानना; सौहार्द और प्रेम की जगह कलह और प्रतिद्वंद्विता ले लेती है। इस प्रकार ईमानदारी दूर हो जाती है और उसका कार्य
बाधित.

अब इस भयानक स्थिति के गंभीर परिणामों के लिए एकमात्र उपाय नौ आज्ञाएँ हैं:

1. सकारात्मक रूप से कार्य करना, अर्थात् अपने स्वयं के दृष्टिकोण के प्रति प्रेम रखना, अन्य दृष्टिकोणों के प्रति शत्रुता से बचना, उनकी आलोचना न करना, उनके विश्वासों और विज्ञानों में हस्तक्षेप न करना, या किसी भी तरह से उनसे संबंधित न होना।

2. किसी भी विशेष दृष्टिकोण से ऊपर उठकर इस्लाम के दायरे में एकजुट होना, तथा एकता के उन असंख्य बंधनों को याद रखना जो प्रेम, भाईचारा और सौहार्द को बढ़ावा देते हैं।

3. आचरण का उचित नियम अपनाना कि किसी भी सही दृष्टिकोण के अनुयायी को यह कहने का अधिकार है कि, “मेरा दृष्टिकोण सत्य है, या सर्वोत्तम है”, किन्तु यह नहीं कि “केवल मेरा दृष्टिकोण सत्य है,” या कि “केवल मेरा दृष्टिकोण अच्छा है”, जिससे अन्य सभी दृष्टिकोणों के मिथ्यात्व या घृणा का बोध हो।

4. यह विचार करना कि सत्य के लोगों के साथ मिलन ही ईश्वरीय कृपा का कारण है।
   सहायता और धर्म की उच्च प्रतिष्ठा।

5. यह समझना कि गुमराह करने वाले और झूठ बोलने वाले लोगों की शक्तिशाली सामूहिक शक्ति की प्रतिभा के माध्यम से हमलों के खिलाफ सबसे शक्तिशाली व्यक्ति का व्यक्तिगत प्रतिरोध, जो उनकी एकजुटता से उत्पन्न होता है, अनिवार्य रूप से पराजित होगा, और लोगों की एकता के माध्यम से

   सत्य के लोगों को एक संयुक्त और सामूहिक शक्ति का निर्माण करना चाहिए, ताकि गुमराह करने वाली उस भयावह सामूहिक शक्ति के सामने न्याय और अधिकार को सुरक्षित रखा जा सके।

---

96 हां, “जो कोई ईमानदारी से खोजेगा, वह पाएगा” यह सत्य का नियम है। इसका दायरा व्यापक है और इसमें चर्चा के तहत आने वाला विषय शामिल है।

6. असत्य के आक्रमणों से सत्य की रक्षा करने के लिए,
7. स्वयं और उसके अहंकार को त्यागना,
8. और आत्म-गौरव की ग़लत अवधारणा को त्याग दो,
9. और प्रतिद्वंद्विता से उत्पन्न सभी तुच्छ भावनाओं से दूर रहो।

यदि इस नौ-गुना नियम का पालन किया जाए, तो ईमानदारी बनी रहेगी और उसका कार्य पूरी तरह से संपन्न होगा।97

तीसरा कारण

सत्य के मार्ग पर चलने वालों में मतभेद उत्साह और आकांक्षा की कमी से उत्पन्न नहीं होता, न ही गुमराह लोगों में एकता आकांक्षा की उच्चता से उत्पन्न होती है। जो चीज मार्गदर्शन के लोगों को उनकी उच्च आकांक्षा का दुरुपयोग करने और इस प्रकार असहमति और प्रतिद्वंद्विता की ओर प्रेरित करती है, वह स्वर्गीय पुरस्कार की इच्छा है जिसे सम्मान के साथ एक प्रशंसनीय गुण माना जाता है।

परलोक के प्रति समर्पण, तथा परलोक से संबंधित कर्तव्यों के प्रति अत्यधिक उत्सुकता। अपने आप से सोचते हुए, "मुझे यह पुरस्कार प्राप्त करने दो, मुझे इन लोगों का मार्गदर्शन करने दो, उन्हें मेरी बात सुनने दो," वह अपने सामने खड़े सच्चे भाई के प्रति प्रतिद्वंद्विता की स्थिति में आ जाता है, जिसे उसके प्रेम, सहायता, भाईचारे तथा सहायता की वास्तविक आवश्यकता है। अपने आप से कहते हुए, "मेरे शिष्य उसके पास क्यों जा रहे हैं? मेरे पास उसके जितने शिष्य क्यों नहीं हैं?" वह इसका शिकार हो जाता है।

अहंकार, महत्वाकांक्षा की चिरकालिक बीमारी की ओर प्रवृत्त करता है, सारी ईमानदारी खो देता है, तथा पाखंड का द्वार खोल देता है।

इस भूल, इस घाव, आत्मा की इस भयानक बीमारी का इलाज यह सिद्धांत है कि "ईश्वर की प्रसन्नता केवल ईमानदारी से प्राप्त होती है," न कि बड़ी संख्या में अनुयायियों या बड़ी सफलता से। क्योंकि ये बाद वाले कार्य ईश्वर की इच्छा के अनुसार हैं;
उनकी मांग नहीं की जा सकती, हालांकि कभी-कभी उन्हें दिया जाता है।
एक शब्द से किसी का उद्धार हो जाएगा और इस प्रकार ईश्वर प्रसन्न होगा।
मात्रा पर बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी एक व्यक्ति को सत्य की ओर ले जाना ईश्वर को हज़ारों लोगों को सत्य की ओर ले जाने के समान प्रसन्न कर सकता है। इसके अलावा ईमानदारी और सत्य के प्रति निष्ठा के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति को यह इच्छा होनी चाहिए कि मुसलमान किसी से भी और किसी भी स्थान पर लाभ उठाएँ। सोचना चाहिए "चलो
"वे मुझसे शिक्षा लें ताकि मुझे पुरस्कार मिले" यह आत्मा और अहंकार की चाल है।

[97] पैगंबर की प्रामाणिक हदीस में भी यह दर्ज है कि अंत समय में ईसाइयों में से सच्चे धर्मपरायण लोग कुरान के लोगों के साथ एकजुट होंगे और अपने साझा दुश्मन, अधर्म से लड़ेंगे। और इस समय भी, धर्म और सत्य के लोगों को न केवल अपने भाइयों और सह-विश्वासियों के साथ, बल्कि सच्चे धर्मपरायण और आध्यात्मिक लोगों यानी ईसाइयों के साथ भी ईमानदारी से एकजुट होने की ज़रूरत है, ताकि वे अपने साझा दुश्मन - आक्रामक नास्तिकता से लड़ने के लिए मतभेदों के बिंदुओं पर चर्चा और बहस से अस्थायी रूप से दूर रहें।

ऐ आख़िरत में सवाब और उस सवाब के हक़दार कामों के लालची इंसान! कुछ ऐसे नबी हुए हैं जिनके मुरीदों की तादाद सीमित थी लेकिन उन्हें नबूवत के पवित्र कर्तव्य का अनंत सवाब मिला। तो असली कामयाबी मुरीदों की तादाद बढ़ाने में नहीं बल्कि अल्लाह की प्रसन्नता हासिल करने में है। तुम अपने आपको क्या समझते हो कि "सब लोग मेरी बात सुनो" कहकर तुम अपना काम भूल जाते हो और जो काम अल्लाह का है उसमें दखल देते हो? तुम्हारे लिए स्वीकृति पाना और लोगों को तुम्हारे इर्द-गिर्द इकट्ठा करना ही अल्लाह का काम है। इसलिए अपने कर्तव्य और चिंता पर ध्यान दो और अल्लाह के काम में दखल मत दो।

इसके अलावा, सिर्फ़ मनुष्य ही नहीं हैं जो सत्य सुनने और बोलने वालों के लिए सवाब कमाते हैं। ईश्वर और उसके स्वर्गदूतों की संवेदनशील और आध्यात्मिक सत्ताओं ने ब्रह्मांड को भर दिया है और इसके हर हिस्से को सुशोभित किया है। अगर आप भरपूर सवाब चाहते हैं, तो ईमानदारी को अपना आधार बनाएँ और सिर्फ़ ईश्वर की प्रसन्नता के बारे में सोचें। तब आपके मुँह से निकलने वाले धन्य शब्दों का हर शब्द आपके लिए होगा।

आपकी ईमानदारी और सच्ची नीयत से जीवित होकर, वे असंख्य संवेदनशील प्राणियों के कानों तक पहुँचकर उन्हें प्रकाशित करेंगे और आपको पुरस्कार दिलाएँगे।
उदाहरण के लिए, जब आप कहते हैं, "परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद हो," तो लाखों शब्द, बड़े और छोटे, भगवान की अनुमति से हवा के पन्ने पर लिखे जाते हैं। चूँकि सर्वज्ञ लेखक ने कोई भी काम व्यर्थ या व्यर्थ नहीं किया, इसलिए उसने असंख्य कान बनाए, जितने उन अनेक धन्य शब्दों को सुनने के लिए आवश्यक थे। यदि उन शब्दों को ईमानदारी और लगन से हवा में जीवंत किया जाए

सच्चे इरादे से वे आत्माओं के कानों में ऐसे घुसेंगे जैसे मुँह में कोई स्वादिष्ट फल। लेकिन अगर ईश्वर की प्रसन्नता और ईमानदारी उन शब्दों को जीवन में नहीं लाती है, तो वे सुने नहीं जाएँगे, और केवल मुँह से किए गए एक ही उच्चारण का पुरस्कार मिलेगा। इस बात पर ध्यान दें, आप कुरान के वाचक जो इस बात से दुखी हैं कि आपकी आवाज़ें अधिक सुंदर नहीं हैं और अधिक लोग आपकी बात नहीं सुनते हैं!

चौथा कारण

ठीक उसी तरह जैसे मार्गदर्शन करने वालों के बीच प्रतिद्वंद्विता और असहमति परिणामों की भविष्यवाणी करने में विफलता या
अदूरदर्शिता, इसी प्रकार गुमराह लोगों के बीच पूर्ण सहमति दूरदर्शिता या दृष्टि की उच्चता से उत्पन्न नहीं होती है। बल्कि मार्गदर्शन करने वाले लोग, सत्य और वास्तविकता के प्रभाव के माध्यम से, आत्मा की अंधी भावनाओं के आगे नहीं झुकते हैं, बल्कि इसके बजाय हृदय और बुद्धि की दूरदर्शी प्रवृत्तियों का अनुसरण करते हैं। हालाँकि, वे

वे अपनी दिशा-ज्ञान और ईमानदारी को बनाए रखने में असफल रहते हैं, वे अपना उच्च पद बनाए रखने में असमर्थ होते हैं और विवाद में पड़ जाते हैं।

जहाँ तक गुमराह लोगों का सवाल है, वे आत्मा और मनमौजीपन के प्रभाव में हैं, तथा इन्द्रिय-बोध के प्रभुत्व में हैं, जो सब कुछ के प्रति अंधा है।
परिणाम और हमेशा भविष्य के आनंद के टन के बजाय तत्काल आनंद का एक औंस पसंद करते हैं, वे तत्काल लाभ और तत्काल आनंद के लिए उत्सुक सहमति में एक साथ आते हैं। वास्तव में, नीच और हृदयहीन उपासक

अहंकार सांसारिक और तात्कालिक सुखों और लाभों के इर्द-गिर्द ही एकत्रित होता है। यह सच है कि मार्गदर्शन करने वाले लोगों ने हृदय और बुद्धि के उच्च निर्देशों के अनुसार परलोक और उसकी पूर्णता के पुरस्कारों की ओर अपना ध्यान केंद्रित किया है, लेकिन भले ही दिशा का उचित बोध, पूर्ण ईमानदारी और आत्म-बलिदानपूर्ण मिलन और सामंजस्य संभव है, क्योंकि वे अहंकार से खुद को मुक्त करने में विफल रहे हैं, और कमी और अधिकता के कारण, वे अपनी एकता, शक्ति के उस उच्च स्रोत को खो देते हैं, और अपनी ईमानदारी को बिखरने देते हैं। ईश्वर के संबंध में उनका कर्तव्य

परलोक भी हानि पहुंचाता है। भगवान की प्रसन्नता आसानी से नहीं मिलती।

इस गंभीर बीमारी का इलाज और उपचार है ईश्वर के लिए प्रेम के सिद्धांत के अनुसार सत्य के मार्ग पर चलने वाले सभी लोगों की संगति पर गर्व करना; उनका अनुसरण करना और उन्हें नेतृत्व सौंपना; और जो कोई ईश्वर के मार्ग पर चल रहा है उसे संभवतः अपने से बेहतर मानना, जिससे अहंकार टूट जाए और ईमानदारी वापस आ जाए। इस बीमारी से मुक्ति पाने के लिए यह जानना भी ज़रूरी है कि ईमानदारी से किया गया एक औंस कर्म, बिना ईमानदारी के किए गए एक टन कर्म से बेहतर है, और एक अनुयायी की स्थिति को नेता की स्थिति से बेहतर मानना, जिसमें सभी खतरे और जिम्मेदारी शामिल हैं। इस प्रकार ईमानदारी हासिल की जा सकती है, और परलोक की तैयारी के अपने कर्तव्यों को सही ढंग से निभाया जा सकता है।

पांचवां कारण

मार्गदर्शन करने वालों के बीच विवाद और असहमति कमज़ोरी का नतीजा नहीं है, और गुमराह लोगों का शक्तिशाली मिलन ताकत का नतीजा नहीं है। बल्कि मार्गदर्शन करने वालों के मिलन की कमी उस शक्ति से आती है जो पूर्ण विश्वास द्वारा प्रदान किए गए समर्थन से उत्पन्न होती है, और उपेक्षा और गुमराह लोगों का मिलन उस कमज़ोरी और नपुंसकता से आता है जो उन्हें किसी भी आंतरिक समर्थन की कमी के परिणामस्वरूप अनुभव होती है।

कमज़ोर लोग शक्तिशाली संघ बनाते हैं

ठीक इसी वजह से उन्हें एकता की ज़रूरत होती है। 98 चूँकि मज़बूत लोगों को ऐसी ज़रूरत महसूस नहीं होती, इसलिए उनका एकता कमज़ोर होता है। शेरों को लोमड़ियों की तरह एकता की ज़रूरत नहीं होती और इसलिए वे अलग-अलग रहते हैं, जबकि जंगली बकरियाँ भेड़ियों से खुद को बचाने के लिए झुंड बनाती हैं। कमज़ोर लोगों का समुदाय और सामूहिक व्यक्तित्व मज़बूत होता है, और मज़बूत लोगों का समुदाय और सामूहिक व्यक्तित्व कमज़ोर होता है। कुरान में इस बात का सूक्ष्म संकेत है , और शहर की महिलाओं ने कहा (यूसुफ़ 12:30) क्रिया “कहा” पुल्लिंग रूप में है, हालाँकि इसे दो कारणों से स्त्रीलिंग होना चाहिए [महिलाएँ एक स्त्रीलिंग है

संज्ञा, और बहुवचन भी-तथाकथित 'टूटे हुए' अरबी में बहुवचन हमेशा स्त्रीलिंग के रूप में माने जाते हैं]। लेकिन इसके विपरीत शब्दों को देखें, रेगिस्तानी अरबों ने कहा (अल-हुजुरात 49:14) इस मामले में क्रिया ने कहा कि स्त्रीलिंग है, भले ही इसका विषय पुरुषों के समुदाय को दर्शाता हो। इसमें एक संकेत निहित है, कि कमजोर, नम्र और कोमल महिलाओं का एक संघ शक्ति, कठोरता और बल प्राप्त करता है, और यहां तक कि एक निश्चित प्रकार की पौरुष शक्ति भी प्राप्त करता है। इसलिए क्रिया के पुल्लिंग रूप का उपयोग सबसे उपयुक्त है। इसके विपरीत, मजबूत पुरुष, और विशेष रूप से बेडौइन अरब, अपनी ताकत पर भरोसा करते हैं; इसलिए उनके संगठन कमजोर हैं, क्योंकि वे कोमलता और सावधानी का रुख अपनाते हैं और एक प्रकार की स्त्रीत्व ग्रहण करते हैं, जिसके लिए क्रिया का उपयोग

क्रिया का स्त्रीलिंग रूप सबसे उपयुक्त है। इसी तरह सत्य के लोग भी समर्पण करते हैं
वे ईश्वर में विश्वास के दृढ़ आधार पर भरोसा करते हैं; इसलिए वे अपनी ज़रूरतें दूसरों के सामने नहीं रखते या उनसे सहायता या मदद नहीं मांगते। अगर वे कभी-कभी अनुरोध करते भी हैं, तो वे किसी भी कीमत पर संबंधित व्यक्ति का साथ नहीं देते। लेकिन सांसारिक लोग अपने सांसारिक मामलों में सहारे के सच्चे स्रोत की अनदेखी करते हैं; वे कमज़ोरी और नपुंसकता में पड़ जाते हैं, और सहायता की तीव्र ज़रूरत का अनुभव करते हुए, पूरे दिल से खुद को बलिदान करने के लिए एकजुट हो जाते हैं।

सत्य के लोग एकता में पाई जाने वाली सच्ची शक्ति को नहीं पहचानते और न ही उसकी खोज करते हैं; इसलिए वे विवाद में पड़ जाते हैं, जो इस असफलता का एक बुरा और हानिकारक परिणाम है। इसके विपरीत, गुमराह और झूठ के लोग अपनी कमज़ोरी के कारण एकता में पाई जाने वाली शक्ति को समझते हैं और इस प्रकार एकता प्राप्त करते हैं, जो सभी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन है।

---

[98] पश्चिम में सबसे शक्तिशाली और प्रभावी संगठनों में से एक है अमेरिकन ऑर्गनाइजेशन फॉर वूमेन राइट्स एंड लिबर्टी, भले ही महिलाओं को निष्पक्ष सेक्स कहा जाता है, और वे कमज़ोर और नाजुक होती हैं। इसी तरह, अर्मेनियाई लोगों का संगठन, अन्य लोगों की तुलना में उनकी कमज़ोरी और कम संख्या के बावजूद, अपने मजबूत, आत्म-बलिदान व्यवहार के साथ, हमारे अवलोकन का एक और सबूत प्रदान करता है।

सत्य के लोगों में मतभेद की इस बीमारी का इलाज और उपचार यह है कि अपने आचरण का नियम इस श्लोक में निहित ईश्वरीय निषेध बना लो, विवाद में मत पड़ो, कहीं ऐसा न हो कि तुम हिम्मत हार जाओ और तुम्हारी शक्ति नष्ट हो जाए।
(अल-अनफाल 8:46) और इस आयत में सामाजिक जीवन के लिए ईश्वरीय आदेश निहित है, सदाचार और धर्मपरायणता के लिए मिलकर काम करो (अल-माएदा 5:3)

इसके अलावा, हमें यह भी समझना चाहिए कि विवाद इस्लाम के लिए कितना हानिकारक है, और यह किस तरह गुमराह लोगों को सत्य के लोगों पर विजय पाने में मदद करता है, और फिर, पूरे दिल से और आत्म-बलिदान के साथ, अपनी पूरी कमज़ोरी और नपुंसकता का एहसास करते हुए, सत्य के लोगों के कारवां में शामिल हो जाना चाहिए। अंत में, हमें अपने व्यक्तित्व को भूल जाना चाहिए, पाखंड और दिखावा छोड़ देना चाहिए, और ईमानदारी को अपनाना चाहिए।

छठा कारण

सत्य के लोगों के बीच मतभेद पुरुषार्थ, आकांक्षा और उत्साह की कमी से उत्पन्न नहीं होता; इसी तरह, गुमराह, लापरवाह और सांसारिक लोगों के बीच उनके सांसारिक मामलों के संबंध में पूरे दिल से एकता पुरुषार्थ, आकांक्षा और उत्साह से उत्पन्न नहीं होती। बल्कि सत्य के लोग आम तौर पर परलोक में मिलने वाले लाभों के बारे में चिंतित रहते हैं और इसलिए वे अपने उत्साह, आकांक्षा और पुरुषार्थ को उन महत्वपूर्ण और असंख्य मामलों की ओर निर्देशित करते हैं।

चूँकि वे समय को - जो मनुष्य की सच्ची पूंजी है - एक ही चिंता में नहीं लगाते, इसलिए उनका अपने साथियों के साथ मिलन कभी दृढ़ नहीं हो सकता। उनकी चिंताएँ अनेक हैं और उनका दायरा बहुत बड़ा है। जहाँ तक लापरवाह और सांसारिक लोगों का सवाल है, वे केवल इस संसार के जीवन के बारे में सोचते हैं, और वे अपनी सारी इंद्रियों, अपनी आत्मा और हृदय से इस संसार के जीवन की चिंताओं को दृढ़ता से अपनाते हैं, और जो भी उन चिंताओं में उनकी सहायता करता है, उससे दृढ़ता से चिपके रहते हैं। एक पागल हीरा व्यापारी की तरह जो कांच के एक टुकड़े के लिए बहुत अधिक कीमत देता है, जिसका लगभग कोई मूल्य नहीं है, वे समय को, जो कि सबसे अधिक मूल्यवान है, उन मामलों में लगाते हैं जो वास्तव में और सत्य के लोगों की दृष्टि में कुछ भी मूल्य नहीं रखते हैं। इतनी अधिक कीमत चुकाने और सभी इंद्रियों की भक्ति के साथ खुद को अर्पित करने से स्वाभाविक रूप से परिणाम होगा

पूरी ईमानदारी से काम करने से काम में सफलता मिलती है, जिससे सत्य के लोग हार जाते हैं। इस हार के परिणामस्वरूप, सत्य के लोग अपमान, अपमान, पाखंड और दिखावे की स्थिति में आ जाते हैं, और ईमानदारी खो जाती है। इस प्रकार सत्य के लोग दुनिया के मुट्ठी भर नीच और नीच लोगों के सामने चापलूसी और झुकने के लिए बाध्य होते हैं।

हे सत्य के लोगों! हे कानून के लोगों, वास्तविकता के लोगों और मार्ग के लोगों, सभी भगवान की पूजा करते हैं! कलह की इस भयानक बीमारी का सामना करते हुए, एक दूसरे की गलतियों को अनदेखा करें, एक दूसरे की कमियों के प्रति अपनी आँखें बंद करें!
क़ुरआन की आयत में शिष्टाचार के जो नियम स्थापित किए गए हैं, उनके अनुसार आचरण करो। जब वे गुमराही से गुजरते हैं, तो उससे सम्मानजनक तरीके से बचते हैं। (अल-फ़ुरक़ान 25:72)

इसे अपना प्राथमिक कर्तव्य समझो - जिस पर तुम्हारी परलोक की स्थिति निर्भर करती है - जब कोई बाहरी शत्रु आक्रमण करे तो आंतरिक मतभेद को त्याग दो, और इस प्रकार सत्य के लोगों को उनके अपमान और अपमान से बचाओ! भाईचारा, प्रेम और सहयोग का दृढ़तापूर्वक अभ्यास करो

सैकड़ों कुरान की आयतों और पैगम्बर की परंपराओं द्वारा आदेशित!
अपनी पूरी ताकत से अपने साथियों और धर्म में भाइयों के साथ एक ऐसी एकता स्थापित करो जो सांसारिक एकता से भी अधिक मजबूत हो! विवाद में मत पड़ो! अपने आप से मत कहो, "अपना कीमती समय दूसरों पर खर्च करने के बजाय
ऐसे तुच्छ मामलों को छोड़कर, मुझे इसे अधिक मूल्यवान चीजों पर खर्च करना चाहिए जैसे कि
ईश्वर का आह्वान और ध्यान;" फिर पीछे हटना और एकता को कमजोर करना।
क्योंकि जिस बात को आप इस नैतिक जिहाद में कम महत्व की बात समझते हैं, वह वास्तव में बहुत बड़ी बात हो सकती है। ठीक उसी तरह जैसे कि कुछ विशेष और असामान्य परिस्थितियों में एक सैनिक द्वारा एक घंटे की निगरानी पूरे साल की पूजा के बराबर हो सकती है, इस युग में जब सत्य के लोगों ने अपने कर्तव्य का पालन किया है।

हार के बाद, नैतिक संघर्ष से संबंधित किसी मामूली सी बात पर आप जो कीमती दिन बिताते हैं, वह हज़ार दिनों के बराबर हो सकता है, ठीक उस सैनिक के घंटे की तरह। जो कुछ भी ईश्वर के लिए किया जाता है, वह कभी भी नहीं हो सकता

छोटे और महान, मूल्यवान और मूल्यहीन में विभाजित किया जा सकता है। ईमानदारी से और ईश्वर की प्रसन्नता के लिए खर्च किया गया एक अणु एक तारे की तरह बन जाता है। महत्वपूर्ण बात यह नहीं है कि इस्तेमाल किए गए साधनों की प्रकृति क्या है, बल्कि यह है कि इसका परिणाम क्या है। जब तक परिणाम ईश्वर की प्रसन्नता है और इस्तेमाल किया गया पदार्थ ईमानदारी है, तब तक कोई भी साधन जिसका सहारा लिया जाता है वह महान होगा, छोटा नहीं।

सातवां कारण

सत्य के लोगों के बीच विवाद और प्रतिद्वंद्विता ईर्ष्या और द्वेष से उत्पन्न नहीं होती है।
संसार के प्रति लोभ, और इसके विपरीत सांसारिक और उपेक्षित लोगों के बीच एकता उदारता और महानुभाव से उत्पन्न नहीं होती। बल्कि यह है कि संसार के लोग
सत्य से उत्पन्न होने वाली उदारता और उच्च आकांक्षा को पूरी तरह से संरक्षित करने में असमर्थ हैं, या ईश्वर के मार्ग पर मौजूद प्रतिस्पर्धा का प्रशंसनीय रूप। अयोग्य लोगों द्वारा घुसपैठ किए जाने पर, वे आंशिक रूप से

प्रतिस्पर्धा के उस प्रशंसनीय रूप का दुरुपयोग करें और प्रतिद्वंद्विता और विवाद में पड़ें, जिससे खुद को और इस्लामी समुदाय को गंभीर नुकसान पहुंचे। जहाँ तक उपेक्षा और गुमराह लोगों का सवाल है, तो वे लाभ से वंचित न हों।

वे जिस पर मोहित हैं और लाभ के लिए जिन नेताओं और साथियों की पूजा करते हैं, उन्हें नाराज न करने के लिए, अपने घोर अपमान, अपमान और पुरुषत्व की कमी में, वे अपने साथियों के साथ हर कीमत पर एकता का अभ्यास करते हैं, चाहे वे कितने भी घृणित, विश्वासघाती और हानिकारक क्यों न हों, और अपने साझेदारों के साथ पूरे दिल से सहमत होते हैं, चाहे उनका साझा हित किसी भी रूप में क्यों न हो। इस पूरे दिल से किए गए काम के परिणामस्वरूप, वे वास्तव में वांछित लाभ प्राप्त करते हैं।

तो ऐ सत्य के लोगों, झगड़ों में लिप्त और विपत्ति में पड़े हुए! तुम्हारी ईमानदारी की कमी और इस विपत्ति के युग में ईश्वर की प्रसन्नता को अपना एकमात्र उद्देश्य न बनाने के कारण ही तुमने सत्य के लोगों को इस अपमान और पराजय का सामना कराया है। धर्म और परलोक से संबंधित मामलों में कोई प्रतिद्वंद्विता, ईर्ष्या या जलन नहीं होनी चाहिए; वास्तव में इनमें से कुछ भी सत्य में नहीं हो सकता। ईर्ष्या और जलन का कारण यह है कि जब कई हाथ एक ही वस्तु की ओर बढ़ते हैं, जब कई आँखें एक ही वस्तु पर टिकी होती हैं।

स्थिति यह है कि जब कई पेट एक रोटी के लिए भूखे होते हैं, तो पहले संघर्ष, विवाद और प्रतिद्वंद्विता के परिणामस्वरूप ईर्ष्या उत्पन्न होती है, और फिर ईर्ष्या। चूँकि दुनिया में कई लोग एक ही चीज़ चाहते हैं, और क्योंकि दुनिया, जितनी संकीर्ण और क्षणभंगुर है, मनुष्य की असीमित इच्छाओं को संतुष्ट नहीं कर सकती, लोग एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी बन जाते हैं। हालाँकि, आख़िरत में एक व्यक्ति को पाँच सौ साल का स्वर्ग दिया जाएगा; सत्तर हज़ार

महल और हौरियाँ [99] उसे प्रदान किया जाएगा; और हर एक व्यक्ति
जन्नत में उसका हिस्सा पूरा-पूरा मिलेगा। इस तरह यह बात साफ है कि आखिरत में कोई दुश्मनी की वजह नहीं है और न ही दुश्मनी हो सकती है। ऐसे में न तो उन नेकियों को लेकर कोई दुश्मनी होनी चाहिए जिनका आखिरत में सवाब मिलता है, बल्कि यहां ईर्ष्या की कोई गुंजाइश नहीं है। यहां ईर्ष्या करने वाला या तो पाखंडी है जो दुनियावी नतीज़े की तलाश में है।

अच्छे कर्मों का प्रदर्शन, या एक ईमानदार लेकिन अज्ञानी भक्त, नहीं जानता
अच्छे कर्मों का असली उद्देश्य नहीं समझ पाना और यह न समझना कि ईमानदारी ही सभी अच्छे कर्मों की आत्मा और आधार है। परमेश्वर के संतों के प्रति एक तरह की प्रतिद्वंद्विता और शत्रुता विकसित करके, वह वास्तव में परमेश्वर की करुणा की चौड़ाई पर संदेह कर रहा है।

---

[99] स्वर्ग में युवा महिलाएँ.

इस सत्य का समर्थन करने वाला एक उदाहरण: मेरे एक भूतपूर्व साथी ने किसी से दुश्मनी पाल ली थी। एक बार उसके सामने उसके शत्रु के अच्छे कर्मों और पवित्रता का सकारात्मक वर्णन किया गया। वह ईर्ष्यालु या परेशान नहीं था। फिर किसी ने कहा, "तुम्हारा वह शत्रु साहसी और बलवान है।" हमने एक देखा

उस आदमी में अचानक ईर्ष्या और प्रतिद्वंद्विता की प्रबल भावना प्रकट हुई। हमने उससे कहा:

"पवित्रता और धार्मिकता अनंत जीवन के रत्न की तरह शक्ति और उत्कर्ष प्रदान करती है, फिर भी आप उनसे ईर्ष्या नहीं करते थे। अब सांसारिक शक्ति
बैलों में और साहस जंगली जानवरों में पाया जाता है; पवित्रता और
धार्मिकता हीरे की तुलना में कांच के टुकड़े की तरह है।”

उस आदमी ने जवाब दिया: "हम दोनों ने इस दुनिया में एक ही चीज़ पर अपनी नज़रें गड़ा दी हैं
वस्तु। उस तक पहुँचने के लिए साहस और शक्ति जैसी चीजें ही कदम उठाती हैं। यही कारण है कि मैं उससे ईर्ष्या करता था। परलोक के उद्देश्य और पद अनगिनत हैं। हालाँकि वह यहाँ मेरा दुश्मन है, लेकिन वहाँ वह मेरा प्रिय और अंतरंग भाई हो सकता है।”

उत्तर: इस दुनिया में हर किसी की अपनी निजी और अस्थायी रूप से सीमित दुनिया है जो दुनिया जितनी ही व्यापक है, जिसका आधार उसका जीवन है। वह अपनी दुनिया का उपयोग अपनी आंतरिक और बाहरी इंद्रियों के माध्यम से करता है। वह खुद से कहता है, "सूर्य मेरा दीपक है, तारे मेरी मोमबत्तियाँ हैं।" अन्य प्राणियों और सजीव प्राणियों का अस्तित्व किसी भी तरह से इन पर उसके स्वामित्व को नकारता नहीं है; इसके विपरीत, वे उसकी दुनिया को रोशन और रोशन करते हैं। उसी तरह, हालांकि एक असीम रूप से उच्चतर तल पर, प्रत्येक आस्तिक के बगीचे के अलावा जो

हज़ारों महल और हूरें हैं, आम जन्नत के अलावा हर किसी के लिए एक निजी पाँच सौ साल का जन्नत है। वह अपनी इंद्रियों और भावनाओं के ज़रिए इस जन्नत और अनंत काल से लाभान्वित होगा, उनके विकास की डिग्री के अनुसार। यह तथ्य कि अन्य लोग आम जन्नत में हिस्सा लेते हैं, किसी भी तरह से उसके स्वामित्व या लाभ को नुकसान नहीं पहुँचाता है, बल्कि इसके विपरीत उन्हें मजबूत करता है, और उस विशाल जन्नत को सुशोभित करता है। इस दुनिया में मनुष्य एक घंटे तक चलने वाले बगीचे, एक दिन तक चलने वाले तमाशे, एक महीने तक चलने वाले देश और एक साल तक चलने वाली यात्रा से अपने मुँह, अपने कान, अपनी आँख से लाभ उठाता है,

उसका स्वाद और उसकी सभी अन्य इंद्रियाँ। इसी तरह, अनंत काल के उस क्षेत्र में, उसकी गंध और स्पर्श की भावना, जो इस क्षणभंगुर दुनिया में मुश्किल से एक बगीचे से लाभ उठाती है
एक घंटे तक चलने वाला पौधा, एक साल तक चलने वाले बगीचे जैसा ही लाभ देगा।
दृष्टि और श्रवण जो यहाँ एक वर्ष तक चलने वाले भ्रमण से बमुश्किल लाभ उठाते हैं, क्या वहाँ पाँच सौ वर्ष के भ्रमण से लाभ उठा पाएँगे, जो उस क्षेत्र के लिए उपयुक्त है, जो अंत से अंत तक सुशोभित है। हर विश्वासी को लाभ होगा

वहाँ अपने आध्यात्मिक पद के अनुसार, और आनंद और खुशी प्राप्त करें
उसकी इन्द्रियाँ इस संसार में उसके द्वारा अर्जित पुरस्कार और उसके द्वारा किये गए अच्छे कर्मों के संबंध में विस्तारित और विकसित होंगी।

ऐ सत्य और मार्ग के लोगों! सत्य की सेवा एक महान और भारी खजाने को ले जाने और उसे सुरक्षित रखने के समान है। जो लोग उस भरोसे को अपने कंधों पर लेकर चलते हैं, वे जब भी शक्तिशाली हाथ उनकी सहायता के लिए आगे बढ़ेंगे, तो वे प्रसन्न और कृतज्ञ होंगे। ईर्ष्या करने से दूर, हमें उन लोगों की श्रेष्ठ शक्ति, प्रभावशीलता और क्षमता की गर्व से सराहना करनी चाहिए जो सच्चे प्रेम से उनकी सहायता करने के लिए आगे आते हैं। फिर सच्चे भाइयों और आत्म-त्यागी सहायकों को प्रतिद्वंद्विता की भावना से क्यों देखते हैं, जिससे ईमानदारी खो जाती है? तुम गुमराह लोगों की नज़रों में भयानक आरोपों के संपर्क में आओगे, जैसे कि धर्म के माध्यम से सांसारिक हित साधना, भले ही वह तुमसे और तुम्हारे विश्वास से सौ गुना कम हो, सत्य के ज्ञान के माध्यम से अपनी आजीविका कमाना और लालच और लोभ में दूसरों से होड़ करना।

इस रोग का एकमात्र उपचार यह है कि दूसरों के आरोप लगाने से पहले अपनी आत्मा पर आरोप लगाओ और हमेशा अपने साथी का पक्ष लो, अपनी आत्मा का नहीं। शास्त्रार्थ कला के विद्वानों द्वारा स्थापित सत्य और समता का नियम यह है: "जो व्यक्ति किसी भी विषय पर वाद-विवाद में यह चाहता है कि उसकी बात सत्य निकले, जो व्यक्ति इस बात से प्रसन्न हो कि वह सही निकले और उसका शत्रु गलत और भूला हुआ निकले-ऐसा व्यक्ति अन्याय करता है।" इतना ही नहीं, ऐसा व्यक्ति हारता भी है, क्योंकि जब वह ऐसे वाद-विवाद में विजयी होता है, तो वह पहले से अज्ञात कोई बात नहीं सीखता है और उसका संभावित अभिमान उसे हानि पहुंचाता है। लेकिन यदि उसका विरोधी सही निकला, तो वह पहले से अज्ञात कोई बात सीखता है और इस प्रकार

बिना किसी नुकसान के कुछ हासिल किया, साथ ही अभिमान से भी बचा। दूसरे शब्दों में, अपने व्यवहार में निष्पक्ष और सत्य के प्रति आसक्त व्यक्ति अपनी आत्मा की इच्छा को सत्य की माँगों के अधीन कर देगा। अगर उसे अपना विरोधी सही लगता है, तो वह उसे सहर्ष स्वीकार कर लेगा और उसका समर्थन खुशी-खुशी करेगा।

अतः यदि धर्म के लोग, सत्य के लोग, मार्ग के लोग और ज्ञान के लोग इस सिद्धांत को अपना मार्गदर्शक बना लें, तो वे ईमानदारी प्राप्त करेंगे और उन कर्तव्यों में सफल होंगे जो उन्हें परलोक के लिए तैयार करते हैं।

ईश्वर की दया से वे इस भयावह दुःख और दुर्भाग्य से मुक्त हो जायेंगे, जिससे वे वर्तमान में पीड़ित हैं।

तेरी महिमा हो! हमारे पास कोई ज्ञान नहीं सिवाय उसके जो तेरे पास है
हमें सिखाया, निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

ईमानदारी पर-2

इस लेख को कम से कम पखवाड़े में एक बार अवश्य पढ़ा जाना चाहिए।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

एक दूसरे से विवाद मत करो, अन्यथा तुम हिम्मत हार जाओगे और तुम्हारी शक्ति और ऊर्जा तुम्हारा साथ छोड़ देगी; और दृढ़ बने रहो।

(अल-अनफ़ल 8:46)

और अल्लाह के सामने श्रद्धापूर्वक खड़े रहो।

(अल-बकराह 2:238)

सचमुच वही सफल होता है जो इसे शुद्ध करता है,

और जो इसे भ्रष्ट करता है वह असफल हो जाता है। (ऐश-शम्स 91:9–10)

और न मेरी आयतों को थोड़े दाम पर बेचो। (अल-बक़रा 2:41)

ऐ मेरे आख़िरत के भाइयों! और ऐ मेरे क़ुरआन की सेवा में लगे साथियों! तुम्हें मालूम होना चाहिए - और तुम जानते भी हो - कि इस दुनिया में ईमानदारी ही सबसे बड़ी चीज़ है।

विशेष रूप से परलोक से संबंधित कार्यों में यह सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है;

सबसे बड़ी ताकत, और सबसे स्वीकार्य मध्यस्थ, और समर्थन का सबसे मजबूत बिंदु, और वास्तविकता का सबसे छोटा रास्ता, और सबसे स्वीकार्य

प्रार्थना, और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का सबसे अद्भुत साधन, और उच्चतम गुणवत्ता, और सबसे शुद्ध पूजा। क्योंकि ईमानदारी में बहुत ताकत और

ऊपर वर्णित की गई कई रोशनियाँ; और चूँकि इस भयानक समय में, हमारी कम संख्या और कमज़ोर, दरिद्र और शक्तिहीन स्थिति के बावजूद और भयानक दुश्मनों से सामना होने और आक्रामक नवाचारों और गुमराही के बीच गंभीर उत्पीड़न सहने के बावजूद, ईश्वरीय कृपा से हमारे कंधों पर ईमान और कुरान की सेवा करने का एक बहुत ही भारी, महत्वपूर्ण, सामान्य और पवित्र कर्तव्य डाला गया है, इसलिए हम निश्चित रूप से ईमानदारी हासिल करने के लिए अपनी पूरी ताकत के साथ काम करने के लिए किसी और से ज़्यादा मजबूर हैं। हमें अपने अंदर ईमानदारी पैदा करने की बहुत ज़रूरत है। अन्यथा हमने अपनी पवित्र सेवा में अब तक जो हासिल किया है वह आंशिक रूप से खो जाएगा, और कायम नहीं रहेगा; और हम जिम्मेदार ठहराए जाएँगे। हम ईश्वरीय निषेध में निहित गंभीर खतरे को प्रकट नहीं करेंगे, न ही अपनी निशानियों को थोड़े से दाम में बेचेंगे, (अल-बक़रा 2:41) और ईमानदारी को नष्ट कर देंगे, इस प्रकार व्यर्थ की खातिर शाश्वत सुख को नुकसान पहुँचाएँगे,

अनावश्यक, हानिकारक, दुखद, आत्म-केंद्रित, उबाऊ, पाखंडी आधार भावनाएँ और महत्वहीन लाभ। और ऐसा करके हम अपने सभी भाइयों का उल्लंघन करेंगे

अधिकारों का हनन करना, कुरान की सेवा के कर्तव्य का उल्लंघन करना, तथा विश्वास की सच्चाइयों की पवित्रता के प्रति अनादर करना।

मेरे भाईयों! अच्छे कामों के आगे बहुत सी बाधाएँ आती हैं। शैतान उन लोगों के खिलाफ़ एक शक्तिशाली संघर्ष करता है जो इन कामों में मदद करते हैं। इन बाधाओं और शैतानों का सामना करने के लिए ईमानदारी की ताकत पर भरोसा करना चाहिए। आपको ईमानदारी को नुकसान पहुँचाने वाली चीज़ों से उसी तरह बचना चाहिए जैसे आप साँपों और बिच्छुओं से बचते हैं। यूसुफ़ के शब्दों के अनुसार, शांति और आशीर्वाद उस पर हो, न ही मैं खुद को [दोष से] मुक्त करता हूँ; [मानव] आत्मा है

निश्चित रूप से बुराई की ओर प्रवृत्त, जब तक कि मेरा पालनहार अपनी दया न करे (यूसुफ 12:53) बुराई का आदेश देने वाली आत्मा पर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए। अहंकार और आत्मा को अपने आप को धोखा देने न दें! ईमानदारी हासिल करने और इसे बनाए रखने के लिए आपको निम्नलिखित नियमों को अपनाना चाहिए:

आपका पहला नियम

आपको अपने कामों में ईश्वरीय प्रसन्नता तलाशनी चाहिए। अगर सर्वशक्तिमान ईश्वर प्रसन्न हैं, तो इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि पूरी दुनिया नाराज़ हो जाए। अगर वे किसी काम को स्वीकार कर लें और बाकी सब उसे अस्वीकार कर दें, तो इसका कोई असर नहीं होता। एक बार जब उनकी प्रसन्नता प्राप्त हो गई और उन्होंने किसी काम को स्वीकार कर लिया, तो भले ही आप उनसे न भी कहें, अगर वे चाहें और उनकी बुद्धि इसकी मांग करे, तो वे दूसरों से भी इसे स्वीकार करवा लेंगे। वे उनसे भी इसके लिए सहमति दिलवा देंगे। इस कारण से, एकमात्र

इस सेवा का उद्देश्य ईश्वरीय प्रसन्नता की प्रत्यक्ष खोज होना चाहिए।

आपका दूसरा नियम

इसका उद्देश्य अपने उन भाइयों की निन्दा करना नहीं है जो क़ुरआन की सेवा में लगे हुए हैं, और न ही अपने श्रेष्ठ गुणों का प्रदर्शन करके उनकी ईर्ष्या भड़काना है।
मनुष्य का एक हाथ दूसरे से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता, न ही उसकी एक आंख दूसरे की आलोचना कर सकती है, न ही उसकी जीभ उसके कानों को आपत्ति दे सकती है, न ही उसका हृदय उसकी आत्मा के दोषों को देख सकता है। उसका प्रत्येक अंग दूसरे की कमियों को पूरा करता है,
उनकी गलतियों को छुपाता है, उनकी जरूरतों में सहायता करता है, और उनके कर्तव्यों को पूरा करने में उनकी मदद करता है।
अन्यथा मनुष्य का जीवन समाप्त हो जाएगा, उसकी आत्मा भाग जाएगी, और उसका शरीर नष्ट हो जाएगा।
तितर - बितर।

इसी तरह, एक कारखाने में मशीनरी के घटक एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा में प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते, एक दूसरे पर वरीयता नहीं ले सकते, या एक दूसरे पर हावी नहीं हो सकते। वे एक दूसरे की कमियों को नहीं खोज सकते और एक दूसरे की आलोचना नहीं कर सकते, काम के लिए एक दूसरे की उत्सुकता को नष्ट नहीं कर सकते, और उन्हें काम करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते।

निष्क्रिय हो जाते हैं। वे सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी पूरी क्षमता से एक-दूसरे की गतिविधियों में सहायता करते हैं; वे सच्ची एकजुटता और एकता के साथ अपने निर्माण के उद्देश्य की ओर बढ़ते हैं। अगर थोड़ी सी भी आक्रामकता या हावी होने की इच्छा हस्तक्षेप करती है, तो यह कारखाने को अस्त-व्यस्त कर देगी, जिससे यह उत्पाद या परिणाम के बिना रह जाएगा। फिर कारखाने का मालिक कारखाने को पूरी तरह से नष्ट कर देगा।

और इसलिए, ऐ रिसाले-ए-नूर के छात्रों और कुरान के सेवकों! आप और मैं
ऐसे सामूहिक व्यक्तित्व के सदस्य, जो 'पूर्ण' की उपाधि के योग्य हों
मनुष्य। हम एक कारखाने की मशीनरी के घटकों की तरह हैं जो अनन्त जीवन के भीतर अनन्त खुशी पैदा करते हैं। हम एक प्रमुख नाव पर काम करने वाले हाथ हैं जो मुहम्मद के समुदाय को शांति के राज्य, मोक्ष के तट पर उतार देगा। इसलिए हमें निश्चित रूप से एकजुटता और सच्ची एकता की आवश्यकता है, जो ईमानदारी प्राप्त करने के माध्यम से प्राप्त होती है-क्योंकि ईमानदारी का रहस्य चार व्यक्तियों के माध्यम से एक हजार एक सौ ग्यारह की नैतिक शक्ति को सुरक्षित करता है-वास्तव में, हम इसे प्राप्त करने के लिए मजबूर हैं।

हाँ, अगर तीन अरबी अलिफ़ के पहले अक्षर आपस में न मिलें, तो उनका मूल्य तीन होता है। जबकि अगर वे आपस में मिल भी जाएँ, तो संख्याओं के रहस्य के ज़रिए वे एक सौ ग्यारह का मान प्राप्त कर लेते हैं। अगर चार गुणा चार अलग-अलग रहें, तो उनका मूल्य सोलह होता है। लेकिन अगर भाईचारे के रहस्य और एक समान लक्ष्य और संयुक्त कर्तव्य के ज़रिए वे कंधे से कंधा मिलाकर एक हो जाएँ, तो

एक पंक्ति में कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले भाइयों में चार हजार चार सौ चौवालीस की ताकत और मूल्य है। जैसे कि कई ऐतिहासिक घटनाएँ इस बात की गवाही देती हैं कि सोलह आत्म-त्यागी भाइयों की नैतिक ताकत और मूल्य चार हज़ार से ज़्यादा है।

इस रहस्य का मूल कारण यह है: एक सच्चे और सच्चे संघ का प्रत्येक सदस्य दूसरे भाइयों की आँखों से भी देख सकता है, और अपने कानों से सुन सकता है। मानो दस लोगों के एक सच्चे संघ के प्रत्येक व्यक्ति में मूल्य और शक्ति है
बीस आँखों से देखने, दस मन से सोचने, बीस कानों से सुनने और बीस हाथों से काम करने की क्षमता।100

---

[100] हां, ईमानदारी के रहस्य के माध्यम से दिल से एकजुटता और एकता असंख्य लाभों का साधन है, और इसलिए वे भय और यहां तक कि मृत्यु के खिलाफ एक प्रभावी ढाल और समर्थन बिंदु भी हैं। क्योंकि, अगर मृत्यु आती है, तो यह एक आत्मा लेती है। लेकिन चूंकि रहस्य के माध्यम से
परलोक से जुड़े कार्यों में ईश्वरीय प्रसन्नता के मार्ग पर सच्चे भाईचारे के लिए भाइयों की संख्या के बराबर आत्माएं हैं, यदि उनमें से एक मर जाता है, तो वह खुशी से मृत्यु का स्वागत करता है, और कहता है: "मेरी अन्य आत्माएं जीवित रहती हैं, क्योंकि वे वास्तव में मेरे लिए जीवन जारी रखती हैं
मेरे लिए लगातार इनाम प्राप्त करना, इसलिए मैं नहीं मर रहा हूँ। उनकी आत्माओं के माध्यम से, मैं पुण्य के संबंध में जीवित हूँ; मैं केवल पाप के संबंध में मर रहा हूँ। " और वह शांति से लेट जाता है।

आपका तीसरा नियम

आपको पता होना चाहिए कि आपकी सारी ताकत ईमानदारी और सच्चाई में निहित है। हाँ, ताकत सच्चाई और ईमानदारी में निहित है। यहाँ तक कि जो लोग गलत हैं, वे भी अपनी गलत हरकतों में ईमानदारी से ताकत पाते हैं।

हमारी यह सेवा इस बात का प्रमाण है कि सत्य और ईमानदारी में ही शक्ति निहित है।
हमारे काम में थोड़ी सी ईमानदारी इस दावे को साबित करती है और खुद इसका सबूत है। क्योंकि यहाँ सात या आठ साल की शिक्षा और धर्म की सेवा मेरे मूल क्षेत्र और इस्तांबुल में की गई बीस साल की सेवा से सौ गुना ज़्यादा है। और मेरे अपने क्षेत्र और इस्तांबुल में मेरी मदद करने वालों की संख्या मेरे उन भाइयों से सौ या हज़ार गुना ज़्यादा थी जो यहाँ मेरे साथ काम करते हैं, जहाँ मैं अकेला हूँ, कोई नहीं, कोई अजनबी, अर्ध-शिक्षित, अन्यायी अधिकारियों की निगरानी में और उनके द्वारा सताए जाने वाला। मुझे इस बात में बिलकुल भी संदेह नहीं है कि मैंने इन सात या आठ सालों में आपके साथ जो सेवा की है और जो नैतिक शक्ति जिसके परिणामस्वरूप मुझे पहले की तुलना में सौ गुना अधिक सफलता मिली है, वह आपकी ईमानदारी का ही नतीजा है। मुझे यह भी स्वीकार करना है कि अपनी हार्दिक ईमानदारी के माध्यम से, आपने मुझे उस पाखंड से कुछ हद तक बचाया है जो प्रसिद्धि और यश के आवरण में मेरी आत्मा को खुश करता था। ईश्वर की इच्छा से, आप

पूर्ण ईमानदारी प्राप्त करने में सफल हो जाओ, और तुम मुझे भी इसे प्राप्त करने में सहायता करोगे।
आपको मालूम होना चाहिए कि हज़रत अली, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, और
ग़ौथ अल-आज़म, उसका रहस्य पवित्र हो, आपको उनके चमत्कारी आश्चर्य-कार्य और अदृश्य के अद्भुत दर्शन से सम्मानित करें क्योंकि
ईमानदारी का यह रहस्य। वे आपको सुरक्षात्मक तरीके से सांत्वना देते हैं और आपकी सेवा की सराहना करते हैं। हाँ, आपको इस बात में कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि उनका यह ध्यान ईमानदारी के कारण है। यदि आप जानबूझकर इस ईमानदारी को नुकसान पहुँचाते हैं, तो यह उनसे ही है कि आपको दंड मिलेगा। आपको द फ्लैशेस में दसवें फ्लैश में 'करुणा के प्रहार' को ध्यान में रखना चाहिए।

यदि आप आध्यात्मिक नायकों जैसे कि उन लोगों का समर्थन पाना चाहते हैं जो
तुम, और उन्हें अपने सिर पर मालिक के रूप में रखो, आयत के अनुसार पूरी ईमानदारी हासिल करो, लेकिन उन्हें खुद पर वरीयता दो (अल-हश्र 59: 9)। अपने भाइयों की आत्माओं को अपने से ज़्यादा सम्मान, पद, प्रशंसा में तरजीह दो, उन चीज़ों में जो तुम्हारी आत्मा को पसंद हैं जैसे भौतिक लाभ। यहाँ तक कि सबसे मासूम, हानिरहित लाभों में भी जैसे किसी ज़रूरतमंद आस्तिक को विश्वास के सूक्ष्म, बढ़िया सत्यों में से एक के बारे में बताना। अगर संभव हो तो अपने किसी साथी को जो नहीं बताना चाहता है, उसे बताने के लिए प्रोत्साहित करो, ताकि तुम्हारी आत्मा अभिमानी न हो जाए। अगर तुम्हारी इच्छा है कि "मैं उसे यह बता दूँ

सुखद बात है इसलिए मुझे पुरस्कार मिलेगा, "यह निश्चित रूप से एक पाप नहीं है और इसमें कोई नुकसान नहीं है, लेकिन आप दोनों के बीच ईमानदारी का अर्थ क्षतिग्रस्त हो सकता है।

आपका चौथा नियम

इसका मतलब है अपने भाइयों के गुणों और खूबियों को अपने अंदर कल्पित करना और उनके गौरव पर गर्व करना। सूफियों के पास आपस में इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द हैं, "शेख में विनाश", "पैगंबर में विनाश"; मैं सूफी नहीं हूँ, लेकिन उनके ये सिद्धांत हमारे रास्ते में "भाइयों में विनाश" के रूप में एक अच्छा नियम बनाते हैं। भाइयों के बीच इसे "तफ़नी" कहा जाता है; यानी, "एक दूसरे में विनाश"। यानी, भावनाओं को भूल जाना।

अपनी शारीरिक आत्मा को अपने मन में रखना और अपने भाइयों के गुणों और भावनाओं के साथ जीना। किसी भी स्थिति में, हमारे मार्ग का आधार भाईचारा है। यह पिता और पुत्र या शेख और अनुयायी के बीच का साधन नहीं है। यह भाईचारे का साधन है।
सच्चा भाईचारा। ज़्यादा से ज़्यादा एक उस्ताद हस्तक्षेप करता है। हमारा रास्ता सबसे करीबी दोस्ती है। इस दोस्ती के लिए सबसे करीबी दोस्त होना ज़रूरी है,
सबसे त्याग करने वाला साथी, सबसे अधिक सराहना करने वाला साथी, सबसे महान भाई। इस दोस्ती का सार सच्ची ईमानदारी है। जो इस सच्ची ईमानदारी को बिगाड़ता है, वह इस दोस्ती के उच्च शिखर से गिर जाता है। वह संभवतः एक गहरे अवसाद की तह में गिर सकता है। ऐसा कुछ भी नहीं है जिस पर वह टिक सके

बीच में चिपके रहो.

हाँ, रास्ता दो ही नज़र आता है। यह भी संभावना है कि जो लोग हमारे इस रास्ते, क़ुरआन के महान राजमार्ग से अलग हो रहे हैं, वे अनजाने में ही अधर्म की ताकतों की मदद कर रहे हैं, जो हमारे दुश्मन हैं। ईश्वर

जो लोग चाहें, वे रिसाले-ए-नूर के माध्यम से चमत्कारिक व्याख्या के कुरान की पवित्र सीमा में प्रवेश करेंगे, वे हमेशा प्रकाश, ईमानदारी और विश्वास को शक्ति प्रदान करेंगे, और ऐसे नुकसानों से बचेंगे।

ऐ क़ुरआन की सेवा में मेरे साथियों! ईमानदारी हासिल करने और उसे बनाए रखने का सबसे कारगर तरीका है "मृत्यु का चिंतन।" जी हाँ, जैसे सांसारिक महत्वाकांक्षा ईमानदारी को नुकसान पहुँचाती है और इंसान को पाखंड और दुनिया की ओर ले जाती है, वैसे ही मृत्यु का चिंतन पाखंड से घृणा पैदा करता है और ईमानदारी हासिल करता है। यानी मौत के बारे में सोचना और यह महसूस करना कि यह दुनिया क्षणभंगुर है, और इसलिए आत्मा की चालों से बच जाना। जी हाँ, सूफियों और सत्य के लोगों ने हिकमत वाले क़ुरआन की आयतों से यह शिक्षा प्राप्त की है, जैसे, हर आत्मा मौत का स्वाद चखेगी (अल-इमरान 3:185) और तुम निश्चित रूप से [एक दिन] मरोगे, और निश्चित रूप से वे भी मरेंगे

[एक दिन] मरना (अज़-ज़ुमर 39:30) उन्होंने मृत्यु के चिंतन को अपनी आध्यात्मिक यात्रा का मूल आधार बनाया, और सांसारिक महत्वाकांक्षा के स्रोत, अनंत काल के भ्रम को दूर किया। उन्होंने खुद को मरा हुआ और कब्र में रखे जाने की कल्पना और धारणा की। लंबे समय तक विचार करने से दुष्ट आत्मा ऐसी कल्पना से दुखी और प्रभावित हो जाती है और एक हद तक अपनी दूरगामी महत्वाकांक्षाओं और आशाओं को छोड़ देती है।

इस चिंतन के अनेक लाभ हैं।
जिसका अर्थ है, "बार-बार मृत्यु का उल्लेख करें जो आनंद को दूर कर देती है और इसे कड़वा बना देती है"101 यह चिंतन सिखाता है।

हालाँकि, चूँकि हमारा मार्ग सूफी मार्ग नहीं बल्कि वास्तविकता का मार्ग है, इसलिए हम इस चिंतन को काल्पनिक और अवास्तविक तरीके से करने के लिए बाध्य नहीं हैं।
सूफियों की तरह काल्पनिक रूप में। ऐसा करना वैसे भी वास्तविकता के मार्ग के अनुरूप नहीं है। हमारा तरीका अंत के बारे में सोचकर भविष्य को वर्तमान में लाना नहीं है, बल्कि वास्तविकता के संबंध में वर्तमान से भविष्य में मन में जाना है, और उस पर नज़र डालना है। हाँ, कल्पना या अवधारणा की कोई आवश्यकता नहीं होने के कारण, कोई अपनी लाश को देख सकता है, इस संक्षिप्त जीवन के वृक्ष पर एकमात्र फल। इस तरह, कोई अपनी मृत्यु को देख सकता है, और यदि कोई जाता है

थोड़ा और आगे बढ़ने पर इस सदी की मृत्यु दिखाई देती है, और उससे भी आगे बढ़ने पर,
इस संसार की मृत्यु का अवलोकन करें, जिससे पूर्ण ईमानदारी का मार्ग खुलेगा।
दूसरा साधन: निश्चित, सत्यापित विश्वास की शक्ति के माध्यम से और प्राणियों पर चिंतन से उत्पन्न प्रकाश के माध्यम से ईश्वरीय उपस्थिति की भावना प्राप्त करना, जो निर्माता के ज्ञान की ओर ले जाता है; यह सोचना कि दयालु निर्माता सर्वव्यापी है और देख रहा है; उसके अलावा किसी अन्य का ध्यान आकर्षित नहीं करना, और यह समझना कि उसकी उपस्थिति में दूसरों की ओर देखना या उनसे सहायता मांगना सही आचरण के विपरीत है।

उसकी उपस्थिति में, व्यक्ति ऐसे पाखंड से बच सकता है और ईमानदारी प्राप्त कर सकता है।
हालाँकि, इसमें कई डिग्री और चरण हैं। चाहे कोई व्यक्ति कितना भी बड़ा क्यों न हो
अपने हिस्से से लाभ उठा सकता है, यह लाभ है। रिसाले-ए-नूर में बहुत सी ऐसी सच्चाइयाँ बताई गई हैं जो इंसान को पाखंड से बचाती हैं और उसे ईमानदारी प्रदान करती हैं, इसलिए हम उन्हें यहाँ उद्धृत करते हुए इस चर्चा को यहीं समाप्त करते हैं।

---

[101] तिर्मिधि, ज़ुहद 4; पुनरुत्थान 26; नसाई, जनाईज़ 3; इब्न माजाह, ज़ुहद 31; अल-हकीम, अल-मुस-तद्रक, iv, 321।

बाधाएं जो ईमानदारी को नष्ट करती हैं और व्यक्ति को पाखंड की ओर ले जाती हैं

पहली बाधा

भौतिक लाभों के लिए प्रतिद्वंद्विता धीरे-धीरे ईमानदारी को नष्ट कर देती है। यह हमारी सेवा के परिणामों के लिए भी हानिकारक है। इसी तरह यह भौतिक लाभों को भी प्रभावित करता है।

खो जाना। इस देश ने हमेशा उन लोगों के लिए सम्मान का पोषण किया है जो काम करते हैं

वास्तविकता और परलोक में उनकी सहायता की, और सक्रिय रूप से उनकी सहायता की।

उनकी सच्ची ईमानदारी और उनके द्वारा समर्पित भाव से किए जाने वाले कार्यों में हिस्सा लेते हुए, इसने हमेशा उन्हें दान और उपहार जैसे भौतिक लाभों से सहायता देकर सम्मान दिखाया है ताकि वे अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने और अपना समय बर्बाद करने में व्यस्त न हो जाएं। लेकिन यह सहायता और लाभ शायद उनके लिए उपयोगी न हो

मांगा जा सकता है; यह दिया जाता है। इसे जीभ से भी नहीं मांगा जा सकता

दिल से चाहना या उम्मीद करना स्वभाव से ही सही है। इसे तब दिया जाना चाहिए जब इसकी उम्मीद न हो, अन्यथा ईमानदारी को नुकसान पहुंचेगा। यह आयत के निषेध के करीब भी है, न ही मेरी निशानियों को थोड़े से दाम में बेचो (अल-बक़रा 2:41) और आंशिक रूप से कर्म को नष्ट कर देता है।

इस प्रकार, पहले तो ऐसे भौतिक लाभ की इच्छा और अपेक्षा रखते हुए, फिर उसे किसी और के पास न जाने देने के लिए, दुष्ट आत्मा स्वार्थवश उस विशेष क्षेत्र में सच्चे भाई और साथी के प्रति प्रतिद्वंद्विता की भावना को उत्तेजित करती है।

सेवा। ईमानदारी क्षतिग्रस्त हो जाती है, और सेवा की पवित्रता खो जाती है, और व्यक्ति वास्तविकता के लोगों की नज़र में अप्रिय हो जाता है। वह भी

भौतिक लाभ खो देता है। इस विषय पर बहुत चर्चा होनी चाहिए। हालाँकि, मैं इसे संक्षिप्त करूँगा और केवल दो उदाहरणों का उल्लेख करूँगा जो मेरे सच्चे भाइयों के बीच ईमानदारी और सच्ची एकता को मजबूत करेंगे।

पहला उदाहरण: 'सांसारिक' और यहाँ तक कि कुछ राजनीतिज्ञ और गुप्त समाज और समाज के जोड़-तोड़ करने वाले लोगों ने भी बहुत अधिक धन और शक्ति प्राप्त करने के लिए साझा संपत्ति के सिद्धांत को अपना मार्गदर्शक बना लिया है। वे अपने सभी शोषण और नुकसानों के बावजूद असाधारण शक्ति और लाभ प्राप्त करते हैं। हालाँकि, साझा संपत्ति की प्रकृति साझा करने से नहीं बदलती, इसके कई नुकसानों के बावजूद। हालाँकि प्रत्येक भागीदार एक तरह से बाकी का मालिक और पर्यवेक्षक है, लेकिन वह इससे लाभ नहीं उठा सकता।

फिर भी, अगर साझा संपत्ति के इस सिद्धांत को परलोक से जुड़े कामों पर लागू किया जाए, तो इससे बहुत ज़्यादा लाभ होता है और कोई नुकसान नहीं होता। इसका मतलब है कि सारी संपत्ति हर एक भागीदार के हाथ में चली जाती है।

उदाहरण के लिए, चार या पांच आदमी हैं। साझा करने के विचार से, उनमें से एक

कोई पैराफिन लाता है, कोई बाती, कोई दीया, कोई

एक दीपक और पांचवां माचिस; वे दीपक को इकट्ठा करते हैं और उसे जलाते हैं। उनमें से प्रत्येक एक पूरे दीपक का मालिक बन जाता है। यदि उनमें से प्रत्येक भागीदार के पास दीवार पर एक पूरी लंबाई का दर्पण है, तो वह दीपक और कमरे के साथ उसमें प्रतिबिंबित होगा, बिना किसी कमी या विभाजन के।

ईमानदारी के रहस्य के माध्यम से परलोक की वस्तुओं में पारस्परिक भागीदारी, भाईचारे के रहस्य के माध्यम से सहयोग, एकता के रहस्य के माध्यम से संयुक्त उद्यम के साथ भी यही बात लागू होती है - इन संयुक्त कार्यों के माध्यम से प्राप्त कुल, और सारा प्रकाश, ईश्वर की पुस्तक में प्रवेश करता है।

इसमें भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के अच्छे कर्मों की आवश्यकता है। यह एक तथ्य है और वास्तविकता के लोगों ने इसे देखा है। यह ईश्वरीय दया और उदारता की व्यापकता की भी आवश्यकता है।

और इसलिए, मेरे भाइयों, ईश्वर की इच्छा से, भौतिक लाभ हमें उत्तेजित नहीं करेंगे
तुम्हारे बीच प्रतिद्वंद्विता है। यह संभव है कि तुम भी सूफी मार्ग पर चलने वालों की तरह परलोक के लाभों के संबंध में धोखा खा जाओ। लेकिन कुछ व्यक्तिगत, छोटे-मोटे पुण्य की तुलना ऊपर बताए गए उदाहरण में बताए गए साझा कर्मों के संबंध में प्रकट पुण्य और प्रकाश से कैसे की जा सकती है?

दूसरा उदाहरण: शिल्पकार अपने शिल्प के उत्पादों से अधिक लाभ कमाने के लिए सहकारिता के माध्यम से महत्वपूर्ण धन अर्जित कर रहे हैं। पहले दस आदमी जो सिलाई सुई बनाते थे, वे सभी अपने-अपने काम करते थे, और इसका फल

उनका व्यक्तिगत श्रम एक दिन में तीन सुइयाँ बनाना था। फिर संयुक्त उद्यम के नियम के अनुसार दस आदमी एकजुट हो गए। एक लोहा लाया, एक ने भट्ठी जलाई, एक ने सुइयों को छेदा, एक ने उन्हें भट्ठी में रखा, और एक ने उनकी नोकें तेज की, और इसी तरह... प्रत्येक व्यक्ति सुई बनाने की कला की प्रक्रिया के केवल एक हिस्से में व्यस्त था। चूँकि वह जिस काम में लगा हुआ था

काम पर रखा गया व्यक्ति सरल था, समय बर्बाद नहीं होता था, उसने कौशल हासिल किया और काफी तेजी से काम किया। फिर उन्होंने काम को विभाजित किया जो संयुक्त उद्यम और श्रम के विभाजन के नियम के अनुसार था: उन्होंने देखा कि एक दिन में तीन सुइयों के बजाय, यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए तीन सौ काम करता था। यह घटना 'के कारीगरों के बीच व्यापक रूप से प्रकाशित हुई थी

उन्हें अपना श्रम एकत्रित करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए 'सांसारिक' शब्द का प्रयोग किया गया।

और इसलिए, मेरे भाईयों! चूँकि इस संसार के मामलों में और सघन पदार्थों में एकता और सामंजस्य ऐसे परिणाम और विशाल समग्र लाभ प्रदान करते हैं, इसलिए आप तुलना कर सकते हैं कि प्रत्येक के लिए अपने स्वयं के दर्पण में ईश्वरीय कृपा के माध्यम से सभी के प्रकाश को प्रतिबिंबित करना कितना लाभदायक है, जो कि प्रकाशमान है और परलोक से संबंधित है और जिसे विभाजित करने की आवश्यकता नहीं है और

विखंडित, और उन सभी के बराबर इनाम प्राप्त करने के लिए। इस विशाल लाभ को प्रतिद्वंद्विता और निष्ठाहीनता के कारण नहीं खोना चाहिए।

दूसरी बाधा जो ईमानदारी को नष्ट करती है

यह अहंकार की चापलूसी करना और खुद पर ध्यान आकर्षित करने और लोगों की प्रशंसा के माध्यम से बुराई करने वाली आत्मा को उच्च दर्जा देना है, जो प्रसिद्धि, यश और पद की इच्छा से प्रेरित है। यह एक गंभीर आध्यात्मिक बीमारी है, इसलिए

यह पाखंड और आत्म-केंद्रितता का द्वार भी खोलता है जिसे 'ईश्वर के साथ गुप्त साझेदारों की संगति' कहा जाता है, और ईमानदारी को नुकसान पहुंचाता है।

मेरे भाईयों! कुरान की सेवा में हमारा मार्ग सच्चाई और भाईचारा है, और भाईचारे का सच्चा अर्थ है अपने भाइयों के बीच अपने व्यक्तित्व को नष्ट करना और उनकी आत्मा को अपनी आत्मा से अधिक महत्व देना। इसलिए पद और पद की चाहत से उत्पन्न इस प्रकार की प्रतिद्वंद्विता को भड़काया नहीं जाना चाहिए। यह हमारे मार्ग के सर्वथा विपरीत है। भाइयों का

सम्मान सभी व्यक्तियों का सामान्य रूप से हो सकता है; इसलिए मुझे उम्मीद है कि व्यक्तिगत, स्वार्थी, प्रतिस्पर्धी, मामूली प्रसिद्धि और यश के लिए उस महान सामूहिक सम्मान का त्याग करना रिसाले-ए-नूर के छात्रों द्वारा किया जाने वाला काम नहीं है। हाँ, रिसाले-ए-नूर के छात्रों का दिल, दिमाग और आत्मा ऐसी नीच, हानिकारक, घटिया चीजों तक नहीं गिरेंगे। लेकिन हर किसी के पास एक बुराई करने वाली आत्मा होती है, और कभी-कभी आत्मा की भावनाएँ चरित्र की कुछ नसों को प्रभावित करती हैं, और दिल, दिमाग और आत्मा के बावजूद एक हद तक शासन करती हैं; मैं

मैं आपके दिल, दिमाग और आत्मा पर आरोप नहीं लगा रहा हूँ। रिसाले-ए-नूर के प्रभाव के कारण मुझे आप पर भरोसा है। लेकिन आत्मा, इच्छाएँ, भावनाएँ और कल्पनाएँ कभी-कभी धोखा देती हैं। इस कारण से, आपको कभी-कभी कड़ी चेतावनियाँ मिलती हैं। यह गंभीरता आत्मा, भावनाओं, इच्छाओं और

कल्पना; सावधानी से कार्य करें।

हाँ, यदि हमारा मार्ग किसी शेख के अधीन रहने का होता, तो हम कभी भी किसी भी कीमत पर किसी भी कीमत पर किसी भी प्रकार की हिंसा का सामना नहीं कर सकते थे।

एक ही पद या सीमित पद होते तो उन्हें अनेक पद दिए जाते। ईर्ष्या और स्वार्थ हो सकता था। लेकिन हमारा मार्ग भाईचारा है। भाइयों के बीच पिता का पद नहीं हो सकता, न ही वे आध्यात्मिक मार्गदर्शक का पद ग्रहण कर सकते हैं। भाईचारे में पद व्यापक होता है; यह ईर्ष्यापूर्ण संघर्ष का कारण नहीं हो सकता। अधिक से अधिक भाई मदद करता है

और भाई का समर्थन करता है; वह अपनी सेवा पूरी करता है। सबूत है कि बहुत नुकसान
और इसके परिणामस्वरूप कई ग़लतियाँ हुई हैं

[102] हाँ, वह व्यक्ति खुश है जो कुरान के सोते से छने हुए मीठे पानी के एक बड़े कुंड तक पहुँच प्राप्त करने के लिए अपने व्यक्तित्व और अहंकार को - जो बर्फ के टुकड़ों के समान हैं - कुंड में डाल देता है और उन्हें पिघला देता है।

ईर्ष्या, आध्यात्मिक पुरस्कार के लिए लालच, और आध्यात्मिक मार्गदर्शकों के मार्गों की उच्च आकांक्षाएं, सूफी मार्ग का अनुसरण करने वालों के बीच संघर्ष और प्रतिद्वंद्विता हैं - उनकी विशाल और महत्वपूर्ण उपलब्धियां, सिद्धियां और लाभ - जिनके विनाशकारी परिणाम यह हुए हैं कि उनकी विशाल और पवित्र शक्ति नवाचार के तूफानों का सामना करने में असमर्थ रही है।

तीसरी बाधा

यह भय और लालच है। इस बाधा को छह आक्रमणों में पूरी तरह से समझाया गया है103 और कुछ अन्य बाधाओं के साथ। इसलिए हम आपको उसी की ओर संकेत करते हैं, और उनके सभी सबसे सुंदर नामों को अपना मध्यस्थ बनाते हुए, हम आपसे विनती करते हैं
अत्यंत दयालु प्रभु से प्रार्थना है कि वह हमें पूर्ण ईमानदारी प्राप्त करने में सफलता प्रदान करें।

हे ईश्वर! सूरह इखलास के लिए हमें अपने सच्चे भक्तों में स्थान दे।
सेवक जो बचाये गये हैं। आमीन। आमीन।

तेरी महिमा हो! हमें कोई ज्ञान नहीं सिवाय उसके जो तूने सिखाया है
निस्संदेह, तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (अल-बक़रा 2:32)

मेरे कुछ भाइयों को एक गोपनीय पत्र

मैं अपने उन भाइयों को दो हदीसों के बारे में बताना चाहूँगा जो ऊब गए हैं लेखन, और तीन महीने, 104 महीनों के दौरान अन्य सस्वर पाठ को प्राथमिकता देते हैं इबादत का, रिसाले-ए-नूर लिखने का , हालाँकि ऐसा करना माना जाता है पाँच प्रकार से उपासना की जानी चाहिए।105 ये दो हदीसें हैं:

पहला: "क़यामत के दिन, धर्म के विद्वानों द्वारा बहाई गई स्याही का वज़न शहीदों के ख़ून के बराबर होगा।"106

---

[103] अध्याय 12 देखें. शैतान के धोखे.

[104] ये हिजरी कैलेंडर के 7वें, 8वें और 9वें महीने हैं, रजब, शाबान और रमजान।

[105] हमने उन पाँच प्रकार की उपासना का स्पष्टीकरण माँगा, जिनका संकेत हमारे गुरु ने दिया है।
इस बहुमूल्य पत्र के लिए हमें जो स्पष्टीकरण मिला, वह इस प्रकार है:
1. गुमराह लोगों के खिलाफ संघर्ष करना, सबसे महत्वपूर्ण संघर्ष।
ii. सत्य का प्रसार करने में सहायता करके अपने स्वामी की सेवा करना।
3. मुसलमानों की आस्था के अनुरूप उनकी सेवा करना।
4. कलम के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करना।
चिंतन के रूप में पूजा करना, जिसका एक घंटा कभी-कभी एक वर्ष की पूजा के बराबर हो सकता है।

हस्ताक्षरित: रुस्तु, हुसेरेव, रेफेट ग़ज़ाली, इह्या

[106] 'उलूम एड-दीन, आई, 6; अल-मुनावी, फैजुएल-कादिर, vi, 466; अल-अजलूनी, कशफ अल-खफा, द्वितीय, 561; सुयुति, जामिउ-सगीर, 10026।

दूसरा: "जो कोई मेरी सुन्नत पर कायम रहेगा , जबकि मेरी क़ौम भ्रष्ट हो चुकी है, उसे सौ शहीदों का सवाब मिलेगा।"107 अर्थात्, "जो लोग पैगम्बर के आचरण और कुरान की सच्चाइयों पर कायम रहेंगे और उनकी सेवा करेंगे, जबकि अविष्कार और गुमराही व्याप्त है, उन्हें सौ शहीदों का सवाब मिलेगा।"

ऐ मेरे भाईयों जो आलस्य के कारण लिखने से थक गए हो! और ऐ मेरे भाईयों जो सूफ़ीवाद की ओर झुके हुए हो! ये दोनों हदीसें मिलकर दिखाती हैं कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ईमान और शरीयत और अमल के रहस्यों की सच्चाईयों की सेवा करने वाले मुबारक, पाक कलमों से निकलने वाली काली रोशनी, ऐसे समय में, उनकी जीवनदायी स्याही की एक बूंद भी क़यामत के दिन तुम्हारे लिए शहीदों के खून की सौ बूंदों के बराबर फ़ायदा पहुंचा सकती है। इसलिए तुम्हें इसे हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए!

प्रश्न: हदीस में “विद्वान” लिखा है , और हममें से कुछ लोग केवल लेखक हैं।
उत्तर: जो व्यक्ति इन ग्रंथों को एक वर्ष तक पढ़ता है, उन्हें समझता है और स्वीकार करता है, वह इस समय एक महत्वपूर्ण, सही विद्वान बन सकता है। और भले ही वह उन्हें न समझे, क्योंकि रिसाले-ए-नूर के छात्रों का एक सामूहिक व्यक्तित्व है, निस्संदेह वह विद्वान है। जहाँ तक आपकी कलमों का सवाल है, वे उस सामूहिक व्यक्तित्व की अमूर्त उंगलियाँ हैं। हालाँकि मेरे अपने विचार में मैं अयोग्य हूँ, लेकिन मेरे बारे में आपकी अच्छी राय के कारण, आपने मुझे उस्ताद और धार्मिक विद्वान का पद दिया है, और अपने आप को उससे जोड़ लिया है।

चूँकि मैं अनपढ़ हूँ और मुझे लिखने में दिक्कत होती है, इसलिए आपकी कलम मेरी समझी जाए; आपको हदीस में वर्णित सवाब मिलेगा।

नर्सी ने कहा

---

[107] 3. इब्न आदि, अल-कामिल फ़िद-दुआफ़ा II, 739; अल-मुन्ज़िरी, अल-तरग़ीब वा'त-तारहिब, मैं, 41; तबरानी, अल-मजमाउल-कबीर, 1394; अली इब्न हुसामुद्दीन, मुंतखबत कंजील-उम्मल, मैं, 100; अल-हयथामी, मजमाउज़-ज़वायद, vii, 282।

अध्याय 10

बीमारों के लिए उपचार

बीमारों के लिए संदेश

इस कृति में पच्चीस उपचार हैं।108 इसे मरहम, सांत्वना और बीमारों के लिए नुस्खे के रूप में लिखा गया था, तथा बीमारों से मिलने और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना के रूप में भी लिखा गया था।

चेतावनी और माफ़ी

यह अमूर्त नुस्खा मेरी अन्य सभी रचनाओं की तुलना में अधिक गति से लिखा गया था,109 और चूंकि इसे सुधारने और अध्ययन करने के लिए समय नहीं मिल पाया था, इसलिए इसे केवल एक बार पढ़ा गया था - और वह भी इसकी रचना की तरह ही बहुत तेज गति से। कहने का तात्पर्य यह है कि यह पहले मसौदे की अव्यवस्थित अवस्था में ही रहा। मैंने उन बातों को ध्यान से पढ़ना आवश्यक नहीं समझा जो मेरे दिमाग में स्वाभाविक रूप से आई थीं, ताकि उन्हें व्यवस्थित करने और उन पर अनावश्यक ध्यान देने से वे खराब न हो जाएं। पाठकों और विशेष रूप से बीमार लोगों को किसी भी अप्रिय अभिव्यक्ति या कठोर शब्दों और वाक्यांशों से परेशान और आहत महसूस नहीं करना चाहिए; बल्कि उन्हें मेरे लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

वे लोग हैं जो जब कोई मुसीबत उन पर आती है तो कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और हमें उसी की ओर लौटकर जाना है।

(और वे उसी के अनुसार कार्य करते हैं) (सूरह बक़रा 2:156)

और वही है जो मुझे खाना-पीना देता है और जब मैं बीमार पड़ता हूँ तो मुझे शिफ़ा देता है। (सूरा शूअरा 26:79)

---

108 वास्तव में, इस ग्रंथ में छब्बीस उपचार हैं क्योंकि छठा उपचार दो बार आता है। नूरसी के अपने स्पष्टीकरण के लिए, फुटनोट 110 देखें।

109 यह ग्रंथ साढ़े चार घंटे में लिखा गया था। हस्ताक्षर, रुस्तु, रेफ़ेट, हुस्रेव, सैद।

इस फ्लैश में, हम संक्षेप में पच्चीस उपचारों का वर्णन कर रहे हैं जो बीमारों और आपदा से पीड़ित लोगों के लिए, जो मानव जाति का दसवां हिस्सा हैं, सच्ची सांत्वना और लाभकारी इलाज प्रदान कर सकते हैं।

पहला उपाय

दुखी बीमार व्यक्ति! चिंता मत करो, धैर्य रखो! तुम्हारी बीमारी तुम्हारे लिए कोई बीमारी नहीं है; यह एक तरह का इलाज है। क्योंकि जीवन पूंजी की तरह चला जाता है। अगर यह कोई फल नहीं देता है, तो यह बर्बाद हो जाता है। और अगर यह आराम और लापरवाही में बीत जाता है, तो यह सबसे ज्यादा बीतता है
बीमारी आपकी उस पूंजी को बहुत ज़्यादा मुनाफ़ा देती है। इसके अलावा, यह आपके जीवन को जल्दी से गुज़रने नहीं देती; यह इसे रोकती है और इसे लंबा करती है, ताकि यह अपने फल देने के बाद ही विदा हो। बीमारी के कारण आपके जीवन के लंबे होने का संकेत यह बार-बार दोहराई जाने वाली कहावत है: "विपत्ति के समय लंबे होते हैं, सुख के समय बहुत कम होते हैं।"

दूसरा उपाय

हे रोगी, धैर्य की कमी वाले! धैर्य रखो, वास्तव में धन्यवाद दो! तुम्हारी बीमारी तुम्हारे जीवन के प्रत्येक मिनट को एक घंटे की पूजा के बराबर में बदल सकती है। क्योंकि पूजा दो प्रकार की होती है। एक सकारात्मक पूजा है जैसे प्रार्थना की प्रसिद्ध पूजा और पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ। दूसरी पूजा के नकारात्मक रूप हैं जैसे बीमारी और विपत्तियाँ। इनके माध्यम से,

जो लोग पीड़ित हैं, वे अपनी शक्तिहीनता और कमजोरी का एहसास करते हैं; वे अपने दयालु निर्माता से प्रार्थना करते हैं और उसकी शरण लेते हैं; वे ऐसी पूजा प्रकट करते हैं जो सच्ची और कपट रहित होती है। हाँ, एक अच्छी रिवायत है जिसमें कहा गया है कि
बीमारी में बिताया गया जीवन आस्तिक के लिए पूजा के रूप में गिना जाता है - बशर्ते कि वह ईश्वर के बारे में शिकायत न करे। यह बात तो पक्की कहानियों और सृष्टि की वास्तविकताओं को उजागर करने वालों द्वारा भी स्थापित की गई है कि कुछ लोग जो पूरी तरह से धैर्यवान और आभारी हैं, उनकी एक मिनट की बीमारी एक घंटे की पूजा के बराबर हो जाती है और कुछ सिद्ध पुरुषों की एक मिनट की बीमारी एक घंटे की पूजा के बराबर हो जाती है।

एक दिन की पूजा का अर्थ है कि बीमारी के बारे में शिकायत मत करो, क्योंकि बीमारी आपके जीवन के एक मिनट को हजार मिनट में बदल देती है और आपको लंबी उम्र प्रदान करती है; बल्कि आपको धन्यवाद देना चाहिए।

तीसरा उपाय

अधीर बीमार व्यक्ति! तथ्य यह है कि जो लोग इस दुनिया में आते हैं वे लगातार चले जाते हैं, और युवा बूढ़े हो जाते हैं, और आदमी लगातार घूमता रहता है

मृत्यु और अलगाव के बीच का जीवन इस बात की गवाही देता है कि वह इस संसार में आनंद लेने और खुशी प्राप्त करने के लिए नहीं आया था।

इसके अलावा, जबकि मनुष्य सबसे उत्तम, सबसे श्रेष्ठ, जीवित प्राणियों में से है और अंगों और क्षमताओं के मामले में सबसे अधिक संपन्न है, अतीत के सुखों और भविष्य के दुखों के बारे में सोचकर, वह केवल एक दु:खद, कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करता है, जो जानवरों से भी कम है। इसका मतलब यह है कि मनुष्य पृथ्वी पर नहीं आया है।

वह इस दुनिया में इसलिए आया था कि वह अच्छी तरह से जीवन जी सके और अपना जीवन आराम और आनंद से बिता सके। बल्कि, उसके पास बहुत बड़ी पूंजी थी, इसलिए वह यहां काम करने और व्यापार करने आया था, ताकि वह अनंत जीवन जी सके।

मनुष्य को जो पूंजी दी जाती है, वह उसका जीवन है। यदि बीमारी न होती, तो अच्छा स्वास्थ्य और खुशहाली लापरवाही का कारण बनती, क्योंकि वे दुनिया को सुखद दिखाते हैं और परलोक को भुला देते हैं। वे नहीं चाहते कि मृत्यु और कब्र के बारे में सोचा जाए; वे जीवन की पूंजी को तुच्छ बातों में बर्बाद कर देते हैं। जबकि बीमारी अचानक आँखें खोलती है, यह शरीर से कहती है: "तुम अमर नहीं हो। तुम्हें अपने हाल पर नहीं छोड़ा गया है।

तुम्हारा एक कर्तव्य है। अपना अभिमान त्यागो, उसका स्मरण करो जिसने तुम्हें बनाया है।
जान लो कि तुम कब्र में जाओगे, इसलिए इसके लिए खुद को तैयार करो!" इस प्रकार, इस दृष्टिकोण से, बीमारी एक चेतावनी देने वाला मार्गदर्शक और सलाहकार है जो कभी धोखा नहीं देता। इस संबंध में इसकी शिकायत नहीं की जानी चाहिए, बल्कि इसके लिए धन्यवाद दिया जाना चाहिए। और अगर यह बहुत गंभीर नहीं है, तो सहन करने के लिए धैर्य की तलाश करनी चाहिए
यह।

चौथा उपाय

शिकायत करने वाले बीमार व्यक्ति! यह आपका अधिकार है कि आप शिकायत न करें, बल्कि धन्यवाद दें और धैर्य रखें। क्योंकि आपका शरीर, अंग और क्षमताएँ आपकी संपत्ति नहीं हैं।
आपने इन्हें नहीं बनाया, और आपने इन्हें अन्य कार्यशालाओं से नहीं खरीदा।
इसका मतलब यह है कि वे किसी और की संपत्ति हैं। उनके मालिक को अपनी संपत्ति पर अपनी इच्छानुसार नियंत्रण करने का अधिकार है।

जैसा कि छब्बीसवें वचन में कहा गया है,[110] उदाहरण के लिए, एक अत्यंत धनी और कुशल कारीगर अपनी उत्कृष्ट कला और बहुमूल्य संपत्ति का प्रदर्शन करने के लिए एक गरीब आदमी को एक मॉडल के रूप में काम पर रखता है। मजदूरी के बदले में, वह थोड़े समय के लिए उस गरीब आदमी को एक गहनों से सजे और अत्यंत कुशलता से तैयार किए गए कपड़े पहनाता है।
वह उस पर काम करता है और उसे विभिन्न रूप देता है। अपनी कला की असाधारण विविधताओं को प्रदर्शित करने के लिए, वह परिधान को काटता है, उसमें बदलाव करता है, उसे लंबा और छोटा करता है। क्या मज़दूरी पर काम करने वाले गरीब आदमी के पास यह अधिकार है?
उस व्यक्ति से यह कहने का अधिकार: “तुम मुझे परेशान कर रहे हो,

---

[110] अध्याय तीन देखें: ईश्वरीय निर्धारण (क़दर)।

तुमने जो रूप दिया है, उससे तुम मुझे कष्ट दे रहे हो, मुझे झुकने और खड़े होने पर मजबूर कर रहे हो; क्या उसे यह कहने का अधिकार है कि वह अपने सुंदर वस्त्र को काटकर और छोटा करके अपनी सुंदर उपस्थिति को खराब कर रहा है जो उसे सुंदर बनाता है? क्या वह उससे कह सकता है कि वह निर्दयी और अनुचित व्यवहार कर रहा है?

हे रोगी! इस तुलना में, जिस प्रकार परमेश्वर ने तुझे अपने शरीर का वस्त्र पहनाया है, जो नेत्र, कान, बुद्धि और हृदय जैसी ज्योतिर्मय शक्तियों से तथा अपने परम सुन्दर नामों की कढ़ाई से सुशोभित है, उसी प्रकार परमेश्वर तुझे अनेक अवस्थाओं में घुमाता है और अनेक स्थितियों में तुझे बदलता है। जैसे

तुम भूख के माध्यम से उसके प्रदाता के नाम को सीखते हो, यह भी जान लो कि
अपनी बीमारी के माध्यम से उपचारक का नाम लें। चूँकि दुख और विपत्तियाँ उनके कुछ नामों के आदेशों को दर्शाती हैं, इसलिए ज्ञान और किरणों की चमक के भीतर
दया के कई उदाहरण हैं जो अच्छे हैं। अगर बीमारी का पर्दा, जो आप
यदि भय और घृणा को हटा दिया जाए, तो इसके पीछे आपको कई सुखद और सुंदर अर्थ मिलेंगे।

पांचवां उपाय

ऐ बीमारी से पीड़ित! मैंने इस समय अनुभव से यह राय बना ली है कि बीमारी कुछ लोगों के लिए ईश्वरीय वरदान है, दयालु ईश्वर का उपहार है।111 यद्यपि मैं इसके योग्य नहीं हूँ, फिर भी पिछले आठ-नौ वर्षों से बहुत से युवा बीमारी के सिलसिले में मुझसे प्रार्थना करने के लिए मेरे पास आते हैं। मैंने देखा है कि उनमें से प्रत्येक बीमार युवा अन्य युवाओं की तुलना में परलोक के बारे में अधिक सोचने लगा है।

उसमें जवानी का नशा नहीं था। वह खुद को एक हद तक पाशविक इच्छाओं और असावधानी से बचा रहा था। इसलिए मैं उन पर विचार करता और फिर चेतावनी देता

उन्हें यह विश्वास दिलाना कि उनकी बीमारियाँ उनकी सहनशीलता की सीमा के भीतर ईश्वरीय वरदान हैं। मैं कहूँगा: "मैं तुम्हारी इस बीमारी का विरोधी नहीं हूँ, मेरे भाई। तुम्हारी बीमारी के कारण मुझे तुम पर दया या तरस नहीं आता, इसलिए मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँ। जब तक बीमारी तुम्हें पूरी तरह से जगा न दे, तब तक धैर्य रखने की कोशिश करो, और जब यह अपना कर्तव्य पूरा कर लेगी, तो ईश्वर की इच्छा से, दयालु सृष्टिकर्ता तुम्हें स्वस्थ कर देगा।"

मैं उनसे यह भी कहूंगा: "अच्छे स्वास्थ्य की आपदा के कारण, आपके कुछ साथी लापरवाह हो जाते हैं, पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ छोड़ देते हैं, यह मत सोचिए कि
कब्र के, और सर्वशक्तिमान ईश्वर को भूल जाओ। एक सतही खुशी के माध्यम से
कुछ ही घंटों के सांसारिक जीवन को वे झकझोर देते हैं और अनंत को क्षति पहुंचाते हैं,

---

[111] बुखारी, मर्दा, 1; मुवत्ता', ऐन, 7; मुसनद, द्वितीय, 237.

अनन्त जीवन, और यहां तक कि इसे नष्ट भी कर सकते हैं। बीमारी के कारण, आप कब्र को देखते हैं, जिसमें आप किसी भी स्थिति में प्रवेश करेंगे, और उसके बाद के निवास, और आप उनके अनुसार कार्य करते हैं। इसका मतलब है कि आपके लिए, बीमारी अच्छा स्वास्थ्य है, जबकि आपके कुछ साथियों के लिए अच्छा स्वास्थ्य एक बीमारी है..."

छठा उपाय

हे बीमार व्यक्ति जो अपने दुख के बारे में शिकायत करता है! मैं तुमसे कहता हूँ: अपने पिछले जीवन के बारे में सोचो और सुखद और खुशी के दिनों और दुखद और परेशानी भरे समय को याद करो। निश्चित रूप से, तुम या तो "ओह!" कहोगे या "आह!" यानी, तुम्हारा दिल और जीभ या तो कहेगी "सभी प्रशंसा और धन्यवाद भगवान के लिए!", या "हाय और अफसोस!" ध्यान से देखो, क्या आप "प्रशंसा और अफसोस" कहते हैं

भगवान का शुक्र है!" यह आपके ऊपर आई पीड़ाओं और विपत्तियों के बारे में सोचना है; यह एक तरह का आनंद उत्पन्न करता है ताकि आपका दिल धन्यवाद दे। क्योंकि दर्द का गुज़र जाना एक खुशी है। दर्द और विपत्तियों के गुज़र जाने के साथ, आत्मा में आनंद की एक विरासत बची रहती है, जो सोचने से जागृत होने पर, आत्मा से धन्यवाद के साथ बाहर निकलती है।

जो बात आपको “हाय और अफसोस!” कहने पर मजबूर करती है, वह है आपके द्वारा पूर्व समय में अनुभव किए गए सुखद और खुशी भरे पल, जो बीत जाने के साथ ही खत्म हो जाएंगे।
आपकी आत्मा में निरंतर दर्द की विरासत छोड़ जाते हैं। जब भी आप उनके बारे में सोचते हैं, तो दर्द फिर से उत्तेजित हो जाता है, जिससे पछतावा और दुख बाहर निकलता है।

चूँकि एक दिन का अवैध आनंद कभी-कभी पूरे वर्ष के कष्ट का कारण बन जाता है।
आत्मा, और एक क्षणभंगुर दिन की बीमारी के दर्द के साथ कई दिनों का सुख और प्रतिफल है, इसके अलावा इसके बीत जाने पर राहत और इससे बचने की खुशी भी है। इस क्षणिक बीमारी के परिणाम के बारे में सोचो जिससे तुम अभी पीड़ित हो, और इसके आंतरिक चेहरे की खूबियों के बारे में सोचो। कहो: "सब कुछ भगवान की ओर से है! यह भी बीत जाएगा!", और शिकायत करने के बजाय धन्यवाद कहो।

एक और उपाय112

हे भाई, जो इस संसार के सुखों के बारे में सोचता है और बीमारी से परेशान रहता है! यदि यह संसार शाश्वत होता, और यदि हमारे मार्ग में मृत्यु नहीं होती, और यदि वियोग और मृत्यु की हवाएं नहीं चलतीं, और यदि विपत्तिपूर्ण और तूफानी भविष्य में आत्मा की सर्दियां नहीं होतीं, तो मैं

---

[112] यह घटना मेरे साथ स्वाभाविक रूप से घटित हुई, और छठे उपाय में दो उपाय शामिल किए गए हैं। हमने इसे स्वाभाविकता को खराब न करने के लिए ऐसे ही छोड़ दिया है; वास्तव में, हमने यह सोचकर इसमें कोई बदलाव नहीं किया कि इसमें कुछ रहस्य छिपा हो सकता है।

तुम्हारे साथ-साथ तुम पर भी दया आती। लेकिन चूँकि एक दिन दुनिया हमें इसे छोड़ने के लिए कहेगी और हमारी पुकार पर कान बंद कर लेगी, इसलिए हमें इन बीमारियों की चेतावनियों के ज़रिए अभी से इसके प्रति अपने प्यार को त्याग देना चाहिए, इससे पहले कि यह हमें बाहर निकाल दे। हमें इसे अपने दिलों में छोड़ने की कोशिश करनी चाहिए इससे पहले कि यह हमें छोड़ दे।

जी हाँ, बीमारी हमें यह चेतावनी देती है: “आपका शरीर पत्थर और लोहे से नहीं बना है, बल्कि विभिन्न पदार्थों से बना है जो हमेशा अलग होने के लिए तैयार रहते हैं।

अपना अभिमान छोड़ो, अपनी नपुंसकता को समझो, अपने स्वामी को पहचानो, अपने कर्तव्यों को जानो, जानो कि तुम इस संसार में क्यों आये हो! यह हृदय के कानों में गुप्त रूप से घोषणा करता है।

इसके अलावा, चूँकि इस दुनिया के सुख और भोग हमेशा नहीं रहते, और खास तौर पर अगर वे अवैध हैं, तो वे क्षणभंगुर, दुख से भरे और पापपूर्ण होते हैं, इसलिए बीमारी के बहाने रोना मत क्योंकि तुमने उन सुखों को खो दिया है। इसके विपरीत, बीमारी में मिलने वाली इबादत और सवाब के पहलुओं के बारे में सोचो और उनसे सुख पाने की कोशिश करो।

सातवां उपाय

हे स्वास्थ्य के सुख से वंचित रोगी! तुम्हारी बीमारी ईश्वरीय कृपा के सुख को नष्ट नहीं करती, बल्कि उसे और भी अधिक कष्ट देती है।

अनुभव किया और उन्हें बढ़ाता है। क्योंकि अगर कोई चीज निरंतर है, तो उसका प्रभाव खत्म हो जाता है। वास्तविकता के लोग यहां तक कहते हैं, "चीजें उनके विपरीत के माध्यम से जानी जाती हैं।" उदाहरण के लिए, अगर अंधेरा न होता, तो प्रकाश को जाना नहीं जाता

और उसमें कोई आनंद नहीं होगा। अगर ठंड न हो, तो गर्मी का एहसास नहीं हो सकता। अगर भूख न हो, तो भोजन में कोई आनंद नहीं होगा। अगर पेट की प्यास न हो, तो पानी पीने में कोई आनंद नहीं होगा। अगर बीमारी न हो, तो अच्छे स्वास्थ्य से कोई आनंद नहीं होगा।

सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने मनुष्य को सचमुच असंख्य सदस्यों से सुसज्जित किया है

और क्षमताएँ, इस हद तक कि वह ब्रह्मांड में असंख्य प्रकार के वरदानों का अनुभव और पहचान कर सकता है, यह दर्शाता है कि वह मनुष्य को अपने हर प्रकार के वरदान से अवगत कराना चाहता है और उन्हें उनसे परिचित कराना चाहता है और मनुष्य को निरंतर धन्यवाद देने के लिए प्रेरित करना चाहता है। चूँकि ऐसा है, वह बीमारी, रोग और पीड़ा देगा, उसी तरह जैसे वह अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण देता है। मैं आपसे पूछता हूँ: "यदि आपके सिर या हाथ या पेट में यह बीमारी नहीं होती, तो क्या आप अपने सिर, हाथ या पेट के अच्छे स्वास्थ्य के सुखद और आनंददायक ईश्वरीय वरदान को महसूस कर पाते और धन्यवाद देते? निश्चित रूप से, यह इसके लिए धन्यवाद देना नहीं है, आप

आपने इसके बारे में सोचा भी नहीं होगा! आपने अनजाने में ही खर्च कर दिया होगा
कि अच्छा स्वास्थ्य असावधानी पर, और शायद अपव्यय पर भी निर्भर करता है।

आठ उपाय

ऐ आख़िरत की याद करने वाले बीमार! बीमारी गुनाहों की गंदगी को साबुन की तरह धो देती है और पाक कर देती है। एक सही हदीस में है कि बीमारियाँ गुनाहों का प्रायश्चित हैं। और एक दूसरी हदीस में है: "जैसे पके हुए फल अपने पेड़ पर हिलने से गिरते हैं, वैसे ही मोमिन के हिलाने से उसके गुनाह गिर जाते हैं

बीमारी।"[113]

पाप अनंत जीवन की स्थायी बीमारियाँ हैं, और इस सांसारिक जीवन में वे हृदय, विवेक और आत्मा के लिए बीमारियाँ हैं। यदि आप धैर्य रखते हैं और शिकायत नहीं करते हैं, तो आप इस अस्थायी बीमारी के माध्यम से कई बीमारियों से बच जाएँगे।
निरंतर बीमारियाँ। यदि आप अपने पापों के बारे में नहीं सोचते, या नहीं जानते
परलोक में, या ईश्वर को न पहचान पाने पर, तुम इतनी भयंकर बीमारी से पीड़ित होगे कि यह तुम्हारी वर्तमान छोटी-मोटी बीमारियों से लाखों गुना अधिक भयानक होगी। उस पर चिल्लाओ, क्योंकि दुनिया के सभी प्राणी तुम्हारे हृदय, आत्मा और आत्मा से जुड़े हुए हैं।
वे संबंध मृत्यु और अलगाव के कारण लगातार टूटते जा रहे हैं,
तुम्हारे अंदर अनगिनत घाव हैं। खास तौर पर तब जब तुम परलोक को नहीं जानते और मृत्यु को शाश्वत अस्तित्वहीनता मानते हो, यह बिलकुल वैसा ही है जैसा कि
यद्यपि आप घायल और चोटिल हैं, फिर भी आपका शरीर इस सीमा तक बीमारी से ग्रस्त है कि
दुनिया।

इस प्रकार, पहली चीज जो आपको करनी है वह है विश्वास के इलाज की खोज करना, जो उस व्यक्ति की असंख्य बीमारियों के लिए एक निश्चित उपचार है।
अपने असीम रूप से घायल और बीमार, व्यापक अमूर्त अस्तित्व को ठीक करने के लिए, आपको अपनी मान्यताओं को सही करना होगा, और इस तरह के इलाज को खोजने का सबसे छोटा रास्ता आपकी कमजोरी और नपुंसकता की खिड़की के माध्यम से महिमा के सर्वशक्तिमान की शक्ति और दया को पहचानना है, जो आपकी शारीरिक बीमारी से फटी हुई लापरवाही के पर्दे के पीछे दिखाई देती है।

हाँ, जो ईश्वर को नहीं पहचानता, वह संसार भर के क्लेशों से ग्रसित रहता है। जबकि जो ईश्वर को पहचानता है, उसका संसार प्रकाश और आध्यात्मिक सुख से भरा होता है; वह इन्हें अपने विश्वास की शक्ति के अनुसार अनुभव करता है। तुच्छ शारीरिक बीमारियों से होने वाला कष्ट, इस विश्वास से उत्पन्न होने वाले अमूर्त आनंद, उपचार और सुख से विलीन हो जाता है; कष्ट दूर हो जाता है।

---

[113] बुखारी, मर्दा, 1, 2, 13, 16; मुस्लिम, बीर, 45; बीज, पतला, 57; मुसनद, आई, 371, 441; द्वितीय, 303, 335; iii, 4, 18, 38, 48, 61, 81.

नौवां उपाय

ऐ बीमार इंसान जो अपने पैदा करने वाले को पहचानता है! बीमारी में दर्द, डर और बेचैनी इसलिए होती है क्योंकि कभी-कभी यह मौत की ओर ले जाती है। चूँकि सतही तौर पर और असावधान नज़रिए से मौत डरावनी है, इसलिए ऐसी बीमारियाँ जो मौत की ओर ले जाती हैं, डर और आशंका पैदा करती हैं।

तो सबसे पहले यह जान लो और पक्का यकीन रखो कि नियत समय तय है और बदलता नहीं। जो लोग गंभीर रूप से बीमार लोगों के पास रो रहे हैं और जो लोग
पूर्ण स्वस्थ लोग मर गए हैं, जबकि गंभीर रूप से बीमार लोग ठीक हो गए हैं और जीवित हैं।

दूसरी बात यह है कि मृत्यु उतनी डरावनी नहीं है जितनी ऊपरी तौर पर दिखाई देती है। पवित्र कुरान की रोशनी में, रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में हमने पूरी तरह से निश्चित और निर्विवाद रूप से साबित कर दिया है कि ईमान वालों के लिए मृत्यु जीवन के बोझिल कर्तव्यों से मुक्ति है। और उनके लिए यह इबादत से आराम है, जो इस दुनिया की परीक्षा के मैदान में शिक्षा और प्रशिक्षण है। यह उनके दोस्तों और रिश्तेदारों से फिर से मिलने का एक साधन भी है, जिनमें से सौ में से निन्यानबे लोग पहले ही परलोक चले गए हैं। और यह उनके सच्चे वतन और खुशी के शाश्वत निवास में प्रवेश करने का एक साधन भी है। यह इस दुनिया की काल कोठरी से जन्नत के बागों की दावत भी है। और यह परम दयालु निर्माता की उदारता से उसकी सेवा के बदले में अपना प्रतिफल प्राप्त करने का समय है। चूंकि मृत्यु की वास्तविकता यही है, इसलिए इसे भयानक नहीं बल्कि इसके विपरीत दया और खुशी का परिचय माना जाना चाहिए।

इसके अलावा, ईश्वर से डरने वाले कुछ लोग मृत्यु से भयभीत नहीं हैं, बल्कि जीवन के कर्तव्यों को जारी रखने के साथ-साथ अधिक अच्छे कार्य करने के माध्यम से अधिक पुण्य प्राप्त करने की आशा के कारण ऐसा करते हैं।

हां, आस्था रखने वाले लोगों के लिए मृत्यु ईश्वरीय दया का द्वार है, जबकि
वह भटके हुए लोगों के लिए अनन्त अंधकार का गड्ढा है।

टेनथ्रेमेडी

हे रोगी, तू व्यर्थ चिंता करता है! तू अपने दुख की गंभीरता से चिंता करता है।
बीमारी के बारे में चिंता करने से बीमारी बढ़ती है। अगर आप चाहते हैं कि आपकी बीमारी कम गंभीर हो, तो चिंता न करें। यानी, अपनी बीमारी के लाभों के बारे में सोचें, इसके लिए मिलने वाले मुआवजे के बारे में सोचें और यह सोचें कि यह जल्दी ठीक हो जाएगी; इससे चिंता दूर हो जाएगी और बीमारी जड़ से खत्म हो जाएगी।

वास्तव में, चिंता बीमारी को दोगुना बढ़ा देती है।
शारीरिक बीमारी के नीचे दिल की बीमारी; शारीरिक बीमारी

चिंता उसी पर टिकी है और बनी रहती है। अगर समर्पण, संतोष और बीमारी में समझदारी के बारे में सोचने से चिंता खत्म हो जाती है, तो बीमारी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा खत्म हो जाता है; यह हल्का हो जाता है और आंशिक रूप से गायब हो जाता है। कभी-कभी एक छोटी शारीरिक बीमारी सिर्फ चिंता के कारण दस गुना बढ़ जाती है। चिंता खत्म होने पर बीमारी का नौ दसवां हिस्सा गायब हो जाता है।

चिंता बीमारी को बढ़ाती है, इसलिए यह ईश्वरीय ज्ञान के खिलाफ़ आरोप और ईश्वरीय दया की आलोचना और दयालु निर्माता के खिलाफ़ शिकायत की तरह है। इस कारण, अपने इरादों के विपरीत, ऐसा करने वाले को एक झिड़की मिलती है और इससे उसकी बीमारी बढ़ जाती है। हाँ, जिस तरह धन्यवाद उदारता को बढ़ाता है, उसी तरह शिकायत भी बीमारी और क्लेश को बढ़ाती है।

इसके अलावा, चिंता अपने आप में एक बीमारी है। इसका इलाज बीमारी में समझदारी और इसके उद्देश्य को जानना है। चूँकि आपने इसका उद्देश्य और लाभ जान लिया है, इसलिए अपनी चिंता पर मरहम लगाएँ और राहत पाएँ! “ओह!” के बजाय “आह!” कहें, और आहें भरने और विलाप करने के बजाय “हर परिस्थिति के लिए भगवान की स्तुति हो” कहें।

ग्यारहवां उपाय

हे मेरे अधीर बीमार भाई! यद्यपि बीमारी आपको तत्काल कष्ट देती है, लेकिन अतीत में आज तक आपकी बीमारी का गुजरना आत्मा के लिए अमूर्त सुख और खुशी पैदा करता है जो इसे सहन करने के लिए प्राप्त पुरस्कार से उत्पन्न होता है। आज से, और यहाँ तक कि इस घंटे से, कोई बीमारी नहीं है, और निश्चित रूप से गैर-अस्तित्व से कोई दर्द नहीं है। और अगर कोई दर्द नहीं है, तो कोई दु:ख नहीं हो सकता। आप अधीर हो जाते हैं क्योंकि आप चीजों की गलत कल्पना करते हैं। क्योंकि, आपके समय के भौतिक पहलू के साथ

आज से पहले की बीमारी चली गई, उसका दर्द उसके साथ चला गया; केवल उसका पुरस्कार और उसके जाने का आनंद बचा है। जबकि इससे आपको लाभ और खुशी मिलनी चाहिए, बीते दिनों के बारे में सोचना और दुखी होना और अधीर होना पागलपन है। भविष्य के दिन अभी नहीं आए हैं। उनके बारे में अभी सोचना और एक ऐसे दिन की कल्पना करना जो अस्तित्व में नहीं है और एक ऐसी बीमारी जो अस्तित्व में नहीं है और एक ऐसा दुख जो अस्तित्व में नहीं है, दुखी होना और अधीरता प्रदर्शित करना, अस्तित्व के तीन डिग्री गैर-अस्तित्व को अस्तित्व का रंग देना है-अगर यह पागलपन नहीं है, तो क्या है?

चूँकि वर्तमान से पहले का समय बीमारी का था, इसलिए यह आनंद उत्पन्न करता है; और चूँकि वर्तमान समय के बाद का समय अस्तित्वहीन है, और बीमारी अस्तित्वहीन है, और दु:ख अस्तित्वहीन है, इसलिए शक्ति को बिखरने न दें।
सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा आपको दाएं और बाएं दिए गए धैर्य की,

परन्तु वर्तमान समय की पीड़ा का सामना करते हुए साहस जुटाओ; कहो: “हे धैर्यवान!” और उसका सामना करो।

ट्वेल्थरेमेडी

ऐ बीमार व्यक्ति जो बीमारी के कारण अपनी इबादत और दुआएं नहीं कर सकता और इस कमी पर दुखी होता है! जान लो कि एक हदीस में है कि "एक नेक मोमिन जो बीमारी के कारण अपनी इबादत और दुआएं नहीं कर सकता जो वह आमतौर पर नियमित रूप से करता है, उसे बराबर सवाब मिलता है।"114 बीमार व्यक्ति पर

जहाँ तक संभव हो धैर्य और ईश्वर पर भरोसा रखते हुए अपनी अनिवार्य इबादत को पूरा करें, गंभीर बीमारी के उस समय में बीमारी सुन्नत इबादत की जगह ले लेती है - और वह भी सच्चे रूप में।

इसके अलावा बीमारी इंसान को उसकी नपुंसकता और कमज़ोरी का एहसास कराती है। यह उसे अपनी नपुंसकता और कमज़ोरी की मौखिक और ज़ुबान दोनों तरह से दुआ करने के लिए मजबूर करती है। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इंसान को असीम नपुंसकता और अनंत कमज़ोरी इसलिए दी है ताकि वह हमेशा ईश्वरीय दरबार में शरण ले और दुआ और प्रार्थना करे। आयत के अर्थ के अनुसार कहो: "अगर तुम प्रार्थना न करते तो मेरा रब तुम्हारी परवाह न करता।" (अल-फ़ुरक़ान 25:77) यानी, "अगर तुम प्रार्थना और दुआ न करते तो तुम्हारा क्या महत्व होता?", इंसान की रचना में बुद्धिमत्ता और उसके मूल्य का कारण सच्ची प्रार्थना और दुआ है। चूँकि इसका एक कारण बीमारी है, इस दृष्टिकोण से इसकी शिकायत नहीं करनी चाहिए, बल्कि इसके लिए ईश्वर का शुक्र अदा करना चाहिए और बीमारी से जो प्रार्थना का नल खुलता है उसे स्वास्थ्य प्राप्त करके बंद नहीं करना चाहिए।

तेरहवें उपाय

हे दुखी व्यक्ति जो बीमारी पर शिकायत करता है! कुछ लोगों के लिए बीमारी एक महत्वपूर्ण खजाना है, एक सबसे मूल्यवान ईश्वरीय उपहार है। हर बीमार व्यक्ति अपनी बीमारी को उसी तरह से सोच सकता है।

नियत समय ज्ञात नहीं है: मनुष्य को पूर्ण विनाश से मुक्ति दिलाने के लिए
निराशा और पूर्ण असावधानी से बचने के लिए, तथा उसे आशा और भय के बीच में रखने के लिए तथा इस तरह इस दुनिया और परलोक दोनों को सुरक्षित रखने के लिए, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपनी बुद्धि से नियत समय को छिपाया है। नियत समय कभी भी आ सकता है; यदि यह मनुष्य को असावधानी में जकड़ लेता है, तो यह अनन्त जीवन को गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है। लेकिन बीमारी असावधानी को दूर कर देती है; यह व्यक्ति को सोचने पर मजबूर कर देती है
परलोक; यह मृत्यु को याद दिलाता है, और इस प्रकार वह

---

[114] बुखारी, जिहाद, 134; मुसनद, iv, 410, 418।

कुछ बीमारियाँ इतनी लाभदायक होती हैं कि वे बीस दिनों में व्यक्ति को वह पद दिला देती हैं जो अन्यथा वह बीस वर्षों में भी प्राप्त नहीं कर सकता।

उदाहरण के लिए, मेरे दोस्तों में दो नौजवान थे, भगवान उन पर रहम करे। एक था इलेमा गाँव का सबरी, दूसरा था इस्लामकोय का वज़ीरज़ादे मुस्तफ़ा। मैं हैरानी से देखता था कि

हालाँकि ये दोनों लिख नहीं सकते थे, लेकिन ईमानदारी और ईमान की सेवा के मामले में ये सबसे आगे थे। मुझे इसका कारण नहीं पता था। उनकी मृत्यु के बाद मुझे पता चला कि दोनों को गंभीर बीमारी थी। बीमारी के कारण, अन्य लापरवाह युवाओं के विपरीत, जिन्होंने अनिवार्य उपासना छोड़ दी थी, उनमें ईश्वर का बहुत भय था, उन्होंने सबसे मूल्यवान सेवा की और परलोक के लिए लाभकारी स्थिति प्राप्त की। ईश्वर की इच्छा से, दो साल की बीमारी का कष्ट लाखों लोगों की खुशी का साधन बन गया।

अनंत जीवन के वर्ष। अब मैं समझता हूँ कि कभी-कभी मैं उनके स्वास्थ्य के लिए जो प्रार्थनाएँ करता था, वे इस दुनिया के लिए अभिशाप थीं। भगवान की इच्छा से, मेरे
उनकी परलोक में भलाई के लिए की गई प्रार्थनाएं स्वीकार की गईं।

इस प्रकार, मेरे विश्वास के अनुसार, इन दोनों ने उतना लाभ प्राप्त किया जितना दस वर्ष तक ईश्वर के भय [तक़वा] से प्राप्त किया जा सकता है।115 यदि कुछ युवाओं की तरह उन्होंने अपनी जवानी और अच्छे स्वास्थ्य पर भरोसा किया होता और
यदि वे स्वयं को असावधानी और दुराचार में लिप्त कर लेते, और उनके देखते ही देखते, मृत्यु उन्हें उनके पापों की गंदगी के बीच में ही पकड़ लेती, तो वे अपनी कब्रों को प्रकाश के भण्डार के स्थान पर बिच्छुओं और साँपों का अड्डा बना लेते।

चूँकि बीमारियों में ऐसे लाभ निहित हैं, इसलिए उनके बारे में शिकायत नहीं करनी चाहिए, बल्कि धैर्य के साथ और ईश्वर पर भरोसा रखते हुए, वास्तव में, ईश्वर को धन्यवाद देते हुए और उनकी दया पर भरोसा रखते हुए उन्हें सहन करना चाहिए।

चौदहवाँ उपाय

हे रोगी, जिसकी आँखों में मोतियाबिंद हो गया है! यदि तुम जानते कि मोतियाबिंद के नीचे एक प्रकाशमय और आध्यात्मिक आँख क्या होती है, जो एक आस्तिक की आँखों को ढक सकती है, तो तुम कहोगे: "मेरे दयालु पालनहार को एक लाख धन्यवाद।" मैं तुम्हें इस मरहम को समझाने के लिए एक घटना सुनाता हूँ। यह इस प्रकार है:

---

[115] हदीस का अर्थ यह है: "यदि कोई व्यक्ति ईश्वर की दृष्टि में खड़ा है और वह उस तक नहीं पहुंच सकता है
जो अच्छे कर्मों और तक़वा के ज़रिए उस मुकाम को हासिल करता है, अल्लाह उसे बीमारी जैसी मुसीबतों से पीड़ित करता है यहाँ तक कि वह उस तक पहुँच जाता है।" अल-हाकिम, अल-मुस्तदरक, i, 344.

एक बार बरला के सुलेमान की चाची, जिसने आठ साल तक पूरी निष्ठा और तत्परता से मेरी सेवा की, अंधी हो गई। मेरे बारे में सौ गुना ज़्यादा अच्छा सोचते हुए, उस नेक औरत ने मुझे पकड़ लिया।

मस्जिद के दरवाज़े पर खड़ी होकर उसने मुझसे कहा कि मैं उसकी आँखों की रोशनी वापस पाने के लिए दुआ करूँ। इसलिए मैंने उस मुबारक औरत की नेकी को अपनी दुआ का हिमायती बनाया।
और सर्वशक्तिमान ईश्वर से विनती करते हुए मैंने प्रार्थना की: "हे प्रभु! उसकी धार्मिकता के सम्मान में उसकी दृष्टि वापस कर दो।" दो दिन बाद, बुरदुर से एक नेत्र रोग विशेषज्ञ आया और उसने मोतियाबिंद हटा दिया। चालीस दिन बाद वह फिर से अपनी दृष्टि खो बैठी। मैं बहुत दुखी था और उसके लिए दिल से प्रार्थना की। ईश्वर की इच्छा से, उसके परलोक में जीवन के लिए प्रार्थना स्वीकार कर ली गई, अन्यथा मेरी वह प्रार्थना एक अधूरी रह जाती।

उसके लिए सबसे ग़लत शाप था। उसकी मृत्यु तक चालीस दिन बाकी थे; चालीस दिन बाद वह मर गई - भगवान उस पर दया करें।
इस प्रकार, उस महिला ने बुढ़ापे की आँखों से बरला के बागों को उदास होकर देखने के बजाय, अपनी क़ब्र में चालीस हज़ार दिनों तक जन्नत के बागों को देखने का लाभ उठाया। क्योंकि उसका ईमान मज़बूत था और वह पूरी तरह से नेक थी।

हां, अगर कोई आस्तिक अपनी दृष्टि खो देता है और अंधे की तरह क़ब्र में चला जाता है, तो अपनी डिग्री के अनुसार वह क़ब्र में पड़े अन्य लोगों की तुलना में प्रकाश की दुनिया को बहुत अधिक हद तक देख सकता है। जिस तरह हम इस दुनिया में बहुत सी ऐसी चीजें देखते हैं जो अंधे आस्तिक नहीं देख पाते, अगर वे ईमान के साथ चले जाते हैं, तो वे अंधे लोग क़ब्र में पड़े अन्य मृतकों की तुलना में अधिक हद तक देख सकते हैं। जैसे कि सबसे शक्तिशाली दूरबीनों से देखते हुए, वे अपनी डिग्री के अनुसार सिनेमा की तरह स्वर्ग के बगीचों को देख और देख सकते हैं।

अतः कृतज्ञता और धैर्य के साथ तुम अपनी वर्तमान आँख के परदे के नीचे एक ऐसी आँख पा सकते हो जो इस प्रकार प्रकाश से भरी हुई है, और जिसके द्वारा तुम धरती के नीचे रहते हुए भी आकाश के ऊपर स्वर्ग को देख और देख सकते हो। जो तुम्हारी आँख से परदा हटा देगा, वह नेत्र चिकित्सक जो तुम्हें उस आँख से देखने की अनुमति देगा, वह विवेकपूर्ण क़ुरआन है।

पंद्रहवां उपाय

हे आहें भरने वाले और विलाप करने वाले रोगी! बीमारी के बाहरी पहलू को मत देखो और आहें भरो, उसके अर्थ को देखो और प्रसन्न हो जाओ। यदि बीमारी का अर्थ
यदि अच्छा न होता, तो दयालु सृष्टिकर्ता ने नहीं दिया होता
अपने सबसे प्रिय सेवकों को बीमारी से बचाता है। जबकि एक हदीस में इसका अर्थ है
जिसमें कहा गया है, "जो लोग सबसे गंभीर परीक्षणों से पीड़ित हैं वे सबसे अच्छे हैं

पहले पैगम्बर, फिर संत और उनके जैसे लोग।"116 अर्थात्, "जो लोग क्लेशों और कठिनाइयों से सबसे अधिक पीड़ित हैं, वे मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ हैं, सबसे अधिक
सबसे पहले पैगम्बर अय्यूब (उन पर शांति हो) और दूसरे पैगम्बरों ने, फिर संतों ने, फिर धर्मी लोगों ने, अपनी बीमारियों को सच्ची इबादत और दयालु ईश्वर के उपहार के रूप में देखा है; उन्होंने धैर्य के साथ धन्यवाद दिया है। उन्होंने उन्हें दयालु निर्माता की दया से की गई शल्य चिकित्सा के रूप में देखा है।

हे तुम जो चिल्लाते और विलाप करते हो! यदि तुम इस प्रकाशमय में शामिल होना चाहते हो
कारवां, धैर्य के साथ धन्यवाद करो। क्योंकि अगर तुम शिकायत करोगे, तो वे तुम्हें स्वीकार नहीं करेंगे। तुम गुमराह लोगों के गड्ढों में गिर जाओगे, और एक अँधेरे रास्ते पर चलोगे।

हां, कुछ बीमारियां ऐसी होती हैं जो अगर मौत का कारण बनती हैं तो एक तरह की शहादत के समान होती हैं; वे शहादत जैसी संतत्व की डिग्री प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, जो लोग प्रसव के दौरान होने वाली बीमारियों से मरते हैं117 और
पेट दर्द, डूबना, जलना और प्लेग से मरकर वे शहीद हो जाते हैं।
इसी प्रकार कई ऐसी बीमारियाँ भी हैं जो संतत्व की उपाधि प्राप्त करती हैं।
इसके अलावा, चूँकि बीमारी दुनिया के प्रति प्रेम और आसक्ति को कम करती है, इसलिए यह मृत्यु के माध्यम से दुनिया से अलग होने को हल्का बनाती है, जो सांसारिक लोगों के लिए अत्यंत दुखद और दर्दनाक है, और कभी-कभी इसे वांछनीय भी बनाती है।

सोलहवां उपाय

ऐ बीमार इंसान जो अपनी परेशानी की शिकायत करता है! बीमारी सम्मान और दया को बढ़ावा देती है, जो मानव सामाजिक जीवन में सबसे महत्वपूर्ण और अच्छा है क्योंकि यह मनुष्य को आत्मनिर्भरता से बचाता है, जो उसे असामाजिकता और निर्दयता की ओर ले जाता है। क्योंकि, नहीं, बल्कि (उस पर ईश्वर की सभी कृपाओं के बावजूद) के अर्थ के अनुसार, मनुष्य अनियंत्रित और विद्रोही है। इसमें वह खुद को आत्मनिर्भर, स्वतंत्र (अपने प्रभु से) मानता है (अल-अलक 96:6) एक दुष्ट आत्मा जो अच्छे स्वास्थ्य और कल्याण के कारण आत्मनिर्भर महसूस करती है, वह नहीं करती

कई मामलों में वह अपने उन भाइयों के प्रति आदर महसूस करता है जो इसके हकदार हैं।
और वह बीमारों और विपत्ति से पीड़ित लोगों के प्रति दया नहीं महसूस करता, हालाँकि वे दया और दया के पात्र हैं। जब भी वह बीमार होता है, तो वह अपनी खुद की नपुंसकता और अभाव को समझता है, और उसके मन में सम्मान होता है

---

[116] अल-मुनावी, फ़ैज़ुएल-कादिर, आई, 519 नंबर:1056; अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, iii, 343; बुखारी, मर्दा, 3; तिर्मिधि, ज़ुहद, 57; इब्न माजाह, फ़ितन, 23; दारिमी, रिकाक, 67; मुसनद, आई, 172, 174, 180, 185; vi, 369.

[117] बीमारी के माध्यम से यह शहादत प्राप्त की जा सकती है, वह अवधि चालीस दिनों के आसपास होती है
'में लेटा हुआ।'

अपने उन भाइयों के प्रति जो इसके योग्य हैं। वह अपने उन विश्वासी भाइयों के प्रति सम्मान महसूस करता है जो उससे मिलने आते हैं या उसकी सहायता करते हैं। और वह मानवीय दयालुता महसूस करता है, जो सहानुभूति से उत्पन्न होती है, और उन लोगों के प्रति करुणा जो पीड़ित हैं
आपदा-एक सबसे महत्वपूर्ण इस्लामी विशेषता है। और उनकी तुलना खुद से करते हुए, वह उन पर सही अर्थों में दया करता है और उनके लिए करुणा महसूस करता है। वह उनकी मदद करने के लिए जो कुछ भी कर सकता है, करता है और कम से कम उनके लिए प्रार्थना करता है और उनसे मिलने जाता है और उनसे पूछता है कि वे कैसे हैं, जो शरिया के अनुसार सुन्नत है, और इस तरह सवाब कमाता है।

सत्रहवाँ उपाय

हे बीमार व्यक्ति जो बीमारी के कारण अच्छे काम न कर पाने की शिकायत करता है! धन्यवाद दो! यह बीमारी ही है जो तुम्हारे लिए सबसे सच्चे अच्छे कामों का द्वार खोलती है। इसके अलावा लगातार अच्छे कामों का फल भी मिलता है।
बीमार व्यक्ति के लिए और जो लोग ईश्वर के लिए उसकी देखभाल करते हैं, उनके लिए प्रार्थना स्वीकार होने का बीमारी सबसे महत्वपूर्ण साधन है।

सचमुच, बीमारों की देखभाल करने से विश्वासियों को महत्वपूर्ण प्रतिफल मिलता है।
उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछना और बीमारों से मिलना - इस हालत में उन पर कर नहीं लगता - सुन्नत है और पापों का प्रायश्चित भी है। एक हदीस में है, जिसमें कहा गया है,
“बीमारों की प्रार्थना स्वीकार करो, क्योंकि उनकी प्रार्थनाएँ स्वीकार की जाती हैं।”119

खास तौर पर अगर बीमार रिश्तेदार हों, और खास तौर पर माता-पिता, तो उनकी देखभाल करना एक अहम इबादत है, जिससे बहुत बड़ा सवाब मिलता है। बीमार व्यक्ति के दिल को खुश करना और उसे दिलासा देना एक अहम दान देने जैसा है। खुशनसीब है वो इंसान जो बीमारी के वक्त पिता और मां के दिल को खुश कर दे और उनकी दुआ कबूल कर ले। बेशक, फ़रिश्ते भी ताली बजाते हैं: “माशाअल्लाह! बरकल्लाह!” उन नेक औलादों के वफ़ादार नज़ारों के सामने जो अपनी बीमारी के वक्त अपने माता-पिता की दया-भावना के मुताबिक़ जवाब देते हैं- जो समाज की ज़िंदगी में सबसे ज़्यादा सम्मान के पात्र हैं- इंसानियत की बुलंदियों को दिखाते हुए पूरी तरह सम्मान और संतानोचित दया दिखाते हैं।

हाँ, बीमारी के समय कुछ ऐसे सुख होते हैं जो आस-पास के लोगों की दया, दया और करुणा से उत्पन्न होते हैं, और सबसे सुखद और मनभावन होते हैं और बीमारी के दर्द को कुछ भी नहीं होने देते। बीमारों की प्रार्थनाओं की स्वीकार्यता एक महत्वपूर्ण मामला है। पिछले तीस या चालीस सालों से

वर्षों से मैं स्वयं इस बीमारी से ठीक होने के लिए प्रार्थना करता रहा हूँ

---

[118] अल-मुनावी, फैज़ुएल-कादिर, द्वितीय, 45 नंबर: 1285।

[119] इब्न माजाह, जनाईज़, 1; दयालामी, मुस्नादुल-फिरदौस, आई, 280।

लूम्बेगो (काठ का दर्द) जिससे मैं पीड़ित हूँ। हालाँकि, मुझे समझ में आ गया कि यह बीमारी प्रार्थना के लिए दी गई थी। चूँकि प्रार्थना के माध्यम से प्रार्थना को हटाया नहीं जा सकता, यानी चूँकि प्रार्थना खुद को दूर नहीं कर सकती, इसलिए मुझे समझ में आ गया कि प्रार्थना के परिणाम
परलोक से संबंधित है,120 और यह अपने आप में एक प्रकार की पूजा है, क्योंकि बीमारी के माध्यम से व्यक्ति अपनी नपुंसकता को समझता है और ईश्वर की शरण लेता है
इसलिए, यद्यपि तीस वर्षों से मैं प्रार्थना कर रहा हूँ कि
ठीक हो गया और जाहिर तौर पर मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं की गई है, यह नहीं हुआ है
मुझे इसे त्याग देना चाहिए। क्योंकि बीमारी के लिए प्रार्थना करने का समय है। प्रार्थना करने से ठीक होना संभव नहीं है। अगर सर्वशक्तिमान और दयालु व्यक्ति उपचार प्रदान करता है, तो वह अपनी असीम कृपा से ऐसा करता है।

इसके अलावा, अगर दुआएँ हमारी इच्छा के अनुसार स्वीकार नहीं की जाती हैं, तो यह नहीं कहा जा सकता कि वे स्वीकार नहीं की गई हैं। सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता हमसे बेहतर जानता है; वह जो हमारे हित में है, वही देता है। कभी-कभी हमारे हित के लिए, वह हमारी इस दुनिया की प्रार्थनाओं को परलोक की ओर निर्देशित करता है, और उन्हें उसी रूप में स्वीकार करता है। किसी भी स्थिति में, बीमारी के कारण ईमानदारी प्राप्त करने वाली और कमजोरी, नपुंसकता, विनम्रता और विशेष रूप से आवश्यकता से उत्पन्न होने वाली प्रार्थना, स्वीकार होने के बहुत करीब है। बीमारी ही वह साधन है जिससे हम अपने आपको बचा सकते हैं।

इस प्रकार प्रार्थना ईमानदारी से की जाती है। बीमार लोग जो धार्मिक हैं और जो विश्वासी बीमारों की देखभाल करते हैं, दोनों को इस प्रार्थना का लाभ उठाना चाहिए।

अठारहवाँ उपाय

हे बीमार व्यक्ति, जो धन्यवाद देना छोड़ देता है और शिकायत करने लगता है!
शिकायत एक अधिकार से उत्पन्न होती है। आपका कोई भी अधिकार नहीं खोया गया है कि आपको शिकायत करनी पड़े। वास्तव में, ऐसे कई धन्यवाद हैं जो एक दायित्व हैं
तुम्हारे लिए, तुम्हारे ऊपर अधिकार है, और तुमने उसका पालन नहीं किया। सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा तुम्हें अधिकार दिए बिना, तुम शिकायत कर रहे हो जैसे कि अधिकार की मांग करना उस तरीके से जो उचित नहीं है। तुम दूसरों को देखकर शिकायत नहीं कर सकते जो तुमसे बेहतर हैं और स्वस्थ हैं। बल्कि तुम्हारा काम बीमारों को देखना है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से तुमसे कम हैं, और धन्यवाद देना है। अगर तुम्हारा हाथ टूटा है, तो उनका हाथ देखो, जो कटा हुआ है। अगर तुम्हारी एक ही आंख है, तो अंधे को देखो, जिसकी दोनों आंखें नहीं हैं। और ईश्वर को धन्यवाद दो!

---

[120] कुछ बीमारियाँ प्रार्थना करने के लिए प्रेरित करती हैं और प्रार्थना का कारण भी होती हैं। इसलिए, अगर प्रार्थना बीमारी को समाप्त कर देती है, तो प्रार्थना उसके कारण को भी समाप्त कर देगी। यह स्वीकार नहीं किया जा सकता।

निश्चय ही, किसी को भी अपने से श्रेष्ठ लोगों की ओर देखने का अधिकार नहीं है।
दान-पुण्य करना और शिकायत करना। और क्लेशों में हर किसी का यह अधिकार है कि वह क्लेश के संबंध में अपने से ऊपर वालों की ओर देखे, ताकि वे भेंट चढ़ाएँ
धन्यवाद। इस रहस्य को रिसाले-ए-नूर में कई जगहों पर तुलना के साथ समझाया गया है; इसका सारांश इस प्रकार है:

एक आदमी एक बेचारे आदमी को मीनार के ऊपर ले जाता है। हर कदम पर वह उसे एक अलग उपहार, एक अलग इनाम देता है। मीनार के ठीक ऊपर वह उसे सबसे बड़ा उपहार देता है। यद्यपि वह चाहता है कि उन सभी उपहारों के बदले में वह धन्यवाद और कृतज्ञता दे, लेकिन वह चिड़चिड़ा आदमी प्रत्येक सीढ़ी पर मिले उपहारों को भूल जाता है, या उन्हें महत्वहीन मानता है, और धन्यवाद दिए बिना, ऊपर देखता है और शिकायत करना शुरू कर देता है, कि "काश यह मीनार ऊंची होती तो मैं और भी ऊपर चढ़ सकता था। यह उस पहाड़ या उस दूसरी मीनार जितनी ऊंची क्यों नहीं है?" अगर वह इस तरह शिकायत करने लगे, तो यह कितनी बड़ी कृतघ्नता होगी, कितनी बड़ी गलती होगी!

ठीक उसी तरह, मनुष्य भी शून्य से अस्तित्व में आता है, किसी चट्टान, पेड़ या जानवर के रूप में नहीं, बल्कि एक मनुष्य और एक मुसलमान बन जाता है, और अधिकांशतः एक मुसलमान ही होता है।
समय अच्छा स्वास्थ्य देखता है और उच्च स्तर के उपहार प्राप्त करता है। इन सबके बावजूद, शिकायत करना और अधीरता प्रदर्शित करना क्योंकि वह कुछ उपहारों के योग्य नहीं है, या क्योंकि वह उन्हें गलत विकल्प या दुरुपयोग के कारण खो देता है, या क्योंकि वह उन्हें प्राप्त नहीं कर सकता है, और ईश्वरीय प्रभुत्व की आलोचना करते हुए कहता है कि "मैंने ऐसा क्या किया है कि मेरे साथ ऐसा हुआ?", एक स्थिति और अमूर्त बीमारी है जो शारीरिक बीमारी से भी अधिक घातक है। टूटे हुए हाथ से लड़ने की तरह, शिकायत करने से उसकी बीमारी और भी खराब हो जाती है। समझदार वह है जो श्लोक के अर्थ के अनुसार,

> वे लोग जब कोई मुसीबत उन पर आती है तो कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर लौटकर जाने वाले हैं। (और वे उसी के अनुसार कार्य करते हैं।) (सूरा बक़रा 2:156)

वह समर्पण करता है और धैर्य रखता है, ताकि बीमारी अपना कर्तव्य पूरा कर ले, और फिर चली जाए।

उन्नीसवां उपाय

जैसा कि शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले परमेश्वर के शब्द 'अति सुन्दर नाम' से पता चलता है, महिमावान सर्व सुन्दर परमेश्वर के सभी नाम सुन्दर हैं।
प्राणियों में सबसे सूक्ष्म, सबसे सुन्दर, शाश्वत भक्ति का सबसे व्यापक दर्पण जीवन है। सुन्दरता का दर्पण सुन्दर ही है। सुन्दरता के गुणों को दिखाने वाला दर्पण सुन्दर बन जाता है।

सुंदर। जिस तरह से ऐसी सुंदरता से दर्पण के साथ जो कुछ भी किया जाता है वह अच्छा और सुंदर होता है, वास्तविकता के संदर्भ में जीवन में जो कुछ भी घटित होता है, वह अच्छा होता है। क्योंकि यह सबसे सुंदर नामों के सुंदर प्रभावों को प्रदर्शित करता है, जो अच्छे और सुंदर हैं।

अगर जीवन हमेशा स्वस्थ और खुशहाली के साथ नीरसता से गुज़रता है, तो यह एक अपूर्ण दर्पण बन जाता है। दरअसल, एक तरह से यह अस्तित्वहीनता, अस्तित्वहीनता और शून्यता की बात करता है और थकावट का कारण बनता है। यह जीवन के मूल्य को कम करता है और जीवन के आनंद को दुख में बदल देता है। यह सोचकर कि वह अपना समय जल्दी से जल्दी बिता लेगा, ऊब के कारण व्यक्ति खुद को या तो बुराई में या मनोरंजन में झोंक देता है। जेल की सज़ा की तरह, वह अपने मूल्यवान जीवन के प्रति शत्रुतापूर्ण हो जाता है और इसे मारना और जल्दी से जल्दी गुजारना चाहता है। जबकि एक ऐसा जीवन जो परिवर्तन और क्रिया और विभिन्न अवस्थाओं में घूमता है, अपने मूल्य को महसूस कराता है और जीवन के महत्व और आनंद को बताता है। भले ही यह कठिनाई और

ऐसा व्यक्ति नहीं चाहता कि उसका जीवन जल्दी से गुजर जाए। वह ऊब के कारण शिकायत नहीं करता, यह कहते हुए कि, “हाय! सूरज अभी तक नहीं डूबा है,” या, “अभी भी रात है।”

हाँ, किसी धनी और आलसी सज्जन से पूछिए, जो विलासिता की गोद में जी रहा हो, “आप कैसे हैं?” आपको एक दयनीय उत्तर सुनने को मिलेगा, जैसे: “समय कभी नहीं बीतता। चलो चौसर का खेल खेलते हैं। या चलो समय बिताने के लिए कोई मनोरंजन ढूँढ़ते हैं।” या फिर आपको सांसारिक महत्वाकांक्षा से उत्पन्न शिकायतें सुनने को मिलेंगी, जैसे: “मेरे पास वह नहीं है; काश मैंने ऐसा-ऐसा किया होता।”

फिर किसी विपत्ति से पीड़ित व्यक्ति या कठिनाई में जी रहे किसी मजदूर या गरीब आदमी से पूछें: “आप कैसे हैं?” अगर वह समझदार है, तो वह जवाब देगा: “भगवान का शुक्र है, मैं काम कर रहा हूँ। काश शाम इतनी जल्दी न होती, तो मैं यह काम पूरा कर लेता! समय बहुत जल्दी बीत जाता है, और जीवन भी, वे बहुत जल्दी बीत जाते हैं। निश्चित रूप से मेरे लिए चीजें कठिन हैं, लेकिन वे भी बीत जाएँगे। सब कुछ जल्दी बीत जाता है।” वह वास्तव में कहता है कि जीवन कितना मूल्यवान है और उसे कितना पछतावा है

इसका मतलब है कि वह कठिनाई और श्रम के माध्यम से जीवन के आनंद और मूल्य को समझता है। जहाँ तक सहजता और स्वास्थ्य का सवाल है, वे जीवन को कड़वा बनाते हैं और इसे बीतने की चाहत पैदा करते हैं।

मेरे बीमार भाई! जान लो कि विपत्तियों और बुराइयों और यहाँ तक कि पापों का मूल और खमीर, अस्तित्वहीनता ही है, जैसा कि रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में निर्णायक रूप से और विस्तार से साबित किया गया है। जहाँ तक अस्तित्वहीनता की बात है, यह बुराई है। ऐसा इसलिए है क्योंकि सहजता, मौन, शांति और निरोध जैसी नीरस स्थितियाँ अस्तित्वहीनता और शून्यता के करीब हैं, इसलिए वे अस्तित्वहीनता के अंधेरे को महसूस कराती हैं।

और संकट पैदा करते हैं। जहाँ तक क्रिया और परिवर्तन का सवाल है, वे अस्तित्व हैं और अस्तित्व को महसूस कराते हैं। और अस्तित्व शुद्ध अच्छाई है, यह प्रकाश है।

चूँकि वास्तविकता यही है, इसलिए आपकी बीमारी को आपके अस्तित्व में एक अतिथि के रूप में भेजा गया है ताकि वह आपके बहुमूल्य जीवन को शुद्ध करने, उसे मजबूत बनाने और उसे आगे बढ़ाने जैसे कई कर्तव्य निभाए, और आपके अस्तित्व में मौजूद अन्य मानवीय क्षमताओं को आपके बीमार अंग की सहायता के लिए मोड़े, और सर्वज्ञ निर्माता के विभिन्न नामों को प्रदर्शित करे। ईश्वर की इच्छा से, यह अपने कर्तव्यों को जल्दी से पूरा करेगा और चला जाएगा। और यह अच्छे स्वास्थ्य से कहेगा: "आओ, और मेरे स्थान पर स्थायी रूप से रहो, और अपने कर्तव्यों का पालन करो। यह घर तुम्हारा है।

आप यहाँ अच्छे स्वास्थ्य के साथ रहें।”

बीसवां उपाय

हे बीमार व्यक्ति! बीमारी दो तरह की होती है। एक वास्तविक होती है, दूसरी काल्पनिक। जहाँ तक वास्तविक बीमारी की बात है, तो सर्वशक्तिमान और महान चिकित्सक ने पृथ्वी पर अपनी महान औषधिशाला में हर बीमारी का इलाज सुरक्षित रखा है। दवाएँ प्राप्त करना और उनका उपचार के रूप में उपयोग करना जायज़ है, लेकिन हमें यह जानना चाहिए कि उनका प्रभाव और उपचार सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर से है। वह जिस तरह दवा देता है, उसी तरह उपचार भी देता है।

कुशल और ईश्वर-भक्त डॉक्टरों की सलाह का पालन करना एक महत्वपूर्ण औषधि है। क्योंकि अधिकांश बीमारियाँ दुर्व्यवहार, संयम की कमी, अपव्यय, गलतियों, अपव्यय और देखभाल की कमी से उत्पन्न होती हैं। एक धार्मिक डॉक्टर
वह निश्चित रूप से वैध सीमाओं के भीतर सलाह और आदेश देगा।
गाली-गलौज और ज्यादती से मना करो और सांत्वना दो। बीमार व्यक्ति को उसके आदेशों और सांत्वना पर भरोसा होता है और उसकी बीमारी कम हो जाती है; इससे उसके लिए परेशानी के स्थान पर सहजता पैदा होती है।

लेकिन जब काल्पनिक बीमारी की बात आती है, तो उसके लिए सबसे कारगर दवा यही है कि उसे महत्व न दिया जाए। उसे जितना महत्व दिया जाता है, वह उतना ही बढ़ता और फूलता है। अगर उसे महत्व न दिया जाए, तो वह कम हो जाता है और बिखर जाता है। मधुमक्खियां जितनी परेशान होती हैं, उतना ही वे व्यक्ति के सिर के चारों ओर झुंड बनाकर घूमती हैं और अगर उन पर ध्यान न दिया जाए, तो वे बिखर जाती हैं। इसी तरह, अंधेरे में अपनी आंखों के सामने लहराते हुए धागे को जितना महत्व दिया जाए और उससे होने वाली आशंका को जितना महत्व दिया जाए, वह उतना ही बढ़ता है और व्यक्ति को पागलों की तरह उससे दूर भागने पर मजबूर करता है। जबकि अगर कोई उसे महत्व न दे, तो वह देखेगा कि वह सांप नहीं, बल्कि एक साधारण धागा है और अपनी घबराहट और चिंता पर हंसेगा।

अगर हाइपोकॉन्ड्रिया लंबे समय तक जारी रहता है, तो यह वास्तविकता में बदल जाता है। यह नर्वस और कल्पनाशील लोगों के लिए एक बुरी बीमारी है; ऐसे लोग राई का पहाड़ बना देते हैं और उनका मनोबल टूट जाता है। खासकर अगर वे निर्दयी 'आधे' डॉक्टरों या अनुचित डॉक्टरों से मिलते हैं, तो यह उनके हाइपोकॉन्ड्रिया को और भड़का देता है। अमीरों के लिए, वे अपना धन खो देते हैं, या वे अपनी बुद्धि या अपने स्वास्थ्य को खो देते हैं।

इक्कीसवाँ उपाय

मेरे बीमार भाई! तुम्हारी बीमारी के साथ शारीरिक पीड़ा है, लेकिन एक महत्वपूर्ण अमूर्त सुख तुम्हें घेरे हुए है जो तुम्हारे शारीरिक दुख के प्रभाव को दूर कर देगा। क्योंकि यदि तुम्हारे पास पिता, माता और सम्बन्धी हैं, तो उनकी अत्यंत सुखद करुणा, जिसे तुम बचपन से भूल गए हो, फिर से जागृत हो जाएगी और तुम फिर से उनके दयालु रूप देखोगे जो तुम्हें बचपन में मिले थे। इसके अलावा, तुम्हारे आस-पास की मित्रताएँ जो गुप्त और छिपी हुई थीं, वे फिर से बीमारी के आकर्षण के माध्यम से तुम्हारी ओर प्रेम से देखती हैं, और इसलिए, इनके सामने तुम्हारा शारीरिक दुख बहुत सस्ता हो जाता है। साथ ही, चूँकि तुमने बीमारी के आदेश के माध्यम से गर्व से जिनकी सेवा की है, अब वे तुम्हारी दयालुता से सेवा करते हैं, इसलिए तुम स्वामियों के स्वामी बन गए हो। इसके अलावा, चूँकि तुमने लोगों में सहानुभूति और मानवीय दया को अपनी ओर आकर्षित किया है, इसलिए तुम्हें कई सहायक मित्र और दयालु साथी मिले हैं। और फिर, तुम्हें अपनी बीमारी से कई कठिन कर्तव्यों से आराम करने का आदेश मिला है, और तुम आराम कर रहे हो। निश्चित रूप से, इन अमूर्त सुखों के सामने, तुम्हारा छोटा सा दर्द तुम्हें शिकायत नहीं, बल्कि धन्यवाद देने के लिए प्रेरित करेगा।

बाईसवाँ उपाय

मेरे भाई जो एपोप्लेक्सी जैसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं! सबसे पहले मैं आपको खुशखबरी देता हूँ कि एपोप्लेक्सी को विश्वासियों के लिए धन्य माना जाता है। बहुत समय पहले मैं पवित्र लोगों से यह सुनता था और मुझे इसका कारण नहीं पता था।
अब, इसका एक कारण मेरे दिमाग में इस प्रकार आता है:

सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साथ एकता प्राप्त करने, इस संसार के महान आध्यात्मिक खतरों से बचने, तथा शाश्वत सुख प्राप्त करने के लिए, परमेश्वर के लोगों ने दो सिद्धांतों का पालन करना चुना है:

पहला है मृत्यु का चिंतन। यह सोचते हुए कि जैसे संसार क्षणभंगुर है, वैसे ही वे भी क्षणभंगुर मेहमान हैं, जिन पर कर्तव्य का भार है, उन्होंने इस तरह से अनन्त जीवन के लिए काम किया।

दूसरा; उपवास, धार्मिक अभ्यास और तप के माध्यम से, उन्होंने बुरी आत्मा को मारने की कोशिश की और इस प्रकार उसके खतरों और अंध भावनाओं से बच गए।

और तुम, मेरे भाई, जिसने अपना आधा शरीर खो दिया है! बिना
इसे चुनने पर आपको ये दो सिद्धांत दिए गए हैं, जो संक्षिप्त हैं

और आसान और खुशी का कारण है। इस प्रकार, आपके अस्तित्व की स्थिति आपको लगातार दुनिया की क्षणभंगुर प्रकृति के बारे में चेतावनी देती है और यह कि मनुष्य क्षणभंगुर है। दुनिया अब आपको डुबो नहीं सकती, न ही असावधानी आपकी आँखें बंद कर सकती है। और निश्चित रूप से, दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा नीच वासनाओं और पशुता से धोखा नहीं दे सकती
यदि कोई व्यक्ति आधे मनुष्य की अवस्था में भूखा हो, तो वह आत्मा की परीक्षाओं से शीघ्र ही बच जाता है।

इस प्रकार, ईश्वर में विश्वास के रहस्य और उसके प्रति समर्पण तथा उस पर निर्भरता के माध्यम से, एक आस्तिक व्यक्ति थोड़े समय में ही अपोप्लेक्सी जैसी गंभीर बीमारी से, संतों की गंभीर परीक्षाओं की तरह, लाभ उठा सकता है। तब ऐसी गंभीर बीमारी बहुत सस्ती हो जाती है।

तेईसवां उपाय

दुखी बीमार व्यक्ति जो अकेला और अजनबी है! भले ही आपका अकेलापन और निर्वासन आपकी बीमारी के साथ मिलकर कठोरतम हृदयों में आपके प्रति सहानुभूति जगाए और दया और करुणा को आकर्षित करे, क्या यह आपके दयालु निर्माता का विकल्प हो सकता है? क्योंकि वह खुद को सभी कुरान की सूरह की शुरुआत में "दयालु और दयालु" के गुणों के साथ हमारे सामने प्रस्तुत करता है, और अपनी करुणा की एक झलक से सभी माताओं को अपने बच्चों को उस अद्भुत कोमलता के साथ पालने के लिए प्रेरित करता है, और अपनी दया की एक अभिव्यक्ति के साथ हर वसंत पृथ्वी के चेहरे को भर देता है

और उसकी दया का एक ही प्रकटीकरण स्वर्ग में अनन्त जीवन है, उसके साथ उसके सभी चमत्कार भी हैं। फिर निश्चय ही विश्वास के द्वारा उसके साथ तुम्हारा सम्बन्ध, उसे पहचानना और अपनी बीमारी की नपुंसकता की जीभ के माध्यम से उससे प्रार्थना करना, और निर्वासन में अकेलेपन की बीमारी, उसकी दया की दृष्टि को तुम्हारी ओर आकर्षित करेगी, जो हर चीज का स्थान ले लेती है।

चूँकि वह मौजूद है और वह आपकी ओर देखता है, इसलिए सब कुछ आपके लिए मौजूद है। जो लोग वास्तव में अकेले और निर्वासित हैं, वे वे लोग हैं जो विश्वास और समर्पण के माध्यम से उससे जुड़े नहीं हैं, या उस संबंध को कोई महत्व नहीं देते हैं।

चौबीसवाँउपाय

ऐ तुम जो मासूम बीमार बच्चों और बूढ़ों की देखभाल करते हो, जो मासूम बच्चों जैसे हैं! तुम्हारे सामने आख़िरत के लिए अहम व्यापार है। उसी को हासिल करो
उत्साह और प्रयास के माध्यम से व्यापार! वास्तविकता के लोगों द्वारा यह स्थापित किया गया है कि मासूम बच्चों की बीमारियाँ उनके नाजुक शरीर के लिए व्यायाम और प्रशिक्षण की तरह हैं, और इंजेक्शन और डोमिनल प्रशिक्षण उन्हें भविष्य में दुनिया की उथल-पुथल का सामना करने की अनुमति देता है; इसके अलावा

बच्चे से संबंधित ज्ञान के कई उदाहरण

सांसारिक जीवन, वयस्कों में पापों के प्रायश्चित के बजाय
आध्यात्मिक जीवन के लिए तथा जीवन को शुद्ध करने का साधन होने के कारण, बीमारियाँ इंजेक्शन की तरह हैं जो भविष्य में या परलोक में बच्चे की आध्यात्मिक प्रगति सुनिश्चित करती हैं; तथा ऐसी बीमारियों से अर्जित पुण्य अच्छे कर्मों की पुस्तक में चले जाते हैं।
माता-पिता की, और खास तौर पर माँ की जो करुणा के रहस्य के माध्यम से अपने बच्चे के स्वास्थ्य को अपने स्वास्थ्य से ज़्यादा प्राथमिकता देती है।
बुजुर्गों के बाद, यह ध्वनि कथाओं और कई ऐतिहासिक में स्थापित है
ऐसी घटनाएँ जिनमें बड़ा इनाम पाने के साथ-साथ परमेश्वर की प्रार्थनाएँ भी मिलती हैं
बुज़ुर्गों और ख़ास तौर पर माता-पिता की सेवा करना और उनके दिलों को ख़ुश करना और उनकी सेवा करना
उनके प्रति निष्ठा रखना ही इस संसार में तथा परलोक में भी सुख का साधन है।
और यह कई घटनाओं से स्थापित है कि एक भाग्यशाली बच्चा जो
जो व्यक्ति अपने बुजुर्ग माता-पिता की बात का अक्षरशः पालन करेगा, उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार किया जाएगा
उसके बच्चे, और अगर कोई दुखी बच्चा अपने माता-पिता को चोट पहुँचाता है तो वह
इस दुनिया में और परलोक में भी बहुत सी विपत्तियों के द्वारा दण्डित किया जाता है। हाँ, केवल बुज़ुर्ग या मासूम रिश्तेदारों की ही देखभाल न करें,
लेकिन विश्वासियों के भी, यदि कोई उनसे मिले - क्योंकि विश्वास के रहस्य के माध्यम से सच्चा भाईचारा है - और आदरणीय बीमारों की सेवा करना
बुज़ुर्गों को यदि इसकी आवश्यकता हो तो
इस्लाम में व्यक्ति की सर्वोच्च योग्यता की अपेक्षा की जाती है।

पच्चीसवाँ उपाय

मेरे बीमार भाइयों! यदि आप सबसे अधिक लाभकारी और वास्तव में आनंददायक पवित्र इलाज चाहते हैं, तो अपना विश्वास विकसित करें! अर्थात्, पश्चाताप और क्षमा मांगने, और पाँच दैनिक प्रार्थनाओं और पूजा के माध्यम से, विश्वास, उस पवित्र इलाज और विश्वास से उत्पन्न होने वाली दवा का उपयोग करें।

सचमुच, इस संसार के प्रति प्रेम और आसक्ति के कारण ऐसा लगता है मानो तुम
हम एक बीमार अमूर्त प्राणी को धारण करते हैं जो दुनिया जितना बड़ा है, असावधान लोगों की तरह।
रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में यह साबित हो चुका है कि ईमान तुरंत ही उस बीमारी को ठीक कर देता है
तुम्हारा वह अमूर्त अस्तित्व जो संसार के समान विशाल है, जो मृत्यु और वियोग के आघातों से घायल और क्षतिग्रस्त है, उसे घावों से बचाता है और वास्तव में
यह उसे ठीक करता है। मैं चर्चा को यहीं समाप्त कर रहा हूँ ताकि आप थक न जाएँ।

जहाँ तक ईमान की दवा का सवाल है, तो वह आपके धार्मिक कर्तव्यों को यथासंभव पूरा करने से अपना असर दिखाती है। असावधानी, दुराचार, आत्मा की वासनाएँ और अवैध मनोरंजन उस दवा के असर को रोकते हैं।

चूँकि बीमारी प्रमाद को दूर करती है, तृष्णा को कम करती है, अवैध सुखों में बाधा डालती है, इसलिए इसका लाभ उठाओ। पवित्रता का उपयोग करो।

पश्चाताप और क्षमा मांगने, तथा प्रार्थना और विनती के माध्यम से विश्वास की औषधियाँ और रोशनी।

सर्वशक्तिमान ईश्वर आपको स्वास्थ्य प्रदान करें और आपकी बीमारियों को दूर करें
आपके पापों का प्रायश्चित। आमीन। आमीन। आमीन।

> वे कहते हैं: "सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है, जिसने हमें इस तक पहुँचाया। यदि ईश्वर ने हमें मार्ग न दिखाया होता, तो हम निश्चित रूप से सीधा मार्ग नहीं पा सकते थे। हमारे प्रभु के दूत वास्तव में सत्य के साथ आये थे।" (अल-आराफ़ 7: 43)

> तू महिमावान है। हमें कोई ज्ञान नहीं, सिवाय उसके जो तूने हमें सिखाया है।
> निस्संदेह तू ही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (सूरा बक़रा 2:32)

हे ईश्वर! हमारे स्वामी मुहम्मद को आशीर्वाद प्रदान करें, जो हमारी बीमारी की दवा है।
हमारे हृदयों और उनके उपचार, हमारे शरीरों के अच्छे स्वास्थ्य और उनकी चिकित्सा, हमारी आँखों की ज्योति और उनकी चमक, तथा उनके परिवार और साथियों के लिए प्रार्थना करें, तथा उन्हें शांति प्रदान करें।

शोक संदेश

एक बच्चे की मौत

और उसके नाम में उसकी महिमा हो!
और ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करे।
अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।
और रोगी को शुभ समाचार दो,
जो लोग किसी मुसीबत में पड़कर कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर हमें लौटना है। (सूरतुल बक़रा 2:155)

मेरे प्यारे आख़िरत के भाई, हाफ़िज़ हलीद इफ़ेन्दी!

आपके बच्चे की मौत से मुझे दुख हुआ। लेकिन, “आज्ञा परमेश्वर की है,”
ईश्वरीय आदेश से संतुष्ट रहना और ईश्वरीय निर्णय के प्रति समर्पण करना इस्लाम की निशानी है। सर्वशक्तिमान ईश्वर आप सभी को धैर्य प्रदान करे। और मृतक को परलोक में आपका सहायक और सिफ़ारिश करने वाला बनाए। मैं पाँच बातें स्पष्ट करूँगा जो वास्तव में शुभ समाचार हैं और आपके लिए तथा आप जैसे पवित्र ईमान वालों के लिए वास्तविक सांत्वना प्रदान करती हैं:

पहला बिंदु

विवेकपूर्ण कुरान में अमर युवाओं (अल-वाकिया 56:17) वाक्यांश का अर्थ यह है: इस वाक्यांश के साथ, आयत संकेत करती है और अच्छी खबर देती है कि विश्वासियों के बच्चे जो परिपक्वता तक पहुंचने से पहले मर जाते हैं, वे जीवित रहेंगे।

स्वर्ग के योग्य रूप में शाश्वत, प्यारे बच्चों के रूप में हमेशा बने रहें; कि वे स्वर्ग जाने वाले अपने पिता और माताओं की गोद में खुशी का एक शाश्वत साधन होंगे; कि वे अपने माता-पिता के लिए बच्चों को प्यार करने और दुलारने जैसे मधुरतम सुखों को सुनिश्चित करने का साधन होंगे; कि स्वर्ग में सभी सुखद चीजें मिलेंगी; कि जो लोग कहते हैं कि चूंकि स्वर्ग प्रजनन का स्थान नहीं है, इसलिए बच्चों को प्यार और दुलार नहीं किया जाएगा, उनके कथन सही नहीं हैं; और कि इस दुनिया में दुखों से मिले-जुले बच्चों को प्यार करने जैसे थोड़े समय के बजाय लाखों वर्षों तक शाश्वत बच्चों का शुद्ध, दर्द मुक्त प्यार और दुलार प्राप्त करना, बच्चों के लिए खुशी का एक बड़ा स्रोत है।

विश्वासियों.

दूसरा बिंदु

एक बार एक आदमी जेल में था। उन्होंने उसके प्यारे बच्चों में से एक को उसके पास भेजा।
दुखी कैदी को न केवल अपने दुखों का सामना करना पड़ा, बल्कि चूंकि वह ऐसा नहीं कर सका,
बच्चे को सहज बनाने के लिए, वह अपनी कठिनाई से भी दुखी था। तब दयालु न्यायाधीश ने एक आदमी को उसके पास एक संदेश के साथ भेजा जिसमें कहा गया था: "निश्चित रूप से यह बच्चा तुम्हारा है, लेकिन वह मेरा विषय और मेरे लोगों का है। मैं उसे ले जाऊंगा और एक बढ़िया महल में उसकी देखभाल करूंगा।" वह आदमी पीड़ा में रोया। उसने कहा: "मैं तुम्हें अपना बच्चा नहीं दूंगा जो मेरा सांत्वना है!" उसके दोस्तों ने उससे कहा: "तुम्हारा ...

दु:ख व्यर्थ है। यदि यह वह बच्चा है जिस पर आपको दया आती है, तो वह इस गंदे, बदबूदार, कष्टदायक कालकोठरी के बजाय एक विशाल और खुशहाल महल में जाएगा। यदि आप अपने लिए दुखी हैं और अपना लाभ चाहते हैं, तो यदि आपका बच्चा यहाँ रहता है, तो आपको अपने एकमात्र संदिग्ध, अस्थायी लाभ के अलावा बच्चे की कठिनाइयों से बहुत अधिक दु:ख और पीड़ा होगी। यदि वह वहाँ जाता है, तो यह आपके लिए कई गुना लाभ होगा, क्योंकि यह राजा के आकर्षण का कारण होगा

दया करो और तुम्हारे लिए मध्यस्थ बनो। राजा तुम्हें उससे मिलवाना चाहेगा। वह निश्चित रूप से उसे जेल में नहीं भेजेगा ताकि तुम उससे मिल सको; वह तुम्हें जेल से रिहा कर देगा, तुम्हें महल में बुलाएगा, और तुम्हें वहाँ बच्चे से मिलने देगा। इस शर्त पर कि तुम्हें राजा पर भरोसा हो और तुम उसकी बात मानो..."

मेरे प्यारे भाई, इस तुलना की तरह, आपको भी इस तरह सोचना चाहिए, जैसे दूसरे विश्वासी अपने बच्चों के मरने पर सोचते हैं: बच्चा मासूम था, और उसका रचयिता दयालु और उदार है। उसने उसे मेरी खराब परवरिश और दया के बदले अपनी सबसे उत्तम कृपा और दया में ले लिया है। उसने उसे इस दुनिया की दुखद, विपत्तिपूर्ण, कठिन जेल से मुक्त कर दिया है और उसे जन्नत के बागों में भेज दिया है। बच्चे के लिए कितनी खुशी की बात है! अगर वह इस दुनिया में रहता, तो कौन जाने वह कौन सा रूप धारण करता। इसलिए, मुझे उस पर दया नहीं आती, मैं उसे भाग्यशाली मानता हूँ। मेरे लिए अभी भी लाभ बाकी हैं, और मैं उनके लिए खुद पर दया नहीं करता, और मैं दुखी और दुखी नहीं होता। क्योंकि अगर वह दुनिया में रहता, तो उसे बहुत तकलीफ होती।

दस साल तक एक बच्चे का अस्थायी प्यार दर्द के साथ मिला। अगर वह नेक होता और दुनिया के मामलों में सक्षम होता, तो शायद वह मेरी मदद करता। लेकिन उसकी मौत के साथ, वह एक मध्यस्थ की तरह बन गया है जो शाश्वत स्वर्ग में एक बच्चे के प्यार के दस लाख साल और अनंत खुशी का साधन है। निश्चित रूप से, जो कोई संदिग्ध खो देता है,

तत्काल लाभ और उपलब्धियां

एक हजार निश्चित, स्थगित लाभ के कारण वह दुःख और पीड़ा प्रदर्शित नहीं करता है, वह निराशा में चिल्लाता नहीं है।

तीसरा बिंदु

जो बच्चा मरा वह एक प्राणी, एक संपत्ति, एक सेवक था और अपने सभी अंगों के साथ एक अत्यंत दयालु सृष्टिकर्ता की कलाकृति थी और उसका अपना था।

उनके लिए, वह उनके माता-पिता का मित्र था, जिसे अस्थायी रूप से उनकी निगरानी में रखा गया था।

सृष्टिकर्ता ने पिता और माता को बालक का सेवक बनाया। उनकी सेवाओं के बदले में, उसने उन्हें तत्काल पारिश्रमिक के रूप में सुखद करुणा प्रदान की।

अब, यदि दया और बुद्धि की आवश्यकता के अनुसार, वह दयालु सृष्टिकर्ता, जो एक हजार में से नौ सौ निन्यानबे शेयरों का मालिक है,

बच्चा, आपसे बच्चा ले लेता है और आपकी सेवा समाप्त कर देता है, उस स्पष्ट एकल शेयर के कारण दुःख और निराशा में चिल्लाने के लिए, हजार शेयरों के असली मालिक के सामने इस तरह से चिल्लाता है कि शिकायत याद आती है,

यह एक मोमिन के लिए उचित है, यह तो उपेक्षा और पथभ्रष्ट लोगों के लिए उचित है।

चौथा बिंदु

अगर दुनिया शाश्वत होती और मनुष्य को इसमें हमेशा रहना होता और अलगाव शाश्वत होता तो घोर दुख और निराशापूर्ण दुःख का कुछ अर्थ होता। लेकिन चूंकि यह दुनिया एक अतिथिगृह है, इसलिए जहाँ भी मृत बच्चा गया है, तुम और हम भी वहाँ जाएँगे। इसके अलावा, यह मृत्यु भी एक ऐसी ही मृत्यु है।

उसके लिए खास नहीं, यह एक सामान्य राजमार्ग है। और, चूंकि अलगाव हमेशा के लिए नहीं है, भविष्य में, मध्यवर्ती क्षेत्र और परलोक दोनों में, उससे मुलाकात होगी। किसी को यह कहना चाहिए, आदेश ईश्वर का है। उसने उसे दिया और उसने उसे ले लिया। किसी को यह कहना चाहिए, "हर परिस्थिति के लिए ईश्वर की प्रशंसा हो," और धैर्य के साथ धन्यवाद देना चाहिए।

पांचवां बिंदु

करुणा, ईश्वरीय दया की सबसे सूक्ष्म, सुंदर, सुखद और मधुर अभिव्यक्तियों में से एक है, जो एक चमकदार अमृत है। यह भावुक प्रेम से कहीं अधिक प्रत्यक्ष है; यह शीघ्र ही सर्वशक्तिमान ईश्वर के साथ मिलन का साधन बन जाता है। रूपक प्रेम और सांसारिक प्रेम सबसे बड़ी कठिनाई से सच्चे प्रेम में परिवर्तित होते हैं, और सर्वशक्तिमान ईश्वर को पाते हैं, लेकिन करुणा हृदय को उससे कम समय में, शुद्ध तरीके से बांधती है-और बिना किसी कठिनाई के। दोनों पिता

और माँ अपने बच्चे को पूरी दुनिया से ज़्यादा प्यार करती है।

यदि वे भाग्यशाली हैं और यदि वे सच्चे आस्तिक हैं, तो उनका बच्चा उनसे छीन लिया जाता है, वह इस दुनिया से अपना मुंह मोड़ लेता है और सच्चे कृपा-दाता को पा लेता है।

इसमें कहा गया है: “चूँकि संसार क्षणभंगुर है, इसलिए यह हृदय की आसक्ति के योग्य नहीं है।” बच्चा जहाँ भी जाता है, व्यक्ति उस स्थान के साथ आसक्ति बना लेता है, और इससे उसे उच्च आध्यात्मिक पद प्राप्त होता है।

जो लोग लापरवाही और गुमराही में हैं, वे इन पाँच बातों की खुशी और खुशखबरी से वंचित हैं। आप नीचे दी गई बातों से देख सकते हैं कि उनकी स्थिति कितनी दुखद है: वे अपने इकलौते बेटे को मौत के मुँह में देखते हैं और दुनिया को हमेशा के लिए समझने की वजह से और अपनी लापरवाही और गुमराही के कारण मौत को अस्तित्वहीन और हमेशा के लिए जुदाई समझते हैं। वे उसे उसकी नरम चादर की जगह कब्र की मिट्टी में सोचते हैं और अपनी लापरवाही या गुमराही के कारण वे अपने बेटे को नहीं सोचते।

रहमतों की जन्नत और रहमतों के अज़ीम की बरकतों की जन्नत; तुम तुलना करके देख सकते हो कि वे किस तरह के हताश करने वाले दुख और शोक से गुज़रते हैं। जबकि ईमान और इस्लाम ईमानवाले से कहते हैं: उसका रहमदिल पैदा करनेवाला तुम्हारे इस बच्चे को जो मौत की आगोश में है, इस नीच दुनिया से उठाकर जन्नत में ले जाएगा। वह उसे दोनों बना देगा

तुम्हारे लिए एक मध्यस्थ, और एक शाश्वत बच्चा। अलगाव अस्थायी है, मत करो
चिंता।

आज्ञा परमेश्वर की है।

हम परमेश्वर के हैं और उसी की ओर हमें लौटना है।
(अल-बकराह 2:155)

नर्सी ने कहा

अध्याय 11

रमज़ान के रोज़े

यह लेख माह में ज्ञान के अनेक उदाहरणों में से नौ का वर्णन करता है।
रमजान.

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

यह रमज़ान का महीना था जिसमें कुरान को ऊपर से मनुष्य के मार्गदर्शन के रूप में, उस मार्गदर्शन के स्वयंसिद्ध प्रमाण के रूप में, तथा सत्य और असत्य में अंतर करने के मानक के रूप में प्रदान किया गया था।

(अल-बकराह 2:185)

प्रथम बुद्धि

रमजान के महीने के दौरान उपवास इस्लाम के पांच स्तंभों में से एक है, और यह इस्लाम के सबसे महान चिह्नों और अनुष्ठानों में से एक है।
रमज़ान के रोज़े में कई उद्देश्य और बुद्धिमत्ता के उदाहरण हैं
जो सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रभुत्व और मनुष्य के सामाजिक जीवन, उसके
व्यक्तिगत जीवन और उसकी सहज आत्मा (नफ़्स) के प्रशिक्षण , और उसके
ईश्वरीय उपहारों के लिए आभार। ज्ञान के अनेक उदाहरणों में से एक
सर्वशक्तिमान ईश्वर के दृष्टिकोण से उपवास इस प्रकार है:

सर्वशक्तिमान ईश्वर ने धरती को एक ऐसी मेज के रूप में बनाया जो उपहारों से लदी हुई थी, और मेज पर हर प्रकार के उपहार को ऐसे रूप में व्यवस्थित किया जिसकी वह आशा नहीं करता था, (अत-तलाक 65:3) इस प्रकार वह अपने प्रभुत्व की पूर्णता और अपनी दयालुता और कृपालुता को दर्शाता है।

मनुष्य कारणों के दायरे में, असावधानी के आवरण में इस स्थिति की वास्तविकता को स्पष्ट रूप से समझने में असमर्थ है, और कभी-कभी वह इसे भूल जाता है। लेकिन रमजान के महीने में, आस्था रखने वाले लोग अचानक एक अच्छी तरह से तैयार सेना की तरह हो जाते हैं। जैसे-जैसे सूर्यास्त होता है, वे

ऐसा भक्तिपूर्ण रवैया प्रदर्शित करें मानो, पूर्व-अनन्त काल में आमंत्रित किया गया हो
सम्राट के भोज में, वे आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं

"गिर जाओ और अपनी सहायता करो!" वे उस दयालुता का जवाब दे रहे हैं,
व्यापक, उच्च और व्यवस्थित पूजा के साथ शानदार और सार्वभौमिक दया। क्या आपको लगता है कि जो लोग ऐसी उच्च पूजा और महान उपहारों में भाग नहीं लेते हैं वे मनुष्य कहलाने के योग्य हैं?

दूसरा ज्ञान

पवित्र माह के उपवास में ज्ञान के कई उदाहरणों में से एक
अल्लाह तआला की नेमतों के लिए आभार प्रकट करने के लिए रमजान माह की प्रार्थना इस प्रकार है:

जैसा कि पहले वचन में कहा गया है, शाही रसोई से थाली लाने वाले को खाने की कीमत चुकानी पड़ती है। लेकिन थाली उठाने वाले को टिप देना और थाली लाने वाले को पैसे देना, दोनों ही मामलों में एक ही बात है। उन अमूल्य उपहारों को मूल्यहीन मानना और उन्हें देने वाले को न पहचानना सबसे बड़ी मूर्खता होगी।

अल्लाह तआला ने इंसानों के लिए इस धरती पर अनगिनत तरह की नेमतें फैलाई हैं, जिसके बदले में वह उन नेमतों की कीमत के तौर पर शुक्रिया अदा करना चाहता है। नेमतों के प्रत्यक्ष कारण और धारक थाली उठाने वालों की तरह हैं। हम उन्हें एक निश्चित कीमत देते हैं और उनके ऋणी हैं, और भले ही वे इसके लायक न हों, फिर भी हम उनके प्रति अत्यधिक सम्मान और कृतज्ञता रखते हैं।

जबकि सच्चा दानदाता उन कारणों की तुलना में असीम रूप से अधिक धन्यवाद का पात्र है जो केवल दान के साधन हैं।
अतः, उसे धन्यवाद देने का अर्थ है यह पहचानना कि ये वरदान सीधे उसी से आते हैं; यह उनके महत्व को समझना है तथा स्वयं के लिए उनकी आवश्यकता को समझना है।

इसलिए, रमज़ान में उपवास करना, सच्ची, ईमानदार, व्यापक और सार्वभौमिक कृतज्ञता की कुंजी है। क्योंकि साल के अन्य समय में, जो लोग मुश्किल हालात में नहीं होते हैं, उनमें से ज़्यादातर लोग कई तरह के उपहारों के महत्व को नहीं समझते हैं क्योंकि उन्हें वास्तविक भूख का अनुभव नहीं होता है। जिनके पेट भरे हुए हैं और खासकर अगर वे अमीर हैं, तो वे यह नहीं समझ पाते हैं कि किसी चीज़ में कितना उपहार है।

सूखी रोटी का टुकड़ा। लेकिन जब उपवास तोड़ने का समय आता है, तो स्वाद की भावना यह प्रमाणित करती है कि सूखी रोटी एक आस्तिक की नज़र में सबसे मूल्यवान ईश्वरीय उपहार है। रमज़ान के दौरान, राजा से लेकर बेसहारा तक हर कोई उन चीज़ों के मूल्य को समझकर एक तरह की कृतज्ञता प्रकट करता है

इनाम.

इसके अलावा, चूँकि दिन के समय भोजन करना वर्जित है, वे कहेंगे: "वे उपहार मेरे नहीं हैं। मैं उन्हें खाने के लिए स्वतंत्र नहीं हूँ, क्योंकि वे दूसरे की संपत्ति और उपहार हैं। मैं उसके आदेश का इंतजार करता हूँ।" वे पहचान लेंगे कि वे क्या चाहते हैं।
उदारता उदारता होगी और इसलिए धन्यवाद दिया जाएगा। इस प्रकार, उपवास में

यह मार्ग कई मायनों में कृतज्ञता की कुंजी की तरह है; कृतज्ञता मनुष्य का मौलिक कर्तव्य है।

तीसरी बुद्धि

मनुष्य के सामाजिक जीवन के दृष्टिकोण से उपवास में बुद्धिमत्ता के अनेक उदाहरणों में से एक इस प्रकार है:

मनुष्य को उनकी आजीविका के संबंध में अलग-अलग तरीके से बनाया गया है। इस अंतर के परिणामस्वरूप, सर्वशक्तिमान ईश्वर हमें आमंत्रित करता है
अमीरों को गरीबों की सहायता करनी चाहिए, ताकि उपवास में अनुभव की गई भूख के माध्यम से, अमीर लोग वास्तव में गरीबों की पीड़ा और भूख को समझ सकें। अगर उपवास न होता, तो बहुत से स्वार्थी अमीर लोग यह समझने में असमर्थ होते
भूख और गरीबी कितनी दु:खद है और जो लोग इनसे पीड़ित हैं, उन्हें दया की कितनी आवश्यकता है।

अपने साथियों के प्रति करुणा रखना सच्ची कृतज्ञता का अनिवार्य अंग है।
कोई भी व्यक्ति हो, उसके जीवन में हमेशा कोई न कोई उससे भी गरीब अवश्य होगा।
कुछ सम्मान। उसे उस व्यक्ति के प्रति दयालु होने का आदेश दिया जाता है। अगर वह
यदि वह स्वयं भूख से पीड़ित होने के लिए विवश न होता, तो वह उस व्यक्ति को करुणा के माध्यम से वह सहायता और सहायता प्रदान करने में असमर्थ होता, जो उसे प्रदान करने के लिए बाध्य किया जाता है। और यदि वह सक्षम भी होता, तो वह अपर्याप्त होता, क्योंकि उसने स्वयं भूख की स्थिति का वास्तविक अनुभव नहीं किया होता।

चौथा ज्ञान

सहज आत्मा को प्रशिक्षित करने के संबंध में रमजान में उपवास करने की बुद्धिमत्ता का एक उदाहरण इस प्रकार है:

सहज आत्मा स्वतंत्र और स्वतन्त्र रहना चाहती है और खुद को ऐसा ही मानती है। अपनी प्रकृति के अनुसार, वह एक काल्पनिक आधिपत्य और अपनी इच्छानुसार कार्य करने की भी इच्छा रखती है। वह यह स्वीकार नहीं करना चाहती कि वह स्वतंत्र है।
असंख्य इनामों के माध्यम से पोषित और प्रशिक्षित किया जा रहा है। खासकर अगर यह
इस संसार में धन और शक्ति रखता है, और यदि असावधानी भी उसे प्रोत्साहित करती है
यह एक हड़पने वाले, चोर जानवर की तरह भगवान के उपहारों को खा जाएगा। इस प्रकार, रमजान के महीने में, सबसे अमीर से लेकर सबसे अमीर तक हर किसी की सहज आत्मा
सबसे गरीब व्यक्ति यह समझ सकता है कि वह स्वयं का स्वामी नहीं है, बल्कि पूर्णतः उसका स्वामी है;
वह स्वतंत्र नहीं है, बल्कि गुलाम है। वह समझता है कि अगर उसे कोई आदेश न मिले, तो वह सबसे सरल और आसान काम भी नहीं कर सकता, वह पानी की ओर हाथ भी नहीं बढ़ा सकता। इसलिए उसका काल्पनिक आधिपत्य टूट जाता है; वह प्रदर्शन करता है
इसकी पूजा और धन्यवाद देना शुरू होता है, इसके
सच्चा कर्तव्य.

पांचवी बुद्धि

सहज आत्मा के आचरण को सुधारने और उसकी विद्रोही आदतों को छोड़ने के दृष्टिकोण से रमजान में उपवास करने की बुद्धिमत्ता के कई उदाहरणों में से एक इस प्रकार है:

मानव आत्मा असावधानी के कारण स्वयं को भूल जाती है। वह अपने भीतर की पूर्ण शक्तिहीनता, अभाव और कमी को नहीं देख पाती और न ही देखना चाहती है। और वह यह नहीं सोचती कि वह कितनी कमजोर है और कितनी अधीन है।

न तो यह क्षणभंगुरता और न ही यह तथ्य कि यह केवल मांस और हड्डियों से बना है, जो शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं और बिखर जाते हैं।

सीधे शब्दों में कहें तो यह दुनिया पर ऐसे हमला करता है जैसे कि इसका शरीर स्टील से बना हो
और खुद को अमर और शाश्वत मानता है। यह तीव्र लालच और लालच और भावुक लगाव और प्रेम के साथ खुद को दुनिया पर फेंक देता है। यह

वह किसी भी ऐसी चीज़ से मोहित हो जाता है जो उसे खुशी देती है या जो उसे लाभ पहुँचाती है। इसके अलावा, वह अपने पैदा करने वाले को भूल जाता है जो उसे पूर्ण दया के साथ पालता है, और वह अपने जीवन और आख़िरत के परिणामों के बारे में नहीं सोचता। वास्तव में, वह अपव्यय और दुराचार में डूबा रहता है।

हालांकि, रमज़ान के महीने में रोज़ा रखने से सबसे ज़्यादा लापरवाह और जिद्दी लोगों को भी अपनी कमज़ोरी, नपुंसकता और ज़रूरत का एहसास हो जाता है।
भूख लगने पर वे अपने पेट के बारे में सोचते हैं; वे उसकी ज़रूरत को समझते हैं।
उन्हें एहसास होता है कि उनके कमज़ोर शरीर कितने अस्वस्थ हैं, और उन्हें दया और करुणा की कितनी ज़रूरत है। इसलिए वे आत्मा की फिरौन जैसी निरंकुशता को त्याग देते हैं, और अपनी पूरी नपुंसकता और अभाव को पहचान कर, ईश्वरीय न्यायालय में शरण लेने की इच्छा महसूस करते हैं। और वे खुद को तैयार करते हैं

कृतज्ञता के हाथों से दया के द्वार पर दस्तक दो। जब तक असावधानी ने उनके हृदयों को नष्ट न कर दिया हो, अर्थात्।

छठी बुद्धि

पवित्र क़ुरआन के अवतरण के दृष्टिकोण से, तथा इस तथ्य के संबंध में कि रमज़ान का महीना उसके अवतरण का सबसे महत्वपूर्ण समय था, रमज़ान में रोज़ा रखने की बुद्धिमत्ता के कई उदाहरणों में से एक उदाहरण इस प्रकार है:

चूँकि सर्व-बुद्धिमान कुरान रमजान के महीने में अवतरित हुआ था, इसलिए आत्मा की निम्न मांगों और तुच्छताओं से दूर रहना और ईश्वर के सदृश होना आवश्यक है।
उस स्वर्गीय संबोधन का सर्वोत्तम तरीके से स्वागत करने के लिए भोजन और पेय से परहेज़ करके, पवित्र अवस्था को प्राप्त करना है। और कुरान को ऐसे पढ़ना और सुनना जैसे कि वह अभी-अभी अवतरित हुआ हो, सुनना

उसमें ईश्वरीय संदेश इस तरह से है जैसे कि वह उसी क्षण प्रकट हो रहा हो, उस संदेश को इस तरह से सुनना जैसे कि वह ईश्वर के महान दूत (उन पर आशीर्वाद और शांति हो), वास्तव में, फ़रिश्ते गेब्रियल से, या स्वयं पूर्व-शाश्वत वक्ता से सुन रहा हो, उसी पवित्र अवस्था को प्राप्त करना है। इस तरह से कार्य करना एक व्याख्याकार के रूप में कार्य करना है और दूसरों को इसे सुनने के लिए प्रेरित करना है और कुछ हद तक कुरान के अवतरण में ज्ञान को प्रदर्शित करना है।

वास्तव में, ऐसा लगता है जैसे कि रमज़ान के महीने में इस्लाम की दुनिया एक मस्जिद बन जाती है। उस महान मस्जिद के हर कोने में लाखों लोग जो पूरी कुरान को कंठस्थ जानते हैं, धरती पर रहने वालों को स्वर्ग का संदेश सुनाते हैं। प्रत्येक रमज़ान में यह आयत दिखाई जाती है। यह रमज़ान का महीना था।

रमज़ान जिसमें कुरान को ऊपर से चमकदार तरीके से प्रदान किया गया था (अल-बक़रा 2:185)। यह साबित करता है कि रमज़ान पवित्र महीना है।

कुरान की आयतें पढ़ी जाती हैं। विशाल जनसमूह के कुछ सदस्य श्रद्धा के साथ कुरान की आयतें सुनते हैं, जबकि अन्य लोग इसे स्वयं पढ़ते हैं।

ऐसी पवित्र मस्जिद में रहते हुए अपनी नीच प्रवृत्ति की इच्छाओं का पालन करना और खाने-पीने के माध्यम से उस प्रकाशमय स्थिति को छोड़ देना, वास्तव में घृणित है और ऐसा व्यक्ति मस्जिद में उपस्थित लोगों की घृणा और घृणा का लक्ष्य बनता है। इसी तरह, जो लोग रमज़ान के दौरान रोज़ा रखने वालों का विरोध करते हैं, वे भी उसी हद तक इस्लाम की पूरी दुनिया की घृणा और घृणा का लक्ष्य हैं।

सातवीं बुद्धि

मानव जाति के लाभ और मुनाफे के संबंध में रमजान के उपवास में ज्ञान के कई उदाहरणों में से एक, जो इस दुनिया में आखिरत के लिए खेती और व्यापार करने के लिए आता है, इस प्रकार है:

रमजान के महीने में किये गये कार्यों का प्रतिफल हजार गुना मिलता है।

हदीस के अनुसार, विवेकपूर्ण कुरान के प्रत्येक शब्द में दस गुण हैं; प्रत्येक को दस गुणों के रूप में गिना जाता है और स्वर्ग में दस फल प्रदान करेगा।

रमज़ान में हर शब्द दस नहीं बल्कि हज़ार फल देता है और आयत अल-कुरसी जैसी आयतों में हर शब्द के लिए हज़ार फल मिलते हैं और रमज़ान में शुक्रवार को यह संख्या और भी ज़्यादा होती है। और शक्ति की रात में हर शब्द तीस हज़ार के बराबर गिना जाता है

गुण.

वास्तव में, सर्वज्ञ कुरान, जिसके प्रत्येक शब्द से तीस हज़ार अनन्त फल प्राप्त होते हैं, तूबा के एक चमकदार वृक्ष की तरह है जो रमज़ान में ईमान वालों के लिए उन अनन्त फलों में से लाखों प्राप्त करता है। तो, आइए और इसे देखें

[121] अल-बकराह 2:255.

यदि आप पवित्र, शाश्वत लाभदायक व्यापार के बारे में सोचते हैं, तो इस पर विचार करें और उन लोगों की अनंत हानि को समझें जो उन शब्दों के मूल्य की सराहना नहीं करते हैं।

सरल शब्दों में कहें तो रमजान का महीना परलोक के व्यापार के लिए अत्यंत लाभदायक प्रदर्शन और बाजार है। परलोक की फसलों के लिए यह अत्यंत उपजाऊ भूमि है। कार्यों की वृद्धि और उत्कर्ष के लिए यह वसंत में अप्रैल की वर्षा के समान है। यह ईश्वरीय प्रभुता की संप्रभुता के समक्ष मानवजाति की पूजा के परेड के लिए एक शानदार पवित्र उत्सव के समान है। चूंकि यह ऐसा है, इसलिए मानवजाति को उपवास करने का आदेश दिया गया है ताकि वह खाने-पीने जैसी सहज आत्मा की पशुवत आवश्यकताओं को लापरवाही से पूरा न करे, न ही वासनाओं और तुच्छ चीजों में तृप्त हो। क्योंकि, अस्थायी रूप से एक पशु होने की स्थिति से ऊपर उठकर और इस दुनिया की पुकार को त्यागकर, मनुष्य देवदूत की स्थिति में पहुँच जाता है और परलोक के व्यापार में प्रवेश करता है। और उपवास करके, वह परलोक की स्थिति और शारीरिक रूप में प्रकट होने वाली आत्मा की स्थिति में पहुँच जाता है। यह ऐसा है जैसे कि मनुष्य तब एक प्रकार का दर्पण बन जाता है जो शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले को दर्शाता है। वास्तव में, रमज़ान का महीना इस क्षणभंगुर दुनिया और संक्षिप्त क्षणिक जीवन में एक स्थायी और शाश्वत जीवन को शामिल करता है और प्राप्त करता है।

बेशक, एक रमज़ान अस्सी साल की ज़िंदगी के बराबर फ़ल देता है। यह तथ्य कि क़ुरआन के अनुसार, शक्ति की रात एक हज़ार महीनों से ज़्यादा फ़ायदेमंद है, इसका निर्णायक सबूत है।

उदाहरण के लिए, एक राजा अपने शासनकाल के दौरान या शायद साल में एक बार कुछ दिनों को त्यौहार घोषित कर सकता है। या तो उसके सिंहासन पर बैठने पर या कुछ अन्य दिनों पर जो उसकी संप्रभुता की शानदार अभिव्यक्ति को दर्शाते हैं।
उन दिनों वह अपनी प्रजा पर कृपा करता है, कानून के सामान्य दायरे में नहीं, बल्कि अपनी विशेष कृपाओं और अनुग्रहों के साथ, बिना किसी परदे के अपनी उपस्थिति के साथ।
और वह अपने राष्ट्र के उन लोगों पर विशेष ध्यान देता है जो पूरी तरह से वफादार और योग्य हैं।

इसी तरह, अठारह हज़ार दुनियाओं के महान सम्राट, जो पूर्व-अनंत काल और पर-अनंत काल के शासक हैं, ने रमज़ान में सर्वज्ञ क़ुरआन का शानदार आदेश उतारा, जो अठारह हज़ार दुनियाओं को देखता है। इसलिए, यह बुद्धि की मांग है कि रमज़ान एक विशेष ईश्वरीय उत्सव, एक प्रभुत्वपूर्ण प्रदर्शन और एक आध्यात्मिक सभा की तरह होना चाहिए।

चूंकि रमजान ऐसा ही त्यौहार है, इसलिए ईश्वर ने मनुष्य को उपवास करने का आदेश दिया है, ताकि वह कुछ हद तक नीच और पाशविक गतिविधियों से दूर रहे।

सबसे उत्तम उपवास वह है जिसमें मनुष्य की सभी इंद्रियाँ, जैसे आँख, कान, हृदय और विचार, पेट के साथ-साथ उपवास कर लें।
उन्हें सभी अवैध चीजों और तुच्छ बातों से दूर रखें, और उनमें से प्रत्येक को उनकी विशेष पूजा के लिए प्रेरित करें।

उदाहरण के लिए, झूठ बोलने, चुगली करने और अश्लील भाषा बोलने से जीभ को रोकना और उसे उपवास करना। और उसे कुरान की तिलावत, प्रार्थना, ईश्वर के नामों का गुणगान, पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) पर ईश्वर की कृपा मांगने और पापों की क्षमा मांगने जैसे कार्यों में व्यस्त रखना। और उदाहरण के लिए, निर्धारित रिश्तेदारी के बाहर विपरीत लिंग के सदस्यों को देखने से आंखों को रोकना और हानिकारक बातें सुनने से कानों को रोकना और आंखों को शिक्षा लेने और कानों को सच्चाई और कुरान सुनने के लिए उपयोग करना, अन्य अंगों को भी उपवास करना है।

दरअसल, चूंकि पेट सबसे बड़ी फैक्ट्री है, अगर इसमें
यदि उपवास के माध्यम से काम से छुट्टी लागू कर दी जाए, तो अन्य छोटी-छोटी कार्यशालाएं भी इसका आसानी से पालन कर सकेंगी।

आठवीं बुद्धि

मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन के दृष्टिकोण से रमज़ान में बुद्धिमत्ता के कई उदाहरणों में से एक इस प्रकार है:

यह सबसे महत्वपूर्ण प्रकार का शारीरिक और आध्यात्मिक उपचारात्मक आहार है।
जब मनुष्य की सहज आत्मा अपनी मर्जी से खाती-पीती है, तो यह चिकित्सा की दृष्टि से मनुष्य के शारीरिक जीवन के लिए हानिकारक है, और जब वह बिना सोचे-समझे हर चीज पर टूट पड़ती है कि यह जायज है या नाजायज, तो यह उसके आध्यात्मिक जीवन को विषाक्त कर देती है। इसके अलावा, ऐसी आत्मा के लिए दिल और आत्मा की आज्ञा मानना मुश्किल होता है। वह स्वेच्छा से लगाम अपने हाथों में ले लेती है, और फिर मनुष्य उस पर सवार नहीं हो सकता, बल्कि वह मनुष्य पर सवार हो जाती है। लेकिन रमज़ान में उपवास के ज़रिए वह एक तरह के आहार की आदी हो जाती है। वह खुद को अनुशासित करने की कोशिश करती है और आज्ञाओं को सुनना सीखती है।

इसके अलावा, वह उस दुखी, कमज़ोर पेट में बीमारी को आकर्षित नहीं करेगा, क्योंकि वह पिछले भोजन को पचने से पहले ही उसे भर देगा। और जैसा कि उसे आदेश दिया गया है, वैध कार्यों को भी त्यागकर, वह शरिया और तर्क के आदेशों को सुनने की क्षमता प्राप्त करेगा, और इस प्रकार अवैध कार्यों से बच सकेगा। वह अपने आध्यात्मिक जीवन को नष्ट न करने का प्रयास करेगा।

इसके अलावा, अधिकांश मानव जाति अक्सर भूख से पीड़ित रहती है।
इसलिए मनुष्य को भूख और अनुशासन की आवश्यकता है, जो धैर्य और सहनशीलता के लिए प्रशिक्षण है। रमज़ान में उपवास धैर्य और सहनशीलता का प्रतीक है।

भूख की अवधि जो पंद्रह घंटे तक जारी रहती है, या चौबीस घंटे तक अगर भोर से पहले का खाना न खाया जाए, और यह एक अनुशासन और प्रशिक्षण है। यानी, उपवास अधीरता और सहनशक्ति की कमी का भी इलाज है, जो मनुष्य के दुखों को दोगुना कर देता है।

इसके अलावा, पेट की फैक्ट्री में कई कर्मचारी हैं। और उनमें से कई
मनुष्य के अंग इससे जुड़े हुए हैं। अगर सहज आत्मा को एक महीने तक दिन में काम करने से आराम न मिले, तो यह फैक्ट्री के कर्मचारियों और उन अंगों को उनके खास कर्तव्यों को भूला देती है। यह उन्हें अपने में व्यस्त कर देती है ताकि वे इसके अत्याचार के अधीन रहें। साथ ही, यह बाकी अंगों को भी भ्रमित कर देती है

फैक्ट्री की मशीनों की गड़गड़ाहट और भाप से मानव शरीर में प्रवेश करता है। यह लगातार उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है, जिससे वे अस्थायी रूप से अपने महान कर्तव्यों को भूल जाते हैं। यही कारण है कि सदियों से उनके सबसे करीबी लोग

परमेश्वर ने सिद्ध बनने के लिए स्वयं को अनुशासन में रखने और कम खाने-पीने का आदी बना लिया है।

हालाँकि, रमज़ान में रोज़े रखने से फैक्ट्री के कर्मचारी समझते हैं
कि वे केवल कारखाने के लिए नहीं बनाए गए थे। जबकि बाकी अंग,
कारखाने के तुच्छ मनोरंजन में आनंद लेने के बजाय, आनंद लें
फरिश्ते और रूहानी मौज-मस्ती के लिए तरसते हैं और उन पर अपनी निगाहें टिकाते हैं। यही वजह है कि रमज़ान में ईमानवाले ज्ञान, फलदायीपन और रूहानी खुशियों का अनुभव करते हैं जो उनकी डिग्री के हिसाब से अलग-अलग होती हैं। उनके दिल, रूह और बुद्धि जैसी सूक्ष्म क्षमताएँ रोज़े के ज़रिए उस मुबारक महीने में बहुत तरक्की और उन्नति करती हैं। पेट के रोने के बावजूद वे मासूम खुशी से हँसते हैं।

नौवीं बुद्धि

रमज़ान में रोज़ा रखने की बुद्धिमत्ता का एक उदाहरण यह है कि
सहज आत्मा के काल्पनिक प्रभुत्व को तोड़ना तथा उसकी नपुंसकता को इंगित करके उसकी पूजा को ज्ञात करना इस प्रकार है:

सहज आत्मा अपने पालनहार को पहचानना नहीं चाहती; वह फिरौन की तरह अपना आधिपत्य चाहती है। चाहे उसे कितनी भी यातनाएँ क्यों न सहनी पड़ें, वह चरित्र उसमें बना रहता है। लेकिन भूख से वह नष्ट हो जाती है। इसलिए, रमज़ान में रोज़ा आत्मा के फिरौन जैसे मोर्चे पर सीधा प्रहार करता है, उसे चकनाचूर कर देता है। यह उसकी नपुंसकता, कमज़ोरी और अभाव को दर्शाता है। यह उसे एहसास कराता है कि वह एक गुलाम है।

हदीस की रिवायतों में से एक यह है: "अल्लाह सर्वशक्तिमान ने सहज आत्मा से कहा: 'मैं क्या हूँ और तुम क्या हो?' आत्मा ने उत्तर दिया: 'मैं स्वयं हूँ और तुम स्वयं हो।' इसलिए उसने उसे दंडित किया और उसे नरक में डाल दिया,

फिर उससे फिर पूछा। फिर उसने उत्तर दिया: 'मैं स्वयं हूँ और आप स्वयं हैं।' हालाँकि उसने उसे दंडित किया, लेकिन उसने अपना अहंकार नहीं छोड़ा। अंत में उसने उसे भूख से दंडित किया। यानी, उसने उसे भूखा ही छोड़ दिया। फिर उसने उससे पूछा: 'मैं कौन हूँ और तुम कौन हो?' और आत्मा ने उत्तर दिया: 'आप मेरे दयालु पालनहार हैं और मैं आपका नपुंसक दास हूँ।'"

हे ईश्वर! हमारे स्वामी मुहम्मद को आशीर्वाद और शांति प्रदान करें, जो आपको प्रसन्न करेगी और उनकी सच्चाई की पूर्ति ईश्वर के गुणों की संख्या के अनुसार होगी।
रमजान के महीने में कुरान के शब्दों को अपने परिवार और साथियों के साथ साझा करें और उन्हें शांति प्रदान करें।

पर
धन्यवाद
ईश्वर

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

और ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करे।

तो क्या वे कृतज्ञता नहीं दिखाएंगे? (सूरा यासीन 36:35)

और हम अवश्य ही कृतज्ञता दिखाने वालों को प्रतिफल देंगे। (आल-इमरान 3:145)

यदि तुम धन्यवाद करोगे तो मैं तुम्हारे प्रति अपनी कृपा बढ़ाऊंगा। (इब्राहीम 14:7)

अल्लाह की इबादत करो और शुक्रगुज़ार बनो (अज़-ज़ुमर 39:66)

ऐसी आयतों को बार-बार दोहराकर, चमत्कारपूर्ण व्याख्या वाला कुरान यह दर्शाता है कि सबसे महत्वपूर्ण चीज़ जो सबसे दयालु निर्माता अपने बंदों से चाहता है, वह है धन्यवाद। सत्य और असत्य के बीच अंतर करने वाला सर्वज्ञ कुरान लोगों को धन्यवाद देने के लिए कहता है, इसे सबसे अधिक महत्व देता है। यह कृतज्ञता को नेमतों का इनकार बताता है, और सूरह अर-रहमान में, एक गंभीर और भयावह धमकी तैंतीस बार इस आदेश के साथ देता है, तो तुम अपने रब की किन नेमतों को झुठलाते हो? (अर-रहमान 55:13)। यह दर्शाता है कि कृतज्ञता इनकार और अस्वीकृति है। वास्तव में, सर्वज्ञ कुरान दोनों ही सृष्टि के परिणाम के रूप में कृतज्ञता को दर्शाता है, और ब्रह्मांड का शक्तिशाली कुरान दर्शाता है कि सृष्टि के निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम

दुनिया धन्यवाद है। क्योंकि अगर ब्रह्मांड को ध्यान से देखा जाए, तो यह स्पष्ट है कि सभी चीजें धन्यवाद में परिणत होती हैं, जिस तरह से प्रत्येक इसके भीतर व्यवस्थित है; एक हद तक प्रत्येक धन्यवाद की ओर देखता है और उसकी ओर मुड़ता है। यह ऐसा है जैसे सृष्टि के वृक्ष का सबसे महत्वपूर्ण फल धन्यवाद है, और ब्रह्मांड के कारखाने का सबसे बढ़िया उत्पाद धन्यवाद है। इसका कारण इस प्रकार है:

हम संसार के निर्माण में देखते हैं कि इसके प्राणी एक चक्र में व्यवस्थित हैं, जिसका केन्द्र बिन्दु जीवन है। सभी प्राणी जीवन की ओर देखते हैं, जीवन की सेवा करते हैं, तथा जीवन की आवश्यकताओं का उत्पादन करते हैं। अर्थात्, जिसने ब्रह्माण्ड का निर्माण किया, उसने उसमें से जीवन को चुना।

फिर हम देखते हैं कि उसने पशु जगत को एक चक्र के रूप में बनाया और मनुष्य को उसके केंद्र में रखा। सीधे शब्दों में कहें तो उसने सजीव प्राणियों से इच्छित लक्ष्यों को मनुष्य पर केन्द्रित किया, सभी जीवित प्राणियों को उसके चारों ओर इकट्ठा किया, और

उसने उन्हें अपने अधीन कर लिया। उसने उन्हें अपनी सेवा करने और उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने को कहा।
अर्थात्, महिमावान सृष्टिकर्ता ने जीवित प्राणियों में से मनुष्य को चुना, और संसार में उसके लिए यह स्थान निर्धारित किया।

फिर हम देखते हैं कि मनुष्य की दुनिया और जानवरों की दुनिया भी गोल आकार की बनी हुई है, जिसके केंद्र में भोजन रखा गया है। उसने मनुष्य और जानवरों को भोजन के प्रति आसक्त बनाया है, उन्हें भोजन के अधीन किया है और उन्हें भोजन की सेवा करने के लिए बाध्य किया है। उन पर भोजन का ही शासन है। और उसने भोजन को भोजन बनाया है।

इतना विशाल और समृद्ध खजाना कि उसमें उसकी असंख्य नेमतें समाहित हैं।
यहां तक कि, स्वाद की इंद्रिय नामक एक क्षमता के साथ, उसने जीभ पर भी रखा है
भोजन की संख्या के लिए सूक्ष्म और संवेदनशील तराजू, ताकि वे कई प्रकार के भोजन के स्वाद को पहचान सकें। कहने का तात्पर्य यह है कि ब्रह्मांड में सबसे अजीब, सबसे समृद्ध, सबसे अद्भुत, सबसे सुखद, सबसे व्यापक और सबसे अद्भुत सत्य भोजन में निहित है।

अब हम देखते हैं कि जिस तरह से सब कुछ जीविका के इर्द-गिर्द इकट्ठा हुआ है और उसी की ओर देखता है, उसी तरह जीविका भी अपने सभी रूपों में धन्यवाद के माध्यम से जीवित रहती है, चाहे वह भौतिक हो या अभौतिक और जो शब्द और स्थिति द्वारा दिया जाता है; यह धन्यवाद के माध्यम से अस्तित्व में है, यह धन्यवाद उत्पन्न करता है, यह धन्यवाद दर्शाता है। क्योंकि भूख और जीविका की इच्छा जन्मजात या सहज धन्यवाद के प्रकार हैं। आनंद और खुशी भी एक प्रकार का अचेतन धन्यवाद है, जो सभी जानवर देते हैं। यह केवल मनुष्य ही है जो गुमराही और अविश्वास के माध्यम से उस जन्मजात धन्यवाद की प्रकृति को बदलता है; वह ईश्वर के साथ भागीदार बनाने के लिए धन्यवाद से विचलित हो जाता है।

इसके अलावा, अति सुंदर रूप से सजे हुए रूप, सुगंधित गंध, भोजन के रूप में उपलब्ध उपहारों में मौजूद अद्भुत स्वादिष्ट स्वाद धन्यवाद को आमंत्रित करते हैं; वे सजीव प्राणियों में उत्सुकता जगाते हैं, और उत्सुकता के माध्यम से एक प्रकार की प्रशंसा और सम्मान को प्रेरित करते हैं, और एक प्रकार का धन्यवाद करने के लिए प्रेरित करते हैं। वे सचेत प्राणियों का ध्यान आकर्षित करते हैं और प्रशंसा उत्पन्न करते हैं। वे उन्हें उपहारों का सम्मान करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं; इसके माध्यम से, वे उन्हें मौखिक रूप से और कार्य द्वारा धन्यवाद देने और आभारी होने के लिए प्रेरित करते हैं; वे कारण बनते हैं

उन्हें धन्यवाद के भीतर उच्चतम और मधुरतम आनंद और आनन्द का अनुभव करने के लिए। अर्थात्, वे दिखाते हैं कि, एक संक्षिप्त और अस्थायी सतही आनंद के साथ-साथ, धन्यवाद के माध्यम से, ये स्वादिष्ट भोजन और उपहार परम दयालु के अनुग्रह प्राप्त करते हैं, जो एक स्थायी, सच्चा, असीम प्रदान करते हैं

आनंद। वे सचेत प्राणियों को अनंत, आनंददायक पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं
दया के खजाने के सर्व-उदार मालिक के पक्ष में, और वास्तव में
इस दुनिया में रहते हुए भी स्वर्ग के अनंत आनंद का स्वाद चखें। इस प्रकार, यद्यपि धन्यवाद के माध्यम से जीविका इतनी मूल्यवान, समृद्ध, सर्वव्यापी खजाना बन जाती है, लेकिन कृतघ्नता के माध्यम से यह पूरी तरह से मूल्यहीन हो जाती है।

जैसा कि छठे वचन में बताया गया है,122 जब जीभ में स्वाद की इंद्रिय
सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए जीविका की ओर उन्मुख हो जाता है, अर्थात जब वह धन्यवाद का अपना कर्तव्य निभाता है, तो वह ईश्वर के आभारी निरीक्षक की तरह हो जाता है।
ईश्वरीय दया के असंख्य रसोईघर और प्रशंसा से भरा एक उच्च-सम्मानित पर्यवेक्षक। यदि यह आत्मा की खातिर इसकी ओर मुड़ा है, यानी, जिसने जीविका प्रदान की है, उसे धन्यवाद देने के बारे में सोचे बिना, स्वाद की भावना एक उच्च सम्मानित पर्यवेक्षक होने के पद से पेट के कारखाने के चौकीदार और दरवाजे के रखवाले के स्तर पर गिर जाती है

जैसे कृतघ्नता के कारण जीविका के ये सेवक इस स्तर तक गिर जाते हैं, वैसे ही जीविका की प्रकृति और उसके अन्य सेवक भी गिर जाते हैं; वे सर्वोच्च पद से निम्नतम पद पर गिर जाते हैं; वे ब्रह्माण्ड के रचयिता की बुद्धि के विपरीत स्थिति में पहुँच जाते हैं।

धन्यवाद का माप है संतोष, मितव्ययिता, संतुष्ट और आभारी होना। जबकि कृतघ्नता का माप है लालच, अपव्यय और अपव्यय; यह अनादर है; यह जो भी मिल जाए उसे खा लेना है, चाहे वह वैध हो या अवैध।

कृतघ्नता की तरह लालच भी नुकसान और पतन का कारण बनता है। उदाहरण के लिए, यह ऐसा है जैसे लालच के कारण धन्य चींटी, जिसका सामाजिक जीवन है, पैरों तले कुचल दी जाती है। क्योंकि, हालांकि गेहूं के कुछ दाने एक साल के लिए पर्याप्त होते हैं, लेकिन वह इससे संतुष्ट नहीं होती है, और अगर संभव हो तो हजारों दाने इकट्ठा कर लेती है। जबकि धन्य मधुमक्खी अपने संतोष के कारण ऊपर से उड़ती है, और ईश्वरीय आदेश के माध्यम से मनुष्यों को खाने के लिए शहद देती है।

दयालु का नाम - अल्लाह के नाम के बाद सबसे बड़ा नाम,
जो ईश्वरीय सार का प्रतीक है और सबसे महान नाम है

---

[122] अध्याय 5 देखें: उपासना और प्रार्थना के पीछे तर्क।

शुद्ध और पवित्र - जीविका की ओर देखता है, और जीविका द्वारा प्रेरित धन्यवाद के माध्यम से प्राप्त होता है। इसके अलावा, सर्व-दयालु का सबसे स्पष्ट अर्थ प्रदाता है।

इसके अलावा, धन्यवाद के विभिन्न प्रकार हैं। सबसे व्यापक-
इनमें से सबसे महत्वपूर्ण और उनका सार्वभौमिक सूचकांक निर्धारित प्रार्थनाएँ हैं।

इसके अलावा, धन्यवाद के भीतर एक शुद्ध विश्वास, ईश्वर की एकता की एक ईमानदार पुष्टि है। एक व्यक्ति जो एक सेब खाता है और कहता है, "ईश्वर की स्तुति हो!" अपने धन्यवाद के माध्यम से घोषणा कर रहा है: "यह सेब सीधे शक्ति के हाथ से दिया गया एक स्मृति चिन्ह है, दया के खजाने से सीधे एक उपहार है।" ऐसा कहने और इस पर विश्वास करने के साथ, वह सब कुछ, विशेष और सार्वभौमिक, शक्ति के हाथ में आत्मसमर्पण कर रहा है। वह दया की अभिव्यक्ति को पहचानता है

सब कुछ। वह धन्यवाद के माध्यम से ईश्वरीय एकता की सच्ची आस्था और ईमानदारी से पुष्टि की घोषणा करता है।

असावधान मनुष्य को अनेक प्रकार की हानि उठानी पड़ती है,
हम केवल एक ही बात का वर्णन करेंगे जो इस प्रकार है:

यदि कोई व्यक्ति स्वादिष्ट उपहार खाए और धन्यवाद दे, तो वह उपहार उसके धन्यवाद के कारण प्रकाश बन जाता है और परलोक में स्वर्ग का फल बन जाता है।
यह सोचकर कि यह सर्वशक्तिमान ईश्वर की कृपा और दया का कार्य है, क्योंकि इससे आनंद मिलता है, यह सच्चा, स्थायी आनंद और आनन्द देता है। वह इसके अर्थ से संबंधित गुठली और सार, तथा इस तरह के अभौतिक पदार्थों को ऊपर के धामों में भेज देता है, जबकि भौतिक भूसी जैसा अवशेष, अर्थात् वह पदार्थ जो अपना कर्तव्य पूरा कर चुका है और अब है

अनावश्यक, मलमूत्र बन जाता है और अपने मूल पदार्थों में परिवर्तित हो जाता है, अर्थात तत्वों में। यदि वह धन्यवाद नहीं देता है, तो क्षणिक सुख अपने बीतने पर दर्द और दुःख छोड़ जाता है, और स्वयं बर्बाद हो जाता है। हीरे की प्रकृति का दान कोयले में बदल जाता है। धन्यवाद के माध्यम से, क्षणिक जीविका स्थायी सुख, शाश्वत फल उत्पन्न करती है। लेकिन जो दान कृतघ्नता से मिलता है, वह सबसे अच्छे रूपों से सबसे अरुचिकर रूप में बदल जाता है। क्योंकि ऐसे असावधान व्यक्ति के अनुसार, एक क्षणिक सुख के बाद, जीविका का अंत होता है

बेकार बात।

बेशक, रोज़ी प्यार के लायक एक रूप में होती है, और वह रूप शुक्रिया से ज़ाहिर होता है। जबकि गुमराह और ग़ाफ़िल लोगों की रोज़ी के लिए दीवानगी हैवानियत है। आप इस तरह से और तुलना कर सकते हैं और देख सकते हैं कि ग़ाफ़िल और गुमराह लोगों को कितना नुकसान होता है।

जीवित प्राणियों में सबसे ज़्यादा ज़रूरत मनुष्य को ही है। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मनुष्य को अपने सभी नामों के लिए एक व्यापक दर्पण के रूप में बनाया है; शक्ति के चमत्कार के रूप में जो उनकी दया के सभी खज़ानों की सामग्री को तौलने और पहचानने की क्षमता रखता है; और पृथ्वी पर अपने प्रतिनिधि के रूप में जो उनके नामों की विभिन्न अभिव्यक्तियों की सभी सूक्ष्मताओं को तराजू पर खींचने की क्षमता रखता है। इसलिए उसने उसे एक असीम ज़रूरत दी, जिससे वह भौतिक और अभौतिक, अनंत विभिन्न प्रकार के पोषण के लिए ज़रूरतमंद बन गया। मनुष्य को 'सर्वोत्तम रूपों' तक उठाने का साधन, जो कि है

इस व्यापकता के अनुसार सर्वोच्च स्थान, धन्यवाद है। यदि वह
यदि वह धन्यवाद नहीं देता, तो वह 'सबसे निचले स्तर' पर गिर जाता है और बहुत बड़ा अन्याय करता है।

संक्षेप में, आराधना और ईश्वर का प्रेम जीतने के चार मूलभूत सिद्धांतों में से सबसे ज़रूरी, सबसे ऊँचा और सबसे बढ़िया तरीका है धन्यवाद। इन चार सिद्धांतों को इस प्रकार परिभाषित किया गया है:

"नपुंसक के मार्ग पर चार चीजें आवश्यक हैं, मेरे दोस्त: "पूर्ण नपुंसकता, पूर्ण गरीबी, पूर्ण उत्साह, और पूर्ण

धन्यवाद मेरे दोस्त...."

हे परमेश्वर, अपनी दया से हमें धन्यवाद देने वालों में शामिल कर।
हे दयालुओं में भी अत्यन्त दयालु!

तू महिमावान है, हमें कोई ज्ञान नहीं, सिवाय उसके जो तूने सिखाया है
निस्संदेह तू ही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (सूरा बक़रा 2:32)

हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद, जो धन्यवाद और प्रशंसा करने वालों के स्वामी हैं, तथा उनके समस्त परिवार और साथियों को आशीर्वाद और शांति प्रदान करें।
आमीन.

और उनकी पुकार का अन्त यह होगा, “सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है।” (यूनुस 10:10)

अध्याय 12

शैतान के धोखे

यह लेख विद्यार्थियों और सर्वशक्तिमान ईश्वर के सेवकों को चेतावनी देने के लिए लिखा गया था।
कुरान, ताकि वे शैतान के बहकावे में न आएं।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

और जो लोग अत्याचारी हैं उनकी ओर झुकना उचित न समझो, अन्यथा आग तुम्हें पकड़ लेगी।

(हूद 11:113)

भगवान की इच्छा से, यह लेख शैतान की छह चालों और युक्तियों को चकरा देगा, और उन्हें अवरुद्ध कर देगा
उन्होंने अपने आक्रमण के छह तरीके अपनाए।

पहली शैतानी चाल: पद और स्थिति की इच्छा

शैतानों से प्राप्त निर्देशों के परिणामस्वरूप
जिन्न, मानव शैतान, पद और स्थिति की इच्छा के माध्यम से, कुरान की पार्टी के आत्म-बलिदान सेवकों को धोखा देना चाहते हैं, और उन्हें अपनी पवित्र सेवा और उच्च 'शब्द के जिहाद' को छोड़ने के लिए मजबूर करना चाहते हैं। यह उतना ही है जितना कि
इस प्रकार है:

अधिकांश लोगों में लोगों द्वारा देखे जाने की पाखंडी इच्छा मौजूद होती है।
सार्वजनिक दृष्टि में एक स्थान प्राप्त करना, जो कि प्रसिद्धि और प्रशंसा तथा आत्म-विज्ञापन की महत्वाकांक्षा है; पद और स्थिति की यह इच्छा कम या अधिक हद तक उन सभी लोगों में मौजूद है जो इस दुनिया में रहना चाहते हैं। इसे पूरा करने के लिए
महत्वाकांक्षा, प्रसिद्धि की चाहत इंसान को अपनी जान तक कुर्बान करने पर मजबूर कर देती है। यह महत्वाकांक्षा उन लोगों के लिए बेहद खतरनाक है जो परलोक की तलाश में हैं। और जो इस दुनिया की तलाश में हैं उनके लिए यह एक कठिन रास्ता है, यह कई बुरे कामों का स्रोत भी है
नैतिकता और चरित्र की सबसे कमज़ोर नस है। किसी को अपने वश में करने और उसे अपनी ओर खींचने के लिए, एक व्यक्ति को केवल इस महत्वाकांक्षा को संतुष्ट करना होता है;
यह आदमी को उससे बांध देता है, और वह उससे हार जाता है। मेरे भाइयों के लिए मेरा सबसे बड़ा डर यह है कि नास्तिक उनकी इस कमज़ोरी का फ़ायदा उठाएँगे। इसने मुझे बहुत सोचने पर मजबूर कर दिया है। क्योंकि इस तरह से उन्होंने कुछ ऐसे बदकिस्मत लोगों को आकर्षित किया जो वास्तव में उनके दोस्त नहीं थे, और उन्हें एक ख़तरनाक स्थिति में डाल दिया।123

---

[123] वे अभागे लोग यह सोचकर अपने आपको किसी खतरे में नहीं समझते कि: "हमारा दिल उस्ताद के साथ हैं। लेकिन कोई ऐसा जो नास्तिकों की धारा को मजबूत करे

मेरे भाईयों और क़ुरआन की सेवा में लगे दोस्तों! चालाक दुनियावी लोगों के गुप्तचरों, गुमराह लोगों के प्रचारकों, या शैतान के शिष्यों से जो पद की चाहत से तुम्हें धोखा देने की कोशिश करते हैं, ये बात कहो: "सबसे पहले, ईश्वरीय प्रसन्नता, दयालु ईश्वर की कृपा और प्रभु की स्वीकृति ऐसी स्थिति है कि ईश्वर का सम्मान और प्रशंसा उसके लिए सबसे बड़ी बाधा है।

मनुष्य के लिए ईश्वरीय कृपा का कोई मोल नहीं है। यदि किसी को ईश्वरीय कृपा प्राप्त हो जाए, तो वह पर्याप्त है। मनुष्य का सम्मान तभी स्वीकार्य है, जब वह दया के सम्मान का प्रतिबिम्ब और छाया हो; अन्यथा यह वांछनीय नहीं है। क्योंकि यह कब्र के द्वार पर समाप्त हो जाता है, इसलिए यह मूल्यवान है।

कुछ नहीं!"

यदि पद और स्थिति की इच्छा को शांत और समाप्त नहीं किया जाता है, तो इसे किसी और चीज़ की ओर निर्देशित किया जाना चाहिए, जैसे कि: निम्नलिखित तुलना के अनुसार, शायद भावना का एक वैध पक्ष हो सकता है; यदि यह परलोक में पुरस्कार के लिए है, या प्रार्थना के इरादे से है, या सेवा की प्रभावशीलता के दृष्टिकोण से है।

उदाहरण के लिए, जब इस्तांबुल में हागिया सोफिया मस्जिद प्रतिष्ठित और धन्य लोगों, पुण्यवान और उत्कृष्ट लोगों से भरी होती है, तब प्रवेश द्वार और बरामदे के आसपास एक या दो बेकार युवक और अनैतिक आवारा लोग खड़े होते हैं, जबकि मस्जिद के बाहर एक या दो आवारा लोग खड़े होते हैं।
खिड़कियां खुली हैं और उनके सामने कुछ यूरोपीय लोग मनोरंजन के लिए खड़े हैं।
एक आदमी मस्जिद में प्रवेश करता है और लोगों के बीच शामिल होता है, फिर कुरान की एक आयत को बहुत ही सुन्दर आवाज में पढ़ता है; हजारों लोगों की निगाहें उस पर टिक जाती हैं।
सच्चे लोग उसके विरुद्ध हो जाते हैं, और वे अपने कामों के द्वारा उसके लिए प्रतिफल पाते हैं।
सम्मान और प्रार्थनाएँ। केवल, यह बेकार युवाओं और विधर्मियों को खुश नहीं करता है
आवारा लोगों और एक या दो यूरोपीय लोगों को। यदि वह व्यक्ति पवित्र मस्जिद में प्रवेश करके और बड़ी भीड़ में शामिल होकर अपमानजनक, असभ्य, अभद्र गीत गाता, नाचता और कूदता, तो यह बेकार युवाओं को हंसाता, लम्पट आवारा लोगों को प्रसन्न करता क्योंकि यह अनैतिकता को बढ़ावा देता, और यूरोपीय लोगों को उपहासपूर्वक मुस्कुराने पर मजबूर करता,

जो इस्लाम में कोई भी दोष देखकर प्रसन्न होते हैं। लेकिन इससे विशाल और धन्य सभा की ओर से घृणा और तिरस्कार की दृष्टि पड़ती; उनकी दृष्टि में वह सबसे निम्न स्तर पर गिर गया प्रतीत होता।

कम।

और उनके प्रचार में बह जाता है, जिससे अनजाने में जासूसी गतिविधियों में इस्तेमाल होने की संभावना का पता चलता है, और कहता है: "मेरा दिल साफ है, और उस्ताद के तरीके के प्रति वफादार है" यह निम्नलिखित उदाहरण से मिलता जुलता है: अनिवार्य नमाज़ अदा करते समय, कोई व्यक्ति अपनी सांस नहीं रोक पाता और उसे बाहर निकाल देता है; और उसकी नमाज़ अमान्य हो जाती है। जब उसे बताया जाता है कि उसकी नमाज़ अमान्य है, तो वह जवाब देता है: "क्यों होनी चाहिए? मेरा दिल शुद्ध है।"

ठीक इसी तरह, इस्लाम और एशिया की दुनिया एक विशाल मस्जिद है, और इसमें मौजूद ईमान और सच्चाई वाले लोग मस्जिद में मौजूद सम्मानित जमात हैं। बेकार के नौजवान बच्चों के दिमाग वाले चाटुकार हैं।

लम्पट आवारा लोग वे खलनायक हैं जो यूरोप का अनुसरण करते हैं और जिनका कोई राष्ट्र नहीं है
या धर्म। जबकि यूरोपीय दर्शक पत्रकार हैं जो यूरोपीय लोगों के विचारों को फैलाते हैं। सभी मुसलमान, और विशेष रूप से सदाचारी और

जो लोग सिद्ध हैं, उन्हें मस्जिद में उनकी डिग्री के अनुसार स्थान मिलता है; उन्हें देखा जाता है और उनकी ओर ध्यान जाता है। यदि वे पवित्र कुरान द्वारा बताए गए आदेशों और पवित्र सत्यों के अनुसार कार्य करते हैं, जो ईमानदारी और ईश्वरीय प्रसन्नता के संबंध में हैं, जो इस्लाम का मूल है, और यदि उनकी स्वभावगत जीभ कुरान की आयतें पढ़ती है, तो वे इस प्रार्थना में शामिल हो जाएंगे: हे ईश्वर, सभी ईमान वाले पुरुषों और सभी ईमान वाली महिलाओं को क्षमा प्रदान करें, जो लगातार उच्चारित की जाती है।

इस्लाम की दुनिया के सभी व्यक्तियों को इसका हिस्सा मिलेगा और वे सभी भाईचारे के साथ जुड़ेंगे। लेकिन इसका मूल्य गुमराह लोगों में से कुछ के लिए स्पष्ट नहीं होगा जो खतरनाक जानवरों की तरह हैं और कुछ मूर्खों के लिए जो दाढ़ी वाले बच्चों की तरह हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने सभी पापों से इनकार कर दे

अपने पूर्वजों को, जो सम्मान का स्रोत है, तथा अपने भूतकाल को, जो गर्व का कारण है, त्याग देता है, तथा अपने धर्मी पूर्वजों के प्रकाशमान राजमार्ग को, जिसे वे अपना आधार मानते थे, आत्मा में त्याग देता है, तथा अपने कार्यों को करता है।

अपनी मर्जी और जुनून के पीछे चलना, पाखंडपूर्ण तरीके से प्रसिद्धि पाना, और
वह नवाचारों का अनुसरण करते हुए, सत्य और विश्वास के सभी लोगों की दृष्टि में सबसे निचले स्थान पर गिर जाएगा। इस कथन के अनुसार: "ईमान वाले की अंतर्दृष्टि से सावधान रहो, क्योंकि वह ईश्वर के प्रकाश से देखता है,"124 चाहे कोई भी आस्तिक कितना भी सामान्य और अज्ञानी क्यों न हो, भले ही उसका मन इसे महसूस न करे, उसका दिल ऐसे घमंडी, स्वार्थी लोगों को ठंडे और घृणा से देखता है।

और इस प्रकार, पद और पद के मोह में बहकर तथा प्रसिद्धि की लालसा से ग्रस्त होकर - दूसरा व्यक्ति - उस असंख्य मण्डली की दृष्टि में सबसे निम्नतम स्तर पर पहुँच जाता है। और वह अनेक तुच्छ, उपहास करने वाले, मूर्खों की दृष्टि में एक अस्थायी और अशुभ स्थिति प्राप्त कर लेता है।

इस आयत के अनुसार, उस दिन मित्र एक दूसरे के शत्रु हो जायेंगे, सिवाय धर्मी लोगों के। (अज़-ज़ुख़रुफ़ (43:67) उसे कुछ झूठे मित्र मिलेंगे जो इस दुनिया में नुकसान पहुँचाने वाले होंगे, मध्यवर्ती क्षेत्र में यातना देने वाले होंगे और आख़िरत में दुश्मन होंगे।

---

[124] तिर्मिधि, तफ़सीरु सुरा, 156; अबू नईम, हिलियात अल-अवलिया', iv, 94; अल-हयथामी, मजमा अल-ज़वायद, x, 268; अल-अजलुनी, कशफ अल-खफा, आई, 42।

जहाँ तक पहले मनुष्य का प्रश्न है, यदि वह अपने हृदय से पद की इच्छा को नहीं निकालता है, बशर्ते कि वह ईमानदारी और ईश्वरीय प्रसन्नता को आधारभूत मानता है और पद और पद को अपना लक्ष्य नहीं बनाता है, तो वह एक प्रकार की आध्यात्मिक प्राप्ति कर लेगा।
पद, और वह भी गौरवशाली, जो पद के लिए उसकी इच्छा को पूरी तरह से संतुष्ट करेगा।
यह आदमी कुछ महत्वहीन, बहुत महत्वहीन चीज खो देगा, और उसकी जगह बहुत सारी, बहुत सारी, मूल्यवान और हानिरहित चीजें पा लेगा। वास्तव में, वह ऐसा करेगा।
कुछ साँपों को भगा देगा और उनकी जगह पर बहुत से धन्य जीव ढूँढ़ लेगा; वह उनसे परिचित हो जाएगा। या वह डंक मारने वाले जंगली भौंरों को भगा देगा और अपने पास धन्य मधुमक्खियों को, दया के शर्बत बेचने वालों को खींच लाएगा। वह उनके हाथ से शहद खाएगा और ऐसे दोस्त ढूँढ़ेगा कि इस्लामी दुनिया के सभी हिस्सों से उसकी आत्मा को अल -कौथर125 के पानी की तरह तेज दिया जाएगा जो उनकी प्रार्थनाओं के माध्यम से उसे ग्रहण करेगा, जो उसके अच्छे कर्मों की किताब में चला जाएगा।

एक समय, जब स्वार्थ की इच्छा के कारण कोई बड़ा अपराध कर बैठा,
प्रसिद्धि, एक छोटा सा आदमी जो एक उच्च सांसारिक पद पर आसीन था, इस्लाम की दुनिया की नज़रों में हंसी का पात्र बन गया, मैंने उससे बात की और उसे सिखाया
मैंने उसके सिर पर वार किया। वह बुरी तरह से हिल गया था, लेकिन चूँकि मैं खुद को पद और ओहदे की चाहत से नहीं बचा पाया था, इसलिए मेरी चेतावनी ने उसे जगाया नहीं।

दूसरी शैतानी चाल: भय

मनुष्य में सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक भावनाओं में से एक है कामुकता की भावना।
डर। षडयंत्रकारी अत्याचारी लोग डर की इस भावना से बहुत लाभ उठाते हैं। वे कायरों को इसके द्वारा नियंत्रित करते हैं। दुनियावी लोगों के एजेंट और गुमराह लोगों के प्रचारक आम लोगों की इस भावना का फायदा उठाते हैं और

धार्मिक विद्वानों के विशेष रूप से। वे उन्हें डराते हैं और उनके निराधार भय को उत्तेजित करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी को छत पर खतरे में डालने के लिए, एक षडयंत्रकारी व्यक्ति भयभीत व्यक्ति को कुछ ऐसा दिखाता है जो उसे लगता है कि हानिकारक है; वह उसके डर को उत्तेजित करता है और उसे धीरे-धीरे छत के किनारे की ओर खींचता है; फिर वह उसे नीचे गिरा देता है और उसकी गर्दन तोड़ देता है। ठीक उसी तरह, वे लोगों को सबसे महत्वहीन भय के माध्यम से सबसे महत्वपूर्ण चीजों का त्याग करने के लिए मजबूर करते हैं। यह सोचकर कि, इस मच्छर को मुझे काटने मत दो, वे अजगर की ओर भाग जाते हैं

मुँह।

---

[125] अल-कौथर एक बड़ा कुआं है, पानी रखने के लिए एक टैंक है, जिसे क़ियामत के दिन जमा होने की जगह पर स्थापित किया जाएगा, जहाँ पैगम्बर मुहम्मद (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) की उम्मत आएगी। इस कुआं का पानी अल-कौथर नदी से आएगा जो जन्नत में है, इसलिए इसे अल-कौथर का कुआं कहा जाता है।

एक बार, एक प्रतिष्ठित व्यक्ति-भगवान उन पर दया करें-एक नाव में चढ़ने से डर रहे थे। एक शाम, हम साथ-साथ चल रहे थे
इस्तांबुल में ब्रिज तक। हमें नाव पर चढ़ना पड़ा; कोई गाड़ी नहीं थी, और
हमें एयूप सुल्तान जाना था। मैंने जोर दिया। उसने कहा: “मैं डरा हुआ हूँ। शायद यह डूब जाए!” मैंने उससे पूछा: “आपको क्या लगता है कि गोल्डन हॉर्न पर कितनी नावें हैं?” उसने जवाब दिया: “शायद एक हज़ार।” तो मैंने उससे पूछा: “एक साल में कितनी नावें डूबती हैं?” उसने कहा: “एक या दो। शायद बिल्कुल भी नहीं।” मैंने उससे पूछा: “एक साल में कितने दिन होते हैं?” “तीन सौ साठ,” उसने जवाब दिया। फिर मैंने उससे कहा: “डूबने की संभावना, जो आपके अंदर निराधार भय पैदा करती है और आपको चिंतित करती है, तीन सौ साठ हज़ार में से एक है। जो व्यक्ति ऐसी संभावना से भयभीत होता है, वह इंसान नहीं हो सकता, वह जानवर भी नहीं हो सकता!” फिर मैंने उससे पूछा: “कितने दिन

क्या तुम्हें लगता है कि तुम जीवित रहोगे?” उसने उत्तर दिया: “मैं बूढ़ा हो गया हूँ; शायद मैं और दस साल जीऊँगा।” तो मैंने उससे कहा: “क्योंकि मृत्यु का नियत समय आ गया है
गुप्त, हर दिन मरने की संभावना है। ऐसी स्थिति में, आप तीन हजार छह सौ में से किसी भी दिन मर सकते हैं। आप देखिए, यह नाव की तरह तीन लाख में से एक की संभावना नहीं है; बल्कि तीन में से एक की संभावना है

हजार, कि तुम आज मर सको; इसलिए कांपना और रोना, और अपना लिखना
इच्छाशक्ति!" वह अपने होश में आया, और मैंने उसे काँपते हुए नाव पर चढ़ाया। नाव पर चढ़ते समय, मैंने उससे कहा: "सर्वशक्तिमान ईश्वर ने जीवन को बचाने के लिए भय की भावना दी है, इसे नष्ट करने के लिए नहीं! उसने जीवन को बोझिल, कठिन, दर्दनाक और पीड़ादायक बनाने के लिए नहीं दिया है। यदि भय दो, तीन, या चार में से एक या पाँच या छह में से एक की संभावना के कारण है, तो यह एक एहतियाती भय है और इसे स्वीकार किया जा सकता है। लेकिन बीस, तीस, या चालीस में से एक की संभावना से डरना एक निराधार भय है, और जीवन को यातनापूर्ण बना देता है!"

और इसलिए, मेरे भाइयों, अगर नास्तिकों की चापलूसी करने वाले लोग आपको डराकर आपके पवित्र 'शब्द के जिहाद' को छोड़ने के लिए हमला करते हैं, तो उनसे कहो: "हम कुरान के दल हैं। आयत के अनुसार, हमने निस्संदेह संदेश भेजा है; और हम निश्चित रूप से इसकी रक्षा करेंगे (अल-हिज्र 15: 9) हम कुरान के गढ़ में हैं। आयत, हमारे लिए ईश्वर ही पर्याप्त है, और वह मामलों का सबसे अच्छा निपटारा करने वाला है (अल-इमरान 3: 173) हमारे चारों ओर एक मजबूत किला है। हमारे क्षणभंगुर जीवन में हजारों में से एक को कुछ मामूली नुकसान होने की संभावना के डर से, आप हमें अपनी इच्छाओं के माध्यम से उस रास्ते पर नहीं ले जा सकते, जिसकी सौ प्रतिशत संभावना है कि वह हमें नुकसान पहुंचाएगा।

हमारे अनंत जीवन को हज़ार गुना नुकसान पहुँचाओ!" और यह भी कहो: "क्या ऐसा कोई है जिसे हमारे मित्र सईद नूरसी के कारण नुकसान पहुँचा है?

कुरान और मास्टर और फोरमैन से इस पवित्र सेवा को चलाने में, या
हम जैसे सत्यनिष्ठ लोग जो सत्य के मार्ग पर उनके साथी हैं? क्या कोई ऐसा है जिसने उनके करीबी शिष्यों के कारण कोई कष्ट सहा हो, ताकि हम भी कष्ट सहें? तो क्या हमें भी कष्ट सहने की संभावना से चिंतित होना चाहिए?

हमारे इस भाई के परलोक में हजारों मित्र और भाई हैं।
यद्यपि बीस से तीस वर्षों तक उन्होंने इस संसार के सामाजिक जीवन में प्रभावशाली भूमिका निभाई, फिर भी हमने उनके किसी भी भाई को कोई कष्ट सहते हुए नहीं सुना।
उनके कारण। खास तौर पर उस समय, जब वे राजनीति की गदा लेकर चल रहे थे। अब
उस क्लब की जगह, उसके पास वास्तविकता की रोशनी है। निश्चित रूप से, बहुत पहले वे मिश्रित हो गए थे
31 मार्च की घटना में उसे फंसाया गया था और उन्होंने उसके कुछ दोस्तों को भी मार डाला था, लेकिन बाद में यह स्पष्ट हो गया कि यह मामला अन्य लोगों के कारण भड़का था।
उसके दोस्तों को दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा, उसकी वजह से नहीं, बल्कि उसकी वजह से
दुश्मनों को। इसके अलावा, उस समय, उसने अपने बहुत से दोस्तों को बचाया। इसलिए आप जैसे शैतानों को अपने दिमाग में यह बात नहीं डालनी चाहिए कि हम एक ऐसे खतरे के डर से एक अनन्त खजाने को फेंक दें जिसकी संभावना हज़ारों में से एक नहीं बल्कि हज़ारों में से एक है।" आपको यह कहना चाहिए, गुमराह लोगों के उन चाटुकारों के मुँह पर तमाचा मारो, और उन्हें भगा दो! और उनसे यह कहो:

"और अगर मौत की संभावना लाखों में एक नहीं बल्कि सौ प्रतिशत है, अगर हममें थोड़ी सी भी समझ है, तो हम डरेंगे नहीं और उसे छोड़कर भागेंगे नहीं!" क्योंकि बार-बार के अनुभवों से यह देखा गया है, और यह देखा गया है, कि जो लोग खतरे के समय अपने बड़े भाई या अपने मालिक को धोखा देते हैं, उन पर जो विपत्ति आती है, वह पहले उन्हीं पर आती है। और उन्हें बेरहमी से दंडित किया जाता है और उन्हें तिरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखा जाता है। शारीरिक रूप से मृत और उनकी आत्मा क्षुब्ध, वे अर्थ में मृत हैं। जो लोग उन्हें पीड़ा देते हैं, उन्हें उन पर कोई दया नहीं आती, क्योंकि वे कहते हैं: "चूंकि उन्होंने अपने मालिक को धोखा दिया जो उनके प्रति वफादार और दयालु था, इसलिए वे पूरी तरह से घृणित और दया के नहीं बल्कि तिरस्कार के पात्र हैं।"

हाँ, वास्तविकता यही है। साथ ही, अगर कोई अत्याचारी, बेईमान आदमी किसी को ज़मीन पर पटक दे और उसके ऊपर खड़ा हो जाए और उसके सिर को अपने पैर से कुचल दे, और ज़मीन पर पड़ा हुआ आदमी उस क्रूर अत्याचारी के पैर को चूम ले, तो उसके अपमान के कारण, उसका दिल उसके सिर से पहले कुचला जाएगा, और उसकी आत्मा उसके शरीर से पहले मर जाएगी। वह अपना सिर खो देगा, और उसका आत्म-सम्मान और गर्व नष्ट हो जाएगा। विवेकहीन उस क्रूर अत्याचारी के सामने कमज़ोरी दिखाकर, वह उसे कुचलने के लिए प्रोत्साहित करता है। लेकिन अगर उसके पैर के नीचे दबा हुआ उत्पीड़ित आदमी अत्याचारी के चेहरे पर थूकता है, तो वह

उसके हृदय और आत्मा को बचाओ, और उसका शरीर अन्यायी शहीद हो जाएगा। हाँ,
अत्याचारियों के बेशर्म चेहरे पर थूको!

एक बार जब अंग्रेजों ने बोस्पोरस पर तोपों को नष्ट कर दिया था और इस्तांबुल पर कब्जा कर लिया था, तो उस देश के मुख्य धार्मिक प्रतिष्ठान एंग्लिकन चर्च के मुख्य पादरी ने शेख अल-इस्लाम के कार्यालय से छह सवाल पूछे थे। मैं उस समय दारुल-हिक्मिति-इस्लामिये126 का सदस्य था।

उन्होंने मुझसे जवाब मांगा और कहा कि उन्हें अपने छह सवालों के छह सौ शब्दों में जवाब चाहिए। लेकिन मैंने उनसे कहा: "मैं उन्हें छह सौ शब्दों में नहीं, छह शब्दों में भी नहीं, या एक शब्द में भी नहीं, बल्कि मुँह में थूक भरकर जवाब दूंगा! क्योंकि आप देख सकते हैं कि सरकार; जैसे ही यह सत्ता में आई,

हमारे बोस्पोरस पर कदम रखते ही, इसके पादरी ने अहंकार में हमसे छह सवाल पूछे। ऐसा करने पर, हमें उसके मुंह पर थूक देना चाहिए। तो उन अत्याचारियों के निर्दयी चेहरों पर थूकना चाहिए!" और अब मैं कहता हूँ: मेरे भाइयों! चूँकि उस समय ब्रिटिश जैसी अत्याचारी सरकार ने हम पर कब्ज़ा कर लिया था, इसलिए कुरान की सुरक्षा मेरे लिए पर्याप्त थी, भले ही इस तरह से उनका सामना करने का खतरा था।

प्रेस की जुबान सौ फीसदी है, यह निश्चित रूप से सौ गुना है
आपके लिए उस नुकसान का सामना करने के लिए अधिक पर्याप्त है जो आपके हाथों आता है
तुच्छ गुंडों की संख्या, जिसकी संभावना सौ में से केवल एक है।

इसके अलावा, मेरे भाइयो! आपमें से अधिकांश लोग सैन्य सेवा कर चुके हैं।
जिन्होंने नहीं सुना, उन्होंने निश्चित रूप से यह सुना है। और जिन्होंने नहीं सुना, वे मुझसे सुन लें: "सबसे अधिक घाव वे लोग पाते हैं जो
अपनी खाइयों को छोड़कर भाग जाते हैं। जबकि जो लोग सबसे कम घायल होते हैं वे वे होते हैं जो अपनी खाइयों में डटे रहते हैं!”

कह दो: “जिस मृत्यु से तुम भागते हो वह तुम्हें आकर पकड़ेगी” (अल-जुमुआ 62:8) इस आयत का सांकेतिक अर्थ यह दर्शाता है कि जो लोग भागते हैं, उनकी भागते समय मृत्यु मिलने की अधिक संभावना होती है!

तीसरी शैतानी चाल: लालच

हमने कई ग्रंथों में कुछ प्रमाणों के साथ यह साबित किया है जो कि पवित्र कुरान की स्पष्ट आयतों से निकले हैं कि "कानूनी जीविका शक्ति और इच्छा के अनुसार नहीं बल्कि शक्तिहीनता और अभाव के अनुसार मिलती है।" इस सत्य को प्रदर्शित करने वाले कई संकेत, संकेत और प्रमाण हैं। उदाहरण के लिए:

---

[126] दारुल-हिकमेतिल-इस्लामिये शेख के कार्यालय में सलाहकारों की समिति थी
ओटोमन साम्राज्य में अल-इस्लाम (इस्लाम का सबसे प्रमुख प्राधिकार)

पेड़, जो एक तरह के सजीव प्राणी हैं और जिन्हें पोषण की आवश्यकता है, वे अपनी जगह पर ही रहते हैं और उनका पोषण उनके पास जल्दी से जल्दी आता है। जबकि जानवर लालच से अपने पोषण के पीछे भागते हैं, इसलिए उनका पोषण पेड़ों की तरह अच्छी तरह से नहीं हो पाता।

इसके अलावा, हालांकि मछलियाँ जानवरों में सबसे मूर्ख और शक्तिहीन हैं, और रेत में पाई जाती हैं, फिर भी उनका सबसे अच्छा पोषण होना और आमतौर पर मोटी दिखना, जबकि बंदर और लोमड़ी जैसे बुद्धिमान और सक्षम जानवर अपने अल्प पोषण के कारण कमजोर और दुबले-पतले हैं, यह दर्शाता है कि "जीविका का साधन शक्ति नहीं, बल्कि अभाव है।"

इसके अलावा, सभी बच्चों का उत्तम पोषण, चाहे वे मानव हों या पशु, तथा दया के खजाने से उन्हें दूध जैसा सबसे नाजुक उपहार प्रदान किया जाता है।
उनकी कमजोरी और नपुंसकता के प्रति करुणा और जंगली जानवरों की कठिन परिस्थितियों के प्रति अप्रत्याशित तरीके से, यह दर्शाता है कि वैधानिक साधनों का उपयोग किया जा सकता है।
जीविका नपुंसकता और अभाव है, यह बुद्धि और शक्ति नहीं है।

इसके अलावा, दुनिया के देशों में ऐसा कोई भी नहीं है जो
यहूदी राष्ट्र की तुलना में अधिक जीविका, जो अपने तीव्र लालच के लिए कुख्यात है। जबकि वे पतन और गरीबी के बीच खराब आजीविका से किसी से भी अधिक पीड़ित हैं। यहां तक कि उनमें से अमीर भी निम्न स्तर पर रहते हैं। किसी भी मामले में, उन्होंने सूदखोरी जैसे अवैध तरीकों से जो संपत्ति अर्जित की है, वह वैध जीविका नहीं है, इसलिए यह हमारी चर्चा का खंडन कर सकता है।

इसके अलावा, कई साहित्यकारों और विद्वानों की गरीबी, तथा कई मूर्ख लोगों की संपत्ति और सम्पत्ति यह दर्शाती है कि जीविका को आकर्षित करने का साधन बुद्धि और शक्ति नहीं, बल्कि नपुंसकता और अभाव है; यह ईश्वर पर भरोसा करते हुए उसके प्रति समर्पण है, तथा वचन, स्थिति और कर्म द्वारा प्रार्थना करना है।

आयत, " क्योंकि अल्लाह ही सबका रोज़ी देने वाला, ताक़तवर और हमेशा के लिए अटल है" (अज़-ज़रियात 51:58) इस सच्चाई का ऐलान करती है और हमारे इस दावे का एक शक्तिशाली और ठोस सबूत है जिसे सभी पौधे, जानवर और बच्चे पढ़ते हैं। जीव-जंतुओं का हर समूह जो रोज़ी चाहता है, वह स्वभाव की जीभ के ज़रिए इस आयत को पढ़ता है।

चूँकि रोज़ी का प्रावधान है और वह प्रदान की जाती है, और उसे देने वाला सर्वशक्तिमान ईश्वर है, और चूँकि वह अत्यन्त दयावान और दानशील है, अतः
जो लोग अवैध लाभ के माध्यम से खुद को इस तरह से नीचा दिखाते हैं कि वह उसकी दया पर आरोप लगाते हैं और उसकी उदारता का अपमान करते हैं, वे अपने विवेक और यहां तक कि कुछ निश्चित चीजों को भी दे देते हैं।
पवित्र मामलों को रिश्वत के रूप में लेना और ऐसी चीजें स्वीकार करना जो

गैरकानूनी और अशुभ - उन्हें इस बात पर विचार करना चाहिए कि यह कितना जटिल पागलपन है।

हां, 'दुनियावी' और खास तौर पर गुमराह लोग अपना पैसा सस्ते में नहीं देते, बल्कि उसे ऊंचे दामों पर बेचते हैं। कभी-कभी कोई ऐसी चीज जो दुनियावी जीवन के एक साल के लिए थोड़ी मदद कर सकती है, अनंत अनंत जीवन को नष्ट करने का साधन बन जाती है। और उस नीच लालच के माध्यम से, व्यक्ति खुद पर ईश्वरीय प्रकोप को आकर्षित करता है और लोगों की खुशी को आकर्षित करने की कोशिश करता है।

गुमराह करना।

हाँ, मेरे भाइयो! यदि जो लोग 'सांसारिक' और कपटियों की चाटुकारिता करते हैं,
मनुष्य स्वभाव की इसी कमज़ोरी के कारण जो लोग गुमराह हो जाते हैं, वे ऊपर लिखी सच्चाई पर विचार करें और अपने इस गरीब भाई को उदाहरण के रूप में लें। मैं पूरी ताकत से आपको यकीन दिलाता हूँ कि संतोष और मितव्ययिता आपके जीवन और जीविका को वेतन से ज़्यादा सुरक्षित रखती है। ख़ास तौर पर कोई भी अवैध धन जो आपको दिया जाता है, उसके बदले में वे हज़ार गुना ज़्यादा कीमत माँगेंगे। यह क़ुरआन की सेवा में भी बाधा बन सकता है, जो आपके लिए हमेशा के लिए ख़ज़ाना खोल सकता है, या यह आपको उस सेवा में सुस्त बना सकता है। और यह इतना नुकसान और खालीपन होगा कि अगर वे आपको हर महीने एक हज़ार वेतन भी दें, तो भी वे इसकी भरपाई नहीं कर पाएँगे।

चेतावनी

गुमराह लोग अपनी रक्षा करने में समर्थ नहीं हैं और न ही ईमान की सच्चाईयों और कुरान का जवाब दे सकते हैं, जिसे हम पवित्र कुरान और हदीस से लेते हैं।
इसलिए, षड्यंत्र और छल-कपट के माध्यम से वे छल और कपट के जाल बिछाते हैं। वे पद की लालसा, लालच और भय के माध्यम से मेरे मित्रों को धोखा देना चाहते हैं, और कुछ बातों को मुझ पर आरोपित करके मेरा खंडन करना चाहते हैं।
हमारी पवित्र सेवा में हम हमेशा सकारात्मक कार्य करते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से, कभी-कभी किसी अच्छे काम के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने का कर्तव्य हमें नकारात्मक कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

इसी कारण से मैं अपने भाइयों को इन कपटियों के धूर्त प्रचार के सामने उपरोक्त तीन बिंदुओं के बारे में सचेत कर रहा हूँ। मैं उन पर किए जा रहे हमलों का जवाब देने की कोशिश कर रहा हूँ।

अब सबसे बड़ा हमला मुझ पर है। वे कहते हैं: "सैद एक कुर्द है। तुम उसे इतना सम्मान क्यों देते हो, और उसका अनुसरण क्यों करते हो?" इसलिए मुझे मजबूरन पुराने सैद की भाषा में चौथी शैतानी चाल का उल्लेख करना पड़ता है, हालाँकि मैं ऐसा नहीं करना चाहता, ताकि ऐसे खलनायकों को चुप करा सकूँ।

चौथी शैतानी चाल: राष्ट्रवादी भावनाएँ

मेरे भाइयों को धोखा देने और उनकी राष्ट्रीय भावनाओं को भड़काने के लिए, कुछ अधार्मिक लोग जो उच्च पदों पर हैं और शैतान के इशारे और गुमराह लोगों के सुझावों के माध्यम से प्रचार के माध्यम से मुझ पर हमला करते हैं, कहते हैं: "तुम तुर्क हो। भगवान का शुक्र है, तुर्कों में धार्मिक विद्वान और हर तरह के पूर्णता वाले लोग हैं। सईद एक कुर्द है।

किसी ऐसे व्यक्ति के साथ काम करना जो आपकी राष्ट्रीयता से मेल नहीं खाता, देशभक्ति नहीं है।"

जवाब: तुम धर्मविहीन दुखी व्यक्ति हो! सारी प्रशंसा ईश्वर की हो, मैं
मैं एक मुसलमान हूँ। हर समय मेरे पवित्र राष्ट्र के तीन सौ पचास मिलियन सदस्य हैं। मैं तीन सौ पचास मिलियन भाइयों की बलि देने से एक लाख बार ईश्वर से शरण मांगता हूँ, जो शाश्वत भाईचारा स्थापित करते हैं, और जो अपनी प्रार्थनाओं से मेरी मदद करते हैं, और जिनमें से अधिकांश कुर्द हैं, नस्लवाद और नकारात्मक राष्ट्रवाद के विचार के लिए, और उन असंख्य धन्य भाइयों के स्थान पर कुछ लोगों को प्राप्त करने से जो

जो लोग धर्म से परे हैं या किसी विधिशास्त्र से संबंधित नहीं हैं, जो कुर्द कहलाते हैं और जिन्हें कुर्द लोगों में से माना जाता है। अरे धर्म से परे! कुछ मूर्ख अवश्य रहे होंगे

आप जैसे लोग तीन सौ पचास करोड़ सच्चे भाइयों के एक उज्ज्वल लाभकारी समुदाय के शाश्वत भाईचारे को त्याग कर मुट्ठी भर हंगरी के काफिरों या यूरोपीयकृत तुर्कों का भाईचारा प्राप्त करने के लिए तैयार हो जाएँगे, जो इस दुनिया में भी लाभहीन है। चूँकि, छब्बीसवें पत्र के तीसरे मामले में, हमने सबूतों के साथ नकारात्मक राष्ट्रवाद की प्रकृति और उसके नुकसानों को दिखाया है, इसलिए हम आपको उसी की ओर संकेत करते हैं, और यहाँ केवल एक सत्य की व्याख्या करते हैं जिसका उल्लेख तीसरे मामले के अंत में संक्षेप में किया गया था। यह इस प्रकार है:

मैं उन छद्म-देशभक्त अधार्मिक पथभ्रष्टों से कहता हूँ जो तुर्कवाद के आवरण में छिपे हैं और वास्तव में तुर्कों के दुश्मन हैं: "मैं इस्लाम के राष्ट्र के साथ, इस देश के विश्वासियों के साथ, जिन्हें तुर्क कहा जाता है, एक शाश्वत और सच्चे भाईचारे के माध्यम से निकटता से और सबसे सच्चे रूप से जुड़ा हुआ हूँ। इस्लाम के कारण, मुझे इस भूमि के बेटों के लिए गर्व और आंशिक प्रेम है, जिन्होंने लगभग एक हज़ार वर्षों तक कुरान के झंडे को विजयी रूप से आगे बढ़ाया।

दुनिया के हर कोने में। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, तुम छद्म-देशभक्त ढोंगी! तुम्हारे पास ऐसा कुछ है जो तुम्हें सच्चे राष्ट्रीय गौरव को भूलने पर मजबूर कर देगा
तुर्क, एक प्रतीकात्मक, नस्लीय, अस्थायी और घृणित भाईचारा। मैं आपसे पूछता हूँ:
क्या तुर्की राष्ट्र केवल असावधान लोगों से बना है

और बीस से चालीस वर्ष की आयु के बीच के कामुक युवा? और क्या उनके लिए जो लाभदायक है और जो उनकी सेवा करेगा - जैसा कि राष्ट्रवादी देशभक्ति की मांग है - वह यूरोपीय शिक्षा है जो केवल उनकी असावधानी को बढ़ाएगी, उन्हें अनैतिकता का आदी बनाएगी, और उन्हें निषिद्ध कार्यों में प्रोत्साहित करेगी? क्या यह उन्हें अस्थायी रूप से मनोरंजन करने के लिए है, जो उन्हें बुढ़ापे में रोने पर मजबूर कर देगा? यदि राष्ट्रवादी देशभक्ति में यही शामिल है, और यही प्रगति है और

जीवन की खुशियाँ, हाँ, अगर आप ऐसे ही तुर्कवादी और राष्ट्रवादी हैं, तो मैं ऐसे तुर्कवाद से भागता हूँ, और आप भी मुझसे भाग सकते हैं! अगर आपमें थोड़ी भी देशभक्ति, बुद्धिमत्ता और निष्पक्षता है, तो समाज के निम्नलिखित विभाजनों पर विचार करें और मुझे जवाब दें। यह इस प्रकार है:

तुर्की राष्ट्र के नाम से जाने जाने वाले इस देश के पुत्रों में छह भाग शामिल हैं।
पहला समूह धर्मी और धर्मपरायण है। दूसरा समूह बीमार और विपत्ति से पीड़ित है। तीसरा समूह बुजुर्ग है। चौथा समूह बच्चे हैं। पांचवां समूह गरीब और कमजोर है। और छठा समूह युवा है। क्या पहले पांच समूह तुर्क नहीं हैं? क्या उनमें राष्ट्रवादी देशभक्ति का कोई हिस्सा नहीं है? क्या उन पांच समूहों को परेशान करना, उनका विनाश करना राष्ट्रवादी देशभक्ति है?

जीवन में सुख की कमी हो जाती है और वे चीजें नष्ट हो जाती हैं जो उन्हें जीवन के मार्ग पर सांत्वना देती हैं।
छठे समूह को शराब पिलाना? या फिर राष्ट्र के प्रति शत्रुता? “शब्द बहुमत के पास है” के नियम के अनुसार, जो बहुमत को नुकसान पहुंचाता है वह शत्रुतापूर्ण है, मित्रतापूर्ण नहीं!

मैं आपसे पूछता हूँ, क्या आस्थावानों और धर्मपरायण लोगों का सबसे बड़ा लाभ, जो कि पहला समूह है, यूरोपीय सभ्यता में पाया जा सकता है? या फिर यह विश्वास के सत्यों के माध्यम से शाश्वत सुख के बारे में सोचने, सत्य के मार्ग पर चलने, जिसके लिए वे सबसे अधिक इच्छुक हैं, और एक सच्चा मार्ग खोजने में पाया जा सकता है।

सांत्वना? आप जैसे गुमराह और फर्जी देशभक्तों ने जो रास्ता अपनाया है, वह आस्था रखने वाले पवित्र लोगों की आध्यात्मिक रोशनी को बुझा देता है, उनकी सच्ची सांत्वना को नष्ट कर देता है, और मृत्यु को शाश्वत शून्यता और कब्र को शाश्वत अलगाव का द्वार बताता है।

क्या विपत्तिग्रस्त, बीमार और जीवन से निराश लोगों का भला होगा, जो दूसरे समूह का हिस्सा हैं, और उन्हें यूरोपीय प्रकार की अधार्मिक सभ्यता के रास्ते से लाभ मिलेगा? क्योंकि वे अभागे लोग प्रकाश चाहते हैं, सांत्वना चाहते हैं। वे उन विपत्तियों के बदले में पुरस्कार चाहते हैं जो उन्होंने झेली हैं।

वे उन लोगों से बदला लेना चाहते हैं जिन्होंने उन पर अत्याचार किया है। वे कब्र के द्वार पर मौजूद आतंक को पीछे हटाना चाहते हैं, जिसके वे निकट पहुँच रहे हैं। अपनी झूठी देशभक्ति के ज़रिए, आप जैसे लोग आपदा के उन दुखी पीड़ितों के दिलों में सुई चुभोते हैं जिन्हें करुणा, शांति और उपचार की बहुत ज़रूरत है, और वे इसके हकदार हैं।

तुम उनके सिर पर वार करते हो! तुम निर्दयतापूर्वक उनकी सारी उम्मीदें नष्ट कर देते हो!
आपने उन्हें पूरी तरह से निराशा में डाल दिया है! क्या यही राष्ट्रवादी देशभक्ति है? क्या इसी तरह से आप देश को लाभ पहुँचाते हैं?

तीसरा समूह, बुज़ुर्ग, तीसरा समूह है। वे क़ब्र के करीब पहुँच रहे हैं, मौत के करीब पहुँच रहे हैं, दुनिया से दूर हो रहे हैं, आख़िरत के करीब पहुँच रहे हैं। क्या उन्हें हुलगु127 और चंगेज128 जैसे अत्याचारियों के क्रूर कारनामों को सुनने में लाभ, रोशनी और सांत्वना मिलेगी? क्या उन्हें आपके आधुनिक प्रकार के आंदोलनों में कोई जगह है जो आख़िरत को भुला देते हैं, व्यक्ति को दुनिया से बांध देते हैं, निष्फल होते हैं, और सतही तौर पर प्रगति करते हुए पतन का अर्थ रखते हैं? क्या ईश्वर की रोशनी

क्या अब सिनेमा में ही सच्ची शांति मिलेगी? क्या थिएटर में ही सच्ची शांति मिलेगी?
यदि राष्ट्रवादी देशभक्ति का अर्थ है उन्हें एक अमूर्त चाकू से मार डालना, तथा उन्हें यह विचार देना कि "आपको अनन्त शून्यता की ओर धकेला जा रहा है", तथा कब्र को, जिसे वे दया का द्वार मानते हैं, अजगर के मुंह में बदल देना, तथा उनके कानों में यह फूंक देना कि "तुम भी वहां प्रवेश करोगे!" - जबकि ये दुखी वृद्ध लोग देशभक्ति से सम्मान चाहते हैं, तो यही है, ऐसी देशभक्ति से एक लाख बार "मैं ईश्वर की शरण में जाता हूं"!

चौथा समूह बच्चों का है। ये राष्ट्रवादी देशभक्ति से दया चाहते हैं; वे करुणा का इंतजार करते हैं। साथ ही, अपनी कमजोरी, नपुंसकता और शक्तिहीनता के संबंध में, एक दयालु और शक्तिशाली निर्माता को जानने के माध्यम से उनकी आत्मा का विस्तार हो सकता है; उनकी क्षमताएं सुखद तरीके से प्रकट हो सकती हैं। ईश्वर पर भरोसा करने और इस्लाम के प्रति समर्पण के साथ जो भविष्य में दुनिया के भयानक भय और स्थितियों का सामना कर सकता है, ये मासूम जीवन की ओर उत्सुकता से देख सकते हैं। क्या यह उन्हें सभ्यता की प्रगति के बारे में बातें सिखाकर हासिल किया जा सकता है, जिससे उनका बहुत कम संबंध है, और प्रकाशहीन, विशुद्ध भौतिकवादी दर्शन के सिद्धांत, जो उनके मनोबल को नष्ट कर देते हैं और उनकी आत्माओं को बुझा देते हैं? यदि मनुष्य केवल एक पशु शरीर से बना होता और उसके सिर में कोई मन नहीं होता, तो शायद

---

[127] हुलगु खान (1217-1265) मंगोल शासकों में से एक था। वह चंगेज खान का पोता था। हुलगु खान को मंगोल साम्राज्य के पश्चिमी प्रांत मिले। हुलगु खान ने फारस पर विजय प्राप्त की, अब्बासिद खिलाफत को समाप्त किया, बगदाद (एक मिलियन निवासियों का शहर) को नष्ट कर दिया और फारस में इल-खान के मंगोल साम्राज्य की स्थापना की।

[128] चंगेज खान (1165-1227) मंगोलों का खान था।
मंगोल राष्ट्र के निर्माता और विश्व इतिहास के सबसे विशाल साम्राज्यों में से एक के संस्थापक, जो उत्तरी चीन से काला सागर तक फैला हुआ था।

ये यूरोपीय सिद्धांत जिन्हें आप कल्पना से सभ्य शिक्षा कहते हैं और
राष्ट्रीय शिक्षा से इन मासूम बच्चों को कुछ सांसारिक लाभ मिल सकता था
कुछ अस्थायी बचकाने मनोरंजन के रूप में लाभ। चूँकि उन मासूमों को जीवन की उथल-पुथल में डाला जा रहा है, और चूँकि वे मनुष्य हैं, इसलिए उनके छोटे दिलों में निश्चित रूप से दूरगामी इच्छाएँ होंगी और उनके छोटे सिर में बड़े लक्ष्य पैदा होंगे। चूँकि वास्तविकता ऐसी ही है, इसलिए उनके लिए करुणा की आवश्यकता है कि उनके दिलों में इस रूप में जगह दी जाए

ईश्वर में विश्वास और परलोक में विश्वास, उनकी अनंत आवश्यकताओं और कठिनाइयों के सामने एक अत्यंत शक्तिशाली सहारा और अटूट सहारा है।
नपुंसकता। उनके प्रति दया और करुणा इसी तरह है। अन्यथा,
राष्ट्रवादी देशभक्ति के नशे में चूर होकर उन बेचारे मासूमों का कत्ल करना इसका मतलब है, जैसे एक पागल माँ अपने बच्चे को चाकू से काट देती है। यह एक क्रूर क्रूरता और गलत है, जैसे उनके बच्चों को बाहर निकालना

मस्तिष्क और हृदय को छीन लिया गया और उन्हें अपने शरीर को पोषण देने के लिए उन्हें खाने पर मजबूर किया गया।

पाँचवाँ समूह गरीब और कमज़ोर है। गरीब, जो अपनी गरीबी के कारण जीवन के भारी बोझ से बहुत पीड़ित हैं, और कमज़ोर, जो जीवन की भयानक उथल-पुथल से दुखी हैं - क्या उन्हें राष्ट्रवादी देशभक्ति का हिस्सा नहीं मिलता? क्या यह उन आंदोलनों में पाया जाता है जिन्हें आपने यूरोपीय शैली, पर्दाफाश, फिरौन-जैसे नाम से स्थापित किया है

सभ्यता, जो इन बदकिस्मत लोगों की निराशा और पीड़ा को और बढ़ाती है? इन गरीबों की गरीबी के घाव के लिए मरहम नस्लवाद के विचार में नहीं, बल्कि इस्लाम के पवित्र औषधालय में मिल सकता है। कमज़ोर लोग प्रकृतिवाद के दर्शन से शक्ति और प्रतिरोध प्राप्त नहीं कर सकते, जो अंधकारमय है, चेतना से रहित है, और संयोग से बंधा हुआ है; वे इस्लामी उत्साह और पवित्र राष्ट्रवाद से शक्ति प्राप्त कर सकते हैं

इस्लाम!

छठा समूह युवा वर्ग का है। यदि इन युवाओं की जवानी चिरस्थायी होती, तो आपने नकारात्मक राष्ट्रवाद के माध्यम से उन्हें जो शराब पिलाई है, उसका कुछ समय के लिए लाभ और उपयोग होता। लेकिन जब वे बूढ़े हो जाते हैं, जब वे बुढ़ापे की सुबह उस मीठी नींद से जागते हैं, तो वे अपनी युवावस्था के सुखद नशे में धुत्त होकर रोते हैं, और उनके सुखद सपने के चले जाने का दुख उन्हें बहुत दुखी कर देता है। यह उन्हें बहुत दुखी कर देगा।

वे चिल्लाते हैं: "हाय! मेरी जवानी चली गई, मेरा जीवन चला गया, और मैं दिवालिया होकर कब्र के पास पहुँच रहा हूँ; काश मैंने अपना दिमाग इस्तेमाल किया होता!" क्या शेयर
इस समूह के लिए राष्ट्रवादी देशभक्ति का

क्या वे क्षणिक और अस्थायी रूप से आनंद लेते हैं और बहुत लंबे समय तक दुख से रोते रहते हैं? या क्या उनका सांसारिक सुख और जीवन का आनंद, उस क्षणभंगुर युवावस्था को उपासना के माध्यम से स्थायी बनाने में है, जिसमें वे अपनी सुंदर, मधुर युवावस्था को व्यभिचार के मार्ग पर नहीं, बल्कि सीधे मार्ग पर, उस उदारता के लिए धन्यवाद देने के रूप में खर्च करते हैं, और इस तरह आनंद के क्षेत्र में शाश्वत युवावस्था प्राप्त करते हैं? आप कहते हैं, यदि आपके पास थोड़ी सी भी बुद्धि है!

संक्षेप में, यदि तुर्की राष्ट्र में केवल युवा लोग होते, और यदि उनका युवापन शाश्वत होता, और उनके लिए इस दुनिया के अलावा कोई स्थान नहीं होता, तो तुर्कवाद की आड़ में आपका यूरोपीय शैली का आंदोलन सफल नहीं हो सकता था।
राष्ट्रवादी देशभक्ति के रूप में गिना जाता है। तब आप मुझसे कह सकते थे, कोई ऐसा व्यक्ति जो इस दुनिया के जीवन को कम महत्व देता है, नस्लवाद को 'यूरोपीय बीमारी' की तरह एक बीमारी मानता है, युवाओं को अवैध मनोरंजन और बुराइयों में शामिल होने से रोकने की कोशिश करता है, और

दूसरे देश में दुनिया को यह कहते हुए: “वह एक कुर्द है। उसका पीछा मत करो!”, और आप
यह कहना शायद सही होता। लेकिन जैसा कि ऊपर बताया गया है, इस देश के पुत्र, जो तुर्क कहलाते हैं, छह समूहों से मिलकर बने हैं, उनमें से पांच समूहों को नुकसान पहुंचाना और उनके जीवन के आनंद को नष्ट करना, और केवल एक समूह को अस्थायी, सांसारिक सुख प्रदान करना, जिसके परिणाम बुरे हों, बल्कि उन्हें नशे में डालना, तुर्क राष्ट्र के लिए शायद ही मित्रता है; यह शत्रुता है।

हां, नस्ल के अनुसार, मुझे तुर्क नहीं माना जाता है, लेकिन मैंने अपनी पूरी ताकत से, पूरी तत्परता के साथ, दयालुता और भाईचारे के साथ, ईश्वर से डरने वालों, आपदा से पीड़ित, बुजुर्गों, बच्चों, कमजोरों और गरीबों के समूह के लिए काम किया है।

तुर्क। मैंने युवा लोगों के लिए भी काम किया है, जो छठा समूह है; मैं चाहता हूं कि वे अवैध कार्यों से दूर रहें जो उनके सांसारिक जीवन को विषाक्त कर देंगे,
आख़िरत में अपनी ज़िंदगी बरबाद कर देते हैं और एक घंटे की हंसी के लिए पूरे साल रोना पड़ता है। मैंने जो किताबें क़ुरआन से ली हैं और प्रकाशित की हैं
तुर्की भाषा - न केवल इन छह या सात वर्षों के लिए, बल्कि बीस वर्षों के लिए
वर्षों से चली आ रही यह कृतियाँ सभी के देखने के लिए उपलब्ध हैं। हाँ, ईश्वर की स्तुति हो, इन कार्यों के माध्यम से जो सर्वज्ञ कुरान की रोशनी की खान से प्राप्त हुए हैं, वह रोशनी दिखाई गई है जिसे बुजुर्गों का समूह किसी भी चीज़ से ज़्यादा चाहता है। आपदाग्रस्त और बीमार लोगों के लिए सबसे कारगर उपाय कुरान की पवित्र फार्मेसी में दिखाए गए हैं। कुरान की उन रोशनी के माध्यम से, कब्र का दरवाज़ा, जो बुजुर्गों को किसी भी चीज़ से ज़्यादा सोचने पर मजबूर करता है, दया का दरवाज़ा दिखाया गया है, न कि दया का।

निष्पादन की ओर ले जाने वाला द्वार। बच्चों के संवेदनशील दिलों का सामना करने वाली विपत्तियों और हानिकारक चीजों का सामना करने के लिए सबसे शक्तिशाली सहारा और उनकी सभी आशाओं और इच्छाओं को पूरा करने का एक सहारा, विवेकपूर्ण कुरान की खान से निकाला गया है, और वास्तव में उनका प्रदर्शन किया गया है और उनसे लाभ उठाया गया है। और जीवन के भारी दायित्व जो सबसे अधिक गरीब और कमजोर लोगों को कुचलते हैं, विवेकपूर्ण कुरान की आस्था की सच्चाइयों द्वारा हल्के हो गए हैं।

इस प्रकार, ये पाँच समूह तुर्की राष्ट्र के छह भागों में से पाँच हैं, और हम उनके लाभ के लिए काम कर रहे हैं। छठा समूह युवा लोग हैं।
हम उनमें से अच्छे लोगों के प्रति प्रबल भाईचारा महसूस करते हैं। लेकिन तुम्हारे जैसे जो सीधे रास्ते से भटक गए हैं, और हमारे बीच, कोई दोस्ती नहीं है! क्योंकि हम उन लोगों को तुर्क नहीं मानते जो गुमराही को अपनाते हैं और इस्लामी राष्ट्रवाद को त्यागना चाहते हैं, जो तुर्कों के गौरव के सभी सच्चे कारण हैं। हम उन्हें तुर्कीपन के पर्दे के पीछे छिपे हुए यूरोपीय मानते हैं! क्योंकि भले ही वे एक लाख बार तुर्कवादी होने का दावा करें, वे सत्य के लोगों को धोखा नहीं दे सकते। क्योंकि उनके कार्य और कर्म उनके दावों को झूठा साबित करेंगे।

हे यूरोपियन तरीकों का अनुसरण करने वाले और हे पथभ्रष्ट लोगों, जो अपने दुष्प्रचार के माध्यम से मेरे सच्चे भाइयों को मेरी ओर उदासीन दृष्टि से देखने का प्रयास करते हो! तुम कैसे
इस राष्ट्र को क्या लाभ होगा? आप पहले समूह, धर्मपरायण और धार्मिक लोगों की रोशनी बुझाते हैं। आप दूसरे समूह के घावों पर जहर छिड़कते हैं, जो
दया और देखभाल के पात्र हैं। आप तीसरे समूह के सांत्वना को नष्ट करते हैं, जो सम्मान के सबसे योग्य हैं, और आप उन्हें निराशा में डाल देते हैं। आप चौथे समूह के मनोबल को पूरी तरह से नष्ट कर देते हैं, जिन्हें वास्तव में करुणा की आवश्यकता है, और आप उनकी सच्ची मानवता को समाप्त कर देते हैं। आप पांचवें समूह की मदद की उम्मीदों और पुकार को निरर्थक बना देते हैं, जिन्हें सहायता, मदद और सांत्वना की सबसे अधिक आवश्यकता है, और उनकी नज़र में, आप जीवन को मृत्यु से भी अधिक भयावह बना देते हैं। और छठे समूह को, जिन्हें चेतावनी देने और अपने होश में आने की आवश्यकता है, आप युवावस्था की नींद में पीने के लिए ऐसी मादक शराब देते हैं कि उसका

हैंगओवर वाकई बहुत भयानक और भयानक है। क्या यही आपकी राष्ट्रवादी देशभक्ति है जिसके लिए आप कई पवित्र चीजों का त्याग करते हैं? क्या यही तुर्कवाद तुर्कों को देने के लिए है? मैं इससे एक लाख गुना ज़्यादा लोगों से भगवान की शरण मांगता हूँ
बार!

महोदय! मैं जानता हूँ कि जब आप सत्य के सामने हार जाते हैं, तो आप बल का सहारा लेते हैं। इस तथ्य के अनुसार कि शक्ति सत्य में निहित है, बल में नहीं, आप मेरे सिर के चारों ओर की दुनिया में आग लगा सकते हैं, लेकिन यह सिर,

जो कुरान की सच्चाई के लिए कुर्बान हुआ है, वह तुम्हारे सामने झुकेगा नहीं। और मैं तुमसे यह कहता हूँ कि तुम्हारे जैसे सीमित लोग नहीं जो वास्तव में राष्ट्र द्वारा तिरस्कृत हैं, बल्कि यदि तुम्हारे जैसे हज़ारों लोग शारीरिक रूप से तिरस्कृत होते
मेरे प्रति शत्रुतापूर्ण, मैं उन पर कोई ध्यान नहीं दूंगा, उन्हें हानिकारक जानवरों से अधिक महत्व नहीं दूंगा। क्योंकि तुम मेरा क्या कर सकते हो? तुम बस इतना कर सकते हो कि या तो मेरा जीवन समाप्त कर दो, या मेरे काम और सेवा को बर्बाद कर दो। मैं इनके अलावा दुनिया में किसी और चीज से जुड़ा नहीं हूं। जहां तक जीवन में आने वाले नियत समय की बात है, मैं इसे देखने के साथ-साथ निश्चित रूप से मानता हूं कि यह कभी नहीं होगा

परिवर्तन, यह तय है। चूंकि ऐसा है, अगर मैं सत्य के मार्ग पर शहीद के रूप में मरता हूं, तो मैं इससे पीछे नहीं हटता, मैं इसका बेसब्री से इंतजार करता हूं। खासकर जब से मैं बूढ़ा हो गया हूं; मुझे यह विश्वास करना मुश्किल लगता है कि मैं एक साल से अधिक जीवित रहूंगा। एक साल के स्पष्ट जीवन को अनंत अनंत जीवन में बदलने के लिए

मेरे जैसे लोगों के लिए शहादत एक महान लक्ष्य है। जहाँ तक मेरे काम और सेवा का सवाल है,
सर्वशक्तिमान ईश्वर ने अपनी दया से ईमान और कुरान की सेवा में ऐसे भाई दिए हैं कि मेरी मृत्यु के माध्यम से यह सेवा एक के बजाय अनेक केंद्रों में की जाएगी। यदि मृत्यु के कारण मेरी ज़ुबान बंद हो जाती है, तो उसकी जगह शक्तिशाली ज़ुबानें बोलेंगी और मेरा काम जारी रखेंगी। मैं यह भी कह सकता हूँ कि जिस तरह धरती में प्रवेश करके मरने पर एक बीज एक अंकुर का जीवन पैदा करता है, फिर एक के स्थान पर सौ बीज अपना कर्तव्य निभाते हैं, उसी तरह मैं यह आशा रखता हूँ कि मेरी मृत्यु मेरे जीवन से भी बड़ी सेवा का साधन बनेगी!

पांचवी शैतानी चाल: अहंकार

अहंकार से लाभ उठाकर, गुमराह लोगों के समर्थक मेरे भाइयों को मुझसे दूर करना चाहते हैं। सच में, अहंकार मनुष्य की सबसे खतरनाक नस है। यह उसकी सबसे कमज़ोर नस भी है। वे लोगों से भयानक काम करवा सकते हैं

इसे बढ़ावा देकर। मेरे भाइयो! सावधान रहो, उन्हें तुम पर प्रहार करने मत दो
अहंकार, उन्हें अपने शिकार मत बनने दो! तुम्हें पता होना चाहिए कि इस सदी में गुमराह लोगों ने अहंकार को अपने ऊपर सवार कर लिया है और गुमराही की घाटियों में सरपट दौड़ रहे हैं। सत्य के लोगों को अगर सत्य की सेवा करनी है तो अहंकार को त्यागना होगा। अगर कोई व्यक्ति अहंकार का उपयोग करने में उचित भी है, क्योंकि वह दूसरों जैसा ही होगा और वे भी उसे अपने जैसा स्वार्थी मानेंगे, तो यह सत्य की सेवा के साथ अन्याय है। किसी भी स्थिति में, जिस कुरान की सेवा के इर्द-गिर्द हम इकट्ठे हुए हैं, वह 'मैं' को स्वीकार नहीं करता, उसे 'हम' की आवश्यकता है। यह कहता है: "'मैं' मत कहो, 'हम' कहो।"

बेशक, आपको एहसास हो गया होगा कि आपका यह गरीब भाई कहीं बाहर नहीं गया था और उसने तुम्हें इसकी सेवा करने के लिए बाध्य नहीं किया। बल्कि उसने अपने आपको कुरान का एक अहंकार-रहित सेवक बना लिया है। वह अपने बारे में कुछ नहीं सोचता और उसने अपने अहंकार का हिस्सा न लेकर अपना काम कर लिया है। किसी भी हालत में उसने तुम्हारे सामने निर्णायक सबूतों के साथ साबित कर दिया है कि जो काम आम भलाई के लिए पेश किए गए हैं, वे आम संपत्ति हैं, यानी वे हिकमत वाले कुरान से निकले हैं। कोई भी अपने अहंकार के ज़रिए उन पर मालिकाना हक नहीं जता सकता।

अगर असंभव मान भी लिया जाए तो भी मैंने अपने अहंकार के कारण उन्हें अपना माना, जैसा कि मेरे एक भाई ने कहा: चूंकि कुरान की सच्चाई का यह द्वार खुल गया है, इसलिए विद्वानों और पूर्णता चाहने वालों को मेरे दोषों और तुच्छता पर विचार नहीं करना चाहिए, और मेरा अनुसरण करने से पीछे नहीं हटना चाहिए; उन्हें अपने आप को आत्मनिर्भर नहीं समझना चाहिए। बेशक, पिछले धर्मी और सख्त धार्मिक विद्वानों के कार्य हर बुराई के लिए पर्याप्त एक विशाल खजाना हैं, लेकिन कभी-कभी ऐसा होता है कि एक कुंजी खजाने से अधिक महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि खजाना बंद है, जबकि कुंजी बहुत सारे खजाने खोल सकती है।

मेरा ख़याल है कि जो लोग अपनी शिक्षा के बारे में बहुत ज़्यादा अहंकारी हैं, वे समझ गए होंगे कि जो शब्द प्रकाशित हुए हैं, वे कुरान की सच्चाईयों की कुंजी हैं और उन सच्चाईयों को नकारने वालों को मारने के लिए हीरे की तलवारें हैं। सदाचारी और सिद्ध लोगों और जो लोग अपनी शिक्षा के बारे में बहुत ज़्यादा अहंकारी हैं, उन्हें यह जान लेना चाहिए कि छात्र मेरे नहीं, बल्कि सर्वज्ञ कुरान के छात्र हैं और मैं उनके साथ अध्ययन करता हूँ।

और इसलिए, अगर, असंभव को मान लें, तो मैं मास्टर होने का दावा करता हूं, क्योंकि हमारे पास विश्वास रखने वाले सभी वर्गों के लोगों को बचाने का एक तरीका है - आम लोगों से लेकर उच्च वर्गों तक - उन संदेहों और संशयवाद से, जिनसे वे अवगत हैं, तो उन विद्वानों को या तो एक आसान समाधान खोजने दें, या उन्हें हमारे समाधान का हिस्सा लेने दें, और इसे सिखाएं और इसका समर्थन करें। 'बुरे धार्मिक विद्वानों' के लिए एक गंभीर खतरा है। धार्मिक विद्वानों को

इस समय विशेष रूप से सावधान रहो। तो मान लो कि मैं अपने शत्रुओं की भाँति अहंकार के कारण ऐसा काम करता हूँ। चूँकि बहुत से लोग अपना अहंकार त्यागकर किसी सांसारिक और राष्ट्रीय उद्देश्य के लिए पूरी निष्ठा के साथ फिरौन जैसे व्यक्ति के इर्द-गिर्द एकत्रित होते हैं और पूरी एकजुटता के साथ अपना काम करते हैं, तो क्या तुम्हारा यह भाई तुमसे यह माँगने का अधिकार नहीं रखता कि तुम उस सांसारिक समाज के उन लोगों की भाँति अहंकार त्यागकर ईमान और कुरान के सत्य के इर्द-गिर्द एकजुटता दिखाओ, बशर्ते कि वह अपना अहंकार छिपाए? यदि सबसे बड़ा भी अहंकारी हो, तो भी वह अपने अहंकार को छिपाए रखता है।

यदि तुममें से कोई विद्वान एकमत न हो तो क्या वे एकमत न होंगे?
गलत?

मेरे भाइयो! हमारे काम में अहंकार का सबसे खतरनाक पहलू ईर्ष्या है। अगर यह पूरी तरह से ईश्वर के लिए नहीं है, तो ईर्ष्या हस्तक्षेप करती है और इसे बिगाड़ देती है।
जिस तरह एक व्यक्ति का एक हाथ दूसरे से ईर्ष्या नहीं कर सकता, और उसकी आँख उसके कान से ईर्ष्या नहीं कर सकती, और उसका दिल उसकी बुद्धि से प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता, उसी तरह आप में से प्रत्येक व्यक्ति उस समग्र व्यक्तित्व के एक इंद्रिय, एक अंग की तरह है, जिसे हम बनाते हैं। यह एक दूसरे के प्रतिद्वंद्वी होने का नहीं, बल्कि इसके विपरीत, एक दूसरे को लेने का मतलब है।
एक दूसरे के अच्छे गुणों पर गर्व और प्रसन्नता महसूस करना विवेक से उत्पन्न एक बुनियादी दायित्व है।

एक और बात बाकी है और वह सबसे खतरनाक है: आपस में
और अपने दोस्तों के बीच अपने इस गरीब भाई से ईर्ष्या करना सबसे खतरनाक है। तुम्हारे बीच में बहुत से विद्वान हैं, और कुछ विद्वान अपनी विद्वत्ता के मामले में अहंकारी हैं। भले ही वे खुद विनम्र हों, लेकिन वे उस मामले में अहंकारी हैं। वे इसे आसानी से नहीं छोड़ सकते। उनके दिल और दिमाग चाहे जो भी करें, उनकी दुष्ट आत्माएँ श्रेष्ठता चाहती हैं,

खुद को बेचने के लिए, और यहां तक कि लिखे गए ग्रंथों पर भी विवाद करने के लिए।
यद्यपि उनके हृदय में ग्रन्थों के प्रति प्रेम है, तथा उनके मन में उनकी प्रशंसा है और वे उनका महत्व समझते हैं, फिर भी विद्या के अहंकार से उत्पन्न ईर्ष्या के कारण, उनकी आत्माएँ शब्दों का मूल्य कम करना चाहती हैं, मानो उनके प्रति एक अंतर्निहित शत्रुता पाल रही हों, ताकि उनके अपने विचारों के उत्पाद उनसे प्रतिस्पर्धा कर सकें और उनकी तरह बिक सकें। लेकिन मुझे उनसे यह कहना है:

भले ही कुरान की शिक्षा देने वाले लोग अग्रणी विद्वान और विद्वान हों
कानून के अधिकारी, विश्वास के विज्ञान के संबंध में उनके कर्तव्य केवल रिसाले-ए-नूर की व्याख्या और व्याख्या करना है जो लिखी गई है, या उन्हें क्रमबद्ध करना है। क्योंकि मैंने कई संकेतों के माध्यम से समझा है कि हमें विश्वास के इन विज्ञानों के बारे में फतवे जारी करने का कर्तव्य सौंपा गया है। अगर हमारे घेरे में कोई व्यक्ति ज्ञान के अहंकार से उत्पन्न अपनी आत्मा में किसी भावना के कारण स्पष्टीकरण या व्याख्या के अलावा कुछ लिखता है, तो यह एक ठंडे विवाद या अपर्याप्त साहित्यिक चोरी की तरह होगा। क्योंकि यह कई सबूतों और संकेतों के माध्यम से स्थापित हो गया है कि के हिस्से

रिसाले -ए-नूर कुरान से जारी किया गया है।

श्रम विभाजन के अंतर्गत, हममें से प्रत्येक ने एक कर्तव्य लिया है, और हम जीवन के जल के उन आसवन को उन लोगों तक पहुंचाते हैं जिन्हें इसकी आवश्यकता है!

छठी शैतानी चाल: आलस्य

वह यह है कि वे मनुष्य की आलस्य, शारीरिक सुख-सुविधाओं की चाहत और दूसरे कर्तव्यों के प्रति आसक्ति जैसी विशेषताओं का फायदा उठाते हैं। जी हाँ, जिन्न और मनुष्य में से शैतान हर तरफ से हमला करते हैं। जब वे हमारे दोस्तों में से ऐसे लोगों को देखते हैं जिनका दिल मजबूत है, इरादे साफ हैं, निष्ठा मजबूत है और उद्यम उच्च है, तो वे दूसरे तरफ से हमला करते हैं। इस प्रकार:

हमारे काम को रोकने और हमारी सेवा से विमुख होने के लिए वे अपने आलस्य, शारीरिक सुख-सुविधाओं की चाहत और दूसरे कामों के प्रति आसक्ति का लाभ उठाते हैं। वे हर तरह की तरकीबों से लोगों को कुरान की सेवा से दूर रखते हैं, ताकि उन्हें पता भी न चले और वे उनमें से कुछ लोगों के लिए ज़्यादा काम ढूँढ़ लें। फिर वे कुरान की सेवा के लिए समय नहीं निकाल पाते। और कुछ लोगों को वे दुनिया की लुभावनी चीज़ें दिखाते हैं, ताकि उनकी इच्छाएँ जगाकर वे अपनी सेवा में ढीले पड़ जाएँ; और इसी तरह। हमले के ये तरीके

लंबे हैं, इसलिए, उन्हें छोटा करते हुए, हम उन्हें आपके तीक्ष्णदर्शी के पास भेज रहे हैं
समझ।

इसलिए, मेरे भाइयो, बहुत सावधान रहो: तुम्हारा कर्तव्य पवित्र है, तुम्हारी सेवा महान है। तुम्हारे समय का हर घंटा एक दिन की पूजा के बराबर मूल्य प्राप्त कर सकता है।
इस बात का ध्यान रखें और इनमें से कुछ भी बर्बाद न करें!

> ऐ ईमान वालो! धैर्य और संयम से काम लो, धैर्य से काम लो, एक दूसरे को मज़बूत करो, और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम सफल हो सको। (अल-अ.)
> 'इमरान 3:200)

> और मेरी आयतों को तुच्छ दाम पर न बेचो। (सूरा अल-माएदा 5:44)

तेरे पालनहार की जय हो, जो आदर और सामर्थ्य का स्वामी है! [वह मुक्त है]
जो कुछ वे उसपर आरोप लगाते हैं!

और शांति हो पैगम्बरों पर!

> और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है। (सूरा अस-सफ्फात 37:180)

> तू महिमावान है। हमें कोई ज्ञान नहीं, सिवाय उसके जो तूने हमें सिखाया है।
> निस्संदेह तू ही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (सूरा बक़रा 2:32)

हे ईश्वर! हमारे स्वामी मुहम्मद साहब, प्यारे अनपढ़ पैगम्बर, महान कद और उच्च पद के स्वामी, तथा उनके परिवार और साथियों को आशीर्वाद और शांति प्रदान करें। आमीन।

परिशिष्ट 1: कालक्रम और आरेख

रिसाले-ए नूर संग्रह

ए. रिसाले-ए-नूर संग्रह का कालक्रम

1877	सईद नर्सी का जन्म हुआ।
1892	उपनाम 'बेदिउज्जमां' (युगों का आश्चर्य)।
1911	मुहाक़मत (तर्क) प्रकाशित।
1913	मुनाज़रत (चर्चा) प्रकाशित।
1916	उन्होंने अल-इशारत अल-इजाज़ (अल्लाह के प्रति उसके प्रेम के संकेत) लिखना शुरू किया। चमत्कारिकता)।
1919–1921	छोटी संधियाँ तुलुआत, सुनुहाट, लेमात, इसारत और हुतुवत-इ सिट्टे लिखा।
1920–1921	ओटोमन साम्राज्य का पतन, तुर्की गणराज्य का उदय। नये सैद युग का प्रारंभ.
1923	अल-मथनावी अल-अरबी अल-नूरी का तुर्की में अनुवाद।
1926	रिसाले-ए-नूर का लेखन बरला में निर्वासन में शुरू हुआ।
1926–1929	शब्द.
1929–1932	पत्र.
1932–1934	द फ्लैशेस.
1936–1940	द रेज़ का अधिकांश भाग लिखा गया।
1948	रिसाले-ए-नूर का लेखन पूरा हुआ।
1950	पहली लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार सत्ता में आई। तीसरे सैद युग की शुरुआत.
1956	रिसाले-ए-नूर लैटिन वर्णमाला में मुद्रित किया गया।
1960	सईद नर्सी की मृत्यु हो गई।

बी. रिसाले-ए नूर संग्रह का आरेख

शब्द			
पहला शब्द			
.			
.			
.			
33वाँ शब्द >>>बनता है	पत्र (मेक्तूबात)		
	पहला अक्षर		
	.		
	.		
	.		
	27वाँ पत्र >>>>	(बारला-कस्तमोनु और अमीरदाग लाहिका)	
	.		
	.		
	30वाँ पत्र >>>>	(अल-इशरत अल-एजाज़)	
	३१वाँ अक्षर >>>>बन जाता है	द फ्लैशेस (लेम'अलर)	
	.	पहला फ्लैश	
	33वाँ पत्र	.	
		.	
		.	
		३१वाँ फ़्लैश >>>>बन जाता है	किरणें (किरणें)
		.	पहली किरण
		33वाँ फ्लैश (अल-मथनवी अल-नूरी)	.
			.
			.
			15वीं किरण

परिशिष्ट 2: ईश्वर के नाम और गुण

इस्लाम में (अल-अस्मा अल-हुस्ना)

नाम लिप्यंतरण	अर्थ	नाम लिप्यंतरण	अर्थ
अल्लाह	ईश्वर। एकमात्र सर्वशक्तिमान। केवल वही पूजा के योग्य है।	अल-मुब्दि	मूल निर्माता - वह जो सभी प्राणियों को बिना किसी पदार्थ या प्रतिरूप के आरंभ में रचता है।
अल-'Adl	न्यायी। वह जो समतामूलक.	अल-मुग़नी	समृद्ध करने वाला। परिपूरक।
अल-अख़िर	अंतिम.	अल-Muhaymin	संरक्षक। वह जो सभी चीज़ों पर नज़र रखता है और उनकी रक्षा करता है। (संकट में सहायक)
अल-'अफूव	क्षमा करने वाला। वह जो ईमानदारी से पश्चाताप करने वाले सभी लोगों को क्षमा कर देता है।	अल-मुस्सी	मूल्यांकनकर्ता - वह जो अस्तित्व में प्रत्येक वस्तु की संख्या जानता है, यहाँ तक कि अनंत तक।
अल-'आलिम	वह सब कुछ जानने वाला है। वह जिसे सभी चीज़ों का पूरा ज्ञान है।	अल-मुईद	पुनर्स्थापक - वह जो अपने प्राणियों को नष्ट करने के बाद उनका पुनः निर्माण करता है।
अल-अहद	एक. एकमात्र एक।	अल-मुइज़	सम्मान देने वाला. वह जो सम्मान और गरिमा प्रदान करता है।
अल-अव्वल	पहला।	अल-मुजीब	प्रार्थना का उत्तर देने वाला। वह जो अपनी प्रार्थना में की गई इच्छा को पूरा करता है।
अल-अज़ीज़	पराक्रमी एवं मजबूत.	अल-मुनीम	पोषणकर्ता। वह जो हर प्राणी को उसका पोषण देता है। जीविका.
अल-अज़ीम	शानदार। सबसे ऊंचा। वह जो सबसे शानदार है।	अल-Muqaddim	शीघ्रता करने वाला - वह जो कुछ चाहता है, उसे आगे लाता है (अग्रचेत करने वाला)।
अल-बादी'	अतुलनीय. वह जो न तो कोई आदर्श है और न ही कोई सानी है, तथा जो अद्भुत आश्चर्यों से भरे संसारों को अस्तित्व में लाता है।	अल-मुक़सीत	समतामूलक। वह जो हर काम उचित संतुलन और सामंजस्य के साथ करता है।

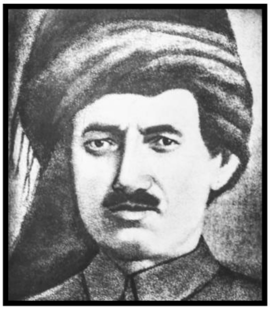
अल-Ba'ith	पुनरुत्थानकर्ता - वह जो मृतकों को जीवन देता है, और उन्हें उनकी कब्रों से उठाता है।	अल मुक्तदिर	सभी शक्तियों का निर्माता। वह जो अपनी इच्छा से अपने सबसे शक्तिशाली और ताकतवर प्राणियों का भी निपटान कर सकता है।
अल-बक़ी	वह जो सदा बना रहता है। शाश्वत (भविष्य में).	अल-मुमित	जीवन लेने वाला। वह जो जीवित प्राणी की मृत्यु का सृजन करता है।
अल-बारी'	व्यवस्था का निर्माता (कुशल कार्यकर्ता)। हे इवॉल्वर जिसने बनाया सभी चीजें ताकि प्रत्येक पूर्ण और उसके भाग पूर्ण अनुरूपता और सामंजस्य में हों।	अल-मुंतकीम	बदला लेने वाला। वह जो गलत काम करने वालों को उनके योग्य दण्ड देता है।
अल बर्र	सभी अच्छाइयों का स्रोत। वह जो अपने सेवकों के साथ सहिष्णुता से पेश आता है, और जिसकी भलाई और दयालुता वास्तव में बहुत महान है।	अल-मुसव्विर	सुंदरता का निर्माता। वह जो सभी चीजों को डिजाइन करता है, प्रत्येक को उसका विशेष रूप और चरित्र देता है (मूर्तिकार)।
अल-बशीर	जो लोग शुक्रवार की सभा में अनिवार्य और रिवाजी प्रार्थनाओं के बीच एक सौ बार इस नाम का आह्वान करते हैं, अल्लाह उन्हें दूसरों की नजरों में सम्मान प्रदान करता है ।	अल-मुताअली	सर्वोच्च। वह हर दृष्टि से महान है, किसी भी चीज़ से कहीं अधिक जो मन अपने प्राणियों के लिए संभवतः बता सकता है।
अल-बासीत	मुक्त करने वाला (अनक्लोजर) - वह जो मुक्त करता है, चीजों को फैलने देता है।	अल-Mutakabbir	राजसी। वह जो सभी चीजों और सभी तरीकों से अपनी महानता प्रदर्शित करता है।
अल-बातिन	छिपा हुआ। वह जो छिपा हुआ है, गुप्त है।	अल-मुदहिल	अपमान करने वाला। वह जो अपमानित और अपमानित करता है।
अल-धर्र	संकटमोचक। हानिकारक चीजों का निर्माता। वह जो ऐसी चीजें बनाता है जो दर्द और चोट पहुंचाती हैं।	एक-तलवार'	अच्छाई का निर्माता। वह जो ऐसी चीजें बनाता है जो लाभ और फायदा देती हैं।
अल-फ़तह	खोलने वाला - वह जो सभी समस्याओं का समाधान खोलता है और चीजों को आसान बनाता है।	अल-नूर	प्रकाश। वह जो सभी संसारों को प्रकाश देता है, जो अपने सेवकों के चेहरे, मन और हृदय को प्रकाशित करता है।

अल-गफ्फार	क्षमाशील। वह जो सदैव क्षमा करने के लिए तैयार रहता है।	अल-काबिद	कंस्ट्रिक्टर। वह जो संकुचित एवं प्रतिबंधित करता है।
अल-ग़फ़ूर	क्षमा करनेवाला और दोषों को छिपाने वाला.	अल-कादिर	सर्वशक्तिमान। वह जो अपनी इच्छानुसार जो चाहे करने में समर्थ है (प्रभु)।
अल-ग़नी	धनवान - वह जो असीम रूप से धनवान और पूर्णतः स्वतंत्र है।	अल-Qahhar	वह जो सभी चीज़ों पर प्रभुत्व रखता है, और उनसे जो चाहता है, वह करवाता है।
अल-हादी	मार्गदर्शक। वह जो मार्गदर्शन प्रदान करता है.	अल-क़ावी	सबसे शक्तिशाली। सभी शक्तियों का स्वामी।
अल-हाफ़ी	संरक्षक - वह जो सभी प्राणियों की हर प्रकार से रक्षा करता है।	अल-कय्यूम	स्वयंभू। वह जो आकाश, पृथ्वी और जो कुछ भी विद्यमान है, उसका पालन -पोषण करता है।
अल-हय्य	सदा जीवित रहने वाला. वह जीवित है जो सब कुछ जानता है और जिसकी शक्ति हर चीज़ के लिए पर्याप्त है।	अल-कुद्दूस	शुद्ध वह जो सभी त्रुटियों से मुक्त.
अल-हकीम	पूर्णतः बुद्धिमान. वह जिसका हर आदेश और हर कार्य शुद्ध ज्ञान है।	अल-रफ़ी'	वह जो ऊपर उठाता है ऊपर।
अल-हकम	न्यायाधीश। जो न्याय करता है और सही करता है, वही विजयी होता है।	अल-रहीम	वह जो अत्यंत दयालुता से कार्य करता है।
अल-अलियु	सर्वोच्च. श्रेष्ठ .	अल-रहमान	सर्वशक्तिमान दयालु वह है जो अपने सभी प्राणियों के लिए भलाई और दया चाहता है।
अल-हलीम	सहनशील। वह जो सबसे अधिक दयावान है।	अल-रकीब	चौकन्ने रहने वाला.
अल-हमीद	प्रशंसनीय। सारी प्रशंसा उसी की है, और सारी सृष्टि की जीभें केवल उसी की स्तुति करती हैं।	अल रशीद	धर्मी शिक्षक। वह जो सभी चीजों को अपने शाश्वत नियम के अनुसार चलाता है योजना बनाना, उन्हें बिना किसी त्रुटि के और व्यवस्थित तथा बुद्धिमत्ता के साथ उनके अंतिम गंतव्य (अचूक) तक पहुंचाना।
अल-हक्क	सत्य। वह जो अपरिवर्तनशील रूप से स्थिर रहता है।	अल-रऊफ़	दयालु. वह जो बहुत दयालु है (कृपालु)।
अल-हसीब	लेखापाल। वह जो हर विवरण जानता है।	अल-रज्जाक	पालनहार - वह जो अपने प्राणियों को सभी उपयोगी चीजें प्रदान करता है।

अल-जब्बार	सम्मोहक - वह जो सभी टूटी हुई चीजों की मरम्मत करता है, और जो अधूरी है उसे पूरा करता है।	अस-सबूर	धैर्यवान - वह जो असीम धैर्य से युक्त हो।
अल-जलील	गौरवशाली। वह जो ऐश्वर्य और वैभव का स्वामी है।	अल-सलाम	शांति का स्रोत। वह जो अपने सेवकों को सभी खतरों से मुक्त करता है।
अल-जामी'	एकत्रित करने वाला - वह जो जो चाहता है, जब चाहता है, जहां चाहता है, एकत्रित करता है।	अल-हमद	शाश्वत - वह जो आवश्यकता के अंत और दु:ख के निवारण के लिए एकमात्र सहारा है।
अल-कबीर	सबसे महान। वह जो परम महान.	अल-समीउ	अल्लाह सबकी बात सुनने वाला है। अल्लाह उन लोगों की सभी ज़रूरतों का ख्याल रखता है जो इस शानदार नाम को सौ बार पुकारते हैं।
अल-करीम	उदार। वह जिसकी उदारता सबसे अधिक है।	अल-शाहिद	साक्षी - वह जो हर जगह मौजूद है और सभी चीजों को देखता है।
अल-ख़बीर	सर्वज्ञ - वह जिसे सभी चीज़ों के आंतरिक और सबसे गुप्त पहलुओं का ज्ञान है।	al-Shakūr	कृतज्ञता का पुरस्कार देने वाला। वह जो कृतज्ञतापूर्वक अच्छे कर्मों का पुरस्कार देता है (प्रशंसक)।
अल-ख़ाफ़ीद	वह जो नीचे लाता है, घटाता है।	अल-तव्वाब	पश्चाताप स्वीकार करने वाला। वह जो पश्चाताप स्वीकार करने और पापों को क्षमा करने के लिए हमेशा तैयार रहता है।
अल-ख़ालिक	सृष्टिकर्ता - वह जो अस्तित्वहीनता से अस्तित्व में लाता है, सभी चीजों को इस तरह से बनाता है कि वह उनके अस्तित्व और उन परिस्थितियों और घटनाओं को निर्धारित करता है जिनका उन्हें अनुभव करना है।	अल-वकील	ट्रस्टी/संरक्षक - वह जो उन लोगों के मामलों का प्रबंधन करता है जो उन्हें विधिवत रूप से उसके प्रभार में सौंपते हैं, और जो उनकी स्वयं की तुलना में बेहतर देखभाल करता है।
अल-लतीफ़	सूक्ष्मतम। वह जो सूक्ष्मतम सूक्ष्मताओं को जानता है सभी चीज़ों का।	अल-वली	रक्षक मित्र - वह जो अपने अच्छे सेवकों का सबसे करीबी मित्र है।
अल-मजीद	राजसी. वह जिसकी महिमा सबसे महान और सबसे ऊंची है।	अल-वहाब	सबका दाता। वह जो निरंतर हर प्रकार का आशीर्वाद प्रदान करता है।

अल-मजीद	गौरवशाली। वह, जिसकी गरिमा और महिमा सबसे महान है, और जिसकी उदारता और उदारता प्रचुर है।	अल-वाहिद	अद्वितीय - वह जो एक है, अपने सार, गुण, कार्य, नाम और विधान में उसका कोई साझीदार या बराबर नहीं है।
अल-मलिक	पूर्ण शासक. संपूर्ण ब्रह्मांड का शासक (राजाओं का राजा)।	अल-वाजिद	खोजकर्ता। वह जो अपनी इच्छानुसार कुछ भी पा लेता है इच्छाएँ (अनुभूति)।
मलिक-उल-मुल्क	सबका मालिक. राज्य का राजा.	अल-वदूद	प्रेमी - वह जो अपने अच्छे सेवकों से प्रेम करता है, और उन पर अपनी करुणा बरसाता है।
अल-मनी'	हानि से बचाने वाला। हानि से बचाने वाला।	अल-वाली	शासक। रक्षक मित्र। वह जो इस विशाल ब्रह्मांड और इसकी सभी घटनाओं का प्रबंधन करता है।
अल Mu'min	विश्वास का प्रेरक. वह जो हमारे हृदय में विश्वास की ज्योति जगाता है।	अल-वसी	सर्वज्ञ। जिसके पास असीम क्षमता और प्रचुरता है।
अल-मतीन	फर्म. वह जो बहुत दृढ़.	अल-वारिथ	सबका उत्तराधिकारी। वह जो सभी धन-संपत्तियों का वास्तविक स्वामी है।
अल-मुही	जीवनदाता. वह जो जीवन प्रदान करता है, प्राणशक्ति देता है, पुनर्जीवित करता है।	अज़-ज़हीर	वह जो प्रकट है। वह जो है प्रत्यक्ष।
अल-Mu'akhkhir	विलम्ब करने वाला - वह जो जो चाहे उसे टाल दे या विलंब कर दे।	जुल-जलाली-वाल-इकराम	महिमा और उदारता का स्वामी। वह जिसके पास महानता और अनुग्रहपूर्ण उदारता दोनों हैं।

परिशिष्ट 3: छवियाँ



नर्सी पहले
पहला विश्व युद्ध



नर्सी के दौरान
पहला विश्व युद्ध



1926 में बारला में
नर्सी



नूरसी रिसाले-ए-नूर का बचाव करने के लिए
अदालत में हैं ।



नूरसी का बारला घर जहां उन्होंने अपनी अधिकांश रचनाएं लिखीं
रिसाले-ए नूर संग्रह



नूरसी के आंगन में
1952 में इस्तांबुल में फ़तिह मस्जिद



नूरसी अपने अंतिम दिनों में



बरला के पास तारपीन का पेड़। नूरसी प्रार्थना
और प्रार्थना करने के लिए इस पर लंबी
रातें बिताती थीं।


SURET

Belediye ve Hükümet Tabibliğinde Kalacak
dip koçanı
Sıra Numarası: 174

1-Vesikanın doldurulduğu:
A-Vilayet Urfa
B-Kaza
2-Ölünün:
A-Adı Sait
B-Soyadı :Nursi
Ç-Baba adı: Mirza
D-Ana adı: Nuriye
E-Yaşı :83
F-Cinsiyeti :Erkek
G-Açık ev adresi: İpek Palas oteli
H-Ölüm sebebi: (Esas sebep yazılacak)
Asistoli ve pinomoni
I-Öldüğü tarih: 23/3/960
3-Ölümü tetir eden hekimin :
A-Adı :Doktor Sait
B-Soyadı: Öner
Yukarıda adı ve soyadı ve hüviyeti yazılı ölünün gömülmesine izin verilmiştir. 23/3/960

Resmi Mühür ve imza

Aslı: 13311-22/29

Benzeri gibidir.
7/11/960

DEVLET ARŞİVLERİ GENEL MÜDÜRLÜĞÜ
CUMHURİYET ARŞİVİ

010	09			D26	1004	4

नर्सी का मृत्यु प्रमाण पत्र

परिशिष्ट 4: विचारधाराएँ (मज़हब) इस्लाम में

इस्लामी दार्शनिक परंपरा में धर्मशास्त्र के पाँच बहुत अलग स्कूल हैं, जो हैं: [1] सुन्नी, जिसके अंतर्गत [1.a] अशरी, [1.b] अथारी (सलाफ़ी), और [1.c] मतुरिदी हैं; [2] शिया, जिसके उप-स्कूल हैं [2.a] इमामी और [2.b] इस्माइली; [3] ख़ारिजी; [4] मुताज़िली; और अंत में [5]

मुर्जिया।

[1] सुन्नी स्कूल: सुन्नी स्कूल इस्लामी आस्था की सबसे बड़ी शाखाओं में से एक है। सुन्नी शब्द सुन्नत से निकला है , जिसका अर्थ है इस्लाम के पैगंबर मुहम्मद की परंपरा। कानून के चार सुन्नी स्कूल (मदहब) हैं, जो हनफ़ी, शफ़ीई, हमबली और मालिकी हैं। कानून के सभी चार स्कूल अपने पंथ (अकीदा) को धर्मशास्त्र के तीन स्कूलों, अशरी, अथारी और मतुरीदी से लेते हैं।

[2] शिया संप्रदाय: यह सुन्नी संप्रदाय के बाद दूसरा सबसे बड़ा इस्लामी संप्रदाय है । अकीदत में वे इमामी और इस्माइली संप्रदायों पर आधारित हैं। अन्य मतभेदों के अलावा, हम जिस मुख्य बात से चिंतित हैं, वह है इस्लाम की पवित्र पुस्तक कुरान की व्याख्या, इसलिए खुद आस्था। शियाओं का मानना है कि इस्लाम के सच्चे व्याख्याकार पैगंबर मुहम्मद की बेटी फातिमा और दामाद अली के प्रत्यक्ष वंशज हैं, जो चौथे धर्मी खलीफा भी थे। इन वंशजों को इमाम कहा जाता है और वे ही इसका पालन करते हैं। जबकि सुन्नी संप्रदाय का मानना है कि सुन्नत साथियों द्वारा सुनाई जाती है और इस्लाम की व्याख्या करने के लिए फातिमा और अली के साथ सीधे रक्त संबंध होने की कोई आवश्यकता नहीं है।

[3]. ख़ारिजी: ख़ारिजी का शाब्दिक अर्थ है वे लोग जो बाहर गए। ख़ारिजी मानते थे कि पाप करना कुफ़्र (अविश्वास) के समान है और हर गंभीर पापी को काफ़िर (अविश्वासी) माना जाता है जब तक कि वह पश्चाताप न करे। वे कुरान को इस्लामी न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) का स्रोत मानते थे , लेकिन अन्य दो स्रोतों (हदीस और इज्मा) के बारे में उनकी अवधारणाएँ आम मुसलमानों से अलग थीं।

[4] मुताज़िली: इस्लामी धर्मशास्त्र का यह स्कूल कुरान की व्याख्या (ताविल) से जुड़े विवादों के माध्यम से अस्तित्व में आया, जिसमें ईश्वर का मानवरूपी वर्णन और स्वतंत्र इच्छा का खंडन शामिल था। मुताज़िलियों ने कुरान के अंशों की शाब्दिक व्याख्या से इनकार किया और मनुष्य की स्वतंत्र इच्छा की पुष्टि की, जबकि रूढ़िवादी परंपरावादी शाब्दिकवाद और नियतिवाद का पालन करते थे।

[5]. मुरजियाह: खरिजियों के विपरीत, मुरजियों ने लोगों की मान्यताओं के बारे में विलंबित निर्णय के विचार की वकालत की। मुरजाइट सिद्धांत का मानना था कि केवल ईश्वर के पास यह निर्णय लेने का अधिकार है कि कौन सच्चा मुसलमान है और कौन नहीं, और यह कि
मुसलमानों को अन्य सभी मुसलमानों को अपने समुदाय का हिस्सा मानना चाहिए।
ख़ारिजियों से एक और विपरीत, जो मानते थे कि करना एक गंभीर पाप है
किसी व्यक्ति को गैर-मुस्लिम बना देगा, मुर्जित्स ने वास्तविक विश्वास माना और
ईश्वर के प्रति समर्पण को धर्मपरायणता और अच्छे कर्मों से अधिक महत्वपूर्ण माना गया।
उनका मानना था कि गंभीर पाप करने वाले मुसलमान मुसलमान ही रहेंगे और यदि वे वफादार बने रहेंगे तो वे जन्नत के हकदार होंगे।

अग्रिम पठन

पुस्तकें

सुक्रान वाहिदे द्वारा बेदिउज्जमान सैद नर्सी की पुस्तकों का अनुवाद

1. नर्सी, ने कहा। (सुक्रान वाहाइड द्वारा अनुवादित)। (1992)। शब्द. कैगालोग्लु, इस्तांबुल, तुर्की: सोज़लर नेसरियाट।
2. --- पत्र
3. --- द फ्लैशेस
4. --- किरणें 5. --- मूसा

की छड़ी

6. --- चमत्कारों के संकेत 7. --- रिसाले-ए-नूर

संग्रह के लेखक: बेदिउज़्ज़मान सईद नूरसी

हुसेन अकारसू द्वारा बेदिउज़्ज़मान सैद नर्सी की पुस्तकों का अनुवाद

8. नूरसी, सईद. (हुसेन अकारसू द्वारा अनुवादित) (2007). शब्द: इस्लामी विचार, विश्वास और जीवन पर पत्र। समरसेट, एनजे: द लाइट।
9. --- पत्र
10. ---द ग्लेम्स
11. ---किरणें
12. --- अल-मथनावी अल-नूरी

बेदिउज़्ज़मान सईद नूरसी पर अन्य अनुशंसित पुस्तकें

13. वाहिदे, शुक्रान और अबू-रबी, इब्राहिम एम. (2005)। आधुनिक तुर्की में इस्लाम: बेदिउज्जमां सईद नर्सी की एक बौद्धिक जीवनी। स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू यॉर्क प्रेस।

14. टर्नर, कोलिन और होर्कुक, हसन. (2009). सईद नर्सी. आईबी टॉरिस. लंदन, न्यूयॉर्क 15. टर्नर,

कोलिन. (2013). कुरान का खुलासा: सईद नूरसी के प्रकाश के पत्रों का आलोचनात्मक विश्लेषण. गेरलाच प्रेस. बर्लिन

16. अबू-रबी, इब्राहिम एम. (2003). इस्लाम चौराहे पर: बेदिउज्जमान सईद नूरसी के जीवन और विचार पर। अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस।

ऑनलाइन संसाधन

http://www.erisale.com/en

http://www.saidnur.com/en/

http://www.nur.gen.tr/en.html

ग्रंथ सूची

अबू-रबी, इब्राहिम एम. (2003), इस्लाम क्रॉसरोड्स पर: बेदिउज़्ज़मान सईद नूरसी के जीवन और विचार पर (अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस)।

फ़ारूक़ी, सुरैया 'ओटोमन इतिहास का एक परिचय'
सूत्रों ने कहा.

हनोग्लू, एम. शुकरू डॉ. अब्दुल्ला को एक राजनीतिक विचारक के रूप में जाना जाता है और
अवधि (इस्तांबुल)।

मर्सेल, सफ़ा (1976), बेदिउज्जमां सैद नर्सी एंड स्टेट फिलॉसफी (इस्तांबुल: येनी आसिया प्रकाशन)।

नर्सी, सईद (1994), हुत्बे-ए शामिये (दमिश्क उपदेश) (इस्तांबुल: नेसिल)।

--- (2004a), द फ्लैशेस (इस्तांबुल: नेसिल).

--- (2004बी), द रेज़ (इस्तांबुल: नेसिल).

--- (2004सी), मुहाकेमत (द रीज़निंग्स) (इस्तांबुल: नेसिल)।

--- (2005), द वर्ड्स (इस्तांबुल: नेसिल).

नूरसी, सईद (2004d), चमत्कार के संकेत (इस्तांबुल: नेसिल)।

--- (2004ई), दीवान-ए हरबी इरफी (इस्तांबुल: नेसिल)।

--- (2004f), द लेटर्स (इस्तांबुल: नेसिल).

ओल्सन, रॉबर्ट डब्ल्यू. (1989), कुर्द राष्ट्रवाद का उदय और शेख सईद विद्रोह, 1880-1925 (ऑस्टिन: यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास प्रेस)।

साहिनर, नेकमेडिन (1997), बेदिउज़्ज़मान ने नर्सी को अपने अज्ञात पक्षों के साथ कहा: उनका कालानुक्रमिक जीवन (इस्तांबुल: नेसिल)।

सरितोप्राक, ज़ेकी (2008), 'सैद नूरसी ने मुस्लिम-ईसाई संबंधों को विश्व शांति की ओर अग्रसर किया', इस्लाम और ईसाई मुस्लिम संबंध, 19 (1), 25–37.

सारितोप्राक, ज़ेकी (2014), 'इस्लाम का यीशु।'

टर्नर, कोलिन और होर्कुक, हसन (2009), सईद नर्सी (लंदन, न्यूयॉर्क:
आईबी टॉरिस)।

वाहिदे, सुक्रान और अबू-रबी, इब्राहिम एम. 'आधुनिक तुर्की में इस्लाम बेदिउज्जमां सैद नर्सी की एक
बौद्धिक जीवनी।'

वेबस्टर, डोनाल्ड एवरेट (1939), अतातुर्क का तुर्की: सामाजिक प्रक्रिया
तुर्की सुधार.

अनुक्रमणिका

ए

अकाएद 21
इबादत 22, 48 उबुदिय्याह
24, 119 उलमा 24, 41

अबू बक्र 21, 76
अबू जहल 21, 76, 21, 45,
48 है
अहल-अस-सुन्नत 21, 30
अल-अस्मा अल-हुस्ना 21
अल-फ़राबी 21
अल-ग़ज़ाली 21
सर्वशक्तिशाली 59, 63, 69, 95, 96, 97, 98,
99, 101, 135, 139, 147, 161, 219, 281

ऑल-वाइज 49, 59, 63, 64, 69, 70, 94, 96,
97, 109, 120, 133, 135, 147, 148, 149, 150, 153, 154, 155, 158,
181, 192, 204, 209, 218, 220, 224, 227, 230, 234, 235,
244 , 245, 246, 249, 253, 257, 259, 263, 265, 270, 273,
275

सर्वशक्तिमान 50, 51, 63, 66, 70, 75, 77, 78,
83, 84, 86, 88, 94, 109, 115, 121, 142, 162, 179, 180, 181, 201,
216, 221, 222, 224, 227, 230, 231, 234, 235, 237, 241,
242, 243, 248, 251, 252, 253, 261, 264, 272, 279

अल-इशरत अल-एजाज़ 21 आना 21,
49, 51 उपमाएँ 30

अंकारा 37, 53, 94 एंटीक्रिस्ट
21

अरब 24
अरबी 22, 38, 39, 40, 42, 44, 45, 48, 53, 71, 94, 154, 194, 202 तर्क
29

अशरी 21, 50, 287 नास्तिकता 27,
53, 54, 93, 94, 191 आयत 21, 49

आयत अल-कुरसी 159, 245

बी

भाषण 21
शेष 142
बारला 31, 46, 63, 224, 277, 278 भगवान के सुंदर
नाम 21, 49
बेदिउज्जमां 29
बेदिउज़्ज़मां सईद नूरसी 13 फ़ायदा देने वाला 163, 238, 242

जीवनदाता 24, 68, 89 बोझ 30

सी

आपदा 79, 89, 214, 216, 235, 262 रसायनज्ञ 154

कमांडर 105, 131, 132, 137, 138, 142, 169 तुलना 29, 31,
32, 49, 59,
62, 63,
66, 69, 77, 88, 96, 104, 105, 113, 119, 123, 124, 127, 138,
142, 153, 155, 156, 161, 198, 216, 228, 236, 238,
258, 260 तुलना 30

दयालु 59, 70, 78, 79, 83, 94, 113, 117, 119, 120, 123, 127, 153,
161, 167, 177, 187, 200, 205, 213, 214, 216, 220,
221,

223, 224, 227, 232, 235, 236,
237, 238, 241, 249, 257, 264, 281
शिल्प 89, 154, 207
सृजन 22, 44, 49, 50, 51, 52, 59, 64,
66, 70, 71, 72, 75, 76, 78, 79, 84,
85, 97, 100, 102, 103, 104, 106,
108, 109, 115, 121, 135, 137,
139, 140, 143, 144, 146, 155,
159, 202, 214, 222, 249, 250, 281
अपराधी 168, 169
इलाज 42, 171, 180, 188, 191, 193, 195,
214, 219, 221, 230, 233, 248

डी

मसीह विरोधी 21, 24, 176
क्षति 79, 84, 216
दमिश्क धर्मोपदेश 22, 42
दरवेश लॉज 24
विवाद 32, 167, 169, 174, 176, 188,
190, 195, 196
प्रवचन 30
रोग 175, 177, 188, 191, 193, 195,
196, 199, 270
वियोग 142
विवाद 167, 193, 196
दीवान-इ हरब-ए ओर्फ़ि 21, 41 दिव्य नियति 23, 29, 30

दैवीय निर्धारण 64, 83, 85, 86, 87, 88, 96, 98, 100, 103, 104, 147, 148, 172,
215, 235

दैवी संरक्षण 80

और

अहंकार 23, 30, 188, 191, 193, 208, 272, 273
अहंकार 30
अहंभाव 50, 98, 174, 201, 208, 272, 273, 274

अहंकार 35, 272 शत्रु 46, 53, 80,
119, 170, 171, 172,
175, 176, 183, 191, 196, 198, 199
ईर्ष्या 32, 167, 171, 179, 182, 197, 201, 208, 274 विषुव 135 बुराई 17,
27, 30, 31, 32,
61, 63, 71, 72, 75,
76, 77, 78, 79, 83, 84, 85, 86, 88,
89, 114, 141, 146, 147, 149, 167,
168, 170, 172, 173, 174, 177,
178, 183, 188, 190, 194, 201,
205, 206, 208, 225, 229, 231,
232, 274
व्याख्या 24, 29, 43, 45

एफ

आस्था 29
दर्शन 21, 52
डर 34, 260
ईश्वर का भय 80, 120, 124, 223
स्वतंत्र इच्छा 23

जी

परिधान 77, 89, 215, 216
घौथ अल-आज़म 203
परमेश्वर का प्रभुत्व 24
लालच 177, 179, 263

एच

हदीस 21, 22, 29, 33, 69, 123, 187, 191,
210, 222
हनफ़ी 24, 287
ख़ुशी 30, 65, 67, 88, 114, 117, 119,
121, 133, 134, 136, 137, 156,
157, 167, 171, 180, 200, 202,
214, 219, 220, 221, 223, 231,
232, 233, 235, 236, 238, 267, 270
सत्य 22
हृदय 63, 65, 69, 89, 93, 99, 114, 117,
119, 120, 124, 134, 149, 156,
158, 168, 169, 170, 172, 175,
178, 182, 192, 193, 195, 200,
201, 206, 208, 216, 217, 218,
219, 220, 226, 237, 245, 247,
248, 258, 259, 260, 262, 274
इसके बाद 17, 29, 30, 33, 78, 117, 120,
121, 124, 127, 138, 139, 144,
146, 147, 148, 149, 156, 171,
176, 179, 235, 237, 244, 245,
246, 252, 257, 258, 259, 262,
268, 269, 270

होली बुक 23
पवित्र पुस्तकें 159 हुज्जतुल
इस्लाम 22
मानव 29
मानव स्वतंत्र इच्छा 29 मानव
मैं ३०
हुसेन अकारसू 11, 15, 289
खुतबा-ए शामिये 22
हुतुवत-ए सिट्टे 22, 44, 277 पाखंडी 172, 197

मैं

प्रारंभ 22, 50
इब्न-ए सीना 22, 55 वैचारिक 29
इखलास 22 बीमारी 33,
214, 215, 216,
217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 230,
231, 232, 233, 247 आस्था 22, 51, 52

असंभवता 95, 96, 97, 98, 99, 100, 101, 102, 103

भारतीय 24 इंशा
22, 50
ईश्वर के नाम पर 59, 78, 83, 94, 113, 119, 123, 127, 153, 161, 162, 163,
167, 177, 187, 200, 213, 235, 241, 249, 257

Isharat 22, 44, 48, 50, 54, 277, 278
इस्लामी कानून 24
इस्राएलियों 22, 43
इत्तिहाद-ए मुहम्मदी 22, 41

जे

जबरिया 22, 30, 88 जिहाद 22, 75,
196, 257, 261
यहूदी 22, 43
यहूदी-ईसाई 22, 43
जुरजानी 22, 44, 69 न्याय 21,
31, 45, 48, 79, 80, 85, 86, 130, 132, 136, 168, 169, 172, 174,
175, 176, 183, 190 जज-ए इख्तियारी 23 , 83 जुलाई
23, 83

क

काबा 23 पेन
23, 54 कस्ब 23, 84

राजा 61, 62, 132, 153, 283 ब्रह्मांड की पुस्तक
23, 49
23 कुरुष

एल

आलस्य 275
लेमाट 23, 44, 277 जीवन 30

प्यार 32, 42, 54, 60, 64, 65, 69, 110, 131, 146, 163, 168, 169, 170, 171, 172,
178, 182, 187, 190, 191, 193, 196, 199, 218, 225, 231,
233, 236, 237, 244, 252, 253, 259, 266, 274

एम

मदरसा 23, 39, 43, 54
मदरसात उज़-ज़हरा 23, 40, 43 मकतब 23 मन-ए-
हरफ़ी 23, 49 मन-
ए-इस्मी 23, 49

मक्का 23, 169 रूपक 30

मेवलाना विश्वविद्यालय 11, 27 मन 29, 51, 60, 105,
108, 120, 124, 135, 141, 200, 203, 204, 205, 208, 259, 268,
280

दर्पण 49, 50, 65, 68, 69, 71, 87, 108, 134, 140, 142, 147, 157, 158,
207, 228, 229, 246, 253 गुमराह करना 72, 78, 79, 86,
100, 120, 146, 189, 190, 191, 192, 193,
194, 195, 197, 199, 200, 209, 210, 220, 225, 237, 238, 250, 258,
259, 260, 262, 265, 266, 271, 272 एकेश्वरवादी आस्तिकता
29

नैतिकता 30
सबसे खूबसूरत नाम 89, 147, 209, 216, 228

माउंट उहुद 169
मुहाकेमत 23, 41, 43, 44, 54, 277
मुस्लिम एकता के लिए मुअम्मडन संघ 22, 41

मुनाजरत 23, 40, 41, 43, 277 मुसब्बिब अल-असबाब
23, 50 मुतक्कलिमुन 23, 55

मुताज़िलाइट 23, 30 रहस्य 51, 59,
69, 76, 77, 84, 87, 99, 142, 143, 147, 159, 160, 202, 203, 207,
217, 228, 232, 233

एन

नफ़्स 23, 241
नक्शबंदी 24
प्रकृति 31, 93, 95, 99, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106,
108, 110 मृत्यु की प्रकृति 29 नज़्म 23, 44 नुबुव्वह
23, 45

नर्कु 23
नर्स 13, 15, 19, 21, 22, 23, 24, 27, 29,
30, 31, 32, 33, 34, 35, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47,
48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 80, 181, 183, 210, 213, 261, 277,
289, 290

वाणी 23,41

आज्ञाकारिता 142
दायित्व 83, 180, 189, 227, 274 हठ 32, 124, 128, 156,
167, 182, 190

आदेश 142, 280 जीवन की
उत्पत्ति 29

पी

क्षमा 171, 172 पक्षपात 32,
167, 173, 174, 175 अनुमति 30

सुस्पष्ट 154 दार्शनिक 29, 55,
93, 155 दर्शन 21, 27, 29, 30, 31, 43, 44, 45,
50, 52, 54, 153, 155, 156, 268, 269

धर्मपरायणता 24, 167, 195, 288
प्लेटो 52, 98 राजनीतिक
29, 38, 39, 42, 43, 46, 53, 173 सकारात्मक 30 सकारात्मक विज्ञान 29 शक्ति 31,
33, 38, 51, 62, 64,
68, 70, 71, 78, 83, 84, 85, 86, 87,
88, 95, 99, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 115, 120,
121, 127, 130, 132, 134, 139, 140, 141, 143, 144, 146, 147,
148, 155, 156, 161, 162, 163, 193, 195, 200, 206,
209, 219, 221, 243, 252, 253, 263, 264, 271, 277
प्रार्थना 17, 21, 31, 38, 46, 53, 105, 123, 124, 180, 181,
200, 222, 224, 226, 227, 234, 258, 259 प्रार्थना 24, 59,
63, 65, 120, 123, 124, 179, 181, 214, 216, 223, 226,
227, 233, 252, 258, 260, 266, 280

पूर्व-अनन्त 62, 67, 69, 96, 98, 99, 100, 105, 107, 140, 143, 146, 149,
155, 161, 241, 245 पूर्व-अनन्त 87 सिद्धांत 45, 87, 170,
171, 174, 180, 204, 231, 253,
268

प्रमाण 22, 52, 55, 89, 94, 138, 145, 148, 177, 194, 241, 246, 264

नबी 21, 22, 24, 29, 60, 69, 80, 160, 168, 169, 176, 187, 191, 196,
204, 210, 225, 247, 260, 275, 287 नबी 23, 29, 45,
46, 48, 160, 192

भविष्यद्वक्ता 29 गर्व
83, 86, 114, 161, 193, 266 मानस 23 अस्तित्व का उद्देश्य
29

क्यू

23, 30 किबला 23,
169 तक
कुरान 29
कुरान 24, 31, 32, 34, 287
कुरानिक 29

आर

रमज़ान 18, 34, 209, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249
विद्वेष 32, 167, 168, 169, 171, 172, 175,
176, 179, 180
पारस्परिकता 142 शरण 17, 78,
79, 80, 120, 130, 173, 174, 176, 214, 222, 227, 244, 266, 268, 271
उपाय 84, 95, 96, 180, 188, 190, 193, 195, 199, 213,
214, 215, 216, 217, 218,
219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 230, 231, 232, 233,
234 पश्चाताप 88, 172, 173, 233, 234, 282 पुनरूत्थान 13,
22, 29, 31, 45, 46, 48, 124, 127, 138, 139, 140, 143,
144, 148, 159
प्रकट शास्त्र 159
रिसाले-ए नूर 11, 13, 15, 23, 27, 29, 30,
34, 35, 39, 45, 47, 48, 49, 51, 53, 54, 93, 94, 102, 103, 109,
202, 204, 205, 208, 209, 210, 220, 228, 229, 233, 274,
277, 278, 289
रिसाले-ए नूर संग्रह 13 रुबुबियाह 24, 49, 68, 70, 71
रूलर 109, 153, 154, 155, 161, 283

एस

पवित्र 63, 64, 66, 67, 68, 153, 154, 159, 160, 171, 192, 200, 204, 209, 233,
245, 246, 257, 259, 261, 264, 265, 266, 269, 270,
271, 275 सुरक्षा 121, 171
नर्सी 29 ने कहा
सैत अक्सोय 11
शैतान 17, 34, 63, 75, 76, 78, 79, 80, 172, 173, 201, 257, 258, 266
शैतानी चाल 257, 260, 263, 266, 272, 275
विद्वान 13, 22, 24, 40, 41, 42, 44, 54,
63, 77, 187, 188, 190, 199, 209, 210, 260, 264, 266, 273,
274 बीज 76, 79, 101, 115, 133, 142, 148, 162, 272
स्वयं 21, 23, 30, 49, 51, 61, 69, 70, 71, 72, 83, 94, 95, 97, 101, 106, 116,
124, 140, 154, 156, 174, 181, 182, 183, 191, 193,
194, 195, 199, 200, 201, 202, 208, 225, 241, 243,
257, 262, 272, 273 नौकरशाही 24
शरिया 24, 46, 79, 105, 108, 143, 170,
175, 210, 226, 247 जहाज 85, 142,
168
सरहिन्दी 24, 27 सिपाही 67,
102, 113, 114, 117, 119, 120,
121, 143, 162, 196
आत्मा 23, 34, 59, 66, 67, 69, 80, 83, 84,
86, 89, 114, 115, 116, 120, 124, 127, 134, 139, 143, 149,
156, 157, 159, 161, 163, 170, 171, 172, 174, 175,
188, 191, 192, 193, 199, 201, 203, 204, 206, 208,
219, 225, 231, 232, 233, 241, 243, 244, 245, 246,
247, 248, 251, 274 खुशी का स्रोत 30 आत्मा 32, 34, 76,
99, 114, 115, 119, 121, 124, 144, 157, 191, 192, 195,
197, 199, 201, 202, 208, 217, 219, 221, 246, 247,
248, 259, 260, 262 पर्याप्त
30
सूफी 24, 40, 48, 187, 190, 204, 205, 207, 209
सूफी 204, 205
सुफियान 24, 176 शुक्रान वाहिदे
11, 15, 39, 40, 43, 44, 45, 47, 53, 289 सुन्नत 24, 210, 222, 287
सुप्रीम कोर्ट 133, 134, 148
सुप्रीम ट्रिब्यूनल 129, 130 सूरा 24

टी

व्याख्या 24, 29, 43, 45, 48
ताजिकिस्तान 24 , 24 ,

तौहीद 24, 45, 48 24 हो
गये
कोर्ट मार्शल 21
प्रकाश की पत्रियाँ 23, 39, 48
पत्र 13
धर्मशास्त्री 29
पारदर्शिता 141 क्लेश 76, 77,
88, 89, 121, 219, 221, 223, 225, 228

सत्य 33, 40, 45, 52, 54, 78, 79, 88, 93,
95, 101, 114, 116, 124, 127, 129, 136, 138, 142, 149, 150, 154,
156, 167, 168, 170, 172, 173, 174, 177, 178, 180, 183,
187 , 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197,
198, 199, 203, 204, 209, 234, 247, 249, 250, 258, 259,
262, 263, 264, 265, 266, 267, 271, 272, 273

तुर्की 15, 19, 23, 29, 39, 40, 42, 45,
46, 53, 54, 77, 94, 266, 267, 270, 271, 277, 292

में

uhuwwah 24
ईश्वर की एकता 24

ब्रह्मांड 17, 23, 30, 32, 49, 50, 51, 52,
62, 63, 64, 65, 68, 70, 71, 72, 78, 85, 86, 93, 95, 96, 98, 99,
100, 101, 102, 104, 105, 108, 109, 129, 139, 140, 141,
142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 155, 161, 192,
218, 249, 250, 251, 283 उज़्बेकिस्तान 22, 24

वी

वाहिब उल हयात 24, 68

में

बुद्धि 31, 59, 60, 68, 72, 75, 77, 78,
79, 80, 84, 86, 89, 96, 100, 101, 102, 104, 105, 106, 108,
110, 115, 116, 124, 130, 132, 136, 139, 147, 153, 154,
155, 156, 158, 167, 168, 170, 179, 201, 216, 221, 222,
232, 237, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 251,
281

साथ

जकात 24, 32, 179, 180, 189
Zamakshari 24, 44